

सूचीपत्र

| अथ प्रथम प्रश्न | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ संक्ति | पृष्ठ संक्ति | पृष्ठ संक्ति | पृष्ठ संक्ति | पृष्ठ संक्ति |
|--------------------|--------------|--------------|--------------|---------------------|--------------|-------------------------|
| मङ्गला चरण | २, २ | २ | ४ | अधि मास | ८ | प्रतिपदास्थितिनिर्दिष्ट |
| सम्बन्ध | २ | ४ | ७ | क्षय मास | ८ | समायां विधेययोगः |
| प्रयोजन | २ | ५ | ८ | अथ द्वितीया प्रश्ना | ८ | व्यतीपातयोगः |
| वियय | २ | ५ | ८ | तिथिप्रकरण | ८ | अष्टमि महोदयौ |
| अधिकारी | २ | २० | २ | तिथयः | ८ | गजलाया योगः |
| शरत् प्रश्ना | २ | ५ | ७ | तिथिपतयः | ८ | कपिला यष्टी |
| शरत् धातु प्रश्ना | २ | ६ | ७ | तिथिसंज्ञा | ८ | पुनर्व्यतीपातः |
| नक्षत्र सूची | २ | ७ | ७ | नन्दादिषु कृत्य | २० | मो विन्दहादशीयो |
| प्रकरण सूची | ३ | २ | ८ | सामान्य शुभनिषेधः | २० | चारुणी महावाहणी |
| सम्बन्ध सूत्र | ३ | ६ | ८ | सामान्य शुभनिषेधः | २२ | युगाद्योमन्वाद्यः |
| वृद्धि सन्वत्सलान् | ३ | १० | २ | सामान्य शुभनिषेधः | २३ | अथ तृतीया प्रश्ना |
| वत्सर फल | ६ | २ | ८ | उक्तकार्ये निषेधः | २३ | वारविचारः |

सूचीपत्र

| पृष्ठ संदि | पृष्ठ संदि | पृष्ठ संदि | पृष्ठ संदि | पृष्ठ संदि | पृष्ठ संदि | पृष्ठ संदि | पृष्ठ संदि | पृष्ठ संदि | पृष्ठ संदि |
|-----------------------|------------|----------------------|------------|------------|--------------------|------------|------------|---------------------|------------|
| वारकृत्यं | २ | नक्षत्राणां सख्याः | २४ | १० | योगानां शुभाशुभफलं | ३१ | ६ | महाकर्माणि | ३४ |
| वारदीयादीनी | ६ | भुवादि संज्ञा | २४ | ११ | अथ पञ्चमी प्रभा | ३१ | ११ | महायां होपापवादः | ३४ |
| तैलान्धयोगे सुभाशुभं | १० | नक्षत्र मुखकृत्ये | २४ | २० | अथ करणान्नानं | ३१ | २ | महाविषये विशेषः | ३४ |
| तैलान्धयोगे दीयापवादः | १० | पञ्चके | २४ | २० | करण स्वामिनः | ३१ | ५ | नक्षत्रसप्तमी प्रभा | ३४ |
| वारहोरा | १० | अन्धादि संज्ञा | २४ | २० | करण कृत्यं | ३१ | ५ | तारा विचारः | ३४ |
| अथ चतुर्थी प्रभा | १० | नक्षत्र चाद | २४ | २० | महायां विशेषः | ३१ | १० | तारायः | ३४ |
| नक्षत्राणि | १० | वक्ष्यस्वर्धक्षानं | २४ | २० | महायां विभागफलौ | ३१ | २ | नक्षत्राणां चरणाः | ३४ |
| नक्षत्रेणाः | १० | गत रात्रि ज्ञानं | २४ | २० | महायां विभागफलौ | ३१ | ६ | चंद्रस्य शुभाशुभफलं | ३४ |
| शुभाशुभ नक्षत्राणि | १० | दिवा रात्री मुहूर्तः | २४ | २० | महायां विभागफलौ | ३१ | ४ | शुक्लपक्षे विशेषः | ३४ |
| नक्षत्राणां कृत्यं | १० | वारपरत्ने नक्षत्राणि | २४ | २० | वारयोगे नक्षत्रफलं | ३१ | ११ | तारावलं | ३४ |
| पुण्य प्रशंसा | १० | अथ पञ्चमी प्रभा | २४ | २० | अथ्यादि गुरुवं | ३१ | २ | दुष्टतारा सुवानं | ३४ |
| महायाणां स्वल्पं | १० | योग ज्ञानं | २४ | २० | महायां सुखं | ३१ | ४ | चंद्रा तारम्भा | ३४ |

सूचीपत्र

| क्र.सं. | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|---------------------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|
| कार्यविशेषे महत्तरे | ४० | १ | ४२ | ५ | ४२ | ५ | ४२ | ५ | ४२ | ५ |
| चंद्रवले विशेषः | ४० | ४ | ४२ | ८ | ४२ | ८ | ४२ | ८ | ४२ | ८ |
| नावस्ये स्वमे | ४० | ६ | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० |
| अथाष्टमीप्रभा | ४० | १० | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० |
| प्रभा शुभं | ४१ | २ | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० |
| पर्वणी | ४१ | २ | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० |
| ताकालिकीतिथिः | ४१ | ४ | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० |
| कार्य परत्वेन | ४१ | ४ | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० |
| इग्धयोगः | ४१ | ४ | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० |
| विययोगः | ४१ | ४ | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० |
| हुताशनयोगः | ४२ | २ | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० |
| यम घण्ट | ४२ | २ | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० | ४२ | १० |

सूची पत्र

[illegible]

| प्राणि | पृष्ठ | पंक्ति | | पृष्ठ | पंक्ति | | पृष्ठ | पंक्ति | | पृष्ठ | पंक्ति |
|---------------------|-------|--------|---------------------|-------|--------|------------------|-------|--------|--------------------|-------|--------|
| सुगन्धभोगः | ७२ | २ | राज्ञां एमस्तु कर्म | २२ | ११ | विद्या रम्भः | २३ | ७ | सुत्रपात्रमरसिंहा- | २५ | ३ |
| खड्गारम्भः चक्रं च | ७२ | २ | नखसन्तक्रिया | २२ | १२ | जैनविद्यारम्भः | २३ | ८ | सनादिः | २५ | ७ |
| षडुक्तसिन्धु रम्भो | ७२ | ११ | क्षौरविधौ निषेधः | २२ | ३ | लिंगां डक्षेद्वै | २३ | ९ | अश्वगजारोहणं | २५ | ६ |
| भूयाघहनं | ७२ | २ | क्षौरपुत्रवाक्च | २२ | ५ | नष्टतारीयः | २३ | १० | अश्वचक्रं | २५ | ५ |
| रत्नसुरभूया | ७२ | ११ | क्षौरकिं चिद्विशेषः | २२ | ७ | पारसी | २३ | ११ | गजकृत्यं | २५ | ४ |
| पत्रभोजनचक्रं | ७२ | २ | विद्या रम्भः | २२ | ६ | लिप्यारम्भः | २३ | १२ | सिविकारोहः | २५ | ३ |
| रत्नसुक्कर्म | ७२ | ५ | गणितारम्भः | २२ | २ | रत्नपरीक्षा | २३ | १३ | पल्याण रम्भः | २५ | २ |
| शूरकृत्ये वारफलं | ७२ | ११ | व्याकरण रम्भः | २२ | ३ | प्रित्यकर्म | २३ | १४ | अश्वविशेषकः | २५ | १ |
| क्षौरैलाज्यपत्तिपयः | ७२ | २ | न्यायारम्भः | २२ | ४ | राजदर्शने | २३ | १५ | रथकृत्यं | २५ | ० |
| क्षौरैनिघर्त्ताः | ७२ | ४ | धर्मशास्त्रपुरा- | २२ | | राजसेवा | २३ | १६ | शत्रूणां सन्धिः | २५ | २ |
| क्षौरैनिघेपापवादः | ७२ | ६ | णा रम्भः | २२ | ६ | दासदासी संग्रह | २३ | १७ | मद्यारम्भः | २५ | ३ |
| | ७२ | ६ | वैद्यविद्या गुरुदी- | २२ | | मुद्र कृत्यं | २३ | १८ | माहक वस्तु भक्षणं | २५ | ३ |

सूची पत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|------------------|--------|-------|---------------------|-------|--------|-----------------------|--------|-------|-----------------|
| नवांगनाशोगः | ८७ | ५ | सर्ववस्तु विक्रयः | ८८ | ३ | वृद्धार्थधान्यप्रयोगः | ८९ | ४ | नवान्नचक्रम् |
| नीतचतुल्यास्मः | ८७ | ६ | अथगृहसंश्रमः | ८८ | ५ | गृहार्थधान्यम् | ९० | ६ | कोष्ठादौधान्य- |
| नटक्रिया | ८७ | ७ | स्यादीनां क्रयवि- | ८८ | ६ | हलप्रवाहः | ९० | ७ | स्थापनम् |
| वृक्षत्वारापः | ८७ | ८ | क्रयो | ८८ | ७ | हलवक्रम् | ९० | ८ | वीजसंग्रहः |
| आगमचक्रम् | ८७ | ९ | वाणिज्यम् | ८८ | ८ | वीक्षोक्तिः | ९१ | ९ | तरालज्जुतिर्था |
| नीकावहनम् | ८८ | १० | निधिद्रव्यादिदृष्टि | ८८ | ९ | प्रस्थारोपणः | ९१ | १० | न्यबंधः |
| पशुकृत्यं स्नान | ८८ | ११ | संग्रहो. | ८८ | १० | धान्यच्छेदः | ९१ | ११ | ऊखलमृश्रलो |
| चरहीचक्रम् | ८८ | १२ | अथद्रव्यादीनां गु | ८८ | ११ | कणामर्दनम् | ९१ | १२ | चूर्णमर्दनचक्रं |
| चतुर्भुज्यादिफलं | ८८ | १३ | संस्थाने स्थापनम् | ८८ | १२ | धान्यानयनं | ९१ | १३ | सूर्यचक्रम् |
| अथवनचारिकृत्यं | ८८ | १४ | द्रव्यप्रयोगः | ८८ | १३ | फलपुव्योत्तारणं च | ९१ | १४ | चुल्हीचक्रम् |
| पक्षीकृत्यम् | ८८ | १५ | धान्यविक्रयः | ८८ | १४ | अन्नपाकक्रिया | ९१ | १५ | मार्जनीचक्रम् |
| | ८८ | १६ | ससंग्रहः | ८८ | १५ | नवान्नभीजनम् | ९१ | १६ | गोमयपिंडचक्रं |

सूचीपत्र

| सं.सं. | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ |
|--------------------|-------|--------|-------|--------|----------------------|--------|-------|--------|-------|
| कुंभकार चक्रम् | १०३ | १ | १०५ | १० | कलत्रम् | १०८ | १ | १११ | ४ |
| काष्ठसिल्विकृत्यम् | १०३ | ३ | १०६ | २ | कर्त्तृविशेषिणोप | १०८ | ३ | १११ | १७ |
| स्वर्णकारकृत्यम् | १०३ | ५ | १०६ | ३ | पक्षाः | १०८ | ५ | १११ | २० |
| वर्मकारकृत्यम् | १०३ | ६ | १०६ | ४ | संक्रान्तिर्विहिताभि | १०८ | ६ | १११ | २० |
| लोहस्समलीनकृत्यम् | १०३ | ८ | १०६ | ७ | संक्रान्तिप्रकरणम् | १०८ | ८ | १११ | २० |
| नासिककृत्यम् | १०३ | ८ | १०७ | २५ | वह्याणि | १०८ | ८ | १११ | २० |
| आभीरजन कृत्यम् | १०३ | ११ | १०७ | २१ | भक्ष्याणि | १०८ | ११ | १११ | २० |
| चौरकृत्यम् | १०४ | १ | १०८ | २६ | विलेपनानि | १०८ | १ | १११ | २० |
| प्रेतसङ्गः | १०४ | ३ | १०८ | १० | जातयः | १०८ | ३ | १११ | २० |
| समाहितार्थानां | १०५ | ६ | १०८ | १० | पुण्याणि | १०८ | ६ | १११ | २० |
| वलावली | १०५ | ८ | १०८ | २० | आभरणानि | १०८ | ८ | १११ | २० |
| शुद्धेकादशगणः | १०५ | ८ | १०८ | २६ | माणा | १०८ | ८ | १११ | २० |

सूचीपत्र

[illegible]

सूची पत्र

[illegible]

सूचीपत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|--------------------|--------|-------|----------------|-------|--------|---------------------|--------|-------|--------|
| निःक्रमणम् | १५२ | १० | सौख्येनमलमग्रा | १५० | १० | प्रतिवेदनसन्नाशि | १६० | ४ | १६४ |
| कटिसूत्रं भूयुपवे- | १५३ | ४ | शस्त्रं | १५० | १० | साधारणोनसन्न | १६० | ४ | १६४ |
| यानम् | १५३ | ४ | सौख्येनमलमग्रा | १५० | १० | विशेषः | १६० | ४ | १६४ |
| शान्नप्राशनम् | १५३ | ४ | सौख्येनमलमग्रा | १५० | १० | अतिनिविष्टम् | १६० | ४ | १६४ |
| तांबूलभक्षणम् | १५३ | ४ | सौख्येनमलमग्रा | १५० | १० | अथानाध्यायः | १६० | ४ | १६४ |
| कर्णविधेः | १५३ | ४ | सौख्येनमलमग्रा | १५० | १० | प्रदोयस्त्वत्पत्रम् | १६० | ४ | १६४ |
| शब्दमुहूर्तम् | १५३ | ४ | सौख्येनमलमग्रा | १५० | १० | गलगुहः | १६० | ४ | १६४ |
| चूडाकर्म | १५३ | ४ | सौख्येनमलमग्रा | १५० | १० | लग्नवलस् | १६० | ४ | १६४ |
| शुक्लेश्यास्नानं | १५३ | ४ | सौख्येनमलमग्रा | १५० | १० | केंद्रस्यवेदफलं | १६० | ४ | १६४ |
| गुरुद्वयास्नानम् | १५३ | ४ | सौख्येनमलमग्रा | १५० | १० | व्रतयोगः | १६० | ४ | १६४ |
| दंडोर्वालवृद्धत्वं | १५३ | ४ | सौख्येनमलमग्रा | १५० | १० | चैत्रप्राशस्त्यम् | १६० | ४ | १६४ |
| केतुद्वयम् | १५३ | ४ | सौख्येनमलमग्रा | १५० | १० | मातुःस्त्रीसौख्येवि | १६० | ४ | १६४ |

सूची पत्र

| क्रम | पृष्ठ संकि | पृष्ठ संकि | पृष्ठ संकि | पृष्ठ संकि | पृष्ठ संकि | पृष्ठ संकि | पृष्ठ संकि | पृष्ठ संकि | पृष्ठ संकि | पृष्ठ संकि | पृष्ठ संकि |
|------------------|------------|------------|--------------------|------------|------------|-------------------|------------|------------|-----------------------|------------|------------|
| नमः | २६५ | ३ | गणदोषापवादः | २७० | २ | त्रिविधोचिययोगः | २७४ | १ | विशेषः | २७५ | १० |
| विवाहेदणविधौ | २६६ | ३ | राशि कूटम् | २७० | ५ | सद्यद्वितीयेविययो | २७४ | २ | गुरु रवि चंद्र बल | २७६ | ५ |
| लनं | २६६ | ६ | कूटापवादः | २७० | ८ | तृतीयो विधयोगः | २७४ | ४ | कन्या वरयोर्गुस्त्वलं | २७६ | ७ |
| अथ जंजुजाप्रीतिः | २६६ | ८ | नाडी भुद्धिः | २७१ | ३ | कन्या दोषापवादः | २७४ | ५ | कन्याया विशेषः | २७७ | ४ |
| वर्गप्रीतिः | २६७ | ३ | नाडी दोषापवादः | २७१ | ८ | जन्म कलिक सुषु | २७४ | ७ | पुनर्विशेषः | २७७ | ६ |
| वर्गप्रीतिः | २६७ | ७ | एकमेव विविधोक्तः | २७१ | ९ | नक्षत्रफलम् | २७४ | ९ | वरस्य रचिवलं | २७७ | १० |
| वस्यप्रीतिः | २६८ | १ | नाडी निययो विशेषः | २७१ | ११ | आस्यापवादः | २७४ | ८ | कालातिक्रान्ते वि- | २७८ | ३ |
| नागसेत्री | २६८ | ३ | नाड्यादि संघिदाना- | २७३ | ३ | वाग्दानम् | २७४ | १० | शेषः | २७८ | ३ |
| योनिसेत्री | २६८ | ८ | नि | २७३ | ७ | जन्म भगवत्संयोगः | २७४ | १ | जन्म भासादि हो- | २७८ | ३ |
| गृहसेत्री | २६८ | ९ | वरयादि गुणः | २७३ | ९ | धानता | २७४ | १ | घापवादः | २७८ | ३ |
| मेत्रीफलम् | २६९ | ७ | जन्म कालिक सो- | २७३ | ९ | विवाहे संवत्सरम् | २७४ | ८ | किंचिनामेविशेषः | २७८ | १० |
| गणसेत्री | २६९ | ७ | संज्ञेयः | २७३ | ९ | द्विः विशेषः | २७४ | ८ | विवाहे शुभ भासा- | २७८ | ११ |

सूची पत्र

| विषय | पृष्ठ | पंक्ति | सतस्यचक्रम् | पृष्ठ | पंक्ति | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | पृष्ठ | पंक्ति | संख्या | प्रदाग्रहाः | पृष्ठ | पंक्ति |
|------------------------|-------|--------|------------------|-------|--------|--------|--------------------|-------|--------|--------|-------------|-------|--------|
| विषयविचार- सूत्राणि | २८० | ७ | अथोपग्रहदोषः | २८३ | ४ | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | २८६ | ८ | २ | संख्या | २८६ | ७ |
| दशगणदोषाः | २८० | ११ | क्रांतिरास्यदोषः | २८६ | ४ | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | २८६ | ८ | २ | संख्या | २८६ | ७ |
| लजा - - - | २८१ | ३ | दशदोषः | २८६ | ४ | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | २८६ | ८ | २ | संख्या | २८६ | ७ |
| पातः - - - | २८१ | ८ | अथदोषः | २८६ | ४ | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | २८६ | ८ | २ | संख्या | २८६ | ७ |
| युतिदोषः - - | २८२ | २ | दशदोषः | २८६ | ४ | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | २८६ | ८ | २ | संख्या | २८६ | ७ |
| वेधः - - - | २८२ | ५ | यमपदयोगः | २८६ | ४ | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | २८६ | ८ | २ | संख्या | २८६ | ७ |
| यामिनिः | २८३ | ६ | कर्त्तरीदोषः | २८६ | ४ | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | २८६ | ८ | २ | संख्या | २८६ | ७ |
| सुधपंचकम् | २८३ | १० | महाकर्त्तरी - - | २८६ | ४ | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | २८६ | ८ | २ | संख्या | २८६ | ७ |
| सुक्ष्माण्पंचकं | २८४ | ३ | दोषापवादः - | २८६ | ४ | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | २८६ | ८ | २ | संख्या | २८६ | ७ |
| एकांगिणदोषः | २८४ | १० | अथापरोदोषः - | २८६ | ४ | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | २८६ | ८ | २ | संख्या | २८६ | ७ |
| सतस्योदाहरणं | २८५ | १ | महाकर्त्तरी | २८६ | ४ | चक्रम् | तिथिविविधनाडीचक्रं | २८६ | ८ | २ | संख्या | २८६ | ७ |

सुन्धी पत्र

[illegible]

सूचीपत्र.

| पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति |
|---------------------|--------------|--------------|--------------------|--------------|--------------|-------------------|--------------|--------------|--------------|---------------------|--------------|--------------|
| अपरस्त्रिकूलपरिहार | २१२ | ४ | वर्णास्वरः-- | २१४ | ८ | घातस्रोणि | -- | २१० | ५ | ग्रहणां घातचक्रं | २१२ | ५ |
| समयविशेषेत्याज्या | | | तिथिस्वरः-- | २१५ | ९ | घातवारः-- | -- | २१० | ८ | घातगुरुः-- | २१३ | २ |
| निभानि -- | २१२ | ११ | पथिराहुचक्रम् | २१५ | ४ | घाततिथयः-- | -- | २१० | ११ | घातशुक्रः-- | २१३ | ३ |
| सर्वकालेनेष्टनस्त्र | | | तिथिचक्रंगोरस्यमते | | | घाततिथीर्नात्या | | | | घातशनिः-- | २१३ | ४ |
| नालि | २१३ | ४ | न-- | २१६ | २ | ज्यघत्तः-- | -- | २११ | २ | स्त्रीणां घातचंद्रः | २१३ | ६ |
| युद्धयानायांविशेषः | २१३ | ५ | सवकियोगः-- | २१८ | २ | घातचंद्रेनस्त्रपा | | | | चंद्रवासिलोकत्रये | २१३ | ७ |
| जीवभूतपक्षौ | २१३ | ६ | आहलश्रमौ-- | २१८ | ५ | दाष्ट्याज्यः-- | -- | २११ | ५ | चंद्रांगवास्तुः-- | २१६ | ३ |
| शयांकुलकुलकुली | | | प्रशस्तीहैरवः-- | २१८ | ८ | घातसूर्यः-- | -- | २११ | १० | सन्मुखचंद्रफलं | २१४ | ७ |
| कुलगणाः | २१३ | ११ | घवाडयोगः-- | २१८ | ११ | घातचंद्रः-- | -- | २११ | ११ | तत्कालचन्द्रोद | | |
| आदीअकुलम् | २१४ | १ | देलकयोगः-- | २१८ | २ | घातभौमः-- | -- | २१२ | २ | हिंसु | २१५ | ४ |
| कुलगणाः | २१४ | ३ | गौरवयोगः-- | २१८ | ३ | घातबुधः-- | -- | २१२ | ३ | योगिनीवासः | | |
| कुलीकुलगणाः | २१४ | ६ | घातचंद्रः-- | २१८ | ६ | सर्वघातचक्रं | | २१२ | ५ | फलत्रय | २१५ | ८ |

सूची पत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|----------------------|--------|-------|---------------------|-------|--------|-------------------|--------|-------|--------------------|-------|--------|
| नत्कालयोगिनी | २२६ | ५ | शुक्रदोषापवादः | २२६ | २ | दिगासयः | २२६ | ५ | संज्ञा | २२७ | २० |
| कालपाशो | २२६ | ६ | शुक्रास्त्रादिदोषः | २२६ | ५ | दिगीशः | २२६ | ८ | हृदयमावफलं | २२६ | १ |
| ग्रामार्द्धराहुः | २२७ | २ | बुधोः पितृमृतव | २२७ | ८ | ललाटीस्वष्टम् | २२७ | ११ | योगप्रशंसायात्राया | २२७ | १ |
| मुहूर्त्तौत्तमकराहुः | २२७ | ४ | स्त्याज्यः | २२७ | ८ | कालप्राशस्त्यं स- | २२७ | १० | प्राथम्ययोगयात्रा | २२७ | ५ |
| राहोफलम् | २२७ | ६ | शुक्रदोषाभावः सा- | २२७ | ८ | वीभावः | २२७ | १० | समरयात्रा | २२७ | १ |
| परिघदंडः | २२७ | ८ | मान्येन | २२७ | ८ | सजीवलिङ्गीवकाश | २२७ | ३ | राधायादिपाल | २२७ | १ |
| आनयकैपरिघोऽ | २२७ | ११ | तीर्थयात्रायां दोषा | २२७ | ११ | यान्नाम | २२७ | ८ | प्रशंसा | २२७ | १ |
| स्वर्णं | २२७ | ११ | भावः | २२७ | ११ | यात्रावाहनम् | २२७ | ८ | मध्याह्ने विप्रेयः | २२७ | ६ |
| वक्रगृहस्य वारादि | २२७ | ११ | गुरुशुक्रवृथास्ते | २२७ | ११ | फलं च | २२७ | ८ | छायावलयात्रा | २२७ | २ |
| स्त्याज्यं | २२७ | ४ | विवेकः | २२७ | ४ | यान्नादृशा | २२७ | ८ | विजयशान्तायात्रा | २२७ | ८ |
| अपनानुकूलम् | २२७ | ६ | लभविचारश्च गु | २२७ | ६ | अष्टानिष्टगुहः | २२७ | ८ | शस्त्यं | २२७ | ८ |
| त्रिविधः शुक्रः | २२७ | ११ | आनिशुभलभानि | २२७ | ११ | लभान्नाद्वादीनां | २२७ | ८ | नत्कालपंचांगम् | २२७ | २० |

सूचीपत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|
| २५१ | १ | २५१ | २ | २५१ | ३ | २५१ | ४ | २५१ | ५ |
| २५२ | ५ | २५२ | ६ | २५२ | ७ | २५२ | ८ | २५२ | ९ |
| २५३ | १० | २५३ | ११ | २५३ | १२ | २५३ | १३ | २५३ | १४ |
| २५४ | १५ | २५४ | १६ | २५४ | १७ | २५४ | १८ | २५४ | १९ |
| २५५ | २० | २५५ | २१ | २५५ | २२ | २५५ | २३ | २५५ | २४ |
| २५६ | २५ | २५६ | २६ | २५६ | २७ | २५६ | २८ | २५६ | २९ |
| २५७ | ३० | २५७ | ३१ | २५७ | ३२ | २५७ | ३३ | २५७ | ३४ |
| २५८ | ३५ | २५८ | ३६ | २५८ | ३७ | २५८ | ३८ | २५८ | ३९ |
| २५९ | ४० | २५९ | ४१ | २५९ | ४२ | २५९ | ४३ | २५९ | ४४ |
| २६० | ४५ | २६० | ४६ | २६० | ४७ | २६० | ४८ | २६० | ४९ |
| २६१ | ५० | २६१ | ५१ | २६१ | ५२ | २६१ | ५३ | २६१ | ५४ |
| २६२ | ५५ | २६२ | ५६ | २६२ | ५७ | २६२ | ५८ | २६२ | ५९ |
| २६३ | ६० | २६३ | ६१ | २६३ | ६२ | २६३ | ६३ | २६३ | ६४ |
| २६४ | ६५ | २६४ | ६६ | २६४ | ६७ | २६४ | ६८ | २६४ | ६९ |
| २६५ | ७० | २६५ | ७१ | २६५ | ७२ | २६५ | ७३ | २६५ | ७४ |
| २६६ | ७५ | २६६ | ७६ | २६६ | ७७ | २६६ | ७८ | २६६ | ७९ |
| २६७ | ८० | २६७ | ८१ | २६७ | ८२ | २६७ | ८३ | २६७ | ८४ |
| २६८ | ८५ | २६८ | ८६ | २६८ | ८७ | २६८ | ८८ | २६८ | ८९ |
| २६९ | ९० | २६९ | ९१ | २६९ | ९२ | २६९ | ९३ | २६९ | ९४ |
| २७० | ९५ | २७० | ९६ | २७० | ९७ | २७० | ९८ | २७० | ९९ |
| २७१ | १०० | २७१ | १०१ | २७१ | १०२ | २७१ | १०३ | २७१ | १०४ |
| २७२ | १०५ | २७२ | १०६ | २७२ | १०७ | २७२ | १०८ | २७२ | १०९ |
| २७३ | ११० | २७३ | १११ | २७३ | ११२ | २७३ | ११३ | २७३ | ११४ |
| २७४ | ११५ | २७४ | ११६ | २७४ | ११७ | २७४ | ११८ | २७४ | ११९ |
| २७५ | १२० | २७५ | १२१ | २७५ | १२२ | २७५ | १२३ | २७५ | १२४ |
| २७६ | १२५ | २७६ | १२६ | २७६ | १२७ | २७६ | १२८ | २७६ | १२९ |
| २७७ | १३० | २७७ | १३१ | २७७ | १३२ | २७७ | १३३ | २७७ | १३४ |
| २७८ | १३५ | २७८ | १३६ | २७८ | १३७ | २७८ | १३८ | २७८ | १३९ |
| २७९ | १४० | २७९ | १४१ | २७९ | १४२ | २७९ | १४३ | २७९ | १४४ |
| २८० | १४५ | २८० | १४६ | २८० | १४७ | २८० | १४८ | २८० | १४९ |
| २८१ | १५० | २८१ | १५१ | २८१ | १५२ | २८१ | १५३ | २८१ | १५४ |
| २८२ | १५५ | २८२ | १५६ | २८२ | १५७ | २८२ | १५८ | २८२ | १५९ |
| २८३ | १६० | २८३ | १६१ | २८३ | १६२ | २८३ | १६३ | २८३ | १६४ |
| २८४ | १६५ | २८४ | १६६ | २८४ | १६७ | २८४ | १६८ | २८४ | १६९ |
| २८५ | १७० | २८५ | १७१ | २८५ | १७२ | २८५ | १७३ | २८५ | १७४ |
| २८६ | १७५ | २८६ | १७६ | २८६ | १७७ | २८६ | १७८ | २८६ | १७९ |
| २८७ | १८० | २८७ | १८१ | २८७ | १८२ | २८७ | १८३ | २८७ | १८४ |
| २८८ | १८५ | २८८ | १८६ | २८८ | १८७ | २८८ | १८८ | २८८ | १८९ |
| २८९ | १९० | २८९ | १९१ | २८९ | १९२ | २८९ | १९३ | २८९ | १९४ |
| २९० | १९५ | २९० | १९६ | २९० | १९७ | २९० | १९८ | २९० | १९९ |
| २९१ | २०० | २९१ | २०१ | २९१ | २०२ | २९१ | २०३ | २९१ | २०४ |
| २९२ | २०५ | २९२ | २०६ | २९२ | २०७ | २९२ | २०८ | २९२ | २०९ |
| २९३ | २१० | २९३ | २११ | २९३ | २१२ | २९३ | २१३ | २९३ | २१४ |
| २९४ | २१५ | २९४ | २१६ | २९४ | २१७ | २९४ | २१८ | २९४ | २१९ |
| २९५ | २२० | २९५ | २२१ | २९५ | २२२ | २९५ | २२३ | २९५ | २२४ |
| २९६ | २२५ | २९६ | २२६ | २९६ | २२७ | २९६ | २२८ | २९६ | २२९ |
| २९७ | २३० | २९७ | २३१ | २९७ | २३२ | २९७ | २३३ | २९७ | २३४ |
| २९८ | २३५ | २९८ | २३६ | २९८ | २३७ | २९८ | २३८ | २९८ | २३९ |
| २९९ | २४० | २९९ | २४१ | २९९ | २४२ | २९९ | २४३ | २९९ | २४४ |
| ३०० | २४५ | ३०० | २४६ | ३०० | २४७ | ३०० | २४८ | ३०० | २४९ |

सूची पत्र

| पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति | पृष्ठ पंक्ति |
|-------------------|--------------|--------------|-------------------|--------------|--------------|------------------|--------------|--------------|------------------|--------------|--------------|
| दुःशकुनाः -- | २७६ | ६ | त्याज्यस्येयगता | २७६ | ६ | नामएधिप्राधा- | २७७ | ३ | मूःधनं दृढी | २७९ | २१ |
| महापशकुनानि | २७७ | ७ | संग्रहः -- | २७७ | ७ | न्यम् -- | २७७ | ३ | कराणं -- | २७९ | २१ |
| दुस्सकुन त्यागः | २७८ | ८ | द्यूतशकुनम् | २७८ | ८ | एशीनां ग्रामवा- | २७८ | ३ | समभूयोदिक | २७९ | २१ |
| दक्षिणभागेऽपुमा | २७९ | ९ | द्युतेस्वरवलम् | २७९ | ९ | सेफलम् -- | २७९ | ३ | प्रोधनं -- | २७९ | २१ |
| तेव्यपि विशेषः -- | २८० | १० | यात्रानिद्वितीया | २८० | १० | ग्रामचक्रम् -- | २८० | ३ | गृहस्थायाः | २८० | २० |
| युनश्चैव्याशकुनं | २८१ | ११ | ह प्रवेशः -- | २८१ | ११ | वर्गमैत्री -- | २८१ | ३ | आयानां त्रयो- | २८१ | २० |
| प्रवेशे शकुनः -- | २८२ | १२ | प्रवेशे किंचिन्नि | २८२ | १२ | काकिणी -- | २८२ | ३ | जनम् -- | २८२ | २० |
| शयशकुनानां काल | २८३ | १३ | वेधः -- | २८३ | १३ | दिक्परक एशिः | २८३ | ३ | आरंभे निवेधः | २८३ | २० |
| विशेषे नैवल्य | २८४ | १४ | लग्नवलम् | २८४ | १४ | दृशा विचारः -- | २८४ | ३ | क्षेत्रफलानयनं | २८४ | २० |
| माह -- | २८५ | १५ | द्वत्येकोनविंशति | २८५ | १५ | दृशाफलम् -- | २८५ | ३ | दृष्टक्षेत्रोधनं | २८५ | २० |
| चायोऽपुमाऽपुम | २८६ | १६ | काप्रभासमाप्ता | २८६ | १६ | भूमि विचारः -- | २८६ | ३ | दीर्घविस्तृतिना | २८६ | २० |
| शकुनम् -- | २८७ | १७ | शयवास्तुप्रकारां | २८७ | १७ | प्रत्यक्षानम् -- | २८७ | ३ | मे | २८७ | २० |

| सं.सं. | सूची पत्र | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|--------|--------------------|-------|--------|-----------------|--------|-------|---------------------|
| २३ | रूपः -- -- | ३०६ | ४ | गृहसमीपेऽन्यथा | ३१२ | १ | देवालयमहाधारं |
| | सूरस्योच्चता | ३०६ | ६ | हफलम् -- -- | ३१२ | १ | मः -- -- -- |
| | नीलोच्चता | ३०६ | ७ | गृहगणेशुभहस्तः | ३१२ | ४ | जेन्यालयप्रपाद |
| | हारादीवधिविचारः | ३०६ | १० | गृहस्वतितिरिगिच | ३१२ | ७ | रीणा मारंभः -- |
| | विधापवादः -- -- | ३०६ | ११ | सा रोपः -- -- | ३१२ | ७ | कूपखनचप्रदेशः |
| | वेधफलम् -- -- | ३१० | १ | गृहगणेशुभ | ३१२ | ७ | जलाश्यांभः -- |
| | अंधांगणज्ञानम् | ३१० | ४ | दृष्टाः -- -- | ३१२ | ८ | क्षपांभेवारफलं |
| | सुवविचारः | ३१० | ११ | सगणो सर्वदृष्टा | ३१२ | १० | रोहिण्युसात्कूप |
| | पौंड्रशुगृहनिर्मा- | ३१० | ११ | नियिष्टः -- -- | ३१२ | १० | चक्रम् -- -- |
| | रामम् -- -- | ३११ | १ | पुरगणमप्राकार | ३१२ | १० | भौमभात्कूपचक्रं |
| | चित्रारंभः | ३११ | ६ | दीनानिर्मोणस | ३१२ | १० | सूर्यभात्कूपचक्रं |
| | गुल्मीस्थापनम् | ३११ | ८ | त्रसाधनम् -- | ३१२ | १० | एहभात्कूपचक्रम् |
| | | | | | | | जलज्ञानम् |
| | | | | | | | कूपे निर्भरविचारः |
| | | | | | | | कूपचक्रम् चतुष्टयम् |
| | | | | | | | नेवारचक्रम् -- |
| | | | | | | | दृष्टिकारंभः सु- |
| | | | | | | | धालेपः -- -- |
| | | | | | | | दृष्टिकाचक्रम् |
| | | | | | | | दृष्टिकायामग्नित |
| | | | | | | | दानं -- -- |
| | | | | | | | तडागचक्रम् |
| | | | | | | | दूनिविंशतिप्र |
| | | | | | | | भासमाप्ता |

| सूचीपत्र | पृष्ठ | पंक्ति | ग्रन्थः | पृष्ठ | पंक्ति | ग्रन्थः | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|---------------------|-------|--------|---------------------|-------|--------|-------------------|-------|--------|-------|--------|
| मुद्रैः अथ लक्षणम् | ३३३ | ८ | ग्रन्थः व्युत्पाताः | ३४३ | ४ | अन्ये व्युत्पाताः | ३४६ | ६ | ३४६ | ५ |
| अथ पुरुष प्रकाशः | ३३३ | १० | निर्घातस्वरूपम् | ३४३ | ८ | उत्पातस्योपापवादः | ३४७ | ८ | ३४६ | ८ |
| स्वप्न वदनिम् | ३३४ | ८ | उत्कालक्षणम् | ३४४ | ८ | उत्पातानामुपहारः | ३४७ | ४ | ३४६ | १० |
| सुभफलदाः स्वप्नाः | ३३४ | ११ | दिग्दहफलम् | ३४४ | ५ | इत्युत्पाताः | ३४७ | ८ | ३४६ | ८ |
| अथुम स्वप्नाः | ३३६ | ८ | भूकंपफलम् | ३४४ | ८ | महर्षिकाण्डम् | ३४७ | ८ | ३४७ | ८ |
| स्वप्नफलदाच्यवस्था | ३३६ | ५ | रज्ज्विच्छिन्नाः | ३४५ | १ | वर्षराजादिविचारः | ३४७ | ८ | ३४७ | ८ |
| दुष्टस्वप्न शान्तिः | ३३६ | ६ | गंधर्वनगरांतक | ३४६ | १ | विशेषकापनयनम् | ३४८ | १ | ३४७ | ५ |
| वायोत्पाताः | ३३६ | १० | स्तम्भः | ३४५ | ५ | क्षुधाधानयनम् | ३४८ | ४ | ३४७ | ५ |
| उत्पातानां संग्रहः | ३४० | १ | सखा मुत्पातानां | ३४५ | १ | अन्यत्वायनम् | ३४८ | ७ | ३४७ | ७ |
| उत्पातज्ञानाय च | ३४० | २ | फलसमयः | ३४५ | ७ | शलिगच्छानयनम् | ३४८ | १० | ३४७ | १० |
| बुद्धिधर्मद्वयानि | ३४० | ३ | दृष्टिविभक्तिः | ३४५ | ८ | मुनिरनभवा | ३४८ | १ | ३४७ | १० |
| कौतवः | ३४० | ६ | पक्षीशृङ्गादिवि | ३४६ | ८ | उद्भिदादि | ३४८ | ३ | ३४७ | १० |

सूची पत्र

| | | | | | | | | | | | |
|------------------------|-----|----|--------------------|-----|---|-----------------------|-----|----|--------------------|-----|----|
| योग फलम् | ३५२ | ५ | प्रतिगणेशो गहोदय | ३५२ | २ | समर्घमहर्षी संक्रा | ३६० | २ | हानुष्टिः | ३६२ | १ |
| ज्येष्ठप्रतिपदादियोगः | ३५२ | ८ | फलं --- | ३५६ | २ | तितः --- | ३६० | २ | अपरचवर्गमज्ञानं | ३६२ | ५ |
| आथाद्वितीयादियोगः | ३५२ | १० | नक्षत्रस्थगहान्म | ३५६ | ८ | वृक्षादौ पत्रपुयफ | ३६० | ७ | वृष्टिज्ञानं च --- | ३६२ | ५ |
| प्रतिपदा फलम् | ३५२ | १ | हर्षज्ञानं --- | ३५६ | ८ | लाघौः --- | ३६० | ७ | अपरक्रमः --- | ३६२ | ७ |
| वृषर्मचक्रं गने ज्ञाना | ३५२ | ४ | एकमासे पंचवार | ३५६ | ८ | धान्यनिःपतिज्ञा | ३६० | ११ | ज्येष्ठपुलाह | ३६२ | ११ |
| य --- | ३५२ | ४ | फलं --- | ३५६ | ८ | नम् --- | ३६० | ११ | स्याद्विहनिचनु | ३६२ | ११ |
| गहवारवर्णान्महर्षी | ३५२ | ४ | चंद्रशृंगो जतिफ | ३५६ | ८ | इति समर्घज्ञानम् | ३६० | ११ | वृष्टे वायुफलम् | ३६२ | ११ |
| दि --- | ३५२ | ४ | लम् --- | ३५६ | ८ | अथ वृष्टिज्ञानम् | ३६० | ११ | स्वात्यादियुष्ट्यो | ३६२ | ११ |
| आवादी पूर्णा विचारः | ३५२ | ५ | प्रतिमासं संक्राति | ३५६ | ८ | मेघगर्भनिचारः --- | ३६० | ११ | आवराणादावगा | ३६२ | ११ |
| प्रतिमासे दर्शफलम् | ३५२ | ५ | तो महर्षी --- | ३५६ | ८ | गर्भलिखणम् --- | ३६० | ११ | वृष्टिः --- | ३६२ | ११ |
| सर्ववत्सुनां महर्षी | ३५२ | ५ | ग्रेष्मशरदधान्य | ३५६ | ८ | गर्भहिना वृष्टिज्ञानं | ३६० | ११ | आयादप्रुल्लहि | ३६२ | ११ |
| ज्ञानं --- | ३५२ | १० | निःपत्तिः --- | ३५६ | ८ | प्रकारोत्तरागर्भा | ३६० | ११ | तीयादिनिचनुष्ट | ३६२ | ११ |

| | पृष्ठ | पंक्ति | | पृष्ठ | पंक्ति | सूचीयत्र | पृष्ठ | पंक्ति | | पृष्ठ | पंक्ति | | पृष्ठ | पंक्ति |
|--------------------|-------|--------|---------------------|-------|--------|-------------------|-------|--------|------------------|-------|--------|--|-------|--------|
| यफलम् | ३६३ | ३ | ज्ञानम् | ३६८ | १ | उपश्रुतिनञः | ३७२ | १० | सामुद्रिकपरिक्षा | ३७७ | ८ | | | |
| आवराशुक्तपंचमी | ३६३ | ३ | साद्दिनसूत्रं | ३६८ | १ | उपश्रुतिवासः | ३७३ | ६ | स्त्रीएणंविशेषः | ३७६ | १० | | | |
| फलम् | ३६३ | ३ | प्रवेशपुंलीनपुंल | ३६८ | १ | रघुयंशगदृशकु- | ३७३ | ८ | स्त्रीयांशुभचि- | ३७६ | १० | | | |
| सूर्यस्वरत्नाहिमे | ३६३ | ३ | कज्ञानम् | ३६८ | १ | नाः | ३७३ | ८ | न्हानि | ३७६ | १० | | | |
| शुद्धिफलम् | ३६३ | ३ | सूर्यस्वचंद्रदीप्तौ | ३६८ | १ | अंगनिद्याग्रन्थः | ३७३ | ८ | सानान्यतश्रुभ | ३७६ | १० | | | |
| संक्रांतौवृष्टिफलं | ३६३ | ३ | वृष्टिज्ञानम् | ३६८ | १ | सर्वग्रन्थनिर्णयः | ३७३ | ८ | लक्षणं | ३७६ | १० | | | |
| काकनीडफलम् | ३६३ | ३ | आढकप्रमाणम् | ३६८ | १ | नक्षत्रग्रन्थः | ३७३ | ८ | स्त्रीपुंसोरुभ | ३७६ | १० | | | |
| हिडिभांडफलम् | ३६३ | ३ | रविनक्षत्रवाहनं | ३६८ | १ | गुराग्रन्थः | ३७३ | ८ | व्यापारः | ३७६ | १० | | | |
| रोहिणीचक्रम् | ३६३ | ३ | सद्योवृष्टिज्ञानं | ३६८ | १ | आगतुकग्रन्थः | ३७३ | ८ | इतित्रयोविंश | ३७६ | १० | | | |
| सप्तमाडीचक्रम् | ३६३ | ३ | याकाले | ३६८ | १ | गर्भिणीग्रन्थः | ३७३ | ८ | तिप्रभापूणा | ३७६ | १० | | | |
| माडीस्वग्रहफलं | ३६३ | ३ | इतिवृष्टिकांडः | ३६८ | १ | नष्टपशुलाभग्र | ३७३ | ८ | अथतिथिनिर्ण | ३७६ | १० | | | |
| ग्रहयोगवशाद्वृष्टि | ३६३ | ३ | उपश्रुतिशकुनां | ३६८ | १ | श्रुः | ३७३ | ८ | मप्रकरणम् | ३७६ | १० | | | |

[illegible]

| | एट | पंक्ति | | एट | पंक्ति | | एट | पंक्ति | | एट | पंक्ति |
|----------------------|-----|--------|------------------------|-----|--------|-----------------------|-----|--------|--------------------|-----|--------|
| पूज्यता माह | ४०४ | २ | चैत्र शुक्ल द्वितीया | ४०४ | ५ | चैत्र शुक्ल चतुर्थी | ४१५ | १ | धरती निरायः | ४१६ | १२ |
| अथ प्रतिपत्तिर्षयः | ४०४ | ६ | प्रावण हल द्वितीया | ४०६ | ७ | ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी | ४१५ | ३ | आपाट शुक्ल पथी | ४१६ | ११ |
| चैत्र शुक्ल प्रतिपत् | | | कार्तिक शुक्ल द्वितीया | ४०६ | १० | प्रावण हल चतुर्थी | ४१५ | ५ | आद्र शुक्ल धरती | ४१६ | १० |
| संनारंभः | ४०५ | ६ | तृतीया निरर्षयः | ४१० | ११ | आद्र शुक्ल चतुर्थी | | | हल धरती | ४११ | १ |
| चैत्र शुक्ल प्रतिपदि | | | चैत्र शुक्ल तृतीया | ४११ | ७ | चंद्र दर्शने निधि | ४१५ | ८ | आश्विन शुक्ल पथी | ४११ | १ |
| वत्सरंभः | ४०५ | ११ | वैशाख शुक्ल अक्ष | | | माघ शुक्ल चतुर्थी | ४१६ | १० | कार्तिक शुक्ल पथी | ४११ | ५ |
| ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिप | | | यत्तृतीया | ४११ | ८ | अथ पंचमी | ४१७ | ५ | मार्गशिर शुक्ल पथी | ४११ | ८ |
| निर्दशहरंभः | ४०६ | ३ | ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया | ४१३ | ५ | चैत्र शुक्ल पंचमी | ४१७ | ७ | अथ सप्तमी | ४११ | १ |
| आश्विन शुक्ल प्रति | | | आद्र शुक्ल तृतीया | | | प्रावण शुक्ल पंचमी | ४१७ | ११ | चैत्र शुक्ल सप्तमी | | |
| पदिनवरात्रारंभः | ४०६ | ४ | हरिनालिका | ४१४ | १ | आद्र शुक्ल पंचमी | ४१८ | ४ | सूर्य पूजा | ४११ | ७ |
| कार्तिक शुक्ल प्रतिप | | | माघ शुक्ल तृतीया | ४१४ | ८ | आश्विन शुक्ल पंचमी | ४१८ | १० | वैशाख शुक्ल सप्त | | |
| न द्वितीया निरर्षयः | ४०६ | ४ | अथ चतुर्थी | ४१४ | १० | माघ शुक्ल पंचमी | ४१८ | ३ | व्यांगंगा पूजा | ४११ | ८ |

[illegible]

| पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|-------------------|--------|----------------------|--------|---------------------|--------|-------------------|--------|-------|--------|
| वैलव स्वल्पम् | ४४८ | अनाकरोप्रायश्चित्तम् | ४४८ | लादिनिवेधः | ४४९ | चैत्रैकादशी | ४४९ | ५ | |
| वैलवैकादशीमाध | ४४९ | काम्यघनविधिः | ४४९ | सकादश्यासंकल्पम् | ४४९ | ज्येष्ठशुक्लेकाद- | ४४९ | | |
| वयनेन | ४५० | दशम्यांविधिः | ४५० | द्वादश्यानिवेदनं | ४५० | श्रीनिज्जिला- | ४५० | | |
| निरस्यसंग्रहः | ४५० | अतश्चानि | ४५० | द्वादश्यांतुलसीप्रा | ४५० | हरिप्रयनीत्राया | ४५० | | |
| सार्धैकादशी | ४५० | अशक्तौ | ४५० | त्रास्यं | ४५० | दुग्धल्लैकादशी | ४५० | | |
| हेमाद्रिनेतेकादशी | ४५० | नियमसंगेप्राप्तम् | ४५० | द्वादश्यावज्ज्यानि | ४५० | भाद्रैकादशीपरि | ४५० | | |
| बहुवाक्यविरोधेनि | ४५१ | श्रितम् | ४५१ | गारुणेविशेषः | ४५१ | वर्तिनी | ४५१ | | |
| सायः | ४५१ | सकादश्यांप्राप्तम् | ४५१ | द्वादश्यांनिविद्या | ४५१ | कार्तिकैकादशी | ४५१ | | |
| दशम्यामेवमोजनम् | ४५२ | प्राप्तौ | ४५२ | चरणेप्रायश्चित्तम् | ४५२ | सत्यापनी | ४५२ | | |
| सकादश्यापुषासाधि | ४५२ | आजनेभानि | ४५२ | अश्लीचे | ४५२ | फाल्गुनेकादशी | ४५२ | | |
| गारी | ४५३ | प्रयनीवीधिनीक | ४५३ | रजोदरीने | ४५३ | आमर्दकी | ४५३ | | |
| उपवासासामर्थ्य | ४५३ | | ४५३ | अवलाहदशी | ४५३ | अथ दशरथेनिर्या | ४५३ | | |

| पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति | पृष्ठ | पंक्ति |
|----------------------|--------|-------|----------------------|-------|--------|--------------------|--------|-------|----------------------|-------|--------|
| चैत्रशुक्लद्वादशी | ४६३ | २० | चैत्रशुक्लचतुर्दशी | ४६८ | २० | वैशाखपूर्णिमा | ४७८ | ३ | अमावस्यानिर्गणः | ४८८ | ३ |
| आषाढशुक्लद्वादशी | ४६३ | २१ | वैशाखशुक्लचतुर्दशी | ४७० | २१ | ज्येष्ठपूर्णिमा | ४७८ | ६ | ज्येष्ठमायावदसप्तमि | ४८८ | ९ |
| आवणशुक्लद्वादशी | ४६६ | २ | ज्येष्ठशुक्लचतुर्दशी | ४७१ | २ | आषाढपूर्णिमा | ४७८ | ८ | भाद्रमायांकुलमहः | ४८० | २ |
| भाद्रशुक्लद्वादशी | ४६६ | ६ | भाद्रशुक्लचतुर्दशी | ४७१ | ४ | आवणीपूर्णिमा | ४७८ | ८ | कार्तिकषमादिपमा | ४८१ | ४ |
| कार्तिकद्वादशी | ४६६ | ७ | कार्तिकशुक्लचतुर्दशी | ४७२ | ४ | उपाकर्म | ४७८ | १० | साचीअमावास्या | ४८१ | ११ |
| माघशुक्लद्वादशी | ४६६ | ८ | कार्तिकशुक्लचतुर्दशी | ४७४ | ५ | भाद्रीपूर्णा | ४७८ | ५ | अत्रैवाहोदययोगः | ४८३ | ४ |
| अथत्रयोदशीनिर्गणः | ४६६ | ९ | मार्गशुक्लचतुर्दशी | ४७४ | ८ | आश्विनपूर्णा | ४७८ | ८ | आहोऽमा निर्गणः | ४८४ | ६ |
| चैत्रशुक्लत्रयोदशी | ४६७ | १० | माघशुक्लचतुर्दशी | ४७४ | ८ | कार्तिकीपूर्णा | ४७८ | ८ | मलाभारेवर्ष्यनिर्गणः | ४८५ | ५ |
| भाद्रशुक्लत्रयोदशी | ४६७ | २१ | फाल्गुनशुक्लचतुर्दशी | ४७५ | ८ | मार्गशिखीपूर्णा | ४७८ | ११ | मत्स्यनिर्गणः | ४८७ | ६ |
| कार्तिकशुक्लत्रयोदशी | ४६८ | २० | शिवरात्रिपालाविषये | ४७५ | ८ | पौषीपूर्णा | ४७८ | ४ | महारायोगविषये | ४८८ | २ |
| कार्तिकशुक्लत्रयोदशी | ४६८ | २ | अथपूर्णिमानिर्गणः | ४७५ | ६ | साचीपूर्णा | ४७८ | ५ | इतिश्रीसंग्रहः | ४८८ | २ |
| अथचतुर्दशी | ४६८ | ८ | चैत्रपूर्णिमा | ४७७ | ८ | फाल्गुनीपूर्णाहेला | ४७८ | ११ | गोमतिरसुखी- | ४८८ | १० |

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ ॐ गुरु चरण कमले भ्यो नमः ॥ अथ संपत्त शिरो
 मणि प्रारंभः ॥ श्रीचणो प्वेत वर्णभां वाग्दानं चतुरं धिवा म् ॥ गणेश सहितं वंदे व
 न्दनीय पदां वुजाम् ॥ १ ॥ श्री ज्योतिषं सुभांस्वतं जगद्धेतुं जगन्मयम् ॥ तं नो मि नमनी
 यं धिं गुरु मूर्तिं न्दिवा करम् ॥ २ ॥ अस्य शास्त्रस्य संबंधो वेदांग मिति धातुतः ॥ त-
 स्मा ज्ञगद्धिता येदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥ ३ ॥ गृहणा ग्रह संक्रांति यक्षाध्ययन कर्म-
 णाम् ॥ प्रयोजनं व्रतो द्वाह क्रियाणां काल निश्चयः ॥ ४ ॥ सिद्धांतं संहिता होरा रूपं स्कं-
 धत्रयात्मकम् ॥ वेदस्य निर्मलं चक्षु ज्योति प्रशास्त्रमकल्मषम् ॥ ५ ॥ विनै तन्त्रि-
 लं कर्म श्रौतं स्मार्त्तं न सिद्ध्यति ॥ अत एव हि जैरेतदध्ये तव्यं प्रयत्नतः ॥ ६ ॥ वेदाहि
 यन्त्रार्थनांश्च प्रवृत्ताः कालानु पूर्वा विहिताश्च यन्त्राः ॥ तस्यादिहं काल विधानं शास्त्रं यो ज्यो
 तियं वेदं संवेदय ज्ञान् ॥ ७ ॥ यथा शिखा गयूराणां नागानां मणयो यथा ॥ तद्वद्देवांगं प्रा-
 णाणां ज्योतिषं मूर्ध्नि स्थितम् ॥ ८ ॥ विद्याह वै ब्राह्मण सा जगाम नो पाय माघो वधिष्ठे ह महि-

अस्मै काया नृज वेहिताय न मां त्रया अवीर्यं वती यथा स्याम् ॥ ८ ॥ नैतद्येवं दुर्विनीता
 य जातु ज्ञानं गुप्तं तद्वि सम्यक् फलाय ॥ अस्याने हि स्थाप्य सानैव वाचां देवी को यान्ति
 ईहेतं चिराय ॥ १० ॥ होहा ह्योमाच्च मोहाच्च यो विप्रोऽ ज्ञान तोऽपि दा ॥ अद्भ्यारोमुप-
 दंशतु दद्यात्स नरकम्भजेत् ॥ ११ ॥ एवं विधम्य श्रुति नेत्र प्रास्त्र स्वरूप सन्तुः खलु द-
 शीने वै ॥ निहन्य प्रोपं कलुपं जनानां षडब्जं धर्म्म सुखास्य दं स्यात् ॥ १२ ॥ दश
 दिन कृत पापं हन्ति सिद्धान्त वेत्ता त्रि दिन जनित दोषं तत्र वैशिष्ट एव ॥ दशरा भ-
 गण वेत्ता हंत्य होरात्र दोषं जनयति द्वन मंहस्तत्र नक्षत्र सूची ॥ १३ ॥ अवि हित्वैव
 य प्रणालं देव त्वं प्रपद्यते ॥ संपत्ति दूषकः पापो दोषो नक्षत्र सूचकः ॥ १४ ॥
 तिथ्युत्पत्तिं न जानाति ग्रहाणां नैव साधनम् ॥ परवाक्येन वर्तन्ते ते वेनक्षत्र सूच-
 काः ॥ १५ ॥ नक्षत्र सूचको हिष्ट मुप वासं करोति यः ॥ सत्रजत्संधता मिश्रं स्ना-
 त् ईमृक्ष विडं विना ॥ १६ ॥ नक्षत्र जीविनं पापं भिषजं शुल्क जीविनम् ॥ ताहक्यौ

राणि का दींश्च वाङ्मात्रेणापि नाच्चेयेत् ॥ १७ ॥ देव द्वैष्टास्त्रतत्व द्वौ सुहृत्तौ ऽन्वि-
 ष्यते यदि ॥ सुसुहृत्तः सप्तन्वेय्यो नान्यैर्न सत्र सूचकैः ॥ १८ ॥ ज्योतिश्चक्रे तुलो-
 कस्य सर्वल्योक्तं शुभाशुभम् ॥ ज्योतिर्द्वानिंतु योवेव सयाति परमां गतिम् ॥ १९ ॥
 ॥ शुभ स्मृणा क्रियास्म जनिता पर्व सम्भवाः ॥ सम्पद स्सर्व लोकानां ज्योतिस्त-
 त्र प्रयोजनम् ॥ २० ॥ सुपरीक्षितं विलग्नं धर्मार्थं सुखाय दंपत्योः ॥ अपरीक्षितं
 विलग्नं नहि देयं पंडितेन देव विवा ॥ २१ ॥ स्वभावा देव कालोयं शुभाशुभ सम-
 न्वितः ॥ अनादि निधन स्सर्वो न निर्देवो न निर्गुणः ॥ २२ ॥ तस्मान्निर्देव
 कालार्थं सुहृत्तं मधि गच्छताम् ॥ काल प्रशुभो गुणैर्युक्ता वलवद्भि प्रशुभ प्रदः
 ॥ २३ ॥ वषिष्ठ गार्गी गिरसा मत्र्या दीनाम्मतं तथा ॥ रैभ्य कपयप रामाणा म्भरद्वा-
 ज बराहयोः ॥ २४ ॥ गणेषु श्रीपति मतं ज्ञात्वा सिद्धांत सम्भवम् ॥ वाल बोधा-
 य क्रियते सुहृत्तानां शिरोमणिः ॥ २५ ॥ द्विवेदिवं प्राकह्लार भानुना प्लिव दोमया ३

यथा शास्त्रे च सरस्य प्रसादे नैव सङ्ग्रहः ॥ २६ ॥ ऋतोऽस्मात्स्थ च तिथेः नारजस्तन
 यो स्तथा ॥ योगस्य कर्णाख्यस्य ताण्याश्च यथा क्रमात् ॥ २७ ॥ शुभाशुभस्य
 त्याज्यस्य मुहूर्त्तानां तथैव च ॥ संक्रांते गोचिख्येव संस्कारे द्वाहयोस्तथा ॥ २८ ॥
 बधू प्रवेष्टानस्या गन्धाधानराज्याभिषेकयोः ॥ यान्नायाश्चैव वालोश्च प्रवेष्टास्य
 प्रतिष्ठिते ॥ २९ ॥ मिश्राणां च तिथीनां च निर्णयं च यथार्थतः ॥ एवं प्रकारा-
 न्यत्र तत्त्व संख्या न्यनुक्रमात् ॥ ३० ॥ अथ कलां गत्वेन संवत्सराग्र नर्तुं दासादीनां
 ज्ञानम् आदौ संवत्सरपरिज्ञानम् ॥ पूर्वैकं कालार्कयुतः कृत्वा पूज्यरसैर्ह-
 तः ॥ श्रेष्ठाः संवत्सराब्देयाः प्रभवाद्याबुधैः क्रमात् ॥ ३१ ॥ स एव पंचांगि कुम्भि-
 र्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ॥ रेवाया उत्तरे तीरे संवन्ता म्नाति विश्रुतः ॥ ३२ ॥ अथ
 संवत्सरनामानि प्रभवो १ विभवः २ युक्तः ३ प्रमोदोऽथ ४ प्रजायतिः ५
 जंगिराः ६ श्रीमुखो ७ भावो ८ युवा ९ धाता १० तथेष्ट्वरः ११ ३३ ॥ बहुधान्यः १२ ४

प्रमाथीच १३ त्रिक्रमो १४ त्वयभस्तथा १५ चित्रभानुः १६ सुभानुश्च १७ तार-
 गाः १८ पार्थिवो १९ व्ययः २० ॥ ३४ ॥ ब्रह्मणो विंशति स्तत्र सृष्टिरेव प्रजा
 पतेः ॥ सर्वं नित् १ सर्व धारीच २ विरोधी ३ विकृतिस्तथा ४ ॥ ३५ ॥ स्वरो ५ न-
 न्दल नामाच ६ विजयश्च ७ जयस्तथा ८ मन्मथो ९ दुर्मुख १० श्रान्यो द्वे-
 मलं ११ विलंबको १२ ॥ ३६ ॥ विकारो १३ सर्वरीचान्यः १४ सत्वश्च १५ दु-
 भक्त तथा १६ शोभनश्च १७ तथा क्रोधी १८ विप्रवावसु १९ भवोपरः २० ॥
 ३७ ॥ विलोरेतेच विंशत्या पालना नत्र जायते स्रवंगः १ कीलकः २ सौम्यः ३
 तथा साधारणोपरः ४ ॥ ३८ ॥ विरोध कृत्समाख्यातः ५ परिधावी ६ प्रमाद्ययि
 ७ ॥ ३९ ॥ आनंदो दण्डसश्चाथ ८ नलश्च १० पिंगलस्तथा ११ कालः १२ सिद्धार्थ
 १३ ऐन्दोच १४ दुर्मति १५ दुन्दुभिस्तथा १६ ॥ ४० ॥ अपरोरुधिरोङ्गारी १७ रक्षास
 १८ क्रोधन १९ तथा क्षय २० कृत्स्नश्चान्यो रुद्रस्या मीचविंशतिः ॥ ४१ ॥ वत्सरायदि ४

शिखाता नाम तुल्य फल प्रदाः ॥ ४१ ॥ अथ संवत्सराणो फलम् ॥ प्रभवा द्विगुणं
 कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं चकारयेत् ॥ सह सितु हे द्वागं प्रोषं द्वेयं शुभाः शुभम् ॥ ४२ ॥
 एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पचद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ॥ त्रिषष्टे तु समं द्वेयं प्रून्ये पीडा न संशयः
 ॥ ४३ ॥ अथ संवत्सराणां स्वामिनः ॥ युगं भवेद्दत्तरं पंच केन युगानि च द्वादश
 वर्षं यक्या ॥ भवंति ते वा मधि देवता अ क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ ४४ ॥
 विलु जीवः शक्तो दहनं स्वथ अहिर्बुध्न्यः पितरः ॥ विप्रै देवाश्चन्द्र ज्वलनौ नास-
 त्य नामानौ च भगः ॥ ४५ ॥ अथ संवत्सराणां भेदाः ॥ संवत्सरः प्रथमकः परिवत्स
 रोन्य तस्मादिडां विदितं पूर्व पदाद्भवेत्सुः ॥ एवं युगेषु सकलेषु तदीयं नाथा वन्द्य
 कींशीतयु विरंचि शिवाः क्रमेण ॥ ४६ ॥ अथायनं विचारः ॥ शिशिरं पूर्वं मृतु त्रयं सुतरे
 ह्ययनं माहुरहं तदा परम् ॥ भवति दक्षिणं मन्यं क्रतु त्रयं निगदि तारजनी म
 रुतां हिंसा ॥ ४७ ॥ अथायन फलम् ॥ गृहं प्रवेष्टा त्रिं दश प्रतिष्ठा विवाहं चैल

व्रत बन्ध दीदृष्टः॥ सोम्यायने कर्म शुभ त्विधेयं यद्गृहितं तत्त्वन्तु दक्षिणेन्दु ॥ ४८ ॥
 अथर्तवः ॥ मृगादि राशिं ह्य भानु भोगात् षडर्तवस्त्युः शिप्रिरो वसंतः ॥ ग्रीष्म
 श्रवर्षाच्च प्रारब्धतद्द्वे संतनामा कथित श्रवर्षः ॥ ४९ ॥ अथर्तुपतयः ॥ मारुतो
 ऽग्निश्च स्वर्गेशो विष्टेव देवाः प्रजापतिः सोम्यश्च षट् ऋतूनां हि पतयः परिक्ता
 र्तिताः ॥ ५० ॥ अथ मास परिद्धानं ॥ पूर्व राशिं परित्यज्य उत्तरं याति भास्करः
 ॥ सा राशिः संक्र मारब्धा स्यान्मास त्वय न हायने ॥ ५१ ॥ अथ मासानां नामानि
 ॥ मासश्चैत्रो ऽथ वैशाखो ज्येष्ठ आषाढ संज्ञकः ॥ ततस्तु आवरणो भाद्र पदो ऽ
 धाश्चिन संज्ञकः ॥ ५२ ॥ कार्तिको मार्ग शीर्षश्च यौवो माघो ऽथ काल्युनः ॥
 अथ मासानां संज्ञाः ॥ मधु स्तथा माधव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथन भोन-
 भस्यः ॥ तथेष कर्जश्च सहा सहस्य स्तप स्तपस्यश्च यथा क्रमेण ॥ ५३ ॥ अथ
 मास प्रचतुर्विधः ॥ चांद्रः श्रौतः सावनिकः नाक्षत्रेति दशर्षवधि मास सुप्रति-

राख्याता नाम तुल्य फल प्रदाः ॥ ४१ ॥ अथ संवत्सराणां फलम् ॥ प्रभवा हिगुणो
 क्तत्वा त्रिभिर्न्यूनं चकारयेत् ॥ सप्त भिक्षु हे द्वागं प्रोषं क्षेयं शुभाः शुभम् ॥ ४२ ॥
 एकं चत्वारिंशुर्भिर्द्विं पच द्वाभ्यां सुभिर्द्विकम् ॥ त्रिषष्टे तु सप्त क्षेयं शून्ये पीडा न संशयः
 ॥ ४३ ॥ अथ संवत्सराणां स्वामिनः ॥ युगं भवेद्दत्तरं पंच केन शुगानि च द्वादश
 वर्षं वक्ष्या ॥ भवंति ते वा मधि देवता अक्रमेण वक्ष्यामि मुनि प्रणीताः ॥ ४४ ॥
 विस्रु जीवः शक्तो दहन स्वथ अहिर्बुध्न्यः पितरः ॥ विप्रै देवाश्चन्द्र ज्वलनौ नास-
 त्य नामानौ च भगाः ॥ ४५ ॥ अथ संवत्सराणां भेदाः ॥ संवत्सरः प्रथमकः परिवत्स
 रो न्यस्तस्मादिहान्वि दित पूर्व पदाद्भवेद्युः ॥ एवं युगेषु सकलेषु तदीय नाथा वक्ष्य
 र्कं शीतगु विरंचि शिवाः क्रमेण ॥ ४६ ॥ अथायन विचारः ॥ शिष्टिर्पूर्व स्रुत्रय मुत्तरं
 ह्ययन मादुरहश्च तदा परम् ॥ भवति दक्षिणामन्य क्रतु त्रयं निर्गादि तारजनी म
 रुतां हिता ॥ ४७ ॥ अथायन फलम् ॥ गृह प्रवेशा त्रि दश प्रतिष्ठा विवाह चौर

व्रत बन्ध दीदृशः॥ सौग्यायने दर्भ शुभ त्विधेयं यद्गृहीतं तत्त्वबलु दक्षिणेच ॥ ४८ ॥
 अथर्तवः ॥ मृगादि राशि द्वय भानु भोगात् षडर्तवस्स्युः शिष्टिरो वसंतः ॥ ग्रीष्म
 अर्धचि शरच्चतुर्दशे मंत नामा कथित अषष्ठः ॥ ४९ ॥ अथर्तु पतयः ॥ मारुतो
 ऽग्नि पृच स्वर्गेशो विप्रवे देवाः प्रजापतिः सौम्यपृच षट् ऋतूनां हि पंतयः पारिक्ती
 र्तिताः ॥ ५० ॥ अथ मास परिज्ञानं ॥ पूर्व राशिं परित्यज्य उत्तरं याति भास्करः
 ॥ सारणिः संक्र मारव्या स्यान्मास त्वय न हायने ॥ ५१ ॥ अथ मासानां नामानि
 ॥ मास श्रैत्रो ऽथ वैशाखो ज्येष्ठ आषाढ संज्ञकः ॥ ततस्तु आवरणो भाद्र पदो ऽ
 थाश्विन संज्ञकः ॥ ५२ ॥ कार्तिको मार्ग शीर्षपृच चौथो माघो ऽथ काल्युनः ॥
 अथ मासानां संज्ञाः ॥ मधु स्तथा माघव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चायन भोन-
 भस्यः ॥ तथेष कर्जश्च सहा सहस्य स्तप तपस्यश्च यथा क्रमेण ॥ ५३ ॥ अथ
 मास पृचतुर्विधः ॥ चांद्रः श्रेष्ठः सावनिकः नाक्षत्रेति दशर्णवधि मास मुद्रंति

चांद्रं सौरं तथा भास्करं राशि भोगात् त्रिंशद्दिनं सावन सप्त मास्यं नाक्षत्रमि-
 हो भर्गवा अथाह ॥ ५४ ॥ सासानां फलम् ॥ सौरं कार्त्तिकं विवाहादि ग्रह चारा
 दिकं तथा ॥ व्रत यज्ञादिकं चांद्रं मास परिणयः क्वचित् ॥ ५५ ॥ चांद्रस्तु द्विविधो मा-
 से दर्शतः पूर्णिमातिमः ॥ देवार्थं योर्गं मास्यंतः दर्शतः पितृ कर्मणि ॥ ५६ ॥
 सावने गर्भ वृद्धादि नक्षत्रे मेघ गर्भनिम् ॥ प्रोक्त कार्त्तिके त्विमासा विज्ञेयाः को विदे-
 स्सदा ॥ ५७ ॥ अथ पञ्चविचारः ॥ पूर्वा परं मास दलं द्विपक्षौ पूर्वा परो तो सितनील संज्ञौ
 ॥ पूर्वस्तु देवस्त्व परश्च पैत्र्यः केचित्तु कुलेशित पंचमीतः ॥ ५८ ॥ आदि शुक्लः प्रवक्त-
 व्यः केचित्कुलोपि मास के ॥ अथ अधिक मास ॥ प्राक् वार्षा कैरं के के विरहिते न देह्युभि-
 भाजिते ॥ प्रथे न्वनि भयो न साधव प्रिवे ज्येष्ठे ५ दोर चाष्टके ॥ सावादे नृपतौ न भञ्च
 प्रार के आद्रे च विज्यां सके ने त्रे चाश्विन के ५ धि मास सुदितं प्रथे ५ न्य के स्या न्नाहि ॥
 अथ क्षय मासः ॥ ६० ॥ असं ज्ञाति मासोधि मासः सुखं स्याद्दिसं ज्ञाति मासः क्षया

ल्यः कदाचित् ॥ क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्तदा वर्ष मध्येऽपि मासद्वयं च ॥ ६१ ॥
 गतोऽयं द्विने दैमिने प्राक् काले तिथी यो भविष्यत् यथा ग्राह्य सूर्यः ॥ गजाद्विने भू-
 मिस्तथा प्रायशो यं कुर्वेदं वर्षैः क्वचिद्भेदं कुंभिश्च ॥ ६२ ॥ हि वेदि कुलसंभूत सस्य क-
 तसंग्रहे ॥ शिरो मलो समाप्ते वा प्रथमेयं प्रभां शुभा ॥ ६३ ॥ इति श्री संग्रह शिरो मलोऽंश-
 यनादि प्रकाशनम्प्रथम प्रभा ॥ ९ ॥ अथ तिथिप्रकरणम् ॥ प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीया
 तदनंतरम् ॥ चतुर्थी पंचमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी ततः ॥ १ ॥ नवमी दशमी चैकादशी द्वि-
 दशी ततः ॥ त्रयोदशी ततो ज्ञेया ततः प्रेक्ता चतुर्दशी ॥ २ ॥ पौर्णिमा शुक्ल पक्षे तु कृत्स्न
 पक्षे त्वमास्त्यता ॥ अथ तिथि पतयः ॥ तिथी प्रावद्भिर्को गोरी गणेशः इति शुद्धो रविः ॥ ३ ॥
 ॥ शिवो दुर्गातः को विश्वे हरिः कामः शिवः प्रशशी ॥ अमावास्या तिथौ रीधराः पितरः परी-
 कीर्त्तिताः ॥ ४ ॥ नन्दा भद्रा जया ऋक्ता पूर्णा पितृ प्रतिपन्मुखाः ॥ वरुणाद्याश्च क्रमाद्देवा
 स्तथैवैकादशी मुखः ॥ ५ ॥ असन्मध्यं शुभं शुक्ले तिथीनां पंचकं क्रमात् ॥ कृत्स्नपक्षे

प्रभुसंमध्यं नैष्टु द्वेयं शुभे सदा ॥ ६ ॥ अथ नवरादिषु कृत्यम् ॥ गीतं नृत्यं तथा क्षत्रं चित्रोत्सव
 गृहादिकं ॥ वस्त्रालंकारं शिल्पादि नन्दा स्वेतच्छुभं स्मृतम् ॥ ७ ॥ विवाहो वनयात्रा च
 भूषा शिल्प्य कलादिकम् ॥ गजा प्रवरथ कृत्यं च भद्रातिथिषु सिद्धिदम् ॥ ८ ॥ सैन्य
 संग्राम शस्त्रादि यात्रोत्सव गृहादिकम् ॥ भेषज्यं चैव वारिण्यं सिद्धे त्सर्वज्ञया सुच ॥
 ९ ॥ शत्रूणां वध वंधादि विय शस्त्राग्नि योजनम् ॥ कर्तव्यं तच्च ऋक्तायां नैव सन्नं
 गलं क्वचित् ॥ १० ॥ व्रत बंध विवाहादि यात्रा राजा भिषे च नम् ॥ प्राति कं योद्धि कं
 कर्म सिद्धे त्स्वर्गं स्वमांविना ॥ ११ ॥ विवाहो वनयात्रा च प्रातिष्ठा वास्तु कर्म च ॥
 कुर्व्यां चोलादिकं कृत्स्नं प्रकुले प्रति पत्तिथो ॥ १२ ॥ राज्य कार्य्यं विवाहादि मंगलं
 वास्तु भूयणं ॥ व्रत वंधं प्रतिष्ठा च द्वितीयायां तिथौ स्मृताः ॥ १३ ॥ अन्न प्राशन
 सं गीत विद्या शी मंत शिल्प कं ॥ द्वितीयां प्रोक्तं मखिलं तृतीयायां प्रप्रस्यते ॥ १४ ॥
 शत्रूणां वध वंधादि विय शस्त्रादि योजनं ॥ कर्तव्यं तच्च पुण्यां तु नैव सन्नं गलं क्वचित् ॥ १०

॥ १५ ॥ शुभ कर्म्मणि सर्वाणि स्थिराणि च चरणि च ॥ ऋण दानं विनायाति सुसि-
 द्वि पंचमी तिथौ ॥ १६ ॥ दंत काष्ठंगमं म्यंगे त्यक्वा यो पितृव्य कर्म्म च ॥ रणे वास्तु वि-
 भूषाद्यं वक्ष्या सिद्धति मंगलम् ॥ १७ ॥ गज कृत्यं विवाहादि संगीतं चरत्र भूषणम् ॥
 यात्रा प्रवेश संग्रामाः सिध्येच्च सप्तमी तिथौ ॥ १८ ॥ नृत्यं स्त्री रत्न भूषादि मंगलम् ॥
 त्र धारणम् ॥ वास्तु पितृव्यादिकं कार्यं मष्टम्यां सिद्धि माप्नुयात् ॥ १९ ॥ विग्रहः
 कल होद्युत मद्य माखेटकस्तथा ॥ विद्याग्नि पूरु कृत्यं चनवस्यां सिद्धि माप्नुयात्
 ॥ २० ॥ विवाहादि शुभं सर्वं भूषा यात्रा प्रवेशानम् ॥ गजाश्व नृप कार्य्याणि सिद्ध-
 न्ति दशमी तिथौ ॥ २१ ॥ व्रतबंधो विवाहादि रणविश्लेषं सुरोत्सवः ॥ गमा गमौ चि-
 भूयादि एका दस्यां प्रशस्यते ॥ २२ ॥ चरस्थिराणि कार्य्याणि विवाह व्रत बंधनम्
 ॥ द्वादश्यां तत्प्रकुर्वीत तैलं यात्रादिकं त्यजेत् ॥ २३ ॥ यात्रा प्रवेश संग्राम वस्त्रभूष-
 ण मंगलम् ॥ व्रतबंधं विनान्यत्र शुभा शुक्ल त्रयोदशी ॥ २४ ॥ विष बंधाग्नि प्राज्ञा ॥ २१

शिरो प्रकुप्यादुद्युक्तं च ॥ चतुर्दश्यां शुभं कर्म क्षौर यात्रां च वर्जयेत् ॥ २५ ॥ मा-
 गल्यं श्रूयमाणं प्रतिश्रायज्ञं कर्म च ॥ संगमो गृह कृत्यं च पौर्णमास्यां प्रसिद्धति
 ॥ २६ ॥ अग्न्या धानं महादानं पितृ यात्रादिकं च यत् ॥ प्रोक्तं कर्म प्रकर्तव्यं दर्शना-
 न्या शुभा क्रिया ॥ २७ ॥ इति तिथीनां कृत्यम् ॥ सामान्यतः प्रशुभास्तिथयः ॥ द्वितीया पं-
 चमी चैव तृतीया सप्तमी तथा ॥ द्वायमेकादशी कृष्णा प्रतिपच्च त्रयोदशी ॥ २८ ॥ पू-
 र्णिमा स्तिथयो ध्येताः सर्वे कार्ये शुभा वहाः ॥ अन्यास्तु तिथयो नेष्टाः प्रोक्तं कृत्ये शु-
 भमताः ॥ २९ ॥ कृष्णा चतुर्दशी शुक्ला प्रतिपद्दर्श संज्ञका ॥ एताः शुभेषु कार्ये-
 शु वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ ३० ॥ चतुर्थी षष्ठ्यं द्वादशी १२ प्रातः १४
 संमिताः ॥ तिथयः पक्षरंध्राख्या स्याज्या त्सर्वेषु कर्मसु ॥ ३१ ॥ एतास्तु वसु ऽ नंदे
 देन्दु १४ तत्त्वं २४ दिक् १० प्रातः ५ संमिताः ॥ हेयास्त्युरादि माना इयः क्रमा च्छेद्यास्तु
 योगभनाः ॥ ३२ ॥ अथ दंत धावने निषिद्धाः ॥ अमायां च तथा वक्ष्यामेकादश्यां रेवतिने

प्रतिपद्युदिते ऽर्के च न कुर्याद्विन्त धावनम् ॥ ३३ ॥ ग्रामलकस्नाने निषेधः ॥ दशमी मप्तमी र-
 श्चितीया नवमी दिने ॥ त्रयोदश्या तथा नैव स्नाया दामलकैर्नरः ॥ ३४ ॥ अथोक्तका-
 र्ये निषिद्धाः ॥ क्षौरे चतुर्दशी चैव षष्ठी तैले पले ऽष्टमी ॥ दशौ स्त्री सेवने जह्या ज्जरी नोद्दी-
 र्घजी वितम् ॥ ३५ ॥ अथ प्रतिपद्युदिनिषिद्धाः ॥ त्यजेत्प्रतिपदाद्यामुक्तां दुष्टहन्ती फल-
 म् ॥ लवनं मूलकं चैव यनसं तैले सेवनम् ॥ ३६ ॥ धात्री फलं नारिकेलं फलतुल्याः पलो-
 लकम् ॥ निःपावान्नं मसूरं श्वदन्ताकं माक्षिकं क्रमात् ॥ ३७ ॥ अमायां सुरतं चैव पूरि-
 सायां सुरोदरम् ॥ अमायां विशेष्य योग माहा पर्यर्कं शातातपः ॥ ३८ ॥ अमावास्या भवेद्द्वारे
 यदा भूमि सुतस्य वै ॥ जाह्नवी स्नान मात्रेण गो सहस्र फलं लभेत् ॥ ३९ ॥ अमावासो म-
 वारेण रवि वारेण सप्तमी ॥ चतुर्थी भौम वारेण विषुवत्सदृशं फलम् ॥ सिनी वाली कुहू वापि
 यदि सोम दिने भवेत् ॥ ४० ॥ गो सहस्र फलं दद्यात्स्नानं चेन्मोनि नाच्छतम् ॥ अत्रैवासायां
 व्यती पात योगः ॥ अवराणां धनिष्ठा द्वा नाग देवैर्न मस्तकैः ॥ यद्यमा रवि वारेण व्यती

पातः स उच्यते ॥ ४१ ॥ अथाहोदययोगः ॥ माघे मासि रवौ दर्श व्यती पाते अवाप्तिवते ॥ अर्द्धो-
 दया मिथो योगः सूर्य्य पर्व शताधिकः ॥ ४२ ॥ अथ शुक्लो दिवा योगः किं चिन्मूनं महोद-
 यः ॥ अथ गजच्छाया ॥ पितृ पक्षे त्रयोदश्यां हस्ते ऽर्के ऽङ्गे मघां गते ॥ गजच्छाया मिथो यो-
 गः आर्द्धे ऽक्षय्य फल प्रदः ॥ ४३ ॥ अथ कपिला वक्षी ॥ आश्विने कल पक्षे च वक्ष्या भौमो-
 ऽथ रोहिणी ॥ व्यती पात स्तदा वक्षी कपिला नंत पुरयदा ॥ ४४ ॥ अथ व्यती पातः ॥
 पंचानन स्यौ गुरु भूमि पुत्रौ मेघे रवि स्याद्यदि शुक्ल पक्षे ॥ मासाभिधाना करभेण युक्ता
 तिथिर्व्यती पात इतीह योगः ॥ ४५ ॥ अथ गोविंद द्वादशी योगः ॥ यदा चापे जीवो भवति घ-
 टराशौ दिनसणिस्तथा तार नाथ स्व भवन गतः ॥ फाल्गुने श्रिते यदा र्को द्वादस्या म-
 दिति भयुतः शोभनयुतस्तदा गोविंदरात्र्य हरि दिव समस्मिन्नुवितले ॥ ४६ ॥ अ-
 थ वारुणी योगः ॥ वारुणेन समायुक्ता मघौ कल्ला त्रयोदशी गंगायां यदि लभ्येत सूर्य्य
 ग्रह धृतैस्समा ॥ ४७ ॥ शनिवार समा युक्ता सा महावारुणी स्मृता ॥ शुभ योग समा

युक्ता शनौ शत भिया यदि ॥ ४८ ॥ महा महेति विख्याता त्रिकोटि कुल मुद्धरेत् ॥ अ-
 थ प्रसंगाद्यु गादि मन्वादि तिथयः ॥ नवमी कार्तिके शुक्ला वैशाखे च तृतीयका ॥ त्रयोद-
 प्याश्वेने कृष्णा तथा दर्शश्च फाल्गुणे ॥ ४९ ॥ कार्तिके शुक्लानां रमे स्त्रे तारं भस्तु-
 माधवे ॥ फाल्गुणे द्वापरां रमः श्राश्विने कलेः ॥ ५० ॥ क्रमाच्छं सुहर्षिर्व-
 धाः पितरस्तत्र देवताः ॥ तिलान् लवणा सौवर्णं गंधं दद्याद्युगादिषु ॥ ५१ ॥ एता यु-
 गा द्यः प्रुप्याः शुभे वज्र्या मनीषिभिः ॥ तत्राय्य ह्य तृतीयो तु सर्वं कार्यं यु प्रोभना
 ॥ ५२ ॥ श्राश्विने नवमी शुक्ला माघ मासे तु सप्तमी ॥ भाद्रे चैत्रे तृतीया च कार्तिके
 द्वादशी तथा ॥ ५३ ॥ आषाढे दशमी प्रोक्ता ज्येष्ठ मासे तु पौर्णिमा ॥ आषाढी फाल्गु-
 नी चैत्री कार्तिकी पौर्णिमा तथा ॥ ५४ ॥ भाद्रे कृष्णाष्टमी प्रोक्ता पौषे त्वका दशी सिता
 ॥ अमा भाद्र पदे मासि मन्वाद्या तिथयः स्त्विमाः ॥ ५५ ॥ अत्र मासास्तुराकांताः वि-
 ज्ञेयाः परि कीर्तिताः ॥ हिवे दि कुल संभूत संस्कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाक्षेया -

द्वितीयेयं प्रभा शुभा ॥ इति श्री संग्रह शिरो मणौ तिथि कथनं नाम द्वितीया प्रभा ॥
 २ ॥ अथवारप्रकरणम् ॥ आदित्य प्रचंद्र मा भौमो बुध प्रचाथ इह स्मतिः ॥ शुक्र प्रग्र-
 ने प्रचर प्रचेते वासराः परिकीर्तिताः ॥ १ ॥ शिवो दुर्गा शुद्धो विष्णु ब्रह्मेन्द्र काल सं-
 ज्ञकाः ॥ सूर्यो दीनां क्रमा देते स्वामिनः परिकीर्तिताः ॥ २ ॥ गुरु प्रचंद्रो बुधः शुक्रः
 शुभा वाराः शुभे स्मृताः ॥ कूरास्तु क्रूर कृत्येषु ग्रहणा भौमाक्षे सूर्यजाः ॥ ३ ॥ सूर्यो
 प्रचक्ष्णश्च प्रचंद्रो भौम प्रचोगो बुध स्समः ॥ लघुर्जीवो मृदुः शुक्रः प्रगिस्तीक्ष्णा
 स्समीरितः ॥ ४ ॥ अथवारकृत्यम् ॥ राज्या भिषे को त्वच यान सेवा गो बन्धि संज्ञो व-
 धप्रश्न कर्म्म ॥ सुवर्ष तासोरिणिक चर्म काष्ठ संग्राम पर्यादि रवौ चिद् ध्यात् ॥ ५
 ॥ प्रांखा ज्ञ सुक्ता रजतेस्तु भोज्य स्त्री वृक्ष कक्ष्यां बु विभूयणाद्याः ॥ गौतं क्रतु क्षी-
 र विकार प्रंगी पुष्याम्बरा रंभरा मिन्दु वार ॥ ६ ॥ भेदा नृतं स्तेय विवाग्नि शस्त्र
 वध्या भिधाना ह वश लब्ध दं भान् ॥ सेनानि वैशा कर धातु हेम प्रचाल रत्नानि तु

संश्रिजे विदध्यात् ॥ ७ ॥ नैऋत्यपुर्याध्ययनं कलाधूच शिल्पादि सेवा लिपिलेख-
 नानि ॥ धातुक्रियाकांचनयुक्तिं संधिव्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः ॥ ८ ॥ धर्म-
 क्रिया पौष्टिक यज्ञ विद्या मांगल्य हेमां वरवे प्रमयात्राः ॥ रथाश्व भैषज्य विभूषणा-
 दि कार्थ्यं विदध्यात्सुरमंत्रिवारे ॥ ९ ॥ स्त्री गीत प्रथ्या मणिरत्न गंधवस्त्रोत्सवाले-
 करणादि कर्म ॥ भूषणयोगो कोष्प कृषि क्रियाश्च सिद्धांति शुक्रस्य दिने समस्ताः
 ॥ १० ॥ लोहा प्रससी सत्र पुष्टास्त्र दाण पापानृतस्ते च वियार्क विद्यं ॥ गृह प्रवेश द्विपवं-
 ध दीक्षा स्थिरं च कर्मांर्कं सुतेहि कुर्यात् ॥ ११ ॥ पतंग सूना दिव साधिपत्यनि प्रा-
 प्य हृश्चैव तु तिग्म भानोः ॥ एतत्र हूयं चैक दिने च सेसे प्रेष ग्रहाणा मुदय प्रवृत्तिः
 ॥ १२ ॥ अथ दोषा दोष माह ॥ नवार दोषाः प्रभवंति एतौ देवेज्य देत्येज्य दिवा करणा-
 न् ॥ दिवा प्राणं कार्कज भूसुतानां सर्वत्र निंचो बुधवार दोषः ॥ १३ ॥ अथ तैलामगे-
 सुभा शुभं ॥ रवि स्तापं कांतिं वितरति प्राणी भूमि तनयो मृतिं लक्ष्मी सौम्यः सुरपति

१२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥

गुरुर्विन्नहरणाय ॥ विपत्तिहेत्यानां गुरु ररितलभोगानु गमनं नृणां तैला भ्यंगात्स पदिकुरुते
१८ सूर्यतनयः ॥ १४ ॥ रवौ भौमे व्यतीपाते संक्रांतौ वैधृतावपि ॥ यक्षुष्टम्यो प्रच विद्यां च
तैला भ्यंगो न पवर्तु ॥ १५ ॥ अथ दोषापवादः ॥ तैलाभ्यंगे न दोषश्च प्रत्यहं क्रियते चयः ॥
उत्सवे वात्त रोगो वा यंत्रवाचनि केऽपि वा ॥ १६ ॥ भागवर्गे गोमयं भौमे सहं पूर्वो हृहस्पती ॥
१७ ॥ रवौ पुष्यं निधायाथ तैला भ्यंगो न दोष दत्त ॥ मंत्रितं कथितं तैलं सार्वपं पुष्य वा सि-
तम् ॥ द्रव्यां तरयुतं वापि नैव दुष्येत्कदाचन ॥ १८ ॥ अथ तात्कालिक वार कालार्थे होरा ॥ स्त-
१९ ॥ मध्यरेखातो योजनिः पाद चर्जितैः ॥ तावत्पलैर्बुधो नास्त्युत्तिथयः पर पूर्वतः ॥
२० ॥ तद्धिनाईन्नरं पलै रूनाधिके विनाईतः ॥ ऊर्ध्वं आधः क्रमा द्धारमवेषा स्तपनोद-
यात् ॥ २० ॥ वारा रम्भाद्रता नाड्यो द्वि त्राः पञ्च विभाजिताः ॥ लघ्वां के गत होराः स्यु-
र्वीसरे प्रणवितः क्रमात् ॥ २१ ॥ रविशुक्रौ बुधश्चंद्र प्रश्नानि जीव स्ततः कुजः ॥ सते
क्रमानु विंशत्याः काला होरे पूर्वराग्रहाः ॥ २२ ॥ यस्मिन्वारो तु यत्कृत्यं पूर्वाचार्यै रूह्य

द्रुतम् ॥ तत्कृत्यं तस्य खेटस्य द्दोरायां खलु सिद्ध्यति ॥ २३ ॥ खेटस्यो पचयस्यस्य चोरे
 कार्यं शुभावहम् ॥ तदेवापचयस्य स्नायत्वेनापि न सिद्ध्यति ॥ २४ ॥ द्विवेदिकुलसंभू-
 तस्य कृत संयुहे ॥ शिरोमणौ समोक्षे चातृतीयं प्रभा शुभा ॥ २५ ॥ इति श्री संग्रह-
 शिरोमणौ चारकथनं नाम तृतीया प्रभा ॥ ३ ॥ अथ नक्षत्रप्रकरणम् ॥ अश्विनी भरणी
 चैव कुत्तिका रोहिणी मृगः ॥ आर्द्रपुनर्वसुः पुष्यस्ततः श्लेषा मघा ततः ॥ १ ॥ पूर्वाफाल्गु-
 णिका तस्मादुत्तरा फाल्गुणी ततः ॥ हस्त चित्रा तथा स्वाती विष्णवा तदनंतरम् ॥ २ ॥
 अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढस्त्वभिजित् श्रवणास्ततः ॥
 ३ ॥ धनिष्ठा श्रुतताराख्यं पूर्व भाद्र पक्षा ततः ॥ उत्तर भाद्र पक्षे चैवैवत्येतानि भानि च
 ॥ ४ ॥ अथ नक्षत्रेणः ॥ अश्विनी भरणी चमदेवता ॥ आग्नेयी कृत्तिका प्रोक्ता
 विधाता रोहिणी प्रवरः ॥ ५ ॥ मृगश्रिर्षि प्रवरश्चंद्रस्तथैवार्द्र प्रवरः शिवः ॥ अदितिस्तु
 पुनर्वसोः पतिः पुष्यस्य वाक्यतिः ॥ ६ ॥ श्लेषाधिपतिस्सर्पो मघेषुः पितरस्मृतः ॥ १६

किं भगश्च पूर्वा फाल्गुन्याः ऊफायाः पतिरर्थ्यमाः ॥ ७ ॥ हस्तस्याधिपतिस्सूर्यस्तथा
 चित्राभिधस्यच ॥ स्वातेश्च देवतं बासु विशाखेद्रागि देवतम् ॥ ८ ॥ अनुराधे प्रवरे
 मित्रो ज्येष्ठाया बृहन्नच्यते ॥ मूलस्य देवतं रक्षः पूर्वाषाढे प्रवरेजलम् ॥ ९ ॥ आषाढादे-
 वतं विश्वे विधिश्चाभिजितोऽधिपः ॥ अवराणाधिपतिर्विस्तुर्धनिष्ठा वसुदेवता ॥ १० ॥
 चरुणा प्रशततारायाः पूमे प्राः कथितोऽजपात् ॥ अहिर्बुध्न्यस्तथो भायाः पूषोक्तोरेव
 ती पतिः ॥ ११ ॥ अथ सामान्यतरशुभाशुभनक्षत्राणि ॥ रोहिण्यश्विनमृगाः पुष्यो हस्तचि-
 त्तोत्तराश्रयम् ॥ रेवती अवराणां प्रचैव धनिष्ठा च पुनर्वसुः ॥ १२ ॥ अनुराधा तथा स्वाती शु-
 भान्येतानि भानि च ॥ सर्वाणि शुभकार्याणि सिद्धे देतेषु चोद्भूतु ॥ १३ ॥ पूर्वार्द्रय
 विशाखा च ज्येष्ठा र्द्र्य मूलमेव च ॥ शतताराभिधेय्वेव कृत्यं साधारणं स्मृतम् ॥ १४
 ॥ अरणी कृत्तिका चैव मघा प्रलेषा तथैव च ॥ अत्युग्रं दुष्टकार्यं च प्रोक्तमेयु विधीयते
 ॥ १५ ॥ यात्रौ षध विभूषाश्च विद्याशिल्य कलादिकम् ॥ गजकार्यं विवाहो गं मांग-

ल्यं चाश्विने चरेत् ॥ १६ ॥ साहसं दारुणं शत्रुनाशनं विषबन्धनम् ॥ भरण्या कूपक-
 व्याद्यमग्निं दान्हादिकं चरेत् ॥ १७ ॥ कृत्ति कायां सप्त कुर्व्यात्साह साग्निं परिग्रहम्
 रियोर्वध विवादं च लोहं मरणोश्च कर्मसु ॥ १८ ॥ रोहिण्यां मष्टकां कुर्व्याद्विवाहं धनं
 संप्रहम् ॥ आसाव सअनां कृत्यं मागल्यं भूषणादिकम् ॥ १९ ॥ विवाहो वनजायाणां
 मृगाशीर्धे च शोभनम् ॥ सुरसंस्थापनं वास्तु क्षेत्रां रमादिसिद्धति ॥ २० ॥ आर्द्रायां
 निग्रहं कुर्व्यां हूधनं क्खेवनं वधम् ॥ विषसंधानं विद्यादि दारणोच्चादने तथा ॥ २१ ॥
 प्रगतिं कं पौष्टिकं यात्रा भूषा वास्तु व्रतादिकम् ॥ बाहनं कृषिं विद्याच पुनर्वसौ विधीय-
 ते ॥ २२ ॥ चरस्थिगणा कार्याणि प्रगतिं कं पौष्टि कोत्सवम् ॥ विवाहं वर्जयित्वान्यत्स-
 मस्तं पुष्यभे चरेत् ॥ २३ ॥ ज्येष्ठायां चारि पौर्णमासीं चारि ज्यं साहसं तथा ॥ विषसर्पा-
 दि कृत्यं च स्तेयादिकं मुपाचरेत् ॥ २४ ॥ मघायां पैतृकं कार्यं तथा शस्त्रादि रोपणम् ॥
 जलाभयं विवाहं च कुर्व्यां शुद्धादि साहसम् ॥ २५ ॥ बंधनं दारुणं शिल्पं कार्पण्यं रणं

कृतानि शुद्धे ॥ ४४ ॥ गृहेण विदोष्य शुभान्वितोऽपि विरुद्ध तारोऽपि विलोम गोपि ॥
 करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणि गृहाण नुपुष्यः ॥ ४५ ॥ अथ नक्षत्राणां
 स्वस्वम् ॥ तुरगमुख सदृशं योनिरूपं ध्रुवमक्ष्णं प्राकट सममथैण स्योत्र संगे ननु-
 ल्यम् ॥ मणि गृह शर चक्रं भाति शृणलोपमम् प्रपन्न सदृश मन्यञ्चात्र पर्यंक रू-
 पम् ॥ ४६ ॥ हस्ताकारमतश्च मीति कसमंचान्यत् प्रवालोपमं धि श्रुतं तोरणव-
 त्स्थितं चलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ॥ कुथ्यत्केशरिवि क्रमेण सदृशं प्राच्या समा-
 नं परंचान्य दंति विला सबत्स्थित मतः त्रैकोणकं च क्तिमतः ॥ ४७ ॥ त्रिविक्रमा-
 भं च सदंग रूपं दृढं ततो न्यद्वलय द्वयाभं ॥ पर्यंक रूपं मुरजानु कारी व्यर्थेव मप्रव्या-
 दित् चक्र रूपम् ॥ ४८ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ वन्दि त्रिऋत्विषु गुणैर्दु हतारित
 भूत वाणा श्विनेत्र शर भूकु युगाब्धि रामाः ॥ रुद्राभि राम गुण वेद श्रुत द्वि युगम
 दंता बुधै निर्गदिताः क्रम शोभ ताराः ॥ ४९ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ भवं स्थिर

संक्षिप्तमिति ख्यातं रोहिणी चोत्तरात्रयं ॥ तत्रा एम मत्तग्रामा भित्ते काद्याः स्थिर क्रियाः
 २५ ॥ ५० ॥ मृगश्रिचत्रा नुराधाचरेवती मृदु मैत्रकम् ॥ तत्र गीतं रतं कुर्व्यादृषा मांग-
 ल्यं मंवरम् ॥ ५१ ॥ पुष्या श्रिवन्य भिजिहस्तं लघुष्विप्र सुषाहतम् ॥ तत्र भू-
 बध द्वानं शिल्प कंच तथा रतिः ॥ ५२ ॥ ज्येष्ठा र्द्रा मूल मण्डले पाती क्षां वारुणा सु-
 च्यते ॥ तत्र भेदो वधो वंधो मंत्र भूतादि साधनम् ॥ ५३ ॥ अवर्णादि त्रिभंखातीषु
 नर्वसु चरंचलम् ॥ तस्मिन्वाजिगजा रमा कर मोक्ष गमा दिकम् ॥ ५४ ॥ भरणी
 च मघा पूर्वा क्रूर सुगमसुषाहतम् ॥ विष शस्त्राग्नि घातादि तत्रोच्छेद विनाशन-
 म् ॥ ५५ ॥ विषाखा कृतिका प्राक्सेर्मिश्रं साधारणं स्मृतम् ॥ नीलासगीम्रिका-
 र्थ्यंच मिश्रं तत्र च सिद्धाति ॥ ५६ ॥ अथ नक्षत्र सुखतत्त्वंच ॥ मूला प्लेवा मघा पूर्वा वि-
 शाखा भरणी ह्वयम् ॥ अधोमुखानि भान्यत्र कर्म सिद्धे दधो मुखम् ॥ ५७ ॥ एषु
 वापी तडा गादि कूप भूमि तरणा निच ॥ देवा गारस्य खननं निधान खननं तथा ॥

कर्मचिं ॥ पूर्वा फाल्गुनिकायां तु चित्रकर्मोद्दि साधयेत् ॥ ३६ ॥ विवाहो ब्रतबंधप्रवस्थि-
 रंकर्मविभूषणं ॥ उत्तरा फाल्गुनि मे स्याद्दुहारश्च प्रवेशने ॥ ३७ ॥ यात्रा विद्या विवाहा-
 दिविभूषां वरसौवधम् ॥ गृहहारं प्रप्रतिष्ठां च विदुष्याद्दत्तमेऽरिवृत्तम् ॥ ३८ ॥ ग्रंथिकं
 प्रौढिकं शिल्पं चालुः भूषां वरादिकम् ॥ ब्रतबंधं स्थिरं कार्यं चित्राया कथिकर्मच ॥
 ३९ ॥ सुरसंघविधानं च संगलां वरभूषणम् ॥ बीजा रोपं च संग्रहं शास्त्राद्यं स्वातिभेदे-
 रित् ॥ ३९ ॥ वास्तु संग्रहणं भूषा शिल्पं चित्रप्रहारकम् ॥ रथकार्यं विभूषायां कुर्व्यवि-
 षयं सेवनम् ॥ ३९ ॥ पाणिग्रहं ब्रतं यात्रांगजाप्रवां वरभूषणम् ॥ चरं स्थिरं शुभं कुर्व्या-
 दनुराधाभिधेऽरिवलं ॥ रिहणं हनने भेदे प्रहारे लोहकर्मणि ॥ शिल्पे खेह विधौ
 चित्रे ज्येष्ठा श्रेष्ठा समीरिता ॥ मूलमे भवना रान संग्रामाः संधि विग्रहे ॥ वापी कूप तडागा-
 द्याविधेयाः कृषयोऽपि च ॥ ३९ ॥ वापी कूपादिकं कृत्यं विग्रहं बंध मोक्षणम् ॥ ब्रू-
 रकार्यं दुम क्षेपं पूर्वाषाढाभिधे चरेत् ॥ ३९ ॥ स्थापनं मंडलं वास्तुनिर्वेशश्च प्र-३२

वेदानम् ॥ वीजा रोपे विभूषाद्यं उत्तरा याद मे चरेत् ॥ ३९ ॥ देवता स्थापनं गेहं यो-
 स्थिकं शिल्प कर्मच ॥ सांगत्या पनयं चित्रं प्रणति कं अत्रणे चरेत् ॥ ४० ॥ चोलेचो-
 पनये युद्धे राजा प्रबोद्धादि कर्मणि ॥ गेहोद्यान विभूषासु धनिद्या कथितोत्तमा ॥ ४१ ॥
 च्छत मे चरेत् ॥ ४२ ॥ पूर्वभाद्र पदे शिल्पं साहसं छेदनं कविः ॥ विक्रयं महिषो
 द्वाणां जल यंत्रादिकं सुभम् ॥ ४३ ॥ विवाहो व्रत वंधनं देवता स्थापनं ग्रहम् ॥
 वास्तु कर्माभिधानं च उत्तर भाद्र पदे भवेत् ॥ ४४ ॥ गेहं देवालयं भूषा विवाहं द्वे-
 तं ॥ पर कष्टं निखिलं निहंति युज्यो न खलु निहंति परंस्तु युज्य देवं ॥ ४५ ॥ अथ युज्य प्रशं-
 रेऽथ मे पि युज्ये विहितं सृष्टिं सर्वेव कर्म सिद्धिम् ॥ ४६ ॥ सिंहीं यथा सर्व चतुष्य-
 दानां तथैव युज्यो वल वानुदूना ॥ चंद्रे विरुद्धे प्यथ गोचरेऽपि सिध्यति कार्याणि ॥

कृतानि शुष्ये ॥ ४४ ॥ गृहेण चिदोप्यशुभान्वितोपि विरुद्धतारोपि विलोम गोपि ॥
 करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहाण न्युपुष्यः ॥ ४५ ॥ अथ नक्षत्राणां
 स्वस्वम् ॥ तुरगमुखसदृशं योनिरूपं क्षुराभम् प्राकटसमसथैण स्यात्तमंगोननु-
 त्यम् ॥ मणिग्रहश्च चक्रं भाति प्रणलोपमम् प्रापनसदृशं सन्यञ्चात्र पर्येकं रू-
 पम् ॥ ४६ ॥ हस्ताकारमतश्च मीतिरूपं कसमञ्चान्यत् प्रवालोपमं धिष्णं तोरणव-
 त्स्थितं वलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ॥ कुथक्ते शरिरे क्रमेण सदृशं प्रख्यासमा-
 नं परञ्चान्यदंति विलासवत्स्थितमतः त्रैकोणकं च क्तिमतम् ॥ ४७ ॥ त्रिविक्रमा-
 भं च स्रवंगरूपं दत्तं ततो न्यक्षलपद्व्याभं ॥ यथैकरूपं मुरजानुकारी यत्पेव मश्या-
 देवचक्ररूपम् ॥ ४८ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ वन्दित्रिंशत्त्रिंशद्गुरोर्गुणं हस्तारिणं
 भूतवाणां प्रिवनेत्रश्च भूकुयुगाधिरामाः ॥ रुद्राधिरामगुणवेदप्रतद्विभुस-
 र्ता बुधैर्निगदिताः क्रमशो भूताराः ॥ ४९ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ भवन् स्थिर

मिति ख्यातं रोहिणी चोत्तरात्रये ॥ तत्रा एव मरुत्तगमा यिवे काद्याः स्थिरक्रियाः
 ॥ ५० ॥ मृगशिरश्चो नुराधाचरेवती मरुत्त मेत्रकम् ॥ तत्र गीतं रतं कुर्व्याद्भूषा मंग-
 ल्य संवरम् ॥ ५१ ॥ पुष्या शिवन्य मिजिह्वस्तं लघुक्षिप्र शुक्लहतम् ॥ तत्र भूषो
 षध ज्ञानं धिल्य कंच तथा रतिः ॥ ५२ ॥ ज्येष्ठा दर्श मूल मन्त्रे प्राती क्षणं चारुणभु-
 च्यते ॥ तत्र भेषो वधो वंधो मंत्र भूतादि साधनम् ॥ ५३ ॥ अश्लेषादि त्रिभंखातीषु
 नर्वसु चरं चलम् ॥ तस्मिन्वाजिगजा रमा कर मोक्ष गमा दिकम् ॥ ५४ ॥ भरणी
 च मघा पूर्वा क्रूर सुगम शुक्लहतम् ॥ विष शस्त्राग्नि घातादि तत्रोच्छेद विनाशन-
 म् ॥ ५५ ॥ विशाखा कृत्तिका प्राक्क्षै भूमिं श्रं साधारणं स्थितम् ॥ नीलात्सर्गाधिक्या-
 र्थं च मिश्रं तत्र च सिद्ध्यति ॥ ५६ ॥ अथ नक्षत्र युंत्वं तत्त्वंच ॥ मूला प्लेया मघा पूर्वा वि-
 शाखा भरणी हयम् ॥ अधो मुखानि भान्यत्र कर्म सिद्धे दधो मुखम् ॥ ५७ ॥ एषु
 वापी तडा गादि कूप भूमि तरण निच ॥ सेवा गारस्य खननं निधान खननं तथा ॥

मं. ॥ ५८ ॥ गणितं ज्योतिषा रंभखनी विल प्रवेशनम् ॥ कुर्व्यो न्यधो गता न्येव काव्या-
 र्दं लि ट्थ म ध्वज ॥ ५९ ॥ रोहिण्या द्वा तथा पुर्व्यो धनिष्ठा चोत्तरा ॥ त्रयम् ॥ वारुणा
 श्रवणा चैव नव चोर्द्ध सुखा स्तथा ॥ ६० ॥ प्रासादश्च ध्वज च्छत्राकार गृहं तोर-
 णम् ॥ नृपा भिवेक प्पारा म उच्छ्राय स्तूर्द्ध्वक के ॥ ६१ ॥ रेवती चात्विनी चित्रा
 स्वाती हस्त पुनर्वसू ॥ अनुराधा मृगो ज्येष्ठा एतास्त्रिथ्य ह्नुखाः स्मृताः ॥ ६२ ॥ गजे-
 षा श्रव वली वर्द्धमनं सहिषस्य च ॥ वीजानां वसनं कुर्व्या इमना गमना दिकम् ॥
 ६३ ॥ चक्र यंत्र रथा दीनां नौका दीनां प्रवाहनम् ॥ पार्श्वयो र्यानि कार्य्यणि कुर्व्या
 देसु च तान्यपि ॥ ६४ ॥ अय पंचकम् ॥ धनिष्ठादौ त्रं पंच स्वर्क्षेध्वेयु त्यजे बुधः ॥ याम्य
 दिग्गमनं श्रव्या पूरणं ग्रहणी पनम् ॥ ६५ ॥ स्तंभो छाये प्रेत दाह तृण काष्ठादि संग्र-
 हम् ॥ भवे त्यं च गुणं चात्र जातं लब्धं वं मृता गतम् ॥ ६६ ॥ अथ नक्षत्राणा मंधादिमंज्ञा
 ॥ अंधकं तदनु मं च लोचन म्माध्य लोचन मतः सुलोचनम् ॥ रोहिणी प्रभृति मं च तुल्यं सा

भिजिच्च गणायै तुनः पुनः ॥ ६७ ॥ अंधके पूर्वतो वस्तु मंदके दक्षिणे तथा ॥ पश्चिमे म-
 ध्ये नेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने ॥ ६८ ॥ अंधे सद्यः प्राप्यते वस्तु नष्टं कष्टात्प्राप्यं मंदने नेत्रे च
 तद्धत् ॥ दूरात्प्राप्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं न श्रोतव्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे ॥ ६९ ॥ अथ गक्त्रद-
 र्शनात् एविलग्नं ज्ञानं तत्राक्षौ नक्षत्रचारः ॥ पूर्वाषाढ इयं मूलाऽनुराधा द्वा मृगः करः ॥ ज्ये-
 ष्ठा पुनर्वसु श्रैयां तारा दक्षिणा गाः सदा ॥ ७० ॥ रोहिणी कृत्तिका प्लेयोरेवतो अवराण त्रयम्
 पुष्य श्रित्रन्नारिण चैतानि मध्यचारीणि भानि हि ॥ ७१ ॥ शश्विनी द्वितयं स्वाती विशाखा
 फाल्गुणी द्वयं ॥ मघा भाद्र पादा युगम मेता न्युत्तर गानि च ॥ ७२ ॥ अथ नभो मध्यभात् उदय
 र्क्षज्ञानं ॥ विशाखा दित्रये पूर्वाषाढाऽप्लेवाद् भे यदा ॥ रोहिणी भनभौ मध्ये तदा स्या-
 चाष्टमीदयः ॥ ७३ ॥ नवम क्षौद्रयो मूले मृगे चांवर मध्यगे ॥ श्रेष्ठे मध्यगते व्योम्नि स-
 त्तम क्षौद्रयो भवेत् ॥ ७४ ॥ अथ रविभात् मध्यभात् उदयभात् गत एव ज्ञानम् ॥ रवि भाद
 स्त भंव्ये कं मध्य भं वाष्टहीन कम् ॥ उद्यमदतिथि १५ हीनं चानख २० द्यं नच भाजितम्

॥ ७५ ॥ लब्ध एति गन्ता नादृषः श्रेया लब्धा पलानिच ॥ जयत्वा ॥ अल्ल भाद कं भलिष्ठया २५
 क्षीनं मध्य अतोष्ठभिः ॥ ७६ ॥ उवयर्क्ष निथावे कं विंशति भ्रं ग्रहे भजित् ॥ लब्धा घण्ट्या
 दि का द्वेया श्रेया रात्रि स्फुटा यवा ॥ ७७ ॥ सप्ताष्ट नवहीनं च स्वस्वीदय प्रना एतः ॥ म-
 ध्यमेतु विश्वे पोचं क्षेयो युक्त्या विच क्षणैः ॥ ७८ ॥ अथ दिवा रात्रौ सुहृत्ताः ॥ शिवो हि हि-
 त्र पितरौ च प्रभो विष्णु वेध सः ॥ विधि रिद्रो य प्रक्रा ग्नी रक्षोऽग्नी शौर्य मा भगः ॥ ७९
 ॥ सुहृत्तैः प्रा ह्मे प्रोक्ता दिवा पंच दशाः क्रमात् ॥ सुहृत्ता रजनौ प्रभु रक्षै क चरणा च्चयः
 ॥ ८० ॥ दत्तात्यं न्वाविति जीवा विश्व कौ राष्ठा मारुतौ ॥ दिन मानस्य तिथ्यं श्रे रात्रे
 रपि सुहृत्तैः ॥ ८१ ॥ नक्षत्र नाथ तुल्ये स्मिन् कार्यं कुर्यात्त्वभौ दितं ॥ दिन म-
 ध्ये ऽभिजित्वांक्षे दोय संघे शु सत्त्वपि ॥ सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्य दिग्गमने वि-
 ना ॥ ८२ ॥ अथ रत्यादि वारे त्याज्य सुहृत्ताः ॥ प्रयमा भानु महारे चंद्रे हि विधि राक्षसौ
 ॥ पित्राग्नी कुज वारिषु चंद्र पुत्रे तथा भिजित् ॥ ८३ ॥ पित्राक्षौ भृगो वीर राक्ष

| | | | | | | | | | |
|----|-----------|------------|----------|----------|----------|---------|--------|------|-----|
| १ | नक्षत्रा | उमा | स्वामी | नीर्यडमु | मदु | मैत्र | जंभास | मृगं | ११ |
| २ | रेवती | व्यामदा | भमा | नीर्यडमु | मदु | मैत्र | जंभास | मृगं | ११ |
| ३ | उषा | लक्ष्मी | नीर्यडमु | उईमु | भव | स्थिर | दिव्या | मृगं | २ |
| ४ | मृगशिरा | मृत्युदे | ननुकपा | नधोमु | उग्र | कूर | कारणा | मृगं | २ |
| ५ | शतभिषा | कल्याण | वरुण | उईमु | चर | चल | जंभास | मृगं | १०० |
| ६ | धनिष्ठा | शुभद | वसु | उईमु | चर | चल | जंभास | मृगं | ४ |
| ७ | श्रवणा | शुभद | विष्णु | उईमु | चर | चल | दिव्या | मृगं | ३ |
| ८ | जमिजित | सिद्धि | महा | ० | लघु | क्षिप्र | कारणा | मृगं | ३ |
| ९ | उग्रपाद | वृद्धि | विमदेव | उईमु | भव | स्थिर | जंभास | मृगं | ३ |
| १० | पूर्वाषाढ | हानिमद | उदक | नधोमु | उग्र | कूर | जंभास | मृगं | ४ |
| ११ | मूल | नक्षत्रा | राक्षस | नधोमु | नीर्यडमु | मृगं | दिव्या | मृगं | ११ |
| १२ | ज्येष्ठा | धननाश | देव | नीर्यडमु | नीर्यडमु | मृगं | कारणा | मृगं | ३ |
| १३ | जनुषा | सर्वसिद्धि | मित्र | नीर्यडमु | मृगं | मैत्र | दिव्या | मृगं | ४ |
| १४ | विशाखा | जशुभ | दंदाग्री | नधोमु | निम | साधा | जंभास | मृगं | ४ |
| १५ | स्वाती | जशुभ | वायु | नीर्यडमु | चर | चल | दिव्या | मृगं | १ |
| १६ | विभा | शुभद | त्वया | नीर्यडमु | मदु | मैत्र | कारणा | मृगं | १ |
| १७ | इस्त | लक्ष्मी | रवि | नीर्यडमु | नधु | क्षिप्र | जंभास | मृगं | ५ |
| १८ | जमिजित | विद्याप्र | नक्षत्रा | उईमु | भव | स्थिर | जंभास | मृगं | २ |
| १९ | पूर्वाषाढ | मृत्युदे | भग | नधोमु | उग्र | कूर | दिव्या | मृगं | ५ |
| २० | मघा | माशक | पितर | नधोमु | उग्र | कूर | मृगं | मृगं | ५ |
| २१ | जलया | शोक | सर्व | नधोमु | नीर्यडमु | मृगं | मृगं | मृगं | ५ |
| २२ | पुष्य | शुभ | गुरु | उईमु | नधु | क्षिप्र | जंभास | मृगं | ३ |
| २३ | पुनर्वसु | मध्यम | नक्षत्रा | नधोमु | चर | चल | मृगं | मृगं | ४ |
| २४ | आर्द्रा | शुभ | शिव | उईमु | नीर्यडमु | मृगं | मृगं | मृगं | १ |
| २५ | मृगशिरा | शुभ | चंद्र | नीर्यडमु | मदु | मैत्र | मृगं | मृगं | १ |
| २६ | रोहिणी | सिद्धि | महा | उईमु | भव | स्थिर | जंभास | मृगं | ५ |
| २७ | लोतिका | जशुभ | मित्र | नधोमु | मित्र | मृगं | मृगं | मृगं | ६ |
| २८ | भरणी | जशुभ | धम | नधोमु | उग्र | कूर | मृगं | मृगं | ३ |
| २९ | आश्विनी | शुभ | नक्षत्रा | नीर्यडमु | नधु | क्षिप्र | मृगं | मृगं | ३ |

॥ ७५ ॥ तस्य एव गता नाहुः श्रेया लब्धा पलानि च ॥ जपत्वा ॥ अल्लभादकं भंतिष्ठया १५
 दीनं मध्य भूतोद्युभिः ॥ ७६ ॥ उदयर्क्षं निधावेकं विंशतिं ग्रहे भजित् ॥ लब्धा घण्ट्या
 दिक्का द्वेया श्रेया रात्रि स्फुटाथवा ॥ ७७ ॥ सप्तष्टनवहीनं च स्वस्वीदय भूता एतः ॥ म-
 ध्यमेव विशे योयं ज्ञेयो युक्त्या विचक्षणैः ॥ ७८ ॥ अथ दिवा रात्रौ सुहृताः ॥ अथोदितं
 अतितौ वषट्मो विष्व वेधसः ॥ विधि रिद्विंश शक्राग्नी रक्षोऽभी श्रेयसा भगः ॥ ७९
 ॥ सुहृत्तं प्राप्ते शोका दिवा पंच दशः क्रमात् ॥ सुहृत्तौ रजनौ ग्रंथु रक्षे क चरण द्वयः
 ॥ ८० ॥ दत्तात्यं चादिति जीवा विष्व कौ तप्त भार्ता ॥ दिनमानस्य तिथ्यं शो रान्ने
 रपि सुहृत्तं काः ॥ ८१ ॥ नक्षत्र नाथ तुल्ये स्मिन् कार्यं कुर्यात्स्वभो दितं ॥ दिन म
 ध्ये ऽभि जित्संक्षे दीय संघे न्यु सत्त्वपि ॥ सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्य दिगमनं वि-
 ना ॥ ८२ ॥ अथ त्यादिवारेत्याज्य सुहृताः ॥ अथ मा भानु मद्गारे चंद्रे हि विधि राक्षसो
 ॥ पित्राग्नी कुज वारितु चंद्र सुत्रे तथा भिजित् ॥ ८३ ॥ अथ त्रासो भूगो वीरे राक्ष-

अथ योग प्रकरणम् ॥ वाक्पतेर्ह्ये नमस्त्र प्रवणा चान्द्र मेव च ॥ गणयेत्तद्वृत्तिं कुर्व्याद्योगस्य
दृष्टा प्रोक्तः ॥ १ ॥ विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ॥ अतिगण्डः
सुकर्म्मोच धृतिः शूलस्तथैव च ॥ २ ॥ गंडो वृद्धिर्धुवश्चैव व्याघातो हर्षणास्त-
था ॥ वज्रसिद्धी व्यतीयातो वरियान् परिषः शिवः ॥ ३ ॥ सिद्धिः साध्यः शुभः शु-
क्लो ब्रह्मेन्द्रो वैद्यतिः क्रमात् ॥ सप्त विंशतिर्योगास्तु कुर्पुर्नाम समं फलम् ॥ ४ ॥
विरुद्धं संज्ञा दूहयेत् योगास्तेषां मनिष्टः खलु पावजायः ॥ सर्वैर्धृतिस्तु व्यतिपा-
तनामा सर्वे व्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥ ५ ॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रं व्या-
धातं संज्ञेन वपंच शूले ॥ गंडेति गंडे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनी-
याः ॥ ६ ॥ द्विवेदि कुलं संभूतं सरयू कृतं संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्ते वा पंचमी-
यं प्रश्ना शुभा ॥ ७ ॥ द्वाविंशी संग्रहं शिरो मणौ योग कथनं नाम पंचमी प्रभा ॥
५ ॥ अथ करणं प्रकरणम् ॥ गताश्च तिथयो निम्नाः द्वाभ्यां शुक्ला दितः क्रमात् ॥ एकोनाश्रस

साम्न्तु गुणे हिने ॥ रोद्रे सार्थी प्रने रन्दि दमे त्याज्या मुहूर्त काः ॥ ८४ ॥ द्विवेदि कुल संभूत

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | द्विवा मुहूर्ताः |
|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|------------------|
| शिव | सर्प | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | देवताः |
| शार्द | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | नक्षत्राणि |
| रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रुद्र | रात्रि मुहूर्ताः |
| गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | गार्ग | नक्षत्राणि |

अथरव्यादि वारे त्याज्य मुहूर्ताः ॥

| गर्जन | वज्र | पितृ | अग्नि | अभि | रक्षस | पितृ | सर्प | सुहृत् | सर्प | सुहृत् | सर्प | सुहृत् | सर्प | सुहृत् | सर्प | सुहृत् |
|--------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|--------|
| उत्तरा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा | शर्मा |
| दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ | दि २४ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |

अथ योग प्रकरणम् ॥ वाक्पतेर्हर्कं नक्षत्रं प्रवणा चान्द्र मेव च ॥ गणयेत्तद्वृत्तिं कुर्व्याद्योगस्य
 दृष्टा प्रोयतः ॥ १ ॥ विष्कुम्भः प्रीति राशुष्मान् सौभाग्यः प्रोभन स्तथा ॥ अतिगण्डः
 सुकर्मोच धृतिः शूल स्तथैव च ॥ २ ॥ गंडो वृद्धिर्भुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्त-
 था ॥ वज्रसिद्धी व्यती यातो वरियान् परिघः शिवः ॥ ३ ॥ सिद्धिः साध्यः शुभः शु-
 क्तो ब्रह्मेन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ॥ सप्त विंशति योगास्तु कुपुर्णम समं फलम् ॥ ४ ॥
 विरुद्धं संज्ञा द्दह येन योगा स्ते वा मनिष्टः खलु पाद ज्ञाद्यः ॥ सवै धृतिस्तु व्यतिपा-
 तनामा सर्वोप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥ ५ ॥ तिलस्तु योगे प्रथमे च वज्र व्या-
 धात संज्ञेन व पंच शूले ॥ गंडेति गंडे च षडेव नाड्यः शुभे शु कार्थ्ये शु विवर्जनी-
 याः ॥ ६ ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्ते वा पंचमी-
 ये प्रभा शुभा ॥ ७ ॥ वृत्तिश्री संग्रह शिरो मणौ योग कथनं नाम पंचम प्रभा ॥
 ५ ॥ अथ करण प्रकरणम् ॥ गताश्च तिथयो निम्नाः द्वाभ्यां शुक्ला दितः क्रमात् ॥ एकोनशत

हृत्वेयाः करणो स्याद्वादिकम् ॥ ९ ॥ ववादुयं बालव कोल वा ख्यंतं तो भवेत्तैतिल
 नाम धेयम् ॥ गणभिधानं वरिणं च विष्टि रित्याहुर्गर्वाः करणानि सप्त ॥ १० ॥ अंते क-
 णा चतुर्दशां शकु निर्दृष्टं भागयोः ॥ गेयं चतुर्व्यं नागं किं स्तु प्रं प्रतिपदले ॥ ११ ॥
 तथ करणानां त्वामिनः ॥ इन्द्रो ब्रह्मा मित्र नामार्थ्य माभूः श्रीः की नाशु श्येति तिष्ठ्य धनाथा
 ॥ कल्लु क्षाख्यौ सर्प वायु लथै वये चत्वार स्तो स्थिराणां चतुर्णां ॥ १२ ॥ यौष्टिक स्थिरशु
 भानि ववार्ये बालवे द्विज हिता न्यपि कुर्यात् ॥ कोल वे प्रमद मित्र विधानं नै तिले शुभ
 गता अय कर्म ॥ १३ ॥ गेरे च बीजा अय कर्षणां निवारिण्य के स्थै र्व वरिण कृत्त्रियाश्च
 ॥ न सिद्धि माया ति कृतं च विस्त्रां विधारि घातादिषु तत्र सिद्धिः ॥ १४ ॥ गंत्रो वधानि श-
 कु नी तु स यौष्टिकानि गो विप्र राज्य पितृ कर्म च तुष्य देपिं ॥ सौभाग्य क्षरण यति धव
 कर्म नागे किं स्तु घ्नान्नि निखिलं शुभ कर्म कार्यम् ॥ १५ ॥ अथ भद्रायां विशेषः ॥ ए-
 कादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्ले पक्षे येरदले ॥ अष्टम्यां पूर्वमायां च भद्रा पूर्व दले स्मृता ॥

८ ॥ तृतीयायां दशम्यां च कृत्स्ने पक्षे ये दले ॥ सप्तम्यां च चतुर्दश्यां भद्रा पूर्व दले भ-
वेत् ॥ ८ ॥ अथ भद्रायाः शृंगविभागः फलं च ॥ नाड्यस्तु पंच वदने च गले तथे का वक्षो
दशैक सहितं निहितं च तस्यः ॥ नाभ्यां कटौ यद्वयं पुच्छ लतास्तु तिस्रो विष्टेर्वृद्धे रश्मि-
हिलो गवि भाग एवः ॥ ९० ॥ स्थानफलम् ॥ मुखे कार्यध्वस्ति भवति मरणं चाथ गले के-
धना हानिर्वक्ष्यथ कटि तटे बुद्धि विलयः ॥ कलिर्नाभौ देशे विजय मय पुच्छे च
जगदुः ॥ शरीरे भद्रायाः पुष्पगिति फलं पूर्व मुनयः ॥ ९१ ॥ अथ भद्रा वासः ॥ मीने मे
वालिकर्के प्राणि निनि चसति स्वर्ग संस्थापि विष्टिः ॥ कन्यायां तौलि तस्ये धन मिथु-
न गते नाग लोके निवासः ॥ ९२ ॥ कुम्भे सिंहं हये वामकरं सुगते राज ते मृत्यु लोके ॥
भद्रा चंद्र प्रभावाहि मकर तनया नो शुभा लोकि के स्यात् ॥ ९३ ॥ स्थान फलम् ॥ स्वर्गे
भद्रा भवेत्सौरव्य पातालैश्च धनागमः ॥ मृत्यु लोके यदा भद्रा कार्यं सिद्धिस्तदा न-
हि ॥ ९४ ॥ अथ वागराणां फलम् ॥ मीमे शुक्रैश्च कल्याणी शनी चैव तु द्युश्च की ॥ शुक्रैश्च पुण्य

वती द्वेया चान्य वारिषु भद्रका ॥ १५ ॥ कार्थ्येऽत्यावश्य के विष्टे मंत्रमात्रं परित्यजे-
त ॥ अथ गद्याः दिङ्मुखम् ॥ प्राक्का १४ छ ८ मुनि ७ तिथ्य १५ छि ४ ति १० पुद्गा ११ गि ३
सिते तिथौ प्रथमादि बुया मेवु हिम्सु पूर्वा दितः क्रमात् ॥ १६ ॥

| | | | | |
|---|---|----|----|--|
| ३ | ७ | १० | १४ | |
| ८ | ३ | ६ | १ | |
| ९ | ४ | ५ | २ | |

कले प्रहरणं पंचघटी भद्रा सुरवन् ॥

| | | | | |
|---|---|----|----|----|
| ४ | ८ | १२ | १५ | १९ |
| ५ | २ | ७ | ८ | १० |
| ६ | ३ | ४ | ५ | ६ |

विष्टे न्युखं विजानीया च्छुभं पृष्टेऽग्रतोऽशुभम् ॥ अथ भद्रा पुच्छन्
चतुर्थ्यां चाष्टमे यामे प्रथमे चाष्टमी दिने ॥ एका दश्या तथा वष्टे पौर्णिमा स्या तृतीयके
॥ १७ ॥ एवं घटी त्रयं पुच्छं कल पक्षे त्वथो न्यते ॥ १८ ॥ सप्तमे स्यात्तृतीयाया
स्तप्तम्यास्तु द्वितीयके ॥ दशम्यां पंचमे यामे चतुर्दश्या चतुर्थके ॥ १९ ॥ विष्टेऽपुच्छे
ज्यो यूहे कार्यं मन्यच्च शोभनम् ॥ अथ भद्रा कर्माणि ॥ बधबंध विद्या गम्य प्यु छेद नोच्चा-
टनादिकम् ॥ तुरंग महिषो द्यादि कर्म विष्ण्यातु सिद्ध्यति ॥ २० ॥ अथ भद्रायां देशापवादः
॥ तिथेः पूर्वार्द्धजा एतौ दिने भद्रा परार्द्धजा ॥ भद्रा होयो न तन्न स्यात् कार्थ्येऽत्या-

वश्य के सन्ति ॥ २२ ॥ वैश्यतो व्याति पाता रव्ये विष्ट्या भोमे च वासरे ॥ तथैव दुष्टता
 रासु मध्यान्ना त्परत प्रपुभः ॥ २३ ॥ अथ भय विषये कस्य चिन्मते विशेषः ॥ प्रुले तु दृष्टि
 की भद्रा कल पक्षे भुजं गमा ॥ सादिवा सृष्टिणी रात्रौ दृष्टि की त्य परे जगुः ॥ २३ ॥ सु-
 खं त्याज्यं तु तृष्टिण्या दृष्टि च क्याः पुच्छ मेव च ॥ खरस्याः प्रसवे दुर्गा पूजने दान कर्म-
 णि ॥ २४ ॥ दाह घातादि के भद्रा प्रस्ता नान्यत्र शोभनाथ दैत्यैः समरे मरेषु वि-
 जिते ज्वीशः क्रुधा दृष्टवान् ॥ २५ ॥ स्वात्कायात्किल निर्गता रवर मुखी लो गूलि-
 नी च त्रिपात् ॥ विष्टि सप्त भुजा म्गेन्द्र गल का क्षा मोदरी प्रेत गा दैत्यघ्नी मुद्दिता
 सुरैरु कणा प्रांते नियुक्ता तुला ॥ २६ ॥ द्विवेदिकुल संभूत सरयू क्त संग्रहे ॥ प्रिणि
 मणौ समाक्षे वा दक्षी यं हि प्रमा प्रुभा ॥ २७ ॥ द्रुति श्री संग्रह शिरो मणौ करण क-
 थनं नाम वक्षी प्रभा ॥ २८ ॥ अथ तार प्रकरणम् ॥ सपाद र्क्ष द्वयं भोगे मेया दीना अनु-
 क्रमात् ॥ अश्वि भाद्रेव तीया च द्वा प्रि भोगे न वं धिकः ॥ १ ॥ अथ एशयः ॥ अश्विनी

भरणे धिसे कृत्तिका प्रथमां धिकम् ॥ मेघस्या त्कृत्तिका पाद त्रितयं रोहिणी तथा ॥ २
 ॥ दृष मी मृग पूर्वाङ्गं तदङ्गं च तथार्द्रम् ॥ पादत्रयं पुनर्वसुः सरणि म्मिथुना मि-
 धः ॥ ३ ॥ तत्त्व्योऽङ्घ्रि स्तथा पुच्छो ह्यश्लेषा कर्कटा मिधः ॥ मया पूर्वोत्तराङ्गोऽङ्घ्रिः
 सिंहस्तच्चरणत्रयम् ॥ ४ ॥ हस्त चित्राभ पूर्वाङ्गं कन्या चित्रोत्तरं दलम् ॥ स्वाति
 मंच विशाखायाश्चरण त्रितयं तुला ॥ ५ ॥ तत्त्व्योऽङ्घ्रि नुराधारव्येज्येष्ठा भं च ध्रुवकः
 स्मृतः ॥ मूलं पूर्वोत्तरायाडा प्रागङ्घ्रिः कथितो धनुः ॥ ६ ॥ उत्तराङ्घ्रित्रयं कर्को ध-
 निष्ठा प्रथमं दलम् ॥ मकरारव्यो धनिष्ठा त्रिदलं च प्रात तास्का ॥ ७ ॥ पूर्वा पाद-
 त्रयं कुम्भस्तदङ्घ्रि चरण स्तथा ॥ ऊर्मा भं रेवती चैव मीनराशिः प्रकीर्तिताः ॥ ८ ॥
 अथावकहृद चक्रानुसारेण नक्षत्र चरणानां वर्णाः ॥ अश्विनी तु चुचे चोला लिखूलेलो भर-
 रायपि ॥ कृत्तिका स्यादङ्गं रोहिण्या वा विबु स्मृता ॥ ९ ॥ चैवो ककि मृगश्या-
 द्री कूटाडा छा प्रकीर्तिता ॥ केको हहि पुनर्भस्याङ्गं हे होढा च पुष्यभम् ॥ १० ॥ अश्ले

पानुडिदुहेडो सागी मूमे मघा ह्वयम् ॥ सोढा दीटू तु पूर्वाख्या मुफा देहो पयि स्यता
 ॥ ११ ॥ प्रीक्तः पूयणा दोहस्तः पेपोरितु चित्रका ॥ स्मरेरोता तथा स्वातीति तूते तोवि-
 षाधिका ॥ १२ ॥ अनुराधा ननीसूने ज्येष्ठा नोया यियुर्मता ॥ तथा येयो भभीमूलं
 पूर्वाषाढा शुधाफटा ॥ १३ ॥ भेभोज्युत्तराषाढा जृजेजो बा तथा भिजित् ॥ रिक्-
 खूखेलो प्रवोक्ष्यः गगी गूगे धनिष्ठिका ॥ १४ ॥ गोसा सिसूयता खंच पूभो-
 सेतो ददी सता ॥ ऊभा दूया ऊजा क्षेया देहो चचिचरेवती ॥ १५ ॥ अयचद्रस्य पुभापु-
 भफलम् ॥ स्वजन्म राशि मारभ्य चंद्र राशि स्थितं फलम् ॥ चंद्रे जन्म स्थिते शुष्टिः
 द्वितीयेनो सुख भवेत् ॥ १६ ॥ तृतीये धन लाभः चतुर्थे रोग संभवः ॥ पंचमेका-
 र्यं नाशः अथैव गमो महान् ॥ १७ ॥ सप्तमे भूप सन्मानं त्वष्ट मे सरां भवत्
 ॥ नवमे च भयं क्षीयं दशमे कार्यं संपदः ॥ १८ ॥ एका दृष्टौऽर्थे लाभः द्वास्तौ विवि-
 दौ पदः ॥ अथ शुक्ल पक्षे विशेषः ॥ द्वितीयः पंचरा प्रचन्द्रे नवमीऽपीज्य वच्छुभः ॥ शुक्ल-

पक्षे विशेषो ऽयं तुल्यमन्यतयो अयोः ॥ २० ॥ चन्द्रस्यैव वलः शुक्ले न तु तारा विधा-
 नता ॥ सति कान्ते वलो येते स्वातं न्यन च योयितः ॥ २१ ॥ कक्ष पक्षे तु तारायाः वल-
 ग्रहं सदा यतः ॥ क्षीणे च प्रोयिते कान्ते गार्हस्यं गेहिनी चरेत् ॥ २२ ॥ अथ तारा वल-
 ग् ॥ जन्म भादिनाभं यावत्ताराक्षेत्रे या न वोद्धते ॥ जन्म संपदि पक्षे मयाप सिद्ध व-
 धाः क्रमात् ॥ २३ ॥ सिन्नाति मित्र संज्ञं च नाम तुल्य फला प्रचताः ॥ द्वि प्रचतुः बहु-
 नवाष्टम्य स्तारः श्रेष्ठ तमा मताः ॥ २४ ॥ जन्मारव्या मध्यमाक्षेत्रे नेष्टा स्त्व न्याः
 प्रकान्तिताः ॥ अथावस्य के तार एणं त्याज्यो ष्ठाः ॥ तारा पूर्णाः त्यज्ये दद्या वर्त पंच त्रि सप्त-
 काः ॥ २५ ॥ द्वितीये चैव तत्यादः तुर्य काया स्तृतीय काः ॥ तृतीये तु शुभा स्सर्वाः
 कार्ये त्याव प्रद के स्मृताः ॥ २६ ॥ अथ बुध तारा सुदानम् ॥ सप्तम्यां तार का यां च द्रष्टा-
 त्स्वर्णं तिलानपि ॥ गुडं तृतीय तारायां पंचम्यां लवणं तथा ॥ २७ ॥ दोषा यनु तये ता-
 सां दद्याच्छाकं त्रिजन्म सु ॥ अथ चन्द्र वस्था ॥ निष्ठा करस्य या वस्था नर एधि सप्त-

विता ॥ नरा गण्या च राक्षसायर्कं प्रेषिता ॥ ३८ ॥ वष्टिघ्नं गतमं भुक्तघटी
 भुक्तं भुक्तं ॥ अण्विह्वलं व्यतोऽर्कं प्रेषेऽवस्थाः क्रिया द्विधोः ॥ ३९ ॥ अ-
 र्थार्थः ॥ अण्विह्वली गारभ्य गतभा निपयया हं गुणवा निवर्तमान नक्षत्र भुक्तघटी युता
 निता नि पुन युगे प्रत्युत्ति राक्षसा निशराभि इत पंच च त्वारि श्र ता भाज्या निय
 स्वभ्रमागतं गता वस्था स्ताः प्रेषं वर्तमाना वस्था या तत्र लब्धा कस्यापि ह्यवशगधि
 वी ह्यपश्रभिर्भागे प्रेषं प्रवा साध वस्था चंदस्य गताः स्युः ताः ॥ अवस्था मेय राशेः
 पुनः प्रवा सादि संज्ञाः ह्यप राशे नस्था संज्ञा सर्वसि पुनादि ह्यदश राशिवु मृतादि सं-
 ज्ञा गण्या रिक्तो ह्यपरा वस्थाः क्रमेण भवं तीत्यर्थः ॥ ३९ ॥ प्रवासोऽथ विनाशश्च
 परं ताग हास्य के ॥ रतिः क्रीडा तथा सुप्ता भुक्ता चाथ जरा भिधा ॥ कंपिता मुस्थिराव-
 रणा ह्यपरी ता विधो स्मृताः ॥ ४० ॥ ता सांमानं सपदि का दश नाडी सितं सवेत् ॥
 मेवा रिताः प्रवा साधाः नाम तुल्य फल प्रदः ॥ ४१ ॥ मेघ राशे प्रवा साद्या ना प्रा-

शत्रुपथमर्थो ॥ मृताद्या मिथुने चैवं ज्ञानाद्वाद्वा राक्षसु ॥ ३२ ॥ अथ काव्यं विधिः ॥ ३३ ॥
 म ॥ उद्वाहे नीत्सवे जीवः सूर्यो भूषाल दर्शने ॥ संग्राने घरणी सुने ॥ विद्याभ्यासे पुनोत्तरे ॥
 ॥ ३३ ॥ यात्रायां भार्गवः प्रोक्तो दीक्षायां च प्रानै प्रचरः ॥ चंद्रमाः सर्वकार्येषु प्रधरस्तो
 मत्स्योत्तरे ॥ ३४ ॥ अथ चंद्रवले विशेषः ॥ शुभं चंद्रोऽप्य सत् पापा त्सप्तनः पाप युक् तथा
 ॥ पाप मध्यगनः क्षीरलो नीच गरुडानुवर्गिः ॥ ३५ ॥ असुभोऽपि शुभं प्रचंद्रो गुरुणा
 लोकिनी युतः ॥ सर्वार्थेषु शुभं भोगा त्वाधि मित्रांशकेऽथवा ॥ ३६ ॥ आपावदेवदान-
 म् ॥ नंदुर्नोरच तिथौ पुष्टे वीरत्वं सकांचनम् ॥ ग्रासुक्षौ कनकं योगे करणे धान्यमेव च ॥
 ३७ ॥ शंख रोप्य युतं चंद्रे तारायां सै भव तथा ॥ नाड्यां हेम न्युपे दद्यात्कार्येऽत्यावश्यके-
 सति ॥ ३८ ॥ हिते हि कुल संभूत सरसू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाक्षेया सप्तमीयं प्रभा-
 शुभा ॥ ४० ॥ इति णी संग्रह शिरो मणौ तारा कथनं नाम सप्तमी प्रभा ॥ ७ ॥ अथ शुभा-
 शुभ नक्षत्राणाम् ॥ हस्ती सेवनं पर्व सुपक्ष मध्ये पलं च यक्षी बुच सर्व तैलम् ॥ तृणं विनाशम् ॥

य चतुर्दशी शुक्ल क्रिया स्याद् सकृत् दासु ॥ १ ॥ व्यती पतिच संक्रांता वेका दृष्ट्या च प-
 र्वसु ॥ अर्द्धे भौम दिने चिख्यां नाभ्यंगं न च वैधृतौ ॥ २ ॥ पर्वाणि ॥ चतुर्दश्यष्टमी
 कृत्वा अमावास्या च पूरिमा ॥ पुण्यानि पंच पर्वाणि संक्रांति दिनि पस्य च ॥ ३ ॥
 अत्र तिथि स्तात्कालिकी ॥ त्वाने वाम्यं जने चैव संत धावन भैथुने ॥ तिथि स्तात्कालि-
 की ग्राह्या तथा मरण जन्मनोः ॥ ४ ॥ त्रयोदश्यां द्वितीयायां सप्तम्या च विशेषतः
 ॥ षड्भूविदस्त्र त्रिधात्मानं नाचरेयुः कदाचन ॥ ५ ॥ कामदुर्गाति करविनष्टे द्व-
 र्द्वे दिने बुध ॥ सह दामल कस्मानं संपत्सुत्र विना श्रानम् ॥ ६ ॥ सहस्रपंचा नवमी
 शुद्धे श्री संतती रामल कै नरस्य ॥ त्वानं निहं त्यंत्य दिने तु धत्ते तिले मिश्रयं पुरणं क-
 रं सदैव ॥ ७ ॥ अथ दग्धयोगः ॥ एकोदशी चेन्दु वारे ह्यदृशी चार्क वासरे ॥ षष्ठीदृ-
 हसते वीरे तृतीया बुध वासरे ॥ ८ ॥ असृमो शुक्र वारे च नवमी शनि वासरे ॥ पंच-
 मी भौम वारे च दग्ध योगाः प्रकीर्तिताः ॥ ९ ॥ अथ विययोगः ॥ षष्ठी श्रां केनवमी च

श्रुक्ते बुधे द्वितीयं तपने चनुष्ठी ॥ जीवेऽष्टमी सौरिकुजे न्हि सप्तमी योगा विग्रहः
 तुल नाशनास्स्युः ॥ १० ॥ भद्रहृता प्रानयोगः ॥ सप्त यजुगदि तिथयः लोम वारादि
 निर्धुताः ॥ अग्नि जिह्वा स्तप्त योगाः अंगले व्यतिदाहिताः ॥ ११ ॥ अथ यम वंदः ॥
 मद्या विप्राया आर्द्रा च धूलं मुखं च कृत्तिका ॥ रोहिणी हस्त इत्युक्ता यस्य वंताः क्रमा
 द्रवेः ॥ १२ ॥ एयामपवादः ॥ दिवा मृत्यु प्रदाः पाप दोषा स्त्वे तेन रात्रिषु ॥ शुभ
 कार्ये प्रसूतोच सर्वदा यरि वर्जयेत् ॥ १३ ॥ ज्ञानश्रवक कृत्ये ॥ यम धंदे त्यजे द्यौः
 लो हादश नाडिकाः ॥ अन्येषां पाप योगानां मध्याह्ना त्यत प्रशुभं म् ॥ १४ ॥
 अथ चैत्रादिमासे तिथि ग्रन्थाः ॥ असुमीनवमी चैत्रे पक्षयो रुमयो रपि ॥ माधवे द्वादशी
 त्याज्या पक्षयो रुमयो रपि ॥ १५ ॥ ज्येष्ठे त्रयोदशी निंद्या श्रिते कृत्से चतुर्दशी
 ॥ आर्द्राते कृत्स पक्षस्य षष्ठी शुक्ले तु सप्तमी ॥ १६ ॥ द्वितीयाच तृतीयाच प्राव-
 र्णे श्रित कुल योः ॥ प्रथमाच द्वितीयाच नभस्ये मासि निर्दिते ॥ १७ ॥ दशम्ये

कादशी निंदा मासीधे शुक्ल कलयोः ॥ ऊर्ज्जे चतुर्दशी शुक्ला कल पक्षे तु पंचमी
 ॥ १८ ॥ सप्तमी चाष्टमी मौम्ये पक्षयो रुमयोरपि ॥ पौषे यद् द्वये चैव चतुर्थी पंचमी न
 या ॥ १९ ॥ माघे तु पंचमी षष्ठी शुक्ले कलसे यथाक्रमम् ॥ तृतीया च चतुर्थी च फा-
 ल्गुने सित कलयोः ॥ २० ॥ तिथयो मासशून्याख्या वंश वित्त विना प्रकाः ॥ अत्र
 शुश्राहं प्रकुर्वीत नैव सन्मगलं क्वचित् ॥ २१ ॥ अथ नक्षत्र दोषः ॥ द्वितीयया चतु-
 राधा श्रुत्तरा च तृतीयया ॥ पंचमी च मघा युक्ता चित्रा स्वात्यो खयो दृशी ॥ २२ ॥ प्र-
 तिपद्युत्तरा यादा नवम्या कृतिका यदि ॥ सप्तम्या हस्त मूले च यक्ष्या ब्राह्मं भवेद्यदि
 ॥ २३ ॥ पूवा षाढ पदाष्टम्या एका दश्या च रोहिणी ॥ द्वादश्या च यदाश्लेषा त्रयो-
 दश्या भवा यदि ॥ २४ ॥ एतु कार्ये कृते चेत्स्यात्परमा सान्भरणं क्रवस् ॥ अथ से-
 षादि मासे मूल्य नक्षत्राणि ॥ अश्विनी रोहिणी चैत्रे मूल्ये भे परि कीर्तिते ॥ चित्रा स्वानो
 च वैशाखे ज्येष्ठे विश्वे ज्येष्ठे ॥ २५ ॥ भगवासव वाया देवावरो हरि विश्वभे ॥

॥ नभस्ये वारुणां त्यर्द्धमजपादप्रवयुज्यापि ॥ ३६ ॥ कार्तिके पितृब्रह्मर्क्षे सो-
 म्ये चित्रा द्विदेवते ॥ यौये दस्रक रार्द्धस्यु माघे मूलं च विष्णुभम् ॥ ३७ ॥ तपस्ये-
 श्चक्रभरणी मून्यभान्याङ्गराजाः ॥ एयुयचुकृतं कर्म धने स्सह विनश्यति ॥
 ३८ ॥ अथ चैत्रादि नामे यु मून्ये राशयः ॥ चत मन्स्य दया युग्य मेप कन्या स्स दृष्टिक्काः ॥
 तुला चापकुली राख्याः मृगसिंहा प्रच राशयः ॥ ३९ ॥ चैत्रा दो मास शून्या ख्यावे-
 श्च वित्तविना श्रानाः ॥ सथ विपमतिथिषु दग्ध लग्नानि ॥ मृगसिंहो तृतीयायां प्रथमा
 यां तुला राशौ ॥ पंचम्यां बुधराशी द्वी सप्तम्यां चापचंद्रमे ॥ ४० ॥ नवम्यां सिंहकी-
 टारख्यावेका दश्यां गुरो र्गृहे ॥ दृष मीनी त्रयो दश्यां दग्ध सृज्जास्त्वमी ग्रहाः ॥
 ॥ ॥ दग्धसप्तनियत्कर्म कृतं सर्वमग्रप्रयति ॥ ४१ ॥ अथैतेयां दृष्ट योगानां आवपून-
 क कृत्ये परिहारम् ॥ केन्द्रे चैव त्रिकोरोच शुभे सुपचयेऽपिवा ॥ एकोऽपि चलवांश्चा-
 पि मून्यतिष्युडु नाशकः ॥ ४२ ॥ तिथयो मास मून्याश्च मून्य लग्नानि यान्यपि

॥ मध्य देशे विवर्ज्यानि नदूध्याणी तरेयुत ॥ ३३ ॥ पंगवंध काणा लग्नानि मास
 मुन्या प्रचरणयः ॥ गौड - मालवयोस्त्याज्या अन्य देशे न गहिताः ॥ ३४ ॥ वज्रयेत्स
 र्व कार्येयु हस्तार्क स्थंचमी तिथौ ॥ भौमाब्धिनीच सप्तम्या अक्ष्या चंद्रैदवं तथा ॥
 ॥ ३५ ॥ बुधानुराधा मलम्या दशम्या भृगुरेवतीम् ॥ नवम्या गुरुपुष्यं चैकादश्या श
 नि रोहिणीम् ॥ ३६ ॥ ग्रहप्रवेशे यात्रायां विवाहेच यथा क्रमम् ॥ भौमेऽश्विनी
 शनी ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ॥ ३७ ॥ हस्ते रवौ शशधरेण मृगोत्तमं गं भौमेऽ
 श्विनी बुधदिनेच तथा नुराधा ॥ पुष्ये गुरौ भृगुसुतेऽपिच पौलधिदंभ्यरोहिण्यथार्कन
 नयेऽमृतसिद्धि योगाः ॥ ३८ ॥ यदि विष्टिच्यती पातो दिने वाय्य शुभं भवेत् ॥ ह
 न्यतेऽमृतयोगेन भास्करेण तमोयथाऽर्द्धाया नंददि योगः ॥ आनंदः कालदंडप्रचधू
 म्नाक्षोऽथ प्रजापतिः ॥ सौम्यो ध्वांक्षो ध्वजश्चापि श्रीवत्सो वज्रमुद्रौ ॥ ४० ॥
 सत्रं नित्रं क्रमेणैव मानसः पद्मलुंवकौ ॥ उत्प्रांत मृत्यु काणाख्याः सिद्धिश्चैव शु-

आसुतो ॥ ४१ ॥ सुश्लेच गदाख्यश्च मातं गोरक्ष सप्रचरः ॥ स्थिरः प्रबद्धमानश्च
 नाम तुल्य फलाभमी ॥ ४२ ॥ भानुवारिः शिवं नक्षत्रात्मा भिजि त्के प्रत्न सर्वभैः ॥
 भवंति क्रमशो योगाः अष्टा विंशति संख्यकाः ॥ ४३ ॥ मृगादागम्य रात्री प्रो प्रले-
 पातः कुज वासरे ॥ हस्ता ह्युधेऽनु राधायाः गुरु वारि तथैव च ॥ ४४ ॥ उत्तराषाढ ते
 श्रुक्ने शत तारादि तः प्रानौ ॥ अथैतेषु कियद्दुष्टयोगाः त्याज्याः ॥ ध्वाभिशायुध सुदरेषु
 घटिका स्त्याज्यास्तु पंचादितः पंचं लुंवकयो प्रच तत्न उदित धूम्रे सदे का पुनः ॥
 देकारो सुश्लेच द्वयेऽपि च गदि संश्ले वति स्त प्रच रे मृत्यु न्यात करक्ष संहि न गता स्ताः
 काल दंडे तथा ॥ ४५ ॥ अथ दोषा मवाद भूतार वियोगाः ॥ सूर्याश्चतुर्थे दशमे च पष्ठे विज्व
 र्क्ष के विंशति मे न वर्क्षे ॥ भवंति यज्ञानु स दक्ष योगाः कुत्रो ग विज्व स करः प्रदिष्टः
 ॥ ४६ ॥ सिद्धि योगः ॥ ज्येष्ठा वाहि मघा विषाण बसवो मेत्रं य माख्य रवौ सोमे सैव वि-
 प्राय सुख्य पवना श्रित्रा त्व याढा ह्यम ॥ भौमे विश्व जलेश मित्र नसवः प्रागभाद्र

सर्वोऽशिवः प्राली रेवति पूर्वयोनि भरणी वसुशिव मूला बुधे ॥ ४७ ॥ जीवेमूल
 मघाद्र्याम्य वरुणाः पूषा राशी रोहिणी शुक्रं स्वाति भुजंग देवत मघा पुथ्यो नरा-
 रोहिणी ॥ सौरा वर्यम मूल हस्त वरुणा पादा हूयं रेवती चित्रा विष्णु मघाश्च सर्व
 समये त्याज्या अयोग दमे ॥ ४८ ॥ अथसिद्धयोगः ॥ सूर्येऽर्क मूलोत्तरपुष्य दासं चे-
 न्दे शुनि ब्राह्म राशीज्य सैत्रम् ॥ भौमे ख्यहि बुधश्च कृशानु सार्यं द्वे ब्राह्म मैत्रा कर्क क-
 शानु प्चाद्रम् ॥ ४९ ॥ जीवेन्त्य मैत्रा ष्व्य द्विती ज्य धि स्रं शुक्रं त्य मैत्रा ष्व्य द्विती ष्व-
 वोभम् ॥ शनौ शुति ब्राह्म समीर भानि सर्वार्थ सिद्धौ कथितानि पूर्वैः ॥ ५० ॥ द्वितीया
 सोया ह्यश्रवात्पौष्ण भाच्च ब्राह्मात्पुष्या हर्यमर्क्षा च तुर्भेः ॥ स्यादुत्पातो मृत्यु कारो
 च सिद्धि वारेऽर्कश्चै तत्फलं नाम तुल्यम् ॥ ५१ ॥ क्रयोगास्तिथि वारे तथा स्तिथि
 भौत्या भवा रजाः ॥ हून वंग खसे खेव वर्ज्या स्थितय जास्तथा ॥ ५२ ॥ अथ चान-
 क्षत्रोन्मसिद्धयोगः ॥ मूलं सर्वं श्रवश्चंद्रे भौमे चोत्तरा भाद्रपात् ॥ कर्त्तिका बुधवारे

तु गुरु वारे पुनर्वसुः ॥ प्रधा शुक्रे शनौ त्वाती सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ५३ ॥ अथ तिथि
 वारेत्यादौ योगाः ॥ द्वादश्य के विधौ बली भौमे सप्ताष्टमी बुधे ॥ दशे शुक्रे शनौ रुद्रो गु-
 रो नव हुता शनौ ॥ ५४ ॥ द्वादश्य के विधौ रुद्रे भौमे पंच बुधे ऽग्नयः ॥ गुरौ व-
 द्यष्टमी शुक्रे दग्धा रव्यो नवंमी शनौ ॥ ५५ ॥ चतुर्थ्य के विधौ बली द्वितीया द्वे-
 ऽष्टमी गुरौ ॥ नव शुक्रे विशाखश्च सप्तमी कुज संदयोः ॥ ५६ ॥ शनौ बली भौमे
 सप्ताष्टमी जीवे बुधे नव ॥ कुजे दश विधौ रुद्राः कर्क चो द्वादशी रवौ ॥ ५७ ॥ प्रति
 पत् द्वे रवौ सप्त सं वर्त्तो योग दर्शितः ॥ दग्धा दीन् तिथि वारेत्यान् त्यजेत् योगान्
 शुभे सदा ॥ ५८ ॥ अथ नक्षत्रा द्विहितोऽपि त्याज्य स्तिथिः ॥ द्वितीया मनु राधायां मघायां
 पंचमी तिथिम् ॥ त्यजेत्पक्षी च रोहिण्यां पूर्व माद्र पदे ऽष्टमीम् ॥ ५९ ॥ अथ मृत्यु योगः ॥
 अनु राधा रवौ सोमे उत्तराषाढ संभवम् ॥ बुधे ऽश्विनी मृगौ जीवे शुक्रे ज्येष्ठा शनौ
 करः ॥ ६० ॥ भौमे शतं भिषा चार्थे मृत्यु योगो ऽर्थ नाशकः ॥ अथ दग्धा तिथि योगः ॥

भरण्यर्के विधौ चित्रा जीवे चोत्तर फाल्गुणौ ॥ भौमे चैवोत्तरा पादा धनिष्ठा बुधवास
 रे ॥ ६२ ॥ शुक्ले ज्येष्ठा त्यसं संदेत्यजे देत द्विदग्ध भस्म ॥ अथ त्रिविध गंडांतं ॥ नक्षत्र
 तिथिराशीनां गंडांतं त्रिविधं त्यजेत् ॥ ६३ ॥ नव पंच चतुर्थी ते द्वे कार्द घटिका
 मतम् ॥ तावन्मितं ततोऽग्राणां आदा वरिपरित्यजेत् ॥ ६४ ॥ ज्येष्ठा मूल क्षयो
 संधौ रेवत्यश्चि भयोस्तथा ॥ वृश्चिकारब्धधनुः संधौ लग्नस्यैक घटी मतम् ॥ ६५
 ॥ अथार्द्धयामः ॥ अर्द्धयामाः परित्याज्या वेदसप्त द्विपंचमाः ॥ अथ त्रिजय संख्या
 काः क्रमशोरविवात्तरात् ॥ ६६ ॥ अथ कुलिक कंटक काल वेला यम घंटा ख्याः त्याज्य मुह
 र्ताः ॥ मन्वर्क दश नागार्तु वेद नेत्र मिताः क्षणाः ॥ कुलिकारख्या रेवे वार क्रमतः
 कंटका बुधात् ॥ ६७ ॥ गुरोस्तु काल वेला ख्या शुक्रांति यम घंटकाः ॥ त्यजेदे
 तान् शुभे कार्ये निशीघे तु गुहर्तकान् ॥ ६८ ॥ अथ दृष्ट्याः ॥ क्षणः चतुर्दशः
 सूर्ये नव द्वादश को विधौ ॥ सप्तमो निशि भौमे न्हितुर्य प्रचाथ बुधेऽष्टमः ॥ ६९ ॥

षष्ठ द्वादश को जीवे चतुर्थी नवमे भूगौ ॥ प्रनो चाद्य द्वितीयोच त्याज्या दुष्ट क्षणा

अथदुष्ट क्षणा चक्रम्

दिवाकुलिका दीनां चक्रम्

रात्रीकुलिका दीनां चक्रम्

| स | व | म | तु | व | श | सू | च | म | तु | व | शु | व | श | र | चं | मं | तु | व | शु | प्र |
|----|----|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|---|---|----|----|----|----|----|----|-----|
| १४ | ६ | ७ | ८ | ९ | १ | १४ | १२ | १० | ८ | ६ | ४ | २ | २ | १३ | ११ | ९ | ७ | ५ | ३ | १ |
| + | १२ | ४ | + | १२ | ६ | ६ | ४ | २ | १४ | १२ | १० | ८ | ६ | ५ | ३ | १ | १३ | ११ | ९ | ७ |

द्विमे ॥ ७० ॥ रवौ षट् ६

दश १० सप्ता ७ ख ८ मनु १४ ॥ चंद्रेऽधि ४ वसु ८ य ६ द्वि श्व १३ मनु १४ वेदा ४ क १२
 संख्य सुहूर्त्त काः ॥ ७१ ॥ भौमे द्वि २ त्रि ३ चतुः ४ षष्ठ ६ दश १० संख्या क्षणाः स्मृ
 ताः ॥ बुधे वेदा ४ अधि २ वस्वर्क मनु १४ दिक् १० प्रमिताः क्षणाः ॥ ७२ ॥
 जीवे भूपा १६ शिव २ तिथ्यं १५ गर्द मनु १४ सूर्या १२ मिता ऋते ॥ शुक्रपंचां

५ क ८ घट् दं वेद ४ दिग १० क १२ मनु १४ संमिताः ॥ ७३ ॥ मं दे भू १ नेत्र २
 रुद्रा ११ च ८ दश १० दित्य १२ मुहूर्त काः ॥ त्याज्या पंच दशंगं प्राद्यावधै रुक्ता
 रथादिबारे राज्ञी मुहूर्ती त्याज्याः ॥

| स | च | म | तु | व | सु | श |
|----|----|----|----|----|----|----|
| ६ | ४ | २ | ४ | १६ | ५ | १ |
| १० | ८ | ३ | २ | २ | ८ | २ |
| ७ | ६ | ४ | ८ | १५ | ६ | ११ |
| ८ | १३ | ६ | ८ | ६ | ४ | ८ |
| १४ | १४ | १० | १४ | १४ | १० | १० |
| + | ८ | + | १० | १२ | १२ | १२ |
| + | १२ | + | + | + | १४ | + |

हे माद्रि मध्येतु मगधेयमघंटकः ॥ अंगोंधे मत्स्य देशे
 वा दोष कृन्ने तरन्नसः ॥ काप्रमीरे कुलिक स्याज्य स्त्व-
 द्वयाम स्तु सर्वतः ॥ ७५ ॥ अथ संक्रांतौ त्याज्य कालः ॥
 अर्पने विषवे त्याज्यं पूर्वं मध्य पदं दिने ॥ श्रेय संक्रम
 णो पूर्वं पश्चा त्योहण नाडिकाः ॥ ७६ ॥ अथ तिथि क्षय द्वा-
 द्वि दोषः ॥ तिथीनां नित्यं वारं संक्रांस्तु प्रगति यत्र वै ॥ अ-
 व संत द्विं द्वेयं शुभ कर्म सुसं त्यजेत् ॥ ७७ ॥ वारा
 णां नित्यं यत्र तिथिरेका स्थरे द्यत् ॥ त्रिषु स्स्थरे ति

एवा तान् ग्राहं मंगलादिषु ॥ ७८ ॥ अथ त्रिपुष्कर यमल योगः ॥ राव रावज भाग्य पा०
 भद्रायां वियस पाद मूहं चेत् ॥ त्रै पुष्कराख्य योगः त्रिगुण फलो द्विगुण भेजुगल
 म् ॥ ७९ ॥ अर्थः ॥ भद्रा तिथौ यदा रवि भौम प्राणि वारे कृत्तिका पुनर्वसू ॥ विप्राया उत्तरा
 फाल्गुणा पूर्व भाद्र पदा उत्तरा याद ॥ एतद्दक्षं भवति तदा त्रिपुष्करः यदा पूर्वोक्तति
 थौ वारे मृग शिरः चित्रा धनिष्ठा तदा द्विपुष्करः ॥ तत्फलम् ॥ तत्र दृष्टे मृते नष्टे शुभे वा
 य्य शुभे पिवा ॥ त्रिगुणं द्विगुणं सर्वं जायते क्रमशः फलम् ॥ ८० ॥ नारदः ॥ तद्यत्ति
 दोष प्रां त्यर्थं गोत्रयं मूल्य मेव वा ॥ द्विपुष्करे ह्ययं दद्यान् दोष स्तृक्ष मान्नतः ॥
 ८१ ॥ अथ ख्यादि वारे पुनः प्रशुभाश्रुभ योगः ॥ रवौ हस्ते ऽश्विनी मूलं धनिष्ठा चोत्तरा
 त्रयम् ॥ मुख्य त्तथा खमी चैव सिद्धि योगाद्वैमताः ॥ ८२ ॥ विप्रागवा भरणी स्तृ
 र्थं मचा ज्येष्ठा ऽनु राधिका ॥ सप्तमी द्वादशी तद्द्वि रुद्रा च चतुर्दशी ॥ ८३ ॥ चं
 द्रे च अवराः पुष्यो ऽनुराधा रोहिणी मृगः ॥ दशमी नवमी वाथ सिद्धि योग प्रशुभा

वहः ॥ ८४ ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढौ स्वाती चित्रा विशाखयोः ॥ सोमे चैकादशीषष्ठी
 वर्जनीया त्रयोदशी ॥ ८५ ॥ भौमे श्लेषाश्विनी मूलमृग शीर्षस्त्रयोदशी ॥ तृतीया
 चायमीषष्ठीचिह्निकीर्जिताबुधैः ॥ ८६ ॥ उत्तराषाढोभंचार्द्रोधनित्या त्रितयं तथा ॥ द्वि-
 तीया दशमी भौमे वर्जनीया प्रयत्नतः ॥ ८७ ॥ बुधे पुष्योऽनुराधा च कान्तिका
 रोहिणी मृगः ॥ द्वितीया सप्तमी चैव द्वादशी च शुभप्रदा ॥ ८८ ॥ धनित्या भरणी मू-
 लमश्विनी रेवती बुधे ॥ तृतीया प्रतिपद्यपि विरुद्धा नवमी स्मृता ॥ ८९ ॥ गुरोः शु-
 व्योऽनुराधा च विशाखाश्विपुनर्वसू ॥ रेवती दशमी चैव घृणिमा शुभदा स्मृता ॥
 ९० ॥ जीवेयक्य मीनेया चतुर्थी शततारका ॥ कृत्तिकादिचतुष्कंच तथा चोत्तर
 फाल्गुनी ॥ ९१ ॥ मृक्रे चित्रा श्विनी पूर्वा रेवती च पुनर्वसू ॥ अवराः प्रतिपत्प
 क्षी सिद्धा चैकादशी तथा ॥ ९२ ॥ भार्गवे रोहिणीज्येष्ठा पुष्योऽश्लेषा मघा तथा ॥
 द्वितीया सप्तमी चैव विरुद्धा सर्वकर्मसु ॥ ९३ ॥ शनौ स्वाती श्रवं पूर्वा फाल्गुनी च त-

आमृगः ॥ चतुर्थी नवमी चापि तिथिः सिद्धा चतुर्दशी ॥ ६४ ॥ पूर्वाषाढौ नरायादा चि-
 न्नाहस्तोऽथरेवन्ती ॥ उत्तरा फाल्गुनी यक्षी निधिद्धा सप्तमी ग्रन्थौ ॥ ६५ ॥ द्विद्वेदि कुल सं-
 भूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्ते या जलमयी यं प्रभाश्रुभा ॥ ६६ ॥ वृत्ति
 श्रीसंग्रह शिरो मणौ शुभाशुभ कथनं नामाष्टमी प्रभा ॥ ६७ ॥ अथ त्याज्य प्रकरणम् ॥
 तिथि नक्षत्र वारणा दुष्ट योगा न्यस्यम् ॥ अती पातादिदुर्घो गान् विष्टी दृष्टी के संक्रमा-
 न् ॥ १ ॥ जन्म क्षीतिथि मासांश्च तिथ्यर्द्धमव मन्दि नम् ॥ गंडो तं त्रि विधं द्रुष्टं क्षीरोक्षु-
 पाप कर्त्तरी ॥ २ ॥ पाप हो राखले चोर या माई कुलिकादि कान् ॥ जन्म राशि विलम्बा
 भ्या मयमे लग्नमेव च ॥ ३ ॥ दिन मेकं तु मासां ते ऋक्षांते घटिका द्वयम् ॥ वटिके
 कंच तिथ्यंते लग्नांते घटिका द्वयम् ॥ ४ ॥ विषाख्य नाडिका भानां पात मेकामेकं तस्या
 ॥ दग्धाहं क्रांति साम्यं च लग्ने शं रिपुन्मल्लुगम् ॥ ५ ॥ विनाई चरजन्म धर्म संधौ तु-
 पल विंशतिः ॥ रोगोत्पत्त्या च रिखांनि सूतकं मातुर्गतं वम् ॥ ६ ॥ जन्मे प्राप्ते मनो

भंगं शुभे व्येतानि संत्यजेत् ॥ एमः ॥ सर्वस्मिन्विधुपापयुक्तं तुलवावर्द्धं निष्प्रणहो
 र्घटी न्यग्रंशैकुनवांशकं ग्रहणतः पूर्वदिनानां त्रयम् ॥ उत्प्रातः ग्रहतोऽष्टाहं प्रच शुभ
 हो त्याते पञ्चद्वयं दिनं य रासा संग्रह भिन्नं संत्यज शुभे यौहं तथो त्यात भम् ॥ ७ ॥
 अस्मार्थः ॥ सर्वस्मिन् दति सर्वस्मिन् शुभे कार्ये सतानि वै नि प्रचयेन त्यज परिह-
 रेत्यर्थः ॥ विधुना पापे न वा पापैः क्षीणे हर्क मही सुतार्क तनये वी युजो युक्तो तनु ल-
 वो लग्न लग्नपन वांशो त्याज्यो ॥ पूर्णः क्षीणोऽपि वा चंद्रो लग्ने सर्वत्र गार्हितः ॥ इति
 कस्य पोक्तः ॥ पापेन्दू लग्न गौ वांश गतौ वज्यो शुभे सदे निच ॥ निष्प्रणहो र्द्धं रात्र्य-
 र्द्धं दिनाद्धं च घटी त्र्यंशं विंशति पलानि दश पूर्व वश पञ्चात्र परि हर ॥ उक्तं च ॥ मू-
 र्तः कालो निवसति मह्य निष्प्रणयां च दिन वले यस्माद्दश पूर्व परस्वस्माद्द्वयानि च प-
 लानि ॥ कुन वांश कं पाप ग्रहन वांश कं परि हर ॥ अथ ग्रहणतः पूर्वदिनानां त्रयं परि
 हर ॥ उत्प्रातः ग्रहतः उत्प्राताः दिव्य भौमां तारि क्षाः ॥ यस्मिन् दिने भवन्ति ततोऽष्ट

होषत् सप्त दिनानि कर्ज्यानि ॥ ग्रहो ग्रहणं तस्मादपि सप्त दिनानि वर्ज्यानि ॥ उक्तं च ॥

चंद्र सूर्यो परागेयु अहं पूर्व शुभे त्यजेत् ॥ स साहस शुभं पश्चात् स्तुतं ग्रहणं सूत
कम् ॥ निविधो त्यात तश्चोर्द्धं सिद्धिं कासूत्रं दर्शने ॥ सप्त रात्रं न कुर्वति यात्रोद्वाहा

दिमंगलमिति ॥ अंगिरा अपि ॥ सर्वे रासे तु रात्राद् मर्द्धं रासे दिनत्रयम् ॥ त्रिहोकागुलतो
गामे दिनमेकं चिर्वर्जयेत् ॥ चण्डिः ॥ सर्व रासे दिना न्यहो सर्व कार्ये विवर्जयेत् ॥ प्र

गानि त्रिभागो न अर्द्धं रासे चतुर्दिनम् ॥ चतुर्थीशे त्रिरात्रं स्यात् ग्रहणं चंद्रसूर्यो
॥ अत्र कार्यं स्यावश्यकत्वे परिहारे ज्योतिर्निबंधे ॥ पंच दिना निवर्षिषु स्त्रिदि

कोषिकस्त्वेकम् ॥ यवना चार्थस्य च मतं पंच सुहृत्तां निदूषयति राहुः ॥
त्रेधो नित्येनैमिति कादि कृत्याति रित्त विषयः ॥ गुरुः ॥ नित्येनैमिति केका

होम क्रिया सुच ॥ उपा कर्मणि चोत्सर्गे ग्रहवेधो न विद्यते ॥ इति शुभदोषात्
दिनमिति ॥ शुभदोषात् वाराह संहितायाम् ॥ चंडा प्रणि मही कंप संध्यानिर्घाति

निश्वनाः ॥ परिवेष रजो धूम रक्ताकं स्तमनो दयाः ॥ दुर्लभं ध्यानरसस्नेह मधुपुष्प
 फलोद्गमाः ॥ गो पक्षि मदच्छिद्रश्च शुभा यमधु माधवे ॥ इत्यादयः ऋतु परत्वेनो-
 क्ताः यद्दिने एते भवन्ति तद्दिनमेव त्यज ॥ अथ ग्रह भिन्नमं ग्रहैर्भोगादिभिर्भिन्नं भेदि-
 तं तथा यौद्धं ग्रह योय्युद्धं यस्मिन्दिने नक्षत्रे युद्धं यातम् ॥ तथोत्पातभम् ॥ यस्मि-
 न्दक्षे दिव्यां तरिक्ष भोगास्त्रि विधोत्पाताः संभूताः ॥ एतानि ग्रह भिन्न यौद्ध उत्पात न-
 क्षत्राणि च एवमा संत्यज ॥ भेद स्तार खेद यो यन्न वास्यादिति विवाह वृद्धान्वने ॥ ना-
 रदः ॥ ग्रहणोत्पात भंत्याज्यं मंगलेषु ऋतु त्रयम् ॥ इति ॥ ननु नक्षत्र संधौ जायमाने
 ग्रहणो किं नक्षत्रं दूषयेदित्यत आह ॥ शर्षः ॥ यस्मिन्विधुं राहु रि नं च धि क्षे ग्रहणा-
 ति तत्त्याज्य मृतु त्रयं स्यात् ॥ याणि ग्रहेषु मरणं विधत्ते द्वयोर्भयोर्भूते हृदनेव ज्ञायात् ॥
 अन्यच्च ॥ पक्षां तोराण ग्रहण छयं स्याद्यथा तदा तद्ग्रहणो यमं भम् ॥ पक्षादि शुद्धं भवति-
 द्वितीयं पाणि ग्रहे शुद्ध्यति भोग पक्षादिति ॥ ७ ॥ नेष्टं ग्रह क्षे सकलाद्दृष्ट्या यसे क्रमात्

किं गुरोर्दुःसा सान् ॥ पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघस्ताग्रस्तेऽस्तगेवाभ्युदितेऽर्द्धं रवंहे ॥ ८ ॥
 अत्रार्थः ॥ नेष्टमिति ग्रहर्द्धं ग्रहणा नक्षत्रं क्रमात्संपूर्णार्द्धं चतुर्थीश्रया से सानि षट् न्येकना-
 सा न्नेष्टम् ॥ गुरुः ॥ सर्वग्रासे सुषणमासान्धी न्मासांस्तु दले ग्रहे ॥ ज्ञापान् ग्रहणो धिहो मा-
 नेकम् विवर्जयेत् ॥ अथ क्रमात्ग्रस्तेऽस्तगेग्रहणार्द्धं ग्रासे उभयोः प्राक् पञ्चाच्च-
 धत्वा नेष्टाः ॥ तथा ॥ अर्द्धं रवंहे ग्रस्ता स्त ग्रस्ती दययोरभावेऽपि ॥ अर्द्धं ग्रासे उभयोः
 पञ्चाच्च त्रिनिघस्तां नेष्टाः ॥ गुरुः ॥ ग्रस्तास्ते त्रिदिनं पूर्वं पञ्चाङ्गस्तो दये तथा ॥ रवं-
 ॥ त्रिनिदिनं निपश्ये वे सप्त सप्त च ॥ कल्पः ॥ ग्रस्ता दये परो देवो ग्रस्तास्तेऽर्द्धं कृष्ण-
 योः ॥ द्युनि शर्द्धित् भयं तत् रवंही रवंड व्यवस्थयो रिति ॥ ८ ॥ जन्मर्क्षमास ति-
 थयो व्यतिपात भद्रा वै धृत्य मापित दिनानि तिथि क्षयर्द्धं ॥ न्यूनाधिमास कुलिक्र-
 र्द्धपात विष्कुंभवज्ज घटित्वा त्रय मेव नर्ह्यन् ॥ ९ ॥ जन्म क्षेति ॥ जन्म नक्षत्र ज-
 र्द्धमास जन्म तिथयः पुनर्कर्म सुवर्ज्याः ॥ अयं निषेध ज्ञाप्य गर्भस्थैव ॥ नारदः ॥

न जन्म मासि जन्म क्षेपे न जन्म दिवसे प्रिया ॥ आद्य गर्भ सुत स्याथ दुहितुर्हीकार्जु-
हः ॥ जन्म मासः सविज्ञेयो वर्जितः सर्व दर्मसु ॥ वस्तुतस्तु ॥ यत्र शुक्लादिचात्र मासि
चैत्रादौ जन्माभूत् ॥ सचांद्रो मासो जन्म मासः त्याज्यः ॥ इंद्राग्नी यत्र हूयेते मासा
दिः संप्रकीर्तितः ॥ अग्नीषोमो स्यतो मध्ये समासः पितृ सोमकः हरीलोक्त मासलक्ष-
णम् ॥ व्याती पाता द्यष्ट्व वर्ज्याः ॥ पितृ दिन ममाता पित्रोर्मर्माण दिनम् ॥ आद्व दिन मि-
त्यर्थः ॥ तिथि क्षयद्वी तिथि क्षयो वृद्धि पृचतल्लक्षण माह वशिष्ठः ॥ स्युस्तिरुस्तिथ
यो वारे एक स्मिन्नवमा तिथिः ॥ तिथि वार त्रये चैका त्रिद्युस्मृक् द्वेऽपि निन्दिते ॥ न्यूनमा-
सः ॥ अत्रिधिक मास पृच वर्ज्यः संक्रमद्वय सहितः क्षय मासः ॥ असंक्रांतोऽधिक मासः ॥
कुलिकाई ग्रहणौ ॥ पातो महापातः विकुम्भयोगा कज्योगयो राधं घटिका त्रयं वर्ज्यं ॥
एवं प्रकारेण कैश्चित् इज्य योगेन व घटिका वर्ज्या द्युत्तुम् ॥ यथा ॥ विष्णुं भा घ घटित्रयं
च नवकं व्याघातवज्रोद्भवे ॥ इति दृत प्रते तथा व्याघाते वज्रकेंका इति गणेश ज्योति

विद्वक्तिरपि निरस्ता ॥ चिच्छुं भवज्जयोस्तिष्ठः षड् गङ्गाति गङ्गयोः व्याघातेन व प्रहलेतुपं
 ६० च नाल्लो विगर्हिताः ॥ इतिकथ्य प्रोक्तेः ॥ परि घस्यार्द्धं वर्ज्यम् मूल स्याच्चाः पंच गङ्गाति गङ्ग-
 यो राधाः पट्यट् चटिकाः व्याघाते चादिगाः नच घटिकाः वर्ज्याः ॥ ८९ ॥ वेदांगाष्ट नवा-
 केन्द्र पक्षरं प्र तिद्यौ त्यजेत् ॥ वस्त्रं क मनु तत्त्वा द्वाभ्यं नाही पराः शुभाः ॥ ९० ॥ वाय्वा-
 रम तद्भागं कूप भवना रं प्रतिष्ठा अतारं भौत्सर्गं वधू प्रवे श्नन महा दानानि सोमाष्टके
 ॥ गो दाना ग्रयण प्रपा प्रथम को पा कर्म वेद ज्ञत नीलो द्वाह मध्याति पन्न क्षिण्डु संस्त-
 रांस्तुत्थापनम् ॥ ९१ ॥ वाय्वा एवेति ॥ वापी दीर्घिका शारम उप वनम् ॥ तद्भागः पुष्क-
 रिणी ॥ कूपः प्रसिद्धः एतेषामारंभ प्रतिष्ठा ॥ शारंभं निम्नार्णं प्रतिष्ठा उत्सर्गः ॥ तत्र गृह प्र-
 तिष्ठा गृह प्रवेशो दीयः ज्ञताना मनंत व्रतादीना भारंभः गृहणम् ॥ उत्सर्ग उत्थापनम्
 महा दानानि तुला पुरुषा दीनि सोमः ॥ सोमचागः । अष्टका द्वादशम् । गोदानं के ध्यात सङ्गं
 कर्म । आग्रयणं नवान्नेष्टिः । प्रपा जल शाला । प्रथम को पा कर्म प्रथमारभ्यमाणं प्राव-

एषी कर्म वेद व्रतं महा नाभ्यादि त्रयम् ॥ सहा नाम्नी उप निय व्रतम् ॥ वेद व्रतं च नीलो-
 हाहः ॥ काम्य द्रव्योत्सर्गः ॥ अति यन्न शिशु संस्कारः अतिपन्थाः अतिक्रांताः जातकर्म-
 दयः शिशुहानां संस्कारः देव स्थापनम् ॥ ११ ॥ दीक्षा मौजि विवाह मुंडनमपूर्वन्देव तीर्थे क्ष-
 रणं संन्या साग्नि परि गृह्ये चपति संदर्शनेभ्ये कोशमम् ॥ चातुर्मास्य सप्तो व्रतौ अवरायो
 र्वधं परीक्षां त्यजेद्ब्रह्म स्त शिशु त्वद्वय सितयो न्यूना धि मासे तथा ॥ १२ ॥ अत्र सूत्रय-
 नानि शतासयः ॥ अस्तं गते गुरौ प्रुक्ते चाले वृद्धे मलि म्लुचे ॥ उद्यापन सुपारंभं व्रतानां नैव
 कारयेत् ॥ ऋक्षोच्चयः ॥ वापी कूप तडाग याग गमनं क्षौरं अति द्या व्रतं विद्या मंदिर कणो वेध-
 न महा दानं वनं सेवनम् ॥ तीर्थं स्नान विवाह देव भवनं मंत्रादि देवे क्षणं दूरे शौचसि जी वि-
 श्रुः परि हरे वस्तं गते भार्गवे ॥ १४ ॥ उप नयनं गोदानं पाणि ग्रहणं प्रवेश गमनानि ॥ अ-
 स्तमितेषु न कुर्व्यात्तुर गुरु सुगु पुत्र चंद्रेषु ॥ १५ ॥ अस्तमयादि फल ग्राह वाद रायणः ॥ शु-
 रोस्ते पतिं हन्या च्छुक्रास्ते चैव कन्यकाम् ॥ चन्द्रे नष्टे उभौ हन्या सत्या दस्तं विवर्जयेत् ॥ १६ ॥

॥ १६ ॥ बाल भावे स्त्रियं हन्यादृष्ट भावे नरं तथा ॥ तस्माद्बाल्ये च वार्द्धे च विवाहं नै-
 व कारयेत् ॥ १७ ॥ अग्निमासे वर्ज्यानि गृहस्य परि शिष्टे ॥ सोमयागादि कर्मणि नित्य-
 न्यपि मलिम्लुचे ॥ तथैवाग्न्याधानं चानुष्मा स्यादि का न्यपि ॥ १८ ॥ महालयाष्ट-
 का श्राद्धो पा कर्मो ह्यपि कर्तव्यः ॥ स्पष्ट मास विशेषाख्य विहितं वर्जये न्नले ॥ १९ ॥
 गर्गहस्तनी ॥ अग्न्याधानां प्रति श्राद्धं यज्ञं दानं ज्ञानं च ॥ वेदव्रत वृषोत्सर्गं चूडाकरण-
 मेव च ॥ मांगल्यं मभिर्वैकं च मलमासे विवर्जयेत् ॥ मरीचिः ॥ २० ॥ गृह प्रवेश-
 नीबान् स्थानां अथ महोत्सवम् ॥ न कुर्व्यान्मलमासे तु संसर्गं हस्यतो ॥ २१ ॥
 ॥ वशिष्ठः ॥ वापी कूपं तडागादि प्रातिष्ठ्या यज्ञं कर्म च ॥ न कुर्व्यान्मलमासे तु संसर्गं हस्यतो
 तथा ॥ २२ ॥ यदा क्षय मासो भवति तदा क्षय मास एव पूर्वोत्तरा वधि मासौ भवतः तत्र पु-
 र्वः संसर्गः द्वितीयो हस्यतिः । गार्ग्यः । बाले वा यदि वा वृद्धे शुक्रे वास्तं गते युरे ॥ मल-
 मास इवैतानि वर्जयेद्देव दर्शनम् ॥ २३ ॥ अपूर्वं देवतां ह्यष्टा शुचः स्युर्नष्टं मार्गवे ॥

मल मासे त्व नाटुत तीर्थ यात्रां विवर्जयेत् ॥ २४ ॥ अनाहता अपूर्व तीर्थ यात्रा ॥ अत्र नि-
यत कालानि सीमंत नाम करणा दीनि ॥ पूर्वदिस्तादि सत्वे ऽपि स्व त्व काल एव कार्याणि
॥ २५ ॥ गुरुः ॥ मास प्रयुक्त कार्येषु मूढत्वं गुरु युक्तयोः ॥ न दोष कुन्मले शासे गुर्वदि-
त्यादि कं तथा ॥ २६ ॥ अन्यत्रापि ॥ सीमंत यात कार्दीनि प्राशनां तानि यानि वै ॥ न दोषो
मल नासस्य सौहृदस्य गुरु युक्तयोः ॥ २७ ॥ वशिष्ठः ॥ अतीत काला न्य रिल्लानितानि
कार्याणि सौम्या यनगे दिने प्रो ॥ सिते गुरौ वाप्यति दृश्य माने तदुक्त पंचांग दिनेष्व-
खंडे ॥ देवी पुराणे ॥ सिंह संस्थे गुरौ यत्नात्सर्वारंभा न्विवर्जयेत् ॥ पुत्र भ्रातृ कलत्राणि
हृन्वा च्छी घ्नं न संशयः ॥ २८ ॥ कार्की व्रजते नाशं संतानं सृयते ऽचिरात् ॥ देवा राम
नद्यागानि प्रयोद्यान गृह्णाणि च ॥ २९ ॥ विवाह यज्ञोपनय चूडादि च न सिद्ध्यति ॥ य-
था सिंह स्थितो जीव स्रष्टैव मकर स्थितः ॥ ३० ॥ अथ मपि निबेधो नियत कालानां न
संपहः ॥ वशिष्ठः ॥ नीच राशि गतो जीवः प्रशस्तः सर्व कर्म सु ॥ नीचे नीचां प्र क-

स्त्याज्योयस्मादेशेषु नीचता ॥ ३२ ॥ विशेषासादये मोक्तः ॥ मवास्थी यदा जीवा वर्जयेत्
 च सांश्रुतम् ॥ प्रेषेद्यपि च भागेषु विवाह एषो मनो मतः ॥ ३३ ॥ तोवरा नन्दः ॥ अति चरे
 सप्त दिनं वक्त्रे द्वादश मेकच ॥ नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ ३४ ॥ ज्योति
 निबंधे ॥ हरिनी चारि भागेषु प्रतो द्वादहादिमंगलम् ॥ ननिषिद्धं यदि त्वोच्चै स्वभे वासं-
 स्थितो गुरुः ॥ ३५ ॥ मघांत्यक्ता यदा गच्छेत्काल्युनी च बृहस्पतिः ॥ पुत्रिणी धनिनी-
 कन्या सौभाग्यं सुरव नस्तुने ॥ ३६ ॥ कचिद् पूर्व तीर्था यात्रायां मौढ्यादि दोषो नास्ति ॥ गो-
 दा चर्या गवायांच श्रीशैले गृह्णा हये ॥ सुरा सुराणां गुर्वोश्च मौढ्य दोषो न विद्यते ॥ ३७
 दधुपराणे निस्थली सेतो ॥ गवायां सर्व कालेषु पिंडं दद्याद्दिधानतः ॥ अधि मासैजन्म दिने-
 तैच गुरु शुक्रयोः ॥ ३८ ॥ नत्यक्तव्यं गया श्राद्धं सिंहस्थे च बृहस्पती ॥ अधि मासे सिं
 ह गुरावस्ते च गुरु शुक्रयोः ॥ ३९ ॥ तीर्थयात्रा न कर्त्तव्या गयां गोदावरीं विना ॥ वात्स्यव-
 क्रान्ति चारणे सुरा वपिगुर्वाद्यस्त बह्वर्जम् ॥ यात्रोद्वाह प्रतिष्ठां च गृह चूडा व्रता दिकम् ॥ ४०

वज्रजयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्राति चारणे ॥ ४० ॥ अस्यापवादो राजमार्त्तगृहे ॥ वक्राति चार
 ने जीवे वज्रजये तदनंतरम् ॥ व्रतो द्वाहादिचूडाया भव्यविंशति वासरम् ॥ अथदीपिकायाम्
 त्रिकोणा जाया धन लाभ राशौ वक्राति चारेण गुरुः प्रयातः ॥ यदा तदा प्राह शुभं विलगने
 पिवाहं पाणि ग्रहणं वशिष्ठः ॥ ४१ ॥ गुर्वदित्येऽपि सर्वं शुभकर्म धर्ज्यम् ॥ शौनकः ॥ एक राशि
 गतौ सूर्ये जीवो स्यातां यदा पुनः ॥ व्रत बंध विवाहादि शुभ कल्पो खिलं त्यजेत् ॥ ४२ ॥
 विग्रहपक्षेऽपि यस्मिन्मक्षेतिथिं ह्युनाशः त्रयोदश दिनः पक्षः सोऽतिनिघ्नः ॥ उक्तं च ॥
 पक्षस्य मध्ये द्वितिया उपेतां तदा भवेद्भौरव कालयोगः ॥ पक्षे विनष्टे सकलं विगद्य मि-
 त्याह्मराचार्य्यवराहसस्ताः ॥ ४४ ॥ तथा ॥ त्रयोदश दिने पक्षे तदा संहर्तते जंगल् ॥ अ-
 पि वर्यं तद्वहेण कालयोगः त्रयोनिर्गतः ॥ ४५ ॥ तौल्यमक्षे शुभकर्म धर्ज्यं चेत्तुल्यः ॥ त्र-
 योदश दिने पक्षे विवाहादि न कारयेत् ॥ गर्भादि सुनयः प्राहुः कृते न्यस्तु तदा सपेत् ॥
 उपमयनं परिणयनं वेला रमादिपुण्य कल्पोऽपि ॥ यात्रादिष्वयं पक्षे कुर्वीत्यजिजी-

विष्णुः पुरुषः ॥ ४७ ॥ अस्मिन्भूषादिकमपित्याज्यम् ॥ राजमार्तदः ॥ यान्त्रो चूडो वि-
 धाहं ध्रुति विवर विधिं शंख सद्य प्रवेष्टः प्राप्ता बोधानहस्यं सुरनर भवना रंभ विधा
 विधेनोमौजीवंधं प्रतिष्ठां मणिक न कर हा धारणां कुर्वते ये मृत्युः सिंह स्थिते ज्ये गुरू
 दिन करयोरेक राशि स्थितो भवेत् ॥ ४८ ॥ सिंह स्थे गुरो सत्यपि सिंहं शोस न्यं प्रान्नयो
 दृष्टां शो ॥ १३ २० भ्योऽनं तरं सन्यं शमं प्रान्नयम् ॥ पंचमो नवोश सिंहं शोः तत्र गुरो सति
 विवाहो नैष्टः ॥ सिंह राशौ तु सिंहं शो यदा भवति वाक् पतिः ॥ सर्व देशे स्वयं त्याज्यो दे-
 पत्यो निधन प्रादः ॥ इति राजमार्तदः ॥ सिंहपि भगदेवत्ये गुरो युन्न पती भवेत् ॥ अत्यंत
 शुभगा साध्वी धन धान्य समृद्धिदा ॥ ४९ ॥ अथ देश भेदात् लक्षणः ॥ गोदा वय्युत्तरे
 तीरे यावद्भागी रथी ततम् ॥ नेष्ट स्तत्र विवाहादि सिंह स्थे ज्ये सदा बुधैः ॥ ५० ॥ वशि-
 षः ॥ भागीरथ्युत्तरे कूले गौतम्या दक्षिणे तथा ॥ विवाहो व्रत वंधो वा सिंह स्थे ज्ये न दु-
 र्यति ॥ ५१ ॥ अत्र विवाह व्रत वंधान्यतम शुभ कर्माणि निषिद्धा न्येव ज्योतिर्निबंधे ॥ संग-

लानीह कुर्वीत सिंहस्यो वाक् पतिर्यदा ॥ भनौ भेग गते सम्यगित्याहु एधोन कादयः ॥
 ५२ ॥ कुत्रापि मकरस्योऽपि न वज्र्यः लफः ॥ नर्मदा शर्व भागेतु श्रेण स्यो नर दक्षिणे ॥ गंड
 क्याः पश्चिमे भागे मकरस्यो न दोष भाक् ॥ ५३ ॥ अन्यथ ॥ आगधे गोड देतो न सिंधु देशे
 च कोंक्षणे ॥ व्रतं चूडां विवाहं च वज्रि न्मकरे गुरौ ॥ ५४ ॥ लुप्तवत्सरेऽपि शुभ कृतो निधः ॥
 गति चारगतो जीव सं राशिं नेति चेतुनः ॥ लुप्तः संवत्सरे ज्येष्ठे गहिते स्तव कर्म सु ॥ ५५ ॥
 गुरुः ॥ मेघे हृषे भये कुंभे यद्यानी चारणे गुरुः ॥ न तत्र काल लोप स्या दित्याह भगवान्य
 मः ॥ ५६ ॥ इय मातो नार न दोषः च्यवनः ॥ माता न्दशे कादश्या प्रयुज्य राशे यदा राशि मुपैति
 जीवः ॥ मुक्तेन पूर्वच पुन स्तथापि न लुप्त संवत्सर माहु राय्याः ॥ ५७ ॥ वैश्रभेन पराहारः ॥ लु-
 प्त संवत्सरो रेवा नर्मदा सुर निम्नगा ॥ भागी रथी तयो नद्यो रंतरेऽति विविद्धः ॥ ५८ ॥
 लुप्तं च ॥ लुप्ताब्दो घोः विमतेन मध्ये सोमोद्भवाया स्सुर निम्नगायाः ॥ इति नारदः ॥ सम-
 हसि गुरे प्रभुं तन्मासे तु प्रयत्नतः ॥ विवाहादि न कुर्वीत नर्मदा तीर उत्तरे ॥ ५९ ॥ द्विवे

नन्दिदि कुल संभूत सरसूक्त संयुक्ते शिरो मणौ सन्नाहैषा नवर्गाय त्रभा प्रुभा ॥ ६० ॥ वृत्तिन्नी संग्र-
 ह् ६ शिरो मणौ यज्य कथनं नाम नवमी प्रभा ॥ ६१ ॥ अथ लग्नप्रकरणम् ॥ मेयो वयोऽथ मि-
 थुनं कर्कः सिंहोऽथ कन्यका ॥ तुलांथ दृष्टिको धन्वी सकरः कुंभ मीन कौ ॥ १ ॥ राश-
 यत्तु क्रमा देते पुंस्त्रि दो दूर संज्ञ को ॥ दोयः चर स्थिर ध्वैप विस्त्र भावः क्रमात्पुनः ॥ २ ॥
 प्रक्षो व्याध तु र्मेयो मर्कटं ह्य कर्कटौ ॥ चर्मयो द्यवान्मीन स्वतोऽन्ये मस्त को व्याः ॥ ३ ॥
 मेयो वयो धनुर्पुगं कर्क न कोनि शावलः ॥ दिवा दत्तात्तु तेभ्योऽन्ये स्व स्व काले वला धिकाः
 ॥ ४ ॥ अथ एष्टित्वामिनः ॥ मेप दृष्टिक को र्भौमः वुधो नियन कन्ययोः ॥ तुला ह्य भनो प्रयु-
 क्रः कर्कटस्य तु चंद्रसाः ॥ ५ ॥ सिंहस्याधि पीत सूर्य्य ग्रहनि र्मकर कुंभयोः ॥ स्थान्मीन धनु-
 पो जीव ध्वैते राशी प्रवर मताः ॥ ६ ॥ अथ यद्देष्टानि ॥ मेयो ह्य स्तथा नक्रः कन्या कर्की म-
 य स्तुला ॥ सूर्या दीनां क्रमा देते कथिता उच्च राशयः ॥ ७ ॥ परमोच्चो प्रकः सूर्य्यो दिशो रामग-
 जाप्तिनः ॥ वाण चंद्र एष्ट एष्टेला हराः रक्षाश्चि मिताः क्रमात् ॥ ८ ॥ अथ नीचम् ॥ सूर्य्या

दीनां जगृर्नीचं सोच्च भाद्यच्च सप्तमम् ॥ एहोस्तु कन्यका गेहं मिथुन त्वेच्च भं स्मृतम् ॥
 १९ ॥ अथ मूलत्रिकोणम् ॥ सिंहो ह्ययम मेखाख्यं कन्या धन्वि तुला घटाः ॥ रव्यादीनां क्रमान्मू-
 लात्रिकोणा राशयः स्मृताः ॥ १० ॥ अथ नेपादि लग्न कृत्यानि ॥ आक रोधातु कर्म्मणि भूनिपा-
 लाभिषेचनम् ॥ निरोध स्नाह सं चैते मेय लग्ने प्रसिद्धाति ॥ ११ ॥ क्षेत्र कृपादिकं वानं कुमा-
 री वरणं क्रवम् ॥ गृह प्रवेश उद्ग्रह सिद्धि देव ह्यशो वये ॥ १२ ॥ कला विधूवा विद्वानं यत्काव्यं ह्यप-
 भौ वितम् ॥ तत्सर्वं मिथुने प्रोक्तं हो राशस्त्राविचक्षणैः ॥ १३ ॥ वारि वंधन मोक्षं च पौष्टिकं
 चर कर्म्म च ॥ यात्री कूप तथा गावीन् कर्कटे कथितं बुधैः ॥ १४ ॥ राज सेवा कृषिः परंपर
 योगो वणिक्पथः ॥ सिंहे प्रसिद्धाति तत्सर्वं मेष लग्ने दिचं चयत् ॥ १५ ॥ भूषणं धिरत्न विद्वा-
 नं ज्ञीयधं पौष्टिकं तथा ॥ चर स्थिर च यत्कृत्यं कन्या लग्ने प्रसिद्धाति ॥ १६ ॥ यागिल्यं क-
 र्णं सेवा यात्रा भांड तुला अयम् ॥ तुला लग्ने समाख्याता मुनिभि स्तत्त्व वेदिभिः ॥ १७
 ॥ राज सेवा भिषे कौर्व साहसं दारुणं तथा ॥ उग्रं चौर्ध्वं स्थिरं कर्म्म कर्त्तव्यं तत्परी हृदे ॥

॥ २८ ॥ अथाहः नैरिक्तं यात्रा यादृगाग्निं परिग्रहे धनुर्ध्वनि चरं कर्म काथितं पूर्व भूरिभिः ॥
 २९ ॥ दासी चतुः दशैवाति ज्ञानं सो वंधमोक्षणम् ॥ तथा सेना श्रयं यात्रा ययसो भक्तो
 नृपे ॥ ३० ॥ चीजोद्वि संग्रहे लोकचर्चा वारिगमादिकम् ॥ पशु कर्म्मी वृकार्यं च कुंभलक्ष्मि
 नृसीर्हितम् ॥ ३१ ॥ उद्याह श्वाभिवे कथं विद्या लंकरणादिकम् ॥ दिशं गनं कृषि रत्ना-
 न्नप्राशनं भीन नाश्रितम् ॥ ३२ ॥ मेयादिकेतु शुद्धेयु यथोक्तं कर्म्म सिद्धति ॥ पाथेदि
 तं युते ज्वेयु नूरं सिद्धे न्ननेतम् ॥ ३३ ॥ अथ लग्न भुक्ति प्रमाणम् ॥ तिक्तो मीने च क्षेत्रे-
 च पंती प्रशि चतुः पत्नीः ॥ चतस्रश्च दृढे कुंभे पलाशप्रोक्तास्व वीडिष् ॥ ३४ ॥ मकरे
 भिरुने पंच घटिकाच चतुः पत्नीः ॥ पंच कर्कं च चापे च शशि वेदाः पत्नीः स्मृताः ॥ ३५
 ॥ घटिका पंच सिंहः श्लो प्रशि वेदाः पत्नीः स्मृताः ॥ कन्यायान्च तुले पंच धलाश्चन्द्रा-
 स्तथा ग्नयः ॥ ३६ ॥ अथ यदुर्गाः ॥ यदुर्गा गृह होराख्ये द्वेः काणोद्व नवांशकः ॥ हो-
 दृशं प्रस्तथा त्रिंशं प्रश्च सुभजः सुभः ॥ ३७ ॥ त्रिंशद्वा गाल्मके लग्नं होरा तस्याह

| तंत्र्या | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | मेयाः | कर्काः | तुलाः | मकराः |
|----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------|--------|-------|-------|
| मांशाः | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ३० | ११० | ४१८ | ७१३ | ९०१२ |
| | २० | ४० | ०० | २० | ४० | ०० | २० | ४० | ०० | ५ | १२ | ११ | ६ |

द्वादशांशाः त्वरशितो ज्ञेयाः

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|
| १ | ५ | १० | १५ | २० | २५ | ३० | ३५ | ४० | ४५ | ५० | ५५ |
| २ | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | १०० | ११० |

वियम एषौ त्रिंशंशद्दसे समरषौ त्रिंशंशद्दसे

| स्वामि | मं | श | व | तु | शु | च | श | म | त्वामि |
|--------|----|---|---|----|----|---|---|---|----------|
| मांशाः | ५ | ५ | ८ | ७ | ५ | ७ | ८ | ५ | श्रांशाः |

रोमंद भीमारांश्च

यथा क्रमात् ॥ अथ जन्मादि भाव संज्ञा ॥

तनु एर्येनं २ सहोत्थारव्यं ३ सुहृत् ४ पुत्रो

भरि ६ द्योयितः ७ ॥ निधनं ८ धर्म ९ क

स्मा १० य ११ व्यया १२ भावास्तनोः क्र-

मात् ॥ ३२ ॥ केन्द्रं परां फरं चापौलि-

मं लग्ना तुनः पुनः ॥ नवमं पंच मस्थानं

त्रिकोणं स्थानमित्यपि ॥ ३३ ॥ त्रिदशैकादशं यक्षं प्रोक्तं चोपचयाद्भयम् ॥ यामि-
 त्रं सप्तमं धूतं छिद्रं च मदनाद्भयम् ॥ ३४ ॥ रिक्तं तु द्वादशं ज्ञेयं दुष्टित्वं कं स्यात्तृतीयकम्
 ॥ चतुरस्रं तुरीयाद्यसंख्यं रंभसयाद्यमम् ॥ ३५ ॥ अथ वर्गोत्तमनवांशः ॥ ज्ञाद्यप्रचरे नवांश
 स्स्यात्त्रिदशैरेकं तु पंचमाः ॥ नवमो हिः स्वभावाख्ये शुभो वर्गेऽन्तिमस्त्वयम् ॥ ३६ ॥ ज्ञ-
 यसाधारणा शुभकार्ये लग्नयत्नम् ॥ सर्वेषु शुभकार्येषु नेष्टाः खेदाः व्ययाद्यगाः ॥ लग्ने
 पापा रिदो सौम्याः पापाः केन्द्रत्रिकोणगाः ॥ ३७ ॥ सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्थाः पापा
 स्तु त्रिखंडाय गाः ॥ ते सर्वे लाभगाः खेदाः श्रेष्ठास्त्युशुभकर्मणि ॥ ३८ ॥ भावः
 स्वपतिना सौम्ये दृष्टो युक्ते वलाधिकः ॥ पूर्णं फलं निजं धत्ते व्यस्तं पापैर्युते क्षितः ॥ ३९
 ॥ लग्ने यद्गुर्गं संसृद्धे प्रोक्तं स्थानस्थिते ग्रहे ॥ शुभर्धेति धि वारेषु कार्थ्याः सर्वाः प्रभुभाः
 क्रियाः ॥ ४० ॥ द्विवेदि कुलसंभूतसरयूकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ समाप्तेयादशमीयं प्र-
 भाशुभा ॥ ४१ ॥ दूतिश्रीसंग्रहशिरोमणौ लग्नकथनं नाम दशमीप्रभा ॥ १० ॥

नय गृहर्चा प्रकरणात् ॥ अथ नूतन वस्त्रा लंकारादि धारणम् ॥ हस्तादि पंचके पुख्ये धनिश्चा रेवती
 द्वये ॥ अतरे च पुनर्वसोः रोहिण्यां च शुभे तिथौ ॥ १ ॥ बुधे शुक्ले ज्य वारेषु नूतनां वस्त्रा
 रणम् ॥ सोमं रोज रत्नादि प्रवालानां धृति प्रशुभा ॥ २ ॥ प्रागुक्त विह वारेच स्वर्णा-
 या भरण दिक्म् ॥ रक्तं वासो बुधेऽर्घ्यं भौम भास्कर योग्यि ॥ ३ ॥ शुभगायाः विशेषः ॥ रो-
 हेणी गुरु पुनर्वसु तरे या विभर्ति नव वस्त्र भूषणम् ॥ सान योग्यि द्रव लंघते यतिं स्नान या-
 धरति नान्येऽपि या ॥ ४ ॥ अथात्रवार फलम् ॥ जीर्णं सर्का विधुश्चाद्र्भीम प्रश्ने कं बुधो
 धनम् ॥ पुरुष्वां नं त्रिया वाप्ति भोगीवे मलिनं शनौ ॥ ५ ॥ कुर्वन्ते वासरत्वे ते नूतनां वर-
 धारणात् ॥ अथर्क्षफलम् ॥ वस्त्र साहि ग्या श्विन्नां भरणं नदि नाशनम् ॥ छत्तिकाग्नि
 भयं कुट्यां रोहिण्यां सर्व संपदः ॥ ६ ॥ नृगे रूयक भीति स्या दार्द्र्या निधनं भवेत् ॥ पुन-
 र्यसौ तदा पुख्ये धन धर्म महोत्सवाः ॥ ७ ॥ अश्लेषायां भवेच्छोको सघायां मरणं प्रवम्
 ॥ एवो भयं तु पूषाया शुक्लरायां घना गमः ॥ ८ ॥ कर्म सिद्धि तु हस्त र्क्षे चित्राया मिष्ट सं-

पदः ॥ मिथु भोजन दा स्वाती विशाखा नंद दायिनी ॥ ७९ ॥ मित्राक्षिरनु राधायां ज्येष्ठायां
वाससो हतिः ॥ जलक्षु तिष्ठ मूलर्क्षे पूर्वाषाढा ति रोगदा ॥ १० ॥ मिथुान्न दो चरा बाढा
अवरो नयनोत्कृत् ॥ धान्या गंगी धनिष्ठायां चिव मीति श्रुता मिधे ॥ ११ ॥ पूर्वाभा-
द्रेजला द्वीति रुक्मराया धना गमः ॥ रत्ना वासिस्तु रेवत्या भवे हस्त स्व धारणात् ॥ १२
॥ अथ वल्गा भरणा वि धारणे स्त्रीणां विशेषः ॥ अश्लेषन्यां च धनिष्ठायां रेवत्यां कर पंचके ॥
सुवर्णं रत्न दंतादि वस्त्राणां धारणं स्त्रियः ॥ १३ ॥ अथ चूरी चक्रम् ॥ यावद्वास्कर मुक्ति
भानि दिव से धिलानि संख्या तथा ॥ वन्ति ३ भूति ५ गुणा ३ भि ४ सप्त ७ नयनं २
पृथ्वी १ करे २ लुः १ क्रमात् ॥ ॥ सूर्या रो कवि सैन्य राहु रविजाः जीवः प्राप्ती के-
तवः ॥ क्रूरे ५ स च शुभे प्रगुः श्व कथितं चक्रे करे भूषणे ॥ ॥ सूर्यभात चूरी चक्रम् ॥
॥ १४ ॥ अथ कज्जला दर्शकृत्यम् ॥ चित्रा चतुष्टये प्रिव-

न्या धनिष्ठारेवती मृगे ॥ सुक्ते ऽर्के न्हि प्रानौ स्त्रीणां हर्ष

| | | | | | | | | |
|----|----|----|----|---|---|---|----|----|
| ३ | ५ | ३ | ४ | ७ | २ | १ | २ | १ |
| सू | मं | शु | वु | र | श | ह | चं | के |

शिर्षां जनयोर्दृतिः ॥ १५ ॥ अथन्मस्रविहृतौ फलम् ॥ वास सो नवधा भागे चतुः कोणयुदेव-
 ताः ॥ मध्य त्र्यंश स्थितं रक्षो नराः पार्श्वं दशं शूयोः ॥ १६ ॥ दग्धे जीर्णो नवे वल्ले लि-
 ते वा कर्दमादिभिः ॥ सर्वं प्रति ध्वसत् चैव शयनाशन पादुके ॥ १७ ॥ कज्जलक-
 र्दम गो मय लिप्ते वाससि दग्ध वति स्फुटिते च ॥ चिंत्य मिदं नवधा विहिते तन्निष्ठ मनि-
 ष्ठ फलं च सुधीभिः ॥ १८ ॥ शंख चक्रां बुज च्छत्र ध्वज तोरणां सन्निभा ॥ श्रीवत्सल-
 र्वतो भद्रं नृणां वर्तनं गृहोपमा ॥ १९ ॥ वर्द्धमान स्वस्ति का भस्मगङ्गूर्ध्वमया कृतिः ॥
 छेदा कृति र्दैत्य भागेऽप्यायुर्यं प्रदानृणाम् ॥ २० ॥ स्वरोद्रोक्षूक का कादि जंबूकश्च दं-
 को पमाः ॥ त्रिकोण सूर्या कृतयो देव भागेऽप्य शोभनाः ॥ २१ ॥ निर्दिशतं वसनं दद्या द्वि-
 जेभ्यः स्वर्णं संयुतम् ॥ आश्रिणो वाचनं कृत्वा त्वन्य द्वस्त्रं च धारयेत् ॥ २२ ॥ शय्य मुह-
 र्णं विनापि वस्त्रधारणम् ॥ विप्रा क्षया तथो ह्यहं राज्ञा प्रीत्या र्पितं च यत् ॥ निधेऽपि धिक्लि-
 चा राक्षो वस्त्रं धार्यं जगुर्बुधाः ॥ २३ ॥ अथ वस्त्र विशेष विशेषः ॥ मुक्त वस्त्रोक्त भेदाभ्यं र-

श्री शुक्रे गुरो बुधे ॥ विशुक्ते कर्तुं पीतं सभौसे रक्तं वरम् ॥ २५ ॥ अथ कलनीलम् ॥
 पुनर्वसू धनिष्ठाख्येऽपि वभे हस्ताच्चतुष्टये ॥ पूर्वोत्तरे शनौ सूर्य कलनीलां वरं शुभम्
 ॥ २६ ॥ अथ दुकूलम् ॥ जीवेऽर्केऽञ्जे बुधे शुक्रे वस्त्रोक्तं क्षेप्रवान्विते ॥ स्थिरं गे सङ्ग्रहेऽर्थ्यु-
 क्ते यदुकूलस्य धारणम् ॥ २७ ॥ अथ कोशेयम् ॥ शशिवनी रेवती हस्ते रोहिण्या अवरा त्रये
 ॥ पूर्वोत्तरे पुनर्वसोः स्वाती पुष्ये मघाभिधे ॥ २८ ॥ रवौ चंद्रे गुरो भाष्यं कोशेय वसनं जनेः
 ॥ अथ ऐमजं वस्त्रम् ॥ नील वस्त्रो दिते धिसे रेवती युध्य यो रपि ॥ शुक्रे शनौ श्वरेऽर्के च धार-
 ये द्वेभ्यो जां वरम् ॥ २९ ॥ अथ सतलकं चक्र धारणम् ॥ पुष्योत्तराश्रुर्धात्ये धनिष्ठा श्चि कर त्रये ॥
 रोहिण्या गुरु शुक्राब्जे देहे दुर्ग धृतिः शुभा ॥ ३० ॥ अथ स्वर्ण रत्नं तंतु मय वस्त्र परिधानम् ॥
 सुवर्णं तंतुं संमिश्रं धारणं च रवौ कुजे ॥ रत्नं तंतुं द्वि युक्तेऽब्जे वस्त्र धारणा मे शुभम् ॥ ३१
 ॥ अथ वस्त्र निर्माणम् ॥ रोहिणी रेवती चित्रा नुराधा नृग भोत्तरे ॥ शनिं हित्वा विदध्यातु तंतु-
 मिः पट साधनम् ॥ ३२ ॥ अथ कुशुमाद्यो वस्त्र रत्नम् ॥ पुनर्वसू ह्ये हस्ता तं च के अवरा ह-

१८ ॥ अश्विर्वसे ऽर्कं कवीज्या रेवास संरंजनं सुभम् ॥ ३३ ॥ अथ सत्वी कर्मा ॥ मृगश्चित्रानु
 राधाश्विपुण्यांतं रेवती करः ॥ ज्येष्ठा सद्वा सरा स्तार्काः श्रूची कर्म्मणि सस्पृताः ॥ ३४ ॥
 अथ वस्त्रक्षालनम् ॥ पुनर्वसु ह्ये ऽश्विन्या धनिष्ठा हस्त पंचके ॥ हित्वा कर्कं विधान् रि-
 त्तो षष्ठी प्राद् दिने तथा ॥ ३५ ॥ व्रतं पर्वच वस्त्राणि क्षालयेद्भुज कादिना ॥ ३५ ॥ अथो
 पानत्परे धानं चर्म छत्यं च ॥ चित्रा पूर्वानुराधा ज्येष्ठा प्रलेया मघा मृगो ॥ विष्णुत्वा कृत्ति
 का मूले रेवत्यां ज्ञार्किं सूर्ययोः ॥ ३६ ॥ उपानत्परिधानं च चर्म कर्म्मणि सस्यते ॥ अथ
 वितान तूलिकोपधानादि निर्म्माणम् ॥ कुर्याद्दस्त्रो विते धिल्ले तूलिका मुप धानं कम् ॥ विताना
 धं च वभीयान् ऊर्ध्वं मूर्धं मुखोद्गु ॥ अथ वस्त्र मय गेह निर्म्माणम् ॥ श्रुति त्रये ऽश्विनी पुष्ये
 ऽनुराधा रोहिणी मृगो ॥ हस्त त्रये पुन र्भे ऽन्त्ये त्र्यम्बरे णट वेधस सत् ॥ ३७ ॥ अथ सुगंध भो-
 गः ॥ श्रुति त्रये ऽश्विनी पुष्ये पूर्वायाद्या नुराधयोः ॥ हस्त त्रये पुन र्भे ऽन्त्ये मृग र्भेन पु-
 भे हनि ॥ ४० ॥ चंद नागरु कस्तूरी पुष्पाणि धारणं शुभम् ॥ अथ शय्या रंभः ॥

ॐ रोहिणी चोन्नरा द्वेया हस्तपुष्यपुनर्वसु ॥ अनुराधाश्रितनी शस्ता खट्वा निर्मनीया कर्मीणि
 ॥ ४२ ॥ शुभे योगे शुभे वारे विषया त्वहं को नः ॥ मन्दस्वके तथा ह्येया अस्तामाविशि,
 वैधत्तो ॥ ४३ ॥ पितृ पक्षे विशेषेणा यत्ना नो परि वर्जयेत् ॥ आवणो चैव योगेन्य आद्रे मा
 स्य शुभे हनि ॥ ४४ ॥ वर्त्तयेद्द्वौ मं मदेव खट्वा निर्मनीया कर्मीणि ॥ सूर्य्य श्रितु चतुष्कं न
 देयं धिस्तु मस्तके ॥ ४५ ॥ कोणयो एव नक्षत्रं शखाया नख संख्य कम् ॥ खट्वा मध्ये त्रि-
 के चैव वेद संख्यां च पात्रयोः ॥ ४६ ॥ दूयं खट्वा फलं चक्रे चारं ह्ये च भाषितम् ॥ मस्तके
 च शुभं ज्येयं कोणयो एव मस्तुदम् ॥ ४७ ॥ शारखाष्टकं शुभं प्रोक्तं त्रिकं मध्ये सुखप्रद
 म् ॥ पादेषु वेद नक्षत्रं हानि मस्तु भय प्रदम् ॥ ४८ ॥ सूर्य्य भादिन भं गरंयं खट्वा चक्रे
 विशेषतः ॥ अथ पलुकाश नादि आरंभः ॥ भैत्रेस्तु पुष्य यम भादिति वस्त्रि चित्रा हस्तोत्तरा चय
 हरीज्य विधात आनि ॥ एते ध्वती वश्य नाशन पादुकानां संभोग कार्थ्य मुदितं मुनिभि-
 र्गुरुभादे ॥ ४९ ॥ अथ भूषणघटनम् ॥ त्रिपुष्कराभिधेयोगे त्रुत्तरेत्यती ह्ये ॥ द्युतित्रये मनेषु

ये पुनर्वस्वऽनुराधयोः ॥ हस्तत्रयेऽथ रोहिण्यां श्रुभा कार्यां श्रुभे हनि ॥ ५० ॥ अथ रत्न
 शुक्र भूषाघट्टनम् ॥ कृत्तिकादित्रये हस्तपंचके रेवती द्वये ॥ श्रुतित्रये पुनर्वस्वोः पुष्यभेचो-
 त्तरात्रये ॥ ५१ ॥ कुजेऽर्के रत्नशुक्र भूषा घट्टनं श्रुभ वासरे ॥ अथ रोष्य अथ वज्र शुक्र भूषण
 निम्नारम् ॥ रत्न शुक्र भूषणोक्तर्धे विष्णवां कृत्तिकां विना ॥ ५२ ॥ शुक्रेऽङ्गे भूषणरोष्य
 चक्रं सुक्ता मयं हि सत् ॥ अथ पात्र भोजनम् ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यदुक्तं शक्ति यामले ॥ सू-
 र्यभाचंद्र पर्यन्तं गणनीयं सदा बुधैः ॥ ५३ ॥ दिक्षु दिक्षु हयं न्यस्य मध्ये का वश्यो ज-
 पेत् ॥ वर्तुला कारचक्रस्य भोक्तु पात्रस्य निर्णयः ॥ ५४ ॥ बंधनं सौख्यं हानिस्तथा ह्ना-
 भं सौख्यं च मृत्युदम् ॥ पुत्रा युश्लोक वृद्धी च पूर्वादि क्रमतो भवेत् ॥ ५५ ॥ अस्तानष्टे-
 नु पथी च विलोस्तुनं विवर्जयेत् ॥ रोहिणी युगले हस्त त्रितये रेवती द्वये ॥ ५६ ॥ अथ-
 ए त्रितयेषु पुनर्वस्व नुराधयोः ॥ श्रुतरेषु शुक्रेऽङ्गे वारे चामृतयोगके ॥ ५७ ॥
 सौवर्णरोष्य पात्रेषु भोजनादि श्रुभ प्रदम् ॥ अथ ग्रामशुक्रम् ॥ अचरा त्रितये हस्त त्रितये रे-

भि-वती ह्ये ॥ ज्येष्ठायां शुभ शीर्षे च पुनर्वसु द्वये तथा ॥ ५८ ॥ क्षुरकर्म बुधैः प्रोक्तं त्यक्त्वा भो-
 म शनिं रविम् ॥ अनुराधा शुक्रां चैव क्वाचिकां रोहिणीं मघां ॥ ५९ ॥ अथ क्षुरकृत्ये वारफल-
 म् ॥ भानु र्मर्मासे शनिः सप्त भौमो ऽष्टौ नाश्रये त्सुखम् ॥ वज्रये द्वोधनः पंच मासान्सप्तनि-
 शा पतिः ॥ ६० ॥ पुनरुक्त्वे कादश क्षेमं क्षौरैश्चानां पतिर्वशः ॥ अथ क्षौरैरित्याज्य तिथिः ॥ ज्य-
 श्मी प्रति पत्पक्षी ऋक्ता पर्वाणि संत्यजेत् ॥ चतुर्दशी त्वमावास्या क्षौरैरित्याज्या तु सर्वदा ॥
 ६१ ॥ निर्धनक्षत्राणां दुष्ट फलम् ॥ पंच कृत्वो मघायां यः पदं कृत्वः कृत्तिका स्वपि ॥ त्रिवारं
 त्रानुराधायां रोहिण्या मष्ट वारकम् ॥ ६२ ॥ उत्तरा फाल्गुनी संज्ञे चतुर्थे क्षौरमाचरे-
 त् ॥ सर्वेध साप्त मानो ऽपि यावद्वन्द्वं न जीवति ॥ ६३ ॥ अथ क्षौर निषेधे ऽपि तदपवादः ॥ ज्यो-
 क्ष याविश्र राक्षो र्वाप्याधाने बंध मोक्षणे ॥ सुताशौ चैव दीप्तायां शुद्धनं शस्त्र मे व्यपि ॥
 ६४ ॥ शुद्धनं चोपवासश्च सर्व तीर्थं व्ययं विधिः ॥ वर्जयित्वा कुरु क्षेत्रं नैमिषं पुष्करं गयाम् ॥
 ६५ ॥ अथ राज्ञां प्रशश्रुकर्म ॥ क्षौरमस्यो रये राज्ञः पंचमे पंचमे हनि ॥ प्रशश्रुकर्म त्व

नाख्यातं निविद्ध तारका नचेत् ॥ ६६ ॥ अथ नख दंत कृत्यं ॥ अक्षे सु क्षौर सन्धीहं येसु
 येषु मनीषिभिः ॥ तेषु तेषु च कर्तव्या नख दंतदि काक्रिया ॥ ६७ ॥ अथ क्षौर विधौ नियेधः
 ॥ भुक्ताभ्यक्तो ब्रती यात्रा रणे द्योगी कृतान्हिकः ॥ उत्कटा चरणौ रात्रौ संध्ययो रसंथो रपि
 ॥ ६८ ॥ शुभ्रे सु नवमे चान्हि क्षुर लर्म न कारयेत् ॥ प्राक् ब्रत स्नान को राजा योगी न्द्रो
 ग भिरिती पतिः ॥ ६९ ॥ सजीव त्वित कक्षेते मुंड्याः प्राक् कथिता अपि ॥ ७० ॥ क्षौर सुभवा-
 त्पम् ॥ केशवं चान्नीपुरं पाटल पुत्रं पुरी महि क्ष्वम् ॥ दिति मदिति च स्मरतां क्षौर विधौ
 भवति कल्याणम् ॥ ७१ ॥ अथ क्षौर किंचिद्विधेयः ॥ गंगायां भास्कर क्षेत्रे माना पित्रो मृते ह-
 नि ॥ आधाने सोम याने च षट्सु क्षौरं विधीयते ॥ ७२ ॥ राज कार्यं नियुक्तानां नतानी रू-
 प जीविनाम् ॥ रमश्रु रोम नख क्षे दे नास्ति काल विशेष नम् ॥ ७३ ॥ अथ विद्यारंभः ॥ मृ-
 गादि पंचके मूले हस्तादि त्रितये ऽध्वमे ॥ अवरात्रय पूर्वा सुविद्यारंभः प्रशस्यते ॥ ७४
 ॥ रवौ शुक्ले बुधे जीवे वारे लगन वले शुभे ॥ दशम्यादि त्रिके षष्ठी तृतीया पंचमी शुच ॥ ७५ ॥

॥ विद्या रमा गुरा शुक्र पुषे सर्वार्थ सिद्धिदः ॥ मध्योऽर्को जाड्य कृच्छ्रो भौसा की मृत्यु दो स्तु-
 ती ॥ ७६ ॥ अथ गणितारम्भः ॥ शत द्वयेऽनु राधा द्वे रोहिणी रेवती करे ॥ पुष्ये जीवे बुधे कुम्भी
 त्पारंभं गरिमा दियु ॥ ७७ ॥ अथ व्याकरणारम्भः ॥ रोहिण्यां पंच के हस्ता तुनर्भे जग भेऽ
 श्विभे ॥ पुष्ये शुक्रेऽप्य विद्यारे शब्द शास्त्रं पठेत्सुधीः ॥ ७८ ॥ अथ न्याय शास्त्राद्या रम्भः ॥ श्रुत-
 रे रोहिणी पुष्ये पुनर्भे अचरौ करे ॥ अश्विन्यां शत भे स्वाती न्याय शास्त्रादिकं पठेत् ॥ ७९
 ॥ अथ धर्म शास्त्र पुराणारम्भः ॥ हस्तादि पंच के पुष्ये रेवती द्वितये मृगे ॥ अवत्रये शुभा रंभो ध-
 र्म शास्त्र पुराणयोः ॥ ८० ॥ अथ वैद्य विद्या गारुही विद्यारम्भः ॥ हस्त त्रयेऽनु राधायां पुनर्भे अव-
 रात्रये ॥ मूले चैवाश्विनी पुष्ये ज्येष्ठा ज्ञेयार्द्र भे मृगे ॥ ८१ ॥ अथ जैन विद्यारम्भः ॥ श्रुति-
 त्रये मघा पूर्वा नुराधा रेवती त्रये ॥ पुनर्भे स्वातिभे सूर्ये शुक्रे जैना गमं पठेत् ॥ ८२ ॥ अथ
 लिंगांबु केदन मुहूर्तम् ॥ नराश्व वष भा रीनां लिंगांबु केदनं स्मृतम् ॥ अर्का रेज्यान्मपुष्या की
 स्वतीस्तु श्रुति वासवैः ॥ ८३ ॥ लिंगांबु केदो नरस्यासौ वर्गो ऋक्ता स्य मार्काष्टमहीन घस्ते ॥

शरित्या कीं पीलपुष्याकं दक्षं श्रोत्रेनु न्रविष्टा प्रदिष्टा ॥ ८४ ॥ अथ नष्टतारीयः ॥ दृढतया तपे
 वारुणी विश्व संख्या तथा ह्युद्गोऽथ त्रयो विंशतिश्च ॥ तथैवाष्टविंशतरो वा निषिद्धा स-
 दायान्नै रङ्गाल विद्धिः प्रदिष्टा ॥ ८५ ॥ अथ पारसी विद्यारंभः ॥ ज्येष्ठा ज्ञेया मघा पूर्वा रेव-
 ती भरणी ह्ये ॥ विशारवाच्चेत्तरा बाहा शतभे पाप वासीरे ॥ ८६ ॥ लग्ने स्थिरे च चन्द्रे-
 च पारसी नारंदी पठेत् ॥ अथ लिप्यारंभः ॥ शुभे तिथौ शुभे चोरे रेवती युगले तथा ॥ ८७ ॥
 अवरौ चानुराधायां तथै वाद्रोदिसु त्रिषु ॥ हस्तादि त्रितये कुर्व्या स्त्रिखनारंभनं सुधीः ॥
 ८८ ॥ अथ रत्न परीक्षा ॥ पुनर्भे शतहस्तर्क्षे श्रवेज्येष्टे परीक्षणम् ॥ रत्नानामष्टमी भूतं हित्वा
 भौमं प्रज्ञै प्रचरम् ॥ ८९ ॥ अथ शिल्प कर्म्मारंभः ॥ हस्त त्रये श्रवात् ज्येष्ठां श्रुतरे रोहिणी मृ-
 ने ॥ रेवत्या मश्विनी पुष्ये पुनर्वसु नुराधयोः ॥ ९० ॥ शस्त्रे विधौ शुभे चोरे शिल्प विद्यां त-
 मा चरेत् ॥ अथ रत्न दर्शनम् ॥ श्रुतरे श्रवणं हूँ ह्रे मृगे पुष्या नुराधयोः ॥ ९१ ॥ रोहिण्यां रेव-
 ती युगे चित्रा हस्ते शुभे हनि ॥ बलिन्यर्क्षेऽर्क्षे चोरेऽपि रत्न दर्शनं मी रिप्तम् ॥ ९२ ॥ अथ-

राजसेवा ॥ हस्तद्वयेऽनुराधायोरैवतीशुगलेखगे ॥ पुष्ये बुधे गुरौ षुक्रे सानिधौ रविवासरे ॥
 ८३ ॥ योनि राशिपयोर्मैत्र्यां स्वामी सेव्योऽनुजीविभिः ॥ अथ दास दासी संग्रहः ॥ उत्तरा सु-
 चरोहिण्यां दास दास्यादि संग्रहः ॥ ८४ ॥ अथ क्षत्रचामरसिंहा सनादि कृत्यम् ॥ चामर क्षत्र
 दोलादि दीर्घ सिंहा सनादिकम् ॥ पट्टाभिषेकके सर्वे विदध्याच्छे भने हनि ॥ ८५ ॥
 अथ मुद्राकृत्यम् ॥ नृपु भव छिप्रचरेषु भेषु योगे प्रशस्ते शनि चंद्र वर्ज्ये ॥ वारि तिथौ पू-
 र्णजयाक्षये च मुद्रा प्रतिष्ठा शुभदानरणम् ॥ ८६ ॥ एवं स्तेवा शितास्तेवा मुद्राणां
 ग्रहणं क्वचित् ॥ क्रूरग्रह क्षीणलग्ने न कार्यं भूति मिहता ॥ ८७ ॥ अथाश्वारोहणम् गजा-
 नां च ॥ पुष्य अविद्याशिवनि सोम्य भेषु पीक्षानला वित्य कराक्षयेषु ॥ सवारुणा क्षीणेषु बुध-
 स्मृतानि सवारिणी कार्याणि तुरंगमानाम् ॥ ८८ ॥ अथाश्वारोहणे चक्रम् ॥ अथवा कारं लि-
 खे चक्रं साभिजिज्ञानि विन्यसेत् ॥ स्कंधे तु सूर्य्य भात्यं च घृष्टे च दश भानि च ॥ ८९ ॥ पु-
 ष्ये हे स्था पयेत्राज्ञश्चतुः पादे चतुष्टयम् ॥ उर्वरे विन्यसेत्यं च मुत्वे हेतुरागस्य च ॥ ९० ॥

संश्रि ॥ अथ लाभो मुखे संस्यक् वाजी नश्यति चोदरे ॥ चरणे स्थेरणे भंगः पुच्छे पत्नी विनश्य-
 ति ॥ १ ॥ अथ सिद्धिर्भवेत्यष्टे स्क्वे सुं ध पतिर्भवेत् ॥ अथ गज कृत्यम् ॥ हस्तत्रये सौम्य ह-
 रि त्रये च यौल द्वये पुष्य पुनर्वसौ च ॥ मैत्रे च सर्वाण्यपि कुंजरणा कर्म्मणि प्रसन्नान्य रि-
 लानि यानि ॥ २ ॥ अथ प्रिविकारे हणं कृत्यं च ॥ उत्तरे रेवती युगे त्रिभे हस्ता द्विभे प्रवात् ॥ पु-
 नर्वसौ स्थापुष्ये ॥ नुरधा त्रितये मृगे ॥ ३ ॥ रोहिण्यां प्रिवि कायास्तु सख्यने घट्टने शुभम्
 ॥ शुभं त्रारि शुभे लग्ने शुभांशे शोभने दिने ॥ ४ ॥ अंकुशा करणं योग्यं ग्रने लग्ने ग्रने
 दिने ॥ अथ पल्याण निष्कर्णम् ॥ अवरो शतभे हस्ते पुष्ये मूले मृगे ॥ प्रिवसे ॥ पुनर्वसौ गजा
 श्वी ॥ पल्याण करणं शुभम् ॥ ५ ॥ वर्जयित्वा कुजं नृका मश्व काव्यं शुभावहम् ॥
 अथाश्वस्य विशेष कृत्यम् ॥ चोलीके खुर कृत्यादि शिक्षा विद्योक्त भादि युगास घत्सादिकं त्वन्ना
 शनोक्तं क्षीं गज वाजिनाम् ॥ ६ ॥ अथ रथ कृत्यम् ॥ पुष्यो पुनर्वसु ज्येष्ठा नुरधा रेवती द्वये ॥
 अवरादि त्रिभे हस्त त्रितये रोहिणी मृगे ॥ ७ ॥ सार्क सौम्य दिने सौम्य विलग्ने रथ कर्मसत्

॥ अथ संधिः प्राच्यः ॥ लघु राधा मया पुष्ये तिथ्यङ्गैर्तैतिलान्निधे ॥ लग्ने शर्द्धटिगेऽष्टम्यां
 द्वादश्यां संधि रित्यते ॥ ८ ॥ अथ मणारंभः ॥ मूलाद्वाशत भोज्ये सा पूर्वाश्लेया मघासुच
 ॥ भरणीया कूर्वा च मघ कर्मे रितं बुधैः ॥ ९ ॥ अथ मादक वस्तु भक्षणम् ॥ आर्द्राश्लेयाम
 घा पूर्वाज्येष्ठा मूल शताभिधे ॥ भरण्या सुदिने मंदे त्व प्रतीचान्मादकं मधु ॥ १० ॥ अथ न-
 वांगनाभोगः ॥ प्रथमाभिगम एणस्तो नव वध्या शुभे हनि ॥ गर्माधानोक्त नक्षत्रे शस्त्रे
 ज्योत्स्ना करे निशि ॥ ११ ॥ अथ गीत नृत्यारंभः ॥ रेवत्या मनु राधाया धनिष्ठा द्वितये करे ॥
 रोहिणी युगले पुष्ये त्र्युत्तरे गीत नर्तनम् ॥ १२ ॥ अथ नट क्रिया ॥ मृगाङ्गीरोहिणी पुष्ये पुन
 र्भे अवरात्रये ॥ चित्रा त्रयोत्तर मूले कृत्य सन्तत्य जीविनाम् ॥ १३ ॥ अथ वृक्षलतादि रोप-
 णम् ॥ हस्त चित्रोत्तर मूलेऽनु राधारेवती ह्ये ॥ विशाखा रोहिणी पुष्ये खार मों सि मंगे-
 शत ॥ १४ ॥ सूर्य भादिन पर्यंतं राम रामाक्षि युगमभं ॥ एम भूवाण षट् युगम चक्रे पाद
 परोपरो ॥ १५ ॥ अस्त च्छुभ मस हानि शुभं दुःखं रिबोभयं ॥ शुभं सौख्यं क्रमात् क्षेयं

फल मुक्तं विचक्षणैः ॥ १६ ॥ विधिवार समा युक्तं सूर्य्य भादिन मं युतम् ॥ नवभिश्च हरे
 द्भागं श्रेयां केन फलं दिधेत् ॥ १७ ॥ एकै श्रेरे चतुः केच त केच फल मादिशेत् ॥ व-
 क्षो यस्य ह्ये लाभं सप्त मे नव मे मृतिः ॥ १८ ॥ अथ नौका घट्टनम् ॥ अश्विकरेज्य सुधानिधि प्र-
 वीक्षिन् धना न्युतमे शुभ लने ॥ ताक योग तिथीन् दु विशुद्धो नो गमनं शुभ दं शुभ वारे ॥
 १९ ॥ अथ सामान्यतः पशु कृत्यं रक्षा च ॥ त्यक्ता वल्ली समा रिक्ता रोहिणी सुत्तरा त्रयम् ॥ चित्रा-
 रव्यं अश्वरां भौमं पशूनां सर्व कर्म च ॥ २० ॥ प्रवेशा निर्गमौ चापि न त्याज्यं निजयो निभम्
 ॥ पूर्वा त्रये धनिदेन्द्र पीले सौम्य विप्रावयोः ॥ अश्लेषा या मया शिवन्या यात्रा सिद्धि श्व-
 तुः पदम् ॥ २१ ॥ अथ चरणी चक्रम् ॥ व्यानं विल्लीयां संगुण्यं प्रभुना माक्षैर्युतम् ॥ अष्ट
 भिसु हरेद्भागं श्रेयां के फल मादि शेत् ॥ २२ ॥ पशोर्होनिः पशोर्नाशः पशु लाभः पशु
 क्षयः ॥ पशु रोगः पशोर्दीद्विः पशु भेदः पशोर्वहु ॥ २३ ॥ अथोष्टमहिष्यादि कृतम् ॥ धनिष्ठादि
 तये पूर्वायादातिर्यङ्मुखोदुषु ॥ अजावि महिषौष्टराणां कृत्यं चाश्वतरी शुभा ॥ २४ ॥

॥ अथ दगचारिकृत्यम् ॥ ज्येष्ठा स्वात्य श्रित्वनी पुष्ये पुनर्भे रोहिणी करे ॥ उत्तरा सुशुभं कृत्यं श्रे-
 णिणां चन चारिणाम् ॥ ३५ ॥ अथ पक्षीकृत्यम् ॥ शुभा हे सुरवो तिथ्यं ह्यनुखे चोर्द्धं मुखे च भे-
 ॥ सारिका शुक्र मुख्यानां पक्षिणां कृत्य सुत्तमम् ॥ ३६ ॥ अथ सर्ववस्तुविक्रयः ॥ विधाखा क-
 निका उलेया भरणी पूर्विका त्रयम् ॥ विक्रयः सतिष्या वैशु कर्त्तव्यो न क्रय प्रशुभः ॥ ३७ ॥
 अथ गृह क्षेत्र भूम्यादीनां क्रय विक्रयो ॥ जीवे शुक्ले च नंदरा सुपूर्णायां मूलभे मृगे ॥ पूर्वार्धे लेखा मयां
 त्ये च विप्रात्वाहितये तथा ॥ ३८ ॥ पुनर्भे शुनिभिः प्रोक्तं क्रयं धिक्क्रयणं शुवः ॥ अथ वाणिज्य
 म् ॥ अत्रुणधोत्तर पुष्ये रेवती रोहिणी मृगे ॥ हस्त चित्राश्र्वभे कुर्ब्यां क्षारिज्यं द्विवसे शुभे-
 ॥ ३९ ॥ अथ निधिद्वयादि वृद्धि संग्रहे ॥ पुष्ये मृगे ॥ नुराधायां श्रवणा त्रितये श्र्वभे ॥ पुनर्भे ॥ न्ये-
 विप्रात्वायां निधे र्द्विष्ट च संग्रहः ॥ ३० ॥ अथ द्रव्यादीनां गुप्त स्थाने स्थापनम् ॥ धनिष्ठोका वि-
 श्रा स्वाख्ये पूर्वाषाढाभिधं त्यभे ॥ रोहिण्यां च निधे भूसौ स्थापनं शुभ मीरितम् ॥ ३१ ॥
 अथ द्रव्यप्रयोगः ॥ श्रवणादि त्रिभे चित्रा चतुर्के रेवती हूये ॥ पुनर्वसे मृगे पुष्ये शुभो द्रव्यप्र-

योगकः ॥ ३२ ॥ संक्रांतौ वृद्धियोगे तु हस्तक्षेत्रिभौ भयोः ॥ न च ग्राहं ऋणं यस्मात्तद्वृ-
 सुस्थिरं भवेत् ॥ ३३ ॥ ऋणं भौसे न गच्छीयान्न देयं बुधवासरे ॥ ऋण-
 चयं सोमनर्त्तने ॥ ३४ ॥ अथ धान्यविक्रयः ॥ रोहिण्या सत्क्रयोंऽन्त्यधनिष्ठा सत भोत्तरे ॥ ज-
 यत्स संग्रहः ॥ रत्नसंग्रहं श्रेष्ठं तोया रंभो वित्तोद्भु ॥ ३५ ॥ अथ वृद्धार्थं धान्यप्रयोगः ॥ विप्राख-
 रोहिणी ज्येष्ठा पुनर्भोश्च शतत्रये ॥ न्युत्तरे स्वानि पुन्ये तु धान्य वृद्धिं प्रप्नु भेरिता ॥ ३६ ॥
 अथ गृहहस्तादनम् ॥ हस्तत्रये धातुयुगे सराधा घत्नादियोगे गृह गोपनं च ॥ न चं परित्यज्य कु-
 ह्मं च ऋक्तांभौ मार्कजादित्य दिनाश्च निष्ठाः ॥ ३७ ॥ अथ हल प्रवाहः ॥ रवौ रोद्रादि पादस्ये सूक्तौ संजा-
 यते रजः ॥ तस्माद्द्विनं त्रयं तत्र वीजवापनं कारयेत् ॥ ३८ ॥ ऋक्ताष्टमी विष्टि युनष्ट चंद्रे क्षीणे नु-
 रा रर्कज वासरे शु ॥ दिन क्षये वानिग्नि संध्ययोर्वा कृता कधी पूर्व धनानि हंति ॥ ३९ ॥ पुन-
 र्वसू ह्ये मूले न्युत्तरे रोहिणी द्वये ॥ हस्तत्रयेऽनुराधायां रेवत्यां श्रवणा त्रये ॥ ४० ॥ तिथौ
 वारे शुभेऽश्विन्यां हल प्रवहणं शुभम् ॥ अथ हलचक्रम् ॥ त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पंच त्रि-

भिः पंच त्रिभिर्द्वयम् ॥ सूर्यभादिनभया वद्धनि दृष्टी हले क्रमात् ॥ ४१ ॥ अथ वीजोद्भिः ॥
 हस्ताभिः पुण्योत्तर रोहिणीसु चित्रानुराधा मृगशिरसीषु ॥ स्वाती धनिष्ठा च मघा च मूलं वी-
 जोत्ति रुक्मिणी फला प्रदिष्टा ॥ ४२ ॥ शुभे वारे तिथौ श्रेष्ठा वीजोत्ति स्वथ राहु भातु ॥ अथा-
 र्गनीसु त्रयं चैक त्रयेणु त्रि चतुः खयम् ॥ ४३ ॥ असुभं च शुभं क्षेयं दिन क्षं फलि चक्रमे ॥
 अथ रास्वारे पणम् ॥ हस्त त्रयोत्तर मूले धनिष्ठा रोहिणी मृगे ॥ पुण्ये मृगे ऽनुराधोत्थे म-
 घायां शुभ वासरे ॥ ४४ ॥ त्यक्ता ऋक्तां प्राणिं भौमं रास्य स्यां कुर रोपणम् ॥ अथ रास्वारे-
 अथ धान्यच्छिदा ॥ पूर्वोत्तर मघा ग्लेष्ठा ज्येष्ठा दूर्वा अचरा द्वये ॥ भरणी द्वितये मूले मृगे पुण्ये
 कर त्रये ॥ ४५ ॥ धान्य सिद्धा सुभा ऋक्तां हित्वा भौम राशे प्रचरो ॥ अथ कणमर्दनम् ॥ ज्ञानु-
 राधा अवे मूले रेवत्यां च मृगे त्रिभे ॥ ज्येष्ठायां चैव रोहिण्यां सुभं स्यात्करा मर्दनम् ॥
 ४६ ॥ अथ धान्यानयनं फलपुण्योत्तराणां च ॥ रोपणोदित नक्षत्रे वासरे जादरे द्वयेः ॥ अन्नस्या-
 नयनं पुण्य फला द्युत्तराणां च सत् ॥ ४७ ॥ अथान्नादिपाकक्रिया ॥ मूलं चित्रा नुराधा सुविश

सिखा कृत्तिका मृगे ॥ उत्तरा रोहिणी ज्येष्ठा रेवती युपचि क्रिया ॥ ४८ ॥ सत्यत्तां बुधं रत्नं
 पद्मं च तिथिं शुभम् ॥ अथ नवान्न ग्रहणम् ॥ हस्त चित्रा नृणां त्रे रोहिणी अक्षरा द्वये
 ॥ नृणां च न्युत्तरा सर्वे शुभे वारे तिथा वपि ॥ ४९ ॥ नवान्नस्य विधानं च प्राशनं फ-
 लमूनयोः ॥ अथ नवान्न चक्रम् ॥ बुधश्चोत्तर ५ पुत्र ५ वेद ५ युगे २ लु १ क
 म् ॥ सच्छुभं शुभमर्घजं शुभं चर्यं शुभं क्रमात् ॥ ५० ॥ विना नंदं विष घटी न्मधुपौ-
 वार्त्ति भूगि जान् ॥ अथ कोष्ठाधेधान्य स्थितिः ॥ पुनर्भेदगृहीर्धेत्येऽनुगृहा अक्षरा त्रये ॥
 हस्त त्रयेऽश्विनी पुष्ये रोहिण्या सुत्तरा त्रये ॥ ५१ ॥ गुरौऽशुक्रं रवीं चोऽस्य त्कोष्ठा दोऽधान्य
 क्षणम् ॥ सूर्य्यं भादनि वेदेषु वसु वेदाग्नि बुक्रमात् ॥ शुभा शुभं क्रमाद्भूयं कोष्ठा दो
 धान्य रक्षते ॥ ५२ ॥ गयदीज संगतः ॥ हस्त त्रये पुनर्वत्सोः रोहिण्या अक्षरा द्वये ॥ स्थिरे लगे
 शुभे वारे विषं द्रवीज संगतः ॥ ५३ ॥ गयद्वारज्जुगिर्धन्य वंधनम् ॥ स्वातो मूले च हस्ते त्वभा-
 दा पाद मूले घने ॥ रोहिण्यां कुक्ष्ये दोऽं तर्द्धन्य संरक्षणं शुभम् ॥ ५४ ॥ अथोत्तल सप्तल चक्रम्

॥ भूदिगधिदिग क्षीणि शने भीदिनभंक्रमात् ॥ अशुभं च शुभं क्षेयं क्रमादूयल सूपले ॥
 ५५ ॥ अथ चूर्णार्द्धन चक्रम् ॥ शने भेत्तु युगा ४ उय ४ ए ८ राम ३ वेद ४ त्रिभं क्रमात् ॥ अस्
 न्नुभं क्रमाच्चक्रे चक्रि कारखे मनो हरे ॥ ५६ ॥ अथ सूर्यचक्रम् ॥ सूर्यभातं च ५ त्र्य ३ ए ८
 धि ४ सुनि ७ भेत्तु शुभाशुभम् ॥ क्रमात्सूर्याभिधे चक्रे विज्ञेयं को विदेः सदा ॥ ५७ ॥ अथ
 बुद्धीचक्रम् ॥ सूर्यभावं ४ वेदा ४ ए ८ राम ३ शत्रु ६ शुभाशुभम् ॥ बुद्धीचक्रे क्रमात्
 क्षेयं शुभाशुभं विचक्षणेः ॥ ५८ ॥ अथ मार्जनीचक्रम् ॥ सूर्यभाजं ३ राम ३ र ६ राम ३
 तर्का ६ र ६ नैषु च ॥ असत् शुभं क्रमात् क्षेयं मार्जनी संज्ञके शुभे ॥ ५९ ॥ हरिस्वर्यचि
 त्नादि नि नैत्र पुण्ये स्मृते रोहि वल्ले धिरिक्षे च भीमे ॥ त्यजे त्वं मीनेऽप्यलौ लग्नगेहे
 पवित्रं वृकल्ये रवे र्य्या मलानि ॥ ६० ॥ अथ गोमयपिंठचक्रम् ॥ सूर्यक्षीद्रसमैरथ स्थलग
 नैः पाको रसैः संयुतः शीघ्रं शुद्धं भित्तैः शबस्य वहनं मध्ये युगे स्सार्पभीः ॥ प्रागण दि
 बु वेदभैः त्व बु हृदं स्यात्संग सोरोगभीः क्वाथा देः करणं शुभं च गदितं काष्ठानि संस्था

पने ॥ ६१ ॥ सूर्य भाद्र सतर्का द्विविध नाग ऽ वेदा ऽ भिजित्तह ॥ शुभा शुभं क्रमात्
 द्वयं करीपादिषु संग्रहे ॥ ६२ ॥ अथ दीप चक्रम् ॥ सूर्य भाद्युगम २ वत्स ऽ दधि ४ दिक् १० त्रि-
 कं ३ चा शुभं शुभम् ॥ दीप चक्रे क्रमात् द्वयं फलं योग विच क्षणेः ॥ ६३ ॥ त्यक्ता
 ऋक्तां रविं भौमं लग्नं च घट मी नकम् ॥ अथ कलश चक्रम् ॥ सूर्य भात्यं च ५ रमा ३ द्वि-
 ७ वसु ऽ पंच ५ शुभा शुभम् ॥ फलं क्रमाद् द्वैर्द्वयं चक्रे कलश संज्ञके ॥ ६४ ॥ अथ कांश्य पा-
 त्रं धाल्यादि चक्रम् ॥ चरमदुलघु भै सक्षर के चैत्र पौषे स्थिति ज र विजनं दा ऽ पेय नाडी वि-
 हाय ॥ प्रति समन वजातो ऽ न्नस्य श्रत्या शन सत् भ्रव गण सहितै स्तेः कांश्य पानादि
 भोज्यम् ॥ ६५ ॥ सुखे श्रीणि ३ शोकं रसा ६ कंठ पुष्टिः त्रयो ३ रोग कुक्षे धनं रम-
 वामे ॥ त्रये ३ एष व्याधिः सुखं रम ३ मध्ये रसे ६ हानि भार्का द्यदा शुंजि पात्रम् ॥ ६६
 ॥ अथ रंहं कादि सुहृत्तम् ॥ अदिति सि प्रमृदु भ्रव संज्ञके भृगु जवा कयति पूर्ण जया तिव्यौ ॥
 शकट नाव सुखासन शिल्पकं भ्रमर कार्य रंहं कसिद्धिदम् ॥ ६७ ॥ अथ कोल्ह चक्रम्

॥ जंत्र काष्ठ समुद्भवं सुललितं भान्वृक्षतः पंच संमूले मूल विदारणं च सरभं मध्ये स्थि-
तन्द्वयदम् ॥ लिंगे पंच निहन्ति तैल गुड को दंते द्वयं त्वामि हृत् पंचे पंच भयं रियो प्रचर स-
भं सौख्य प्रदं कर्चरी ॥ ६८ ॥ सूर्य भातपंच पंचेयु राम युग्म शर त्रिकम् ॥ नष्ट च्छुभमस्र
अथ कोल्ह चक्रम् ॥ साभिन् दुःखं लेशं शुभमतोऽशुभम् ॥ ६९ ॥ कोल्ह चक्रे साभिजिते

| | | | | | | |
|---|----|---|---|---|----|---|
| ५ | ५ | ५ | ३ | २ | ५ | ३ |
| ग | सु | ग | ग | ग | सु | ग |

ज्ञेय मेवं विचक्षणैः ॥ अथ धर्मक्रिया ॥ रेवती द्वितये हस्त त्रित-
ये रोहिणी द्वये ॥ अवत्रयोत्तरा पुष्ये पुनर्वसु ज्येष्ठयोः ॥ ७० ॥
द्वैत्य शुक्रे नु सूर्ये युद्धे ज्येष्ठांशालिनि ॥ लग्ने जीव युते जीवे वलिष्ठे धर्म माचरेत्
॥ ७१ ॥ अथ प्रतिकं केष्टिकं कर्म ॥ पुनर्वसु ह्ये स्वाती व्युत्तरे प्रवरा त्रये ॥ रेवती द्वितये रु-
स्तेऽनु राधा रोहिणी मघे ॥ ७२ ॥ प्रतिकं पौष्टिकं कर्म पुराणा हे कीर्ति तं बुधैः ॥ अथ होमादे
खेदाहुति फलम् ॥ रवौ बुधे शुभौ मंदे चंद्रे भीमे गुराव गो ॥ केतौ च सूर्य भात द्वेयं प्रत्येकं
भद्रं क्रमात् ॥ ७३ ॥ होमाहुतिः खले नेष्टा शुभदा शुभरवे चरे ॥ अथ होमादे वन्तिवा ॥ ७४ ॥

सफलम् ॥ तिथि वार युति स्तौ का वेद भक्ताव प्रोषका ॥ निवासोऽग्ने ज्योतिरूपे १ किञ्च प्राप्तवि-
 नाशदः ॥ ७४ ॥ पाताले द्विकर्मो वेराधन संचय नाशकः ॥ गुरा वेदावशो देवा भूभो वि-
 पुल सोरव्यदः ॥ ७५ ॥ संस्कारेयु विचारोऽस्य न काय्यो नापि वेत्तवे ॥ नित्य भू निलिके का-
 र्येन चाब्दे मुनिभिः स्मृतः ॥ ७६ ॥ अर्क प्रचद्वा दष्ट मेज्ञाच्च वुर्थे मन्द प्रपुत्रा दष्ट मेऽ
 गारकश्च ॥ राहु धर्म जीवतः रवेद सुहो हेमो नाशः पुत्र दारा धना नाम् ॥ अथ मंत्र दीक्षा ॥
 रोहिण्यां अचरैर्मौ जीवं धनो दित भांदिपु ॥ मंत्र दीक्षा शुभे चान्द् ग्रहणेऽप्या गनी दिता
 ॥ ७८ ॥ अथ मंत्र यन्त्रोपाशनादि ॥ ऊष्ठा हस्ताश्विनी कर्ण विशाखा मृग भेहनि ॥ शुभे सू-
 र्य्य युते शूलं मंत्र यंत्र व्रता दिकम् ॥ ७९ ॥ अथ वीर साधनम् ॥ सघाद्भी भरणी मूले मृगेश
 से बुधे घटे ॥ सुखे सुक्तेऽष्टने शुद्धे सिद्धिर्वीरभिचार्योः ॥ ८० ॥ अथौषध करणं तत्सेवनं-
 च ॥ हस्त त्रयेऽनुराधायां मूले पुष्ये प्रव त्रये ॥ मृग भे रेवती युगमे पुनर्व सोर्वि जन्म मे
 ॥ ८१ ॥ क्षीणु सुक्तेज्य सूर्य्यां वासरे सति घावपि ॥ द्विप्रव भावे शुभे लम्ने शुद्धे घृनि

नृति व्यपे ॥ ८२ ॥ भैषज्यं शुभदं प्रोक्तं योगे च पुण्यं दायिनि ॥ अथ रसोत्पादनम् ॥ विष्णुश्वा-
 कृत्तिका मूले धनिष्ठा चिच कोर सुगे ॥ ज्येष्ठायां भाद्र भे सौम्ये वासरे यु रस क्रिया ॥ ८३ ॥
 अथ रस सेवनम् ॥ हस्त त्रयेऽश्विनी पुष्येऽनुराधां त्ये श्रुति त्रये ॥ पुनर्भे मृग शीर्षेऽर्क भौमे
 ज्ये रस भक्षणम् ॥ ८४ ॥ अथ क्त रेगा दे तैलोप सेवनम् ॥ हित्वा श्लेया मघा मूले विष्णु-
 भरणी हयम् ॥ मंदे जे ह्ये स्थिति स्तेले तृतीयादि त्रिके तिथौ ॥ ८५ ॥ अथ रक्त विमोक्षणा विरे-
 क वसनौ ॥ हस्त त्रयेऽश्विनी पुष्ये शत भे रोहिणी ह्ये ॥ अवलो चानुराधा यां ज्येष्ठा यां र-
 क्त मोक्षणम् ॥ ८६ ॥ गुरु भौमा र्क वारिषु कांर्य्य शुभ तिथौ तथा ॥ विरेको वसनं शुक्रे च
 दे चैवोक्त भादिषु ॥ ८७ ॥ अथ तप्त लोह दाहः ॥ शत चित्रा श्विनी मूले विष्णुश्वा कृत्ति-
 कार्क भे ॥ ज्येष्ठा श्लेया कुजेऽर्केऽगक्रूर लोहाग्नि भैषजम् ॥ ८८ ॥ अथ रेगे त्यक्तो नक्ष-
 त्र वशा त्कथं दिन संख्या ॥ अश्विनी कृत्तिका मूले ज्व रार्तौ नव वासरः ॥ रोहिण्या मुत्तरा भा-
 दे पुनर्वसोश्च पुष्य भे ॥ ८९ ॥ ऊफायां वासरः सप्त मघायां विंशति स्तथा ॥ शत भं

भगवती चित्रा ग्रदे चैकादश स्मृताः ॥ ८० ॥ धुनिद्यायां विष्णोस्त्वाद्यो हस्त मपक्ष एवम् ॥
 ॥ मासं मृगशिरायादि कृत्वा दंत्यानुराधयोः ॥ ८१ ॥ श्रीगुन्मुक्तादि ते रुक्ते स्तुखी ह्या
 चतुर्नंतरम् ॥ अथ ऐगोस्तो नैष्ठ फलम् ॥ पूर्वात्रयं तथा ज्ञेयं ज्येष्ठा द्वा स्थिति भेद्वपि ॥
 रोगोत्पत्ति भवेद्यस्य मरणा तस्य निश्चितम् ॥ ८२ ॥ अत्र श्रुतिः ॥ चक्षुःश्रोत्रं कनकोन
 यंत्या तस्मिन् मंत्रे प्रच सुगंध पुष्ट्यैः ॥ वस्त्रा धत्ते गुग्गुलुपुदीप नैद्यता वूल फले प्रच स-
 म्यक् ॥ ८३ ॥ पूजां च कृत्वा मपनाशनं हिजाय दद्यादनुगं शीवाय ॥ अथ रोगोत्पत्ति
 नैष्ठयोगः ॥ अथ ज्येष्ठा मरणी नृले स्वाती पूर्वार्द्धे भे तया ॥ प्रत भे पाप तस्त्वं प्राति पद्म दृश्यो
 दिने ॥ ८४ ॥ चतुर्दश्या तथा कथ्यां पूर्णिमायां चरितुयः ॥ तनो मृत्यु माप्नोति स्वर्ग
 येनापि रक्षितः ॥ ८५ ॥ अथ रोगोत्पत्ति नैष्ठयोगं प्रश्न लग्नात् ॥ मेघे तु भित् दीयस्या त्सु
 न्नायोऽन्नविवर्तिता ॥ वये स्वदेवतोद्भूत दुःस्वप्नो नेत्र रुक् ज्वरः ॥ ८६ ॥ महा माया भवे
 न्नायं दूरे चैवानिला ज्वरः ॥ कर्कटे षण्किनी दोषो मीनं हास्य च रोदनम् ॥ ८७ ॥ सिंहे ज

ले प्रेत दोषो वै मनस्य हिमज्वरः ॥ कन्यायां खेटो दोषो व्यथा क्रोधोऽरुचिर्भवेत् ॥
 २६ ॥ तुलायां क्षेत्रपालस्य चोषस्संतति पीडनम् ॥ नागदोषोऽलिर्भेदा हो दंष्ट्रऽस्मि
 न्बुद्धिनाशनम् ॥ दोषो धनूषि देहो त्यः श्रेयो को दध्यै रुजा ज्वरः ॥ मर्कटो चण्डिका दोषो
 देवभंगो ज्वरोऽग्निनः ॥ २०० ॥ मलिनः प्रेतदोषश्च देहपीडा घटो भवेत् ॥ दोषो मीने-
 तु योपिन्याः ज्वरिथानस विभ्रमः ॥ १ ॥ तस्मिन्नेतन्नचन्द्रे वा दोषं फलमुदाहृतम् ॥ ले-
 नेऽष्टमे व्यये सूर्ये क्षेत्रपालस्य दूषणम् ॥ २ ॥ आकाशे देव्या चन्द्रे तु लगने षष्ठेऽष्ट-
 मे व्यये ॥ द्वादशे दशमे भौमे शकित्या दूषणं मन्त्रम् ॥ ३ ॥ वनदेवी अवा दोषस्तप्तमे ह्य-
 दशे बुधे ॥ पामित्रे द्वादशे जीवे देवदोषो निगद्यते ॥ ४ ॥ जल्ये वासन्ते मे शुक्रे दोषो वा-
 र्देवतो द्वयः ॥ ग्राने चन्द्रे व्यये चास्त्रे दोषस्त्यादात्य वातजः ॥ ५ ॥ वासिन्ने द्वादशे रा-
 हो कुगतिर्ज्ञाति दूषणम् ॥ व्यये धर्मे तृतीये च षष्ठे पापग्रहो यदा ॥ ६ ॥ हनोगरे ज-
 ले ग्रह्ये तस्य दोषः कुलोद्भवः ॥ ग्रानौ जले कुजे ग्रह्ये गरि सूर्ये स्ववर्षजः ॥ ७ ॥ राहो

च विकृतौ न योऽप्राति पूजा द्विजाचर्चनैः ॥ दशमस्ये बुधे मार्गदोषः प्रेत भवो गुरौ ॥ ८ ॥
 शुक्रे दोषस्तु देवोत्थः पापेन्दुः श्राकिनी भवः ॥ स्वर्गोत्रगोत्रजो दोषः परस्त्रे परोद्भवः
 ॥ ९ ॥ शत्रुक्षेत्रे शत्रुदोषो मित्रे स्वजन संभवः ॥ अथख्यादि वारे दोषः ॥ कुदृष्टि संभव
 स्त्वर्थे पितृ दोषो निशा करे ॥ मंगले श्राकिनी दोषो व्योम देवो भवो बुधे ॥ १० ॥ गोत्र
 देवो भवो जीवे जल देव्यास्तु भार्गवे ॥ प्रेत पीडा शनौ सर्व श्रान्त्या श्रान्ति शुभेति तत् ॥
 ११ ॥ साध्या दोषस्तस्मादपहर्षे स्वोच्च वलान्विते ॥ असाध्या विवले नीचे स्थितं शत्रु
 गृहं गति ॥ १२ ॥ साध्या सीम्यगृहेर्दोषा वलिभिः केंद्र संस्थितैः ॥ असाध्याः खेचरैः पार्थैः
 केन्द्रैर्गर्वल श्रालिभिः ॥ १३ ॥ यद्दोषः पूजनं तस्य कुर्वात्तद्दोष श्रान्तये ॥ जल देव्या जले
 व्योम देव्या व्योम्नि जलं त्यजेत् ॥ १४ ॥ श्राकिनी हुंकिनी भूत दोष तच्चरणौ तथा ॥
 तदुद्देशेन हृद्दोष चत्वर धारयेद्दालिम ॥ १५ ॥ गोत्र देव्युद्भवे दोषे कुल देवी प्रपूजयेत्
 ॥ पितृ दोषे तु कर्तव्यो नारायण वले विधिः ॥ १६ ॥ प्रेत ब्राह्मन्नि पिंडारख्यं विस्त्री स्तर्पे

रा मेव च ॥ अथ दीपद्धानायापरः क्रमः ॥ आत्मना मासुरं चैव दूत स्थैव तु रोगिणः ॥ एकी कृत्वा
 त्रिगुणितं नवभिर्भागा माहरेत् ॥ १७ ॥ शेषे षड्द्वे द्द द ४ मू १ भूतः द्विके सप्त तथै प्रवरः
 ॥ अथ मे पितरश्चैव वारणां के ग्रहज्ञा भवेत् ॥ १८ ॥ अथ सर्पदंशे नेष्टम् ॥ विशगरत्वा कृ-
 त्तिका मूले रेवत्या द्रो मया सुच ॥ ऋक्षी प्लेषा मिथाने च सर्व दंष्ट्रो न जीवति ॥ १९ ॥ अ-
 थ रेग विमुक्त स्नानम् ॥ मघा पुनर्वसु स्वाती रोहिणी सूक्तत्रये ॥ अश्लेषायां च रेवत्या भार्ग-
 वे चंद्र वासरे ॥ २० ॥ नक्षत्राया द्रो ग निर्भुक्तः शुभे चंद्रे तथैव च ॥ ऋक्षायां रवि भौमा
 किं वासरे चरलग्नौ ॥ २१ ॥ दुष्ट चंद्रे तथा विष्टां पाता दीर्घयिते हनि ॥ रोग मुक्तौ न
 रः स्नाया दानं कुर्यादनेतरं ॥ २२ ॥ अथ रक्त मोक्षगं स्नानं च ॥ पुष्ट्ये हस्ते तथा श्विन्यां
 अवरो रोहिणी द्वये ॥ चित्रा द्वयेऽनुराधा ख्ये ज्येष्ठायां गुरु वासरे ॥ २३ ॥ भौमेऽर्क रक्त
 मोक्षं स्यात् रोगयुक्ते स्नानमाचरेत् ॥ अथ रोग मुक्तस्य वह्निर्गमनम् ॥ सहारे गमनोक्त ध्वंसति
 धौ शोभने दिने ॥ सहस्रग्रे रोग मुक्तस्य वह्निर्निगमनं शुभम् ॥ २४ ॥ अथ हेलिके त्सव स्ना-

ननु ॥ राजा पुरोषि स चंद्रे प्रोभन क्षे सुभे तिथौ ॥ होलिका नंतरं खाया द्वि मंहर दिने प्रजा
 २६ ॥ अथ मूल क्रिया ॥ ज्येष्ठा पूर्वा भरणी पूर्वा मूला श्लेषा मघा मिथे ॥ जया पूर्ण सुसहार सांकि श्री
 षेदिये ग के ॥ २६ ॥ सत्वेतैः केन्द्र मे स्मार्कैः मल क्रीडा शुभा वह्ना ॥ अथ सर्प ग्रहणम् ॥ भ्राण्या
 र्द्र मघा श्लेषा पूर्वा ज्येष्ठा मूल के ॥ क्रूरे इन्हि केन्द्र मेः पापैः हित्वा काल महि ग्रहः ॥ २७ ॥
 अथ नरायण मधुना हसनम् ॥ हलिका रोहिणी पुष्य स्वाती हस्ते श्रव द्वये ॥ मृगे ईर्क रवि युक्त त प्रस्त
 गोन वाजिनाम् ॥ २८ ॥ अथ मेतुबंधः ॥ शुक्र रा रोहिणी स्वाती मृगे ईर्क मगले गुरे ॥ सेतूना वधन
 प्राप्त सुभे लग्ने सुभे क्षिति ॥ २९ ॥ अथ नवरा कृत्यम् ॥ लवणा रभ कृत्य तु भरणी रोहिणी श्रवे ॥ शने
 वीरे दिवा श्रेष्ठो जन्म राशे धन वर्त्तते ॥ ३० ॥ अथ जिन चार्क ग्राखंड क्रिया ॥ जया श्रुनी मृगे स्वाती पुनर्भ
 प्रवरा नये ॥ जया पूर्ण सुपुके ईजे बुधे हनि चरो द्वये ॥ ३१ ॥ चाब्बिकि जिन पाखरट्ट मण्डली करण शु-
 भम् ॥ अथ शैलू धनत कृत्यम् ॥ चित्रा पूर्वा रोहिणी पुष्य शुक्र श्रवरा नये ॥ प्रभा ह ईर्क च शैलू धनत कृ-
 त्यं समीरितम् ॥ ३२ ॥ अथ तैलिक यंत्र कृत्यम् ॥ धनिष्ठा श्रिकर चित्रा शुक्रा पुष्य भेतया ॥ ज्येष्ठा याच

पुनर्वसो रेवत्या शुभवासरे ॥ ३३ ॥ तैल यंत्रक्रिया शस्ता हित्वा ऋक्ता कुजावाप ॥ ३४ ॥
 अकारकृत्यम् ॥ पुनर्वसुद्वये हस्तत्रयेत्येगोहिणी मृगे ॥ ३५ ॥ अनुराधा अश्विज्येष्ठा संसृज्य
 मोम्य वासरे ॥ तद्याच रोदने प्रोक्ता कुंभ कार क्रिया बुधैः ॥ ३६ ॥ अथ काष्ठाश्लेष कृत्यम् ॥
 हस्त षड्भेऽश्विनी पुष्ये रेवत्या अनुरात्रये ॥ पुनर्भेसहिणी युग्मे सूत्र धारि क्रियोचमा ॥ ३७ ॥
 ॥ अथ खलीकारकृत्यम् ॥ अथत्रयेऽश्विनी पुष्ये मूले हस्त चतुर्थये ॥ कर्त्तिकया पुनर्वसोः शु
 भे लने त्रिया वषि ॥ ३८ ॥ हेमकार क्रिया शस्ता हित्वा बुध शने श्रूरे ॥ अथ चर्मकारकृत्यम्
 ॥ शुक्रार्द्र शनि वीरेषु चर्म कार क्रिया शुभा ॥ वसु पूर्वोद्दि वाश्वि योष्ठा केन्द्व वासरे
 ॥ ३९ ॥ अथ लोहाश्ममणानां कृत्यानि ॥ सानो ज्येष्ठा द्वये मूले चित्रार्द्र भरणी त्रये ॥ मणि लो
 हा प्रसनां कृत्यं पापं चान्नि स्थि रोदये ॥ ४० ॥ अथ नापितक्रिया ॥ ज्येष्ठा हस्त त्रये कर्णत्रि
 तयेऽश्वि मृगेऽन्यभे ॥ पुनर्वसु द्वये हित्वा ऋक्ता षष्ठा यमी तिथिः ॥ ४१ ॥ स शूरे ना
 पितानां चक्षुरादि सकला क्रिया ॥ अथाभीरंजन कृत्यम् ॥ क्षिप्रगत्यां पुनर्भेऽन्ये ज्येष्ठा

हस्ताश्विनी मृगे ॥ पूषा कर्ण त्रये मुख्ये ज्ञेऽर्के ऽजे बलवत्क्रिया ॥ ४१ ॥ अथ चौरक-
 त्यम् ॥ विशारवा कृत्तिका पूर्वा मृलाद्भौ भरणी मघे ॥ अश्लेषा ज्येष्ठयो मंद भौमयो प्रशकु-
 ने बले ॥ ४२ ॥ लग्ने वा दृशसे भौमे चौर्यं सद्रव्यलब्धये ॥ अथ ग्रेत राहः ॥ अत्यक्ष शव
 संस्कारे दिने नैव विशेषयेत् ॥ अश्वे च विनिवृत्तौ चेत्युनः संस्क्रियते मृतः ॥ ४३ ॥ सं-
 शोध्यै वदिनं ग्राह्यं मूर्द्धं संवत्सराद्यदि ॥ ग्रेत काय्यागिण कुर्वीत श्रेष्ठं तत्रोत्तरायणम् ॥
 ४४ ॥ कृत्स्नपक्षश्च तत्रापि वर्जयेत्तु दिनत्रयम् ॥ चतुर्थाष्टमगी चंद्रे द्वादशे च विवर्ज-
 येत् ॥ ४५ ॥ ग्रेत कृत्यं व्यती याते वै धृतौ परिधे तथा ॥ करणे विधि संज्ञे च ग्रहे प्रचरदि-
 ने तथा ॥ ४६ ॥ अयो दृश्या विशेषेण जन्म तारा त्रये तथा ॥ जन्म दृशे कोन विंशति ज-
 न्म तारा त्रयन्त्विदम् ॥ ४७ ॥ नक्षत्रे तु न कुर्वीत यस्मिन् जातो भवेन्नरः ॥ न प्रोष्ठपद-
 योः कार्यं तथा ग्नेये च भारत ॥ ४८ ॥ द्दारुणेषु च सर्वेषु प्रत्यारिं च विवर्जयेत् ॥
 भरण्याद्भौ मघा श्लेषा मूलं त्रिचरणानीच ॥ ४९ ॥ ग्रेत कृत्येषु दुष्टानि धनिषाद्यं च पंचक-

म् ॥ फाल्गुणी हितवे रोहिण्य नृगथा पुनर्वसु ॥ ३० ॥ आषाढे द्वे विशाखात्र आनि
 हि चरणानि च ॥ एतानि किंचिदुद्यानि संभवे सति वर्जयेत् ॥ ३१ ॥ चतुर्दशी तिथि-
 नंश भद्रा सुक्कार वासरे ॥ सिते ज्येष्ठो रस्तु मित द्युप्रिभ विषमा द्विभम् ॥ ३२ ॥ प्र-
 लो पक्षच मत्तज्य पुनर्वसु सुजम्भम् ॥ वसुन्तरादुक्तः पच नक्षत्रे बु द्विजन्मसु ॥ ३३
 ॥ पौल्वे वल्ल क्षयो अथ वदना कुल नाशनम् ॥ गुरु मार्गवि यो र्मध्य पोष मास मलि-
 न्मुचि ॥ ३४ ॥ नातीतः पितु मे धस्त्या इ या गोदावरी विना ॥ अथ लम्नादि तिथ्य तानाव-
 लावले चानार्थ गुणः ॥ सहस्र गुण सुखग्नं च दृश्यते गुणो वली ॥ नारायणं गुणो योगो हा-
 त्रि शतुल भागभवेत् ॥ ३५ ॥ तदहं करणं विद्या हार स्वष्ट गुणः स्मृतः ॥ दिवे हि कुल
 संभूत सरस कुन संगृहे ॥ शिरो मणौ समानैवैकादशीय प्रभा शुभा ॥ ३६ ॥ द्विनि श्री
 संग्रह शिरो मणौ सुहृत्त कथनं नामैकादशी प्रभा ॥ ३७ ॥ अथ सकृति प्रकरणम् ॥ ए-
 काग्रनिर्नच बाहुल बोधो दीर्घ नाशिका ॥ षष्ठियोजन विस्तीर्ण संक्राति स्तु स्त्रिया कृतिः

॥ १ ॥ संक्रान्ति भौम वारे स्याद्वा राग्या भरणी मघे ॥ पूर्वात्रये च नक्षत्रे शुद्धराणां सुखदा
 सृष्टता ॥ २ ॥ सोम वारेऽभिजि तुष्येऽश्विनी हस्त्येयु भास्वतः ॥ संक्रान्तिः कथिता ध्या
 क्षी विष्णोः सौख्य प्रदायिनी ॥ ३ ॥ अथ एतद्दिनि भे स्वातो पुनर्वसोः कुजे हनि ॥ या भवेत्स -
 तु चौराणां सौख्य दात्री महोदरी ॥ ४ ॥ बुधा देया च रेवत्या मृगे चित्रा सुराधयोः ॥ सा
 तु मंदारकिनी नास्मा नृपाणां सौख्य वर्द्धिनी ॥ ५ ॥ बृहस्पती यदा जाता रोहितायां चोत्ते -
 रात्रये ॥ तदा मंदारिभा देया विप्राणां हित कारिणी ॥ ६ ॥ भृगो वारे विप्रास्वायां कुं
 निकायां च या भवेत् ॥ सा तु मित्रोति विख्याता परस्मा प्रीति दायिनी ॥ ७ ॥ शनी मूले
 तथा र्दयाम प्रलेखा ज्येष्ठयो रपि ॥ या भवेद्वासा सी सा स्यात् अंत्य जानां सुखा वहा
 ॥ ८ ॥ आपःऽन्दित्र्यं शुक्लं राज्ञो द्वितीये हति वै हि जान ॥ तृतीयैवाश्वयुजान्मृत्यु संक्रा
 तिः शुद्धं वर्ण कान् ॥ ९ ॥ प्रति याम क्रमादंगे विप्राचान् रास सानन दान् ॥ पशु पा
 ल गणं हति प्रभाते सर्वं लिङ्गिनः ॥ १० ॥ अथ संक्रान्तेषु ॥ वृश्चिके च व भे सिंहे कुम्भे

विष्णुपदं स्मृता ॥ षड् श्रूयति मुखं मीने कन्या मिथुन धनिषु ॥ ११ ॥ प्रीतिं यास्या यना क
 र्क मकरे चैतनरायणा ॥ विषुवाख्या नुला भवे संक्रांति स्समुदाहृता ॥ १२ ॥ अथ क्रूर सी-
 म्य परत्वेन फलमाह ॥ रवि रविज भौम वारे संक्रांतौ दिन कस्य तन्मासि ॥ पित्त कफानिल
 जामयनर पत्ति कलह स्त्व वृष्टि श्च ॥ १३ ॥ बुध गुरु सित चंद्रा हे सति संक्राता व-
 नांमय न्दराणां ॥ क्षिति पति निकर क्षेमं सस्य वि वृद्धि विधिमिराणां पीडा ॥ १४ ॥ यस्य
 जन्म क्षमा साद्य रवि संक्रमणं भवेत् ॥ तन्मासाभ्यंतरे तस्य रोग क्षेप्रं धन क्षयाः ॥
 १५ ॥ अज कन्या भयं कर्कि रा संक्रांतौ यदि न चै हर्षम् ॥ आसय मरणं भू भृद्युद्धमन
 र्ध्यं त्व वृष्टिश्च ॥ १६ ॥ वृष वृश्चिक तुला मकरे वृष्टिस्त्या त्संक्रम विप्रये ॥ विस्फोटा-
 मय तत्कार पीडा वृष्टिः कुशानु भयम् ॥ १७ ॥ अथापि स संक्रमे श्रंतिः ॥ तगर झरो रुहः
 पत्रै रजनी सिद्धार्थं लोघ संयुक्तैः ॥ त्मानं जन्म नृप्से रवि संक्रांतौ नृणां शुभदम् ॥ १८
 ॥ अथ पुण्य समयः ॥ प्रागृद्ध दशं पूर्वतो षड् वनिं सहस्रयः पूर्वत स्त्रिंश त्योड् दश पूर्वतो ऽथ

पततेः पूर्वाः परास्त्यदर्शः ॥ पूर्वाः षोडश चोत्तरा ऋतु भुवः पञ्चत्वा त्ववेत्ताः पुनः पूर्वाः षोड-
 श चोत्तराः पुनरथो पुराणास्तु मेयादितः ॥ १८ ॥ अस्थार्थः ॥ नेत्रे प्रागृद्धं च दृष्ट्वा घटिकाः
 पुराय कालः १ द्वये पूर्वाः षोडश ३ त्रिंशुने पराः षोडश ३ कर्के पूर्वार्द्धिन्नात् ४ सि-
 हे पूर्वाः षोडश ५ कन्यायां पराः षोडश ६ तुलायां प्रगृह्य दृष्ट्वा ७ वृश्चिके पूर्वाः षोड-
 श ८ धनुषि पराः षोडश ८ मकरे चत्वारिंशत्परः १० कुम्भे पूर्वाः षोडश ११ मीने पराः
 षोडश १२ पुरायाः षोडश नाड्यस्तु पराः पूर्वास्तु संक्रमात् ॥ त्रिंशत्कर्कटके पूर्वाश्चत्वारिं-
 शत्परमग्रे ॥ ३० ॥ मध्याह्नादुत्तरपुराय त्राह्नि श्री यास्तु संक्रमे ॥ निशीथ्या दृष्ट्वा
 श्लेष्टं गृह्यान्हात्वा क्रमैर्हान्ति ॥ ३१ ॥ चेत्ति शीथे द्वादशपुराय परं पूर्वं विभा गयोः ॥ अथा-
 यनयोर्विशेषः ॥ सूर्यास्तमन संध्याया यदि सौम्या यनं भवेत् ॥ ततो दयादहः पुराय पूर्वार्द्धि-
 पूर्वतो यदि ॥ ३२ ॥ अथ संध्या लक्षणम् ॥ अहर्नि स्तमना तस्या घटिका त्रय संमिता ॥
 तथैवाहो दयान्त्रात घटिका त्रय संमिता ॥ ३३ ॥ अस्तादृद्धं च मकरे रात्रौ च संक्रमं रवेः ॥

संक्रान्ति
१७५

ततोत्तरदिने पुण्यं मध्याह्नात्प्राक् प्रकीर्तितम् ॥ २४ ॥ यदा सूर्यो दयात्सर्वः कर्क संक्रम
रो रविः ॥ तदा पूर्व दिने पुण्यं तद्वर्द्धनत्परे हनि ॥ २५ ॥ सांते विसुपये यामे मध्येतु विपुवा
भिधे ॥ प्रवृत्तीतिमुखे सोम्यऽग्ने पुण्ये वदुत्तरम् ॥ २६ ॥ अथ रात्रौ स्नानं न निषेधऽवि विशेषः
॥ रात्रौ स्नानं न कुर्वीत दानं चैव विशेषतः ॥ नेमिचिकितु कुर्वीत स्नानं दानं च रात्रिषु ॥ २७
॥ सुतु जनने संक्राता वुपु रागे सूर्यं चंद्रं को नित्यम् ॥ एवा वपि कर्त्तव्यं स्नानं दानं विशेषे
ष तो न्दृष्टम् ॥ २८ ॥ अथ संक्रान्ति मुहूर्त्तं लक्षणं च ॥ पुनर्वसु विरागत्वाच्च राहिली नोत्तरा ह
वतः ॥ सुभिक्षं तत्र संक्रातो वाण वेद मुहूर्त्त काः ॥ २९ ॥ भरणया द्वां शताश्लेषा स्वा
ती ज्येष्ठा जघन्य भं ॥ संक्रातो तत्र दुर्भिक्षं मुहूर्त्तं वाण भूमिताः ॥ ३० ॥ शेष भानि समा
ख्यानि संक्राता वई साम्यता ॥ मुहूर्त्तं लिङ्गं ति प्रोक्ता फलं चंद्रो दयेऽपि तत् ॥ ३१ ॥
अथ कर्के मेष विशेष पकाः ॥ अर्कादि चारे संक्रातो कर्कः स्यान् विशेषो
पकाः ॥ विशेषे न स्वा गजाः सूर्याः धृत्येऽश्वो च शसायकाः ॥ ३२ ॥

| अथ कर्के मेष विशेष पकाः | | | | |
|-------------------------|----|----|----|----|
| सु | च | मं | उ | वृ |
| १० | ३६ | २६ | १८ | १८ |

नैट सुज्ञो रविनीगे तै निले च चतुः पदे ॥ किं सुधे कोल वे तिष्ठन् शकुनौ संक्रमित प्रशु-
 भः ॥ ३३ ॥ गरादि पंचके मध्य प्रचोप विद्या ऽर्घ्यवधरो ॥ अथ संक्रांते वर्हिनानि ॥ सिंहे
 व्याघ्रो वराहश्च खरे भ महियो हयः ॥ ध्याजोगीः कुक्कुटो बाहः संक्रांतेः कस्य प्रो व-
 वात् ॥ ३४ ॥ अथ वस्त्राणि ॥ श्वेतं पीतं हरित्याहुं रत्नं प्रयासं च मेचकम् ॥ चित्रं कंवल दिङ्मे-
 घतन्निभं क्रान्तो ऽदरम् ॥ ३५ ॥ अथ शस्त्राणि ॥ भुशुंडी च गदा खड्गो दंडः को दंडो नो-
 मेरे ॥ कुंतः पाशो ऽकुशो ऽरुच वारा श्रैवायुधं क्रमात् ॥ ३६ ॥ अथ अस्त्राणि ॥ अन्नं-
 च पायसं भैक्षं पक्वान्नं च पयो वधि ॥ चित्रान्नं गुड मध्याज्यं शर्करां मक्षरां क्रमात्
 ॥ ३७ ॥ अथ विलिपनानि ॥ कर्तूरी कुंकुमं चैव चंदनं ससु रोचना ॥ यावको तु सदे वापि ह-
 रिष्मं जनको ऽ गुरुः ॥ कर्पूरं प्रचेति विज्ञेयं संक्रांते श्व विलेपनम् ॥ ३८ ॥ अथ जातयः
 ॥ देवो भूतो रगः पक्षी पशुरेणो दिजः क्रमात् ॥ क्षत्रियो वैश्य सूसो च संकरे जातय-
 स्त्विमाः ॥ ३९ ॥ अथ पुण्याणि ॥ पुन्माग जाति वकुलं केतकी विल्व मर्कजम् ॥ इर्वा जाम- ११०

स्त्रिका पुष्टा पाट लाच जया क्रमात् ॥ ४० ॥ अथाभरणानि ॥ नूपुरं किंकिरी मुक्ता विद्रुमं के-
 कणं मणिम् ॥ गुञ्जा चण्डिका नीलं वज्र भूया गरुलकम् ॥ ४१ ॥ अथमाला ॥ प्रवाल
 मुक्ता रजतं मणिस्तथा गो मेद नीलं च सुवर्णं शीसम् ॥ काष्ठं तथा ताम्रकं लोहकं-
 च विभर्ति सच्चै गलं के सुशोभितम् ॥ ४२ ॥ अथवर्णसि ॥ वाला कुमारिकारंढा मध्या
 प्रौढा प्रगल्भिका ॥ वृद्धा वंध्याति वंध्या स्यादसूता योगिनी वयः ॥ ४३ ॥ योगिनी स्थि-
 त कायाग ससंक्रांति रागमो मतः ॥ चंद्र स्थदिष्टि दृष्टिस्त्यात् गमनं वार दिक् स्मृतम्
 ॥ ४४ ॥ अथ दृष्टिः ॥ चंद्रे गुरो दृष्टि विदिक कृशनी सूर्ये शिते नैर् कृति कांशांगो दृक् ॥ धा-
 त्री सुते दृक् वने निरुक्ता बुधे शनी रुद्र दिष्टी सूर्ये भवेत् ॥ ४५ ॥ अथ गमनम् ॥ मंदं चं-
 द्रे गगस्ती म्ये बुधे भीमे च वारुणे ॥ रवौ शुक्रे गमो यास्ये गुरो प्रागगमनं स्मृतम् ॥ ४६ ॥
 ॥ मुखं संक्रांतेः ॥ रवौ संक्रमणे पूर्वं मुखं जीवेतु चोत्तरे ॥ प्रत्यङ् मुखं शनौ सोमे शोवेद
 क्षिणतो मुखम् ॥ ४७ ॥ तवे पूर्व मुखं प्रोक्तं वालवेयम दिद्रुमुखम् । कोलवे पश्चिममु-

नाड्यो राम शुभा रावे ३३ एष विधोः षट् दोः पलैर्युक् द्वयम् ३२६ भौमस्याधिपले
 ११३ र्युतानव ३४ विदोयुक्ता पलेस्स्वाग्निभिः षट् नाड्यो ६२० ५ एगजा ८८ शुभे रथम्
 गोर्नन्दाः पलैरस्थभिः ४८ पुरयाः स्युः खन्धाः १६० शनैरुभयतो रांस्तस्थयोः सं-
 क्रमे ॥ ५६ ॥ अथाधिमातस्य मत्तो ॥ अ संक्रांति रमां तोयो मासश्चेत्सोऽधि मासकः ॥
 परमासा द्वयोर्द्वेयः प्रायश्चित्तेनादि सप्त सु ॥ ५७ ॥ द्विसंक्रांतौ क्षयाख्यस्यात्कदा
 चित्कार्ति कत्रये ॥ युग्माख्यस्तु तच्चा के क्षधि मास द्वयं भवेत् ॥ ५८ ॥ मलमास इ-
 ति द्वे योग हितस्सर्व कर्म सु ॥ अथ ताणदि वलादन्येषां वलम् ॥ तां रायां वलतश्चंद्रः वलं
 सूर्यस्य चंद्रतः ॥ सूर्यतस्सर्व खेदानां वलं द्वयं शुभा शुभम् ॥ ५९ ॥ द्विवेदि कुल स-
 मूत सरयू छत संगृहे ॥ धिरो मणौ समक्षे षा द्वादशीयं प्रभा शुभा ॥ ६० ॥ - इति श्री
 संग्रह धिरो मणौ संक्रांति कथनं नाम द्वादशी प्रभा ॥ १३ ॥ अथ गोचरप्रकरणम् ॥

गयोः इत्येकं स्थानफलानि आदौ रवेः ॥ ममो हानिर्दनेरो गोदेन्यं सीत्यं शु

॥ पापं वैरं सुखं हानीं राहुं केत्वोः फले त्विदम् ॥ २० ॥ अथ शुभ फलदा ग्रहाः
 ॥ शुभा एका दशो सर्वे त्रिषष्ट दश गो रविः ॥ यत् त्रिंशत्स्यो धरा पुत्रो राहुं केतु शनैश्चराः
 ॥ २१ ॥ दश सप्त त्रिषष्टाद्य संस्थिताश्चंद्रमाः शुभः ॥ शुक्ल पक्षे तु नवमो द्वितीयः
 पंचमोऽपि च ॥ २२ ॥ दिगष्टाश्च चतुस्संस्थो गोचरे शुभदो बुधः ॥ बृहस्पति-
 श्शुभः प्रोक्तो हि पंच नव सप्त राः ॥ २३ ॥ एक हि त्रि चतुः पंच नवाष्ट व्याय गो भृगुः ॥
 अथ ग्रहाणां क्रम वेधः तत्रादौ रविः ॥ यष्टं द्वादश गो विध्ये दशमं तूय्यं गो गृहं ॥ तृतीय नरमे-
 सूर्यं लाभस्थं पंचम स्तथा ॥ २४ ॥ द्वितीय स्सप्तमश्चंद्रः पंचमं पंचम स्तथा ॥ यष्टं द्वा-
 दश गो विध्ये दष्ट गो लाभ संस्थितम् ॥ २५ ॥ अथ भोग एनि केतुनाम् ॥ तृतीयं द्वादशं व-
 द्य नवमोऽथ य लाभ गम् ॥ विध्ये तं च सगो भोगं राहुं केतु शनैश्चरम् ॥ २६ ॥ अथ
 द्वितीयं पंचमं तुय्यं तृतीयो नवमो रिगम् ॥ आद्येऽष्टमं बुधं स्वस्थ मष्टमोति
 मन्नाय गम् ॥ २७ ॥ अथ श्रुतेः ॥ द्वितीयं गुरु रंत्यस्थः पंचमं तुय्यं गोऽष्टमम् ॥ लाभ

१२६
 गं सप्तमं त्रि स्थो नवमं दशमो ग्रहः ॥ १८ ॥ अष्टम्यो ॥ आर्गवं चाद्य मष्टस्यः त्रिगमा
 द्योरिगोत्युगः ॥ खस्थ सूर्य्यं च लाभस्यो नवमं त्रिगमायगम् ॥ १९ ॥ द्वितीयं सप्तमः
 खेदो नवमः पंचमं तथा ॥ पंचगं चाष्टगं विद्वेत्त्रमवेध उदाहृतः ॥ २० ॥ अविद्वेषु
 भदः खेदो नवेधस्तात पुत्रयोः ॥ निधं स्थान गतो पीछो विद्वत्त्वे त्सविलो भूतः ॥ २१

| चंद्रस्य | | | | | | | | | | बुधस्य | | | |
|-------------|----|----|----|---|---|---|----|----|---|-------------|---|------|----|
| ६ | १० | ३ | ११ | ३ | ७ | १ | ६ | ११ | ३ | ११ | ६ | शुभा | |
| १२ | ४ | ६ | ५ | ६ | २ | ५ | ११ | ८ | ४ | १ | ५ | १० | ११ |
| गनि वर्ज्यं | | | | | | | | | | शुभ वर्ज्यं | | | |
| जीवस्य | | | | | | | | | | | | | |
| ५ | २ | ६ | ११ | ७ | | १ | २ | ४ | ५ | ११ | ३ | २३ | २३ |
| ४ | १२ | १० | ८ | ३ | | ८ | ७ | १० | ६ | ११ | ६ | ११ | ५ |

अथ त्रय विभागो जन्म त्री गृह
 तो वा वेधंगुणाना ॥ त्रिमादि
 विंध्यो यो मध्ये खेत स्त्री के
 धको यवेत् ॥ अन्वय ज-

न्म राश्रीस्तु विद्म्यो वेध्य वेधको ॥ २२ ॥ अथाष्टवर्गानि सारणा ग्रह फलम् ॥ स्वाष्टवर्गे द्विधा
 खेतोऽधिकारे खग राशिरागः ॥ तदा गोचरदृष्टेऽपि श्रेष्ठो नाल्य करे खगः ॥ २३ ॥ अ-
 थग्रहाणां निःफलत्वम् ॥ सत्फलो वीक्षितः पापैः सोम्ये दृष्टोऽप्य सत्फलम् ॥ ता बुभौ नि-
 फलो द्वयो गोचरे जात केऽपि च ॥ २४ ॥ सत् क्षेत्र गतः खेतो नीच गोप्य स्तमोऽपि-
 वा ॥ निःफलस्तोऽपि विद्म्यः शत्रु दृष्टोऽपि ता दृष्टः ॥ २५ ॥ अथ ग्रहाणां राशिभोग
 मानम् ॥ मासं शुक्रो बुधः सूर्यः सार्द्धं मासं महीसुतः ॥ गुरु खं तम स्तार्द्धं शनि स्तार्द्धो
 बृहस्पति ॥ २६ ॥ अथ एने विचारः ॥ ऋक्षे यत्र शानि स्थितो भवति तद्वक्त्रे सच योज-
 येत् वाहो दक्षिणे के ततो भ चतुरः षट्पादयोर्विन्ध्यसेत् ॥ पंचो रस्य षट्पादयोः
 भान्यथ करे वामेऽथ शीर्षे त्रयं युग्मे लोचनयोर्द्वयं गुरु गतं जन्मार्द्धं शोकं फलम् ॥ २७ ॥
 मुखे हानिर्जयो वाहो अम श्चां श्रौ धनं हृदि ॥ कुलं वा मस्तके राज्यं नेत्रे सौख्यं म-
 तिर्गुदे ॥ २८ ॥ मुराच्चरति गुह्ये च गुह्या स्याति लोचनम् ॥ लोचनान्मस्तकं याति म-

स्त का ह्यम ह स्तकम् ॥ ३८ ॥ वास हस्तः ३९, हस्तं हस्त्या चरण ह्यम् ॥ पङ्क्त्या दक्षि-
 ण हस्तं च शानि चक्रे विचारयेत् ॥ ३० ॥ एक नासोत्तरं वर्षं दिनानां दशकं तथा ॥
 प्रत्येक मृक्षमात्रव्य शनिर्गच्छति सर्वतः ॥ ३१ ॥ सार्द्धं वर्षं द्वयं राशि मेकं सकल
 संमतम् ॥ त्रिंशद्वर्षाण्यभि व्याप्य राशि चक्रे भवेच्छनिः ॥ ३२ ॥ एवं सौरे गतिं ज्ञा-
 त्वा फलं ब्रूयाद्विचक्षणाः ॥ अभीष्ट फललाभाय विनाशाय शुभस्य च ॥ ३३ ॥
 शने हि फलं भोक्तुं स्वर राखादि संमतम् ॥ रिक्क १२ रूप १ धन २ भेषु भा स्करिः सं-
 स्थितो भवति यस्य जन्म भात् ॥ लोचनो दरपदेयु संस्थितिः कर्णो ते रविज लोक जै-
 र्जनैः ॥ ३४ ॥ स्थान मेषु पुन रुच्यते बुधैः सार्द्धं मूधरसमा सुभा स्करिः ॥ तत्र चक्र
 मन वद्य मुच्यते मानुजा कतिपदं मुनीरितम् ॥ ३५ ॥ ज्ञानने दिन शतं प्रकीर्तितम्
 १०० हानि रत्र बहुधा प्रजायतेः दक्षिणो तु भुज के चतु र्शतं वासराणि विजयोरणां
 गने ॥ ३६ ॥ षट् शतं चरणा युग्म के पुनः अतिरत्र सततं दिशं तरे ॥ जाठरेषु शर

५०० संग्रह्य के भवेत्स्वाभएष धन धान्य यो स्सदा ॥ ३७ ॥ दक्षिणो हरे भुजे चतुःश-
 तं दुःखं शिरसि च्छत त्रयम् ॥ राज्यं भवति नेत्रयो र्वयोः द्विः शतं च सुखं दं
 प्रकीर्तितम् ॥ ३८ ॥ ग्रह्य गंतं दनु तच्छत द्वयं दुःखं मुनि वरैः प्रकीर्तितम् ॥ चक्र-
 मे तद व लोका कीर्तयेत्साई भूषणं शतोद्भवं फलम् ॥ ३९ ॥ अथ चरणादि विचारः ॥ ज-
 न्मां १ ग द्भुजे ११ पु सुवर्ण पादं द्वि २ पंच नै रज तस्य पादम् ॥ त्रिं सप्त दिक् ताव यं
 वंदति वेदा य सां किं छि हलौह पादम् ॥ ४० ॥ लोहे विन विना शस्यात् सर्व सौख्यं च को-
 चने ॥ ताम्बे च सम ताद्रेया सोभाग्यं राजते भवेत् ॥ ४१ ॥ अथ शनिवाहनम् ॥ यामले-
 मन्द क्षौ च्छ शि १ वेद ४ तर्क ६ विशिखा ११ क्य ४ ग्न्य ३ य ८ पक्ष २ क्रमाच्छा गो १
 ज्वो २ भवनो गजोहि माहियोऽध्वो च्यो वायसः ॥ हानिं वैर भयं भ्रमो धन च्यो सा
 नाल्यको भूयतेः सौख्यं रोग च्यो नरस्य वसतो मंदस्य वाह्य च्यमी ॥ ४२ ॥ सपा-
 दद्विदिनं चंद्रः प्रायः खेट भ भोग कः ॥ अथ यन्त्राणां फल समयः ॥ राशे राशे कुजः स्त-

यो मध्ये युक्त दह स्पती ॥ अंत्ये चंदः शनिर्गोहे फलदः सर्वदा बुधः ॥ ४४ ॥ त-
 र्थाः पंच दिना त्वं शीत रश्मिर्बही जयात् ॥ भौमोषलाह का दर्विक्रमुक्त दोस्त
 वा सरात् ॥ ४५ ॥ गुरुर्मास ह्यथ श्वैव शरमा साचु शनैश्चरः ॥ राहुर्मासत्रया दस्य राशे
 स्तु फलदः स्मृतः ॥ ४६ ॥ राशिनक्षत्र संधि स्याः फलदा भव मे व्ययोः ॥ राशिनक्षत्रयो-
 रेशे का दश पद त्रिगः ॥ ४७ ॥ अथ जन्म राशितो गुरुण फलम् ॥ गुरुण जन्म भास्त्रे छुं-
 त्याष्टतुर्थं स्वजन्म क्षेत्तु मृति भवेत् ॥ जपात् सुवर्णं गो दानात् श्रान्ते श्वादर्शनाच्छुभ-
 म् ॥ ४८ ॥ अथ विषमस्ये ग्रहे विकर्षाणि ॥ आखेटः काल चर्यात्त दूर देश गन्ते नृपः ॥ दुष्टवा-
 जि गजा रोहे गमनं पर मन्दिरे ॥ ४९ ॥ न कार्यं साहसं कर्म विषमे युग्रहे युत्त ॥ अथ
 यशशान्दानानि ॥ ये खेटाः खेचरे दुष्टाः दशगयां त्वाष्टवर्गके ॥ जप दानादिनाते स्युः प्रश-
 स्ता स्नान तोऽपि वा ॥ ५१ ॥ साशिवं धेनु गोधूमहेमं ताम्रं गुह्यं बुजम् ॥ चंदनं चांवरं

रक्तं देयं भास्वान्मुदे चक्षुः ॥ ५२ ॥ सुक्ता रोष्यं सिंतं वस्त्रं शंखं वंशं स्थितं तुलान् ॥ कर्पू-
 रं शो युगं दद्याद् न कुंभं विधो मुदे ॥ ५३ ॥ प्रवालं हेम गोधूमान् रक्तं वासोऽरुणं ह्ययम् ॥
 ५४ ॥ करवीरं गुडं ताम्रं मसृण्मौम तुष्टये ॥ ५५ ॥ कांस्यं नीलां वरं हेम गज दंतं गरुत्मकं
 ॥ मुद्गाज्यं सर्वपुष्पं च दद्यात्प्रीत्यै बुधस्य च ॥ ५६ ॥ हरिद्राक्षः क्षितो हेम पीतं धान्यं
 तथा वस्त्रम् ॥ लवणं पुष्पं रणं प्रच देयो वाचस्यते मुदे ॥ ५७ ॥ धनुश्चित्रा वरं चाल्यस्त्रे
 ताप्यो हेम तंदुलाः ॥ सुगंधं रजतं वस्त्रं देयं सुधीतये भृगोः ॥ ५८ ॥ तिला स्तैलं तथा
 आखानिन्द्रनीला सिता वस्त्रम् ॥ कृष्णं गां महिषी लोहं स्वर्णं च दद्याच्छ ने र्मुदे ॥ ५९ ॥
 गोमेदं तुरगं खड्गं नीलं वस्त्रं च कांचनम् ॥ स्वर्णं तैलं तिलान् च दद्यात्तैलं हि केय नुदे नृपः
 ॥ ६० ॥ कस्तूरी कमलं वस्त्रं च्छागो वैदूर्यं दांचने ॥ तिला स्तैलं महीपालैः प्रदेयं के-
 नु तुष्टये ॥ ६१ ॥ अथ ग्रह दुःख हरमौषधी स्नानम् ॥ एलायश्चिमधू सीरताञ्च पुष्पाञ्च कुंकु-
 मैः ॥ स्नानं मनः प्रियं ला देव दारु मारिचि तुष्टये ॥ ६२ ॥ पंच गव्यं भवानां बु शंख स्कन्धि

क शुक्तिभिः ॥ कुमुदे स्मिंश्चितेः स्नानं चंद्र वीषा पनुत्तये ॥ ६२ ॥ हिं ग्वलू विल्व फलि
 नी मांसी च कुल चंदनेः ॥ रक्त पुष्पै र्वला मिश्रैः स्नानं भौमार्ति नृत्तये ॥ ६३ ॥ गोमयाक्ष
 त मुक्ताभी रोचना मधु हेमभिः ॥ फल मूलैर्युतं स्नानं बोधनार्ति विनाशनम् ॥ ६४ ॥
 ॥ मालती कुशुम प्रवेत सर्प पक्षी च संयुतैः ॥ पल्लवै र्भदयं त्याश्च स्नायाद्गुरु मुदे नृपः ॥
 ६५ ॥ सल्ला मन शिशला मूलं फलं कुंकुम वारिभिः ॥ स्नानं शुक्र कृतां वाधां नाशये-
 त्येव भू सुजाम् ॥ ६६ ॥ वला लाजा ज्वनैः कल तिलै र्लोध घनै रपि ॥ अत पुष्या न्वितै-
 रस्नायां नंद वाधा पनुत्तये ॥ ६७ ॥ अथ ग्रहाणां दोष शान्तये सामान्यौषधी स्नानम् ॥ लाजा कुष्ठ व-
 ला मिश्र प्रिय गुचन सर्वत्रैः ॥ देव दारु हरि चंभिः पुंखा लोघ्रेण संयुतैः ॥ ६८ ॥ वारि
 भिः स्नान मुक्तं हि प्रोक्तं दान पुरस्सरम् ॥ एतस्मात्सात्यत स्सर्वं ग्रह पीडो पशान्तये ॥
 ६९ ॥ अथ यह प्रीतये रत्नादि धारणम् ॥ शुक्रे न्दो रत्नतं चैव विद्रुमं भानु भौमयोः ॥ कस्य हेम
 शनं लोहिं गुरो र्मृक्ता फलं नरः ॥ ७० ॥ प्रीतये धारयेत्तं गेलाजा वर्त्तन्त तो न्ययोः ॥ अथ न-

व गृहमुद्रिका ॥ सागितंय तरणोर्मध्ये प्राच्यां वज्रं भृगो विंधोः ॥ अग्नेयां मोक्तिकं यास्यं प्र-
 वालं संगलस्य च ॥ ७१ ॥ गो मेदं राससो राहोः पञ्चिंस नीलकं प्रनेः ॥ वायो वैदूर्यं
 कं केतौ उदीच्यां पुष्यकं गुरोः ॥ ७२ ॥ गारुत्मकं तथै शान्या सोम पुत्रस्य तुष्टये ॥
 मुद्रिकायां नैर् इार्य्यं मथवा एथ गेवहि ॥ ७३ ॥ अथ गृह पीठोपशमनोपायः ॥ पालनाहु-
 र् वाक्यानां देव ब्राह्मणा वंदनात् ॥ नो कुर्वीत गृहाः पीडां दुष्टस्थान स्थिता अपि ॥
 ७४ ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्तेषा प्रभेयंच त्रयोदशी
 ॥ ७५ ॥ इति श्री संग्रह शिरो मणौ गोचर कथनं नाम त्रयोदशी प्रश्ना ॥ १३ ॥ अथ
 संस्कार प्रकरणम् ॥ अथ संस्कार प्रकरणे छाक्षे लो दर्शनम् ॥ वैश्वदेवे फाल्गुन्ये माघे मार्गश्रैष्ठ्ये
 वषाश्रद्धिने ॥ पक्षे शुक्ले शुभाहेच साहि जग्रे तथा दिवा ॥ १ ॥ श्रुति त्रयेऽनुष्ठानायां रेवती
 द्विजये मृगे ॥ तस्मिन् त्रये च रोहिण्या पुष्य मे चोत्तरासुच ॥ २ ॥ सितवस्त्रे शुभं स्त्रीणां
 प्रथमं ऋतु दर्शनम् ॥ मध्य ज्येष्ठे पुनर्वसो मूले चान्यत्र निवितः ॥ ३ ॥ अष्टम्यां च ॥

दृश्ये कृत्स्ने ऋक्ता दर्शे ऽथ संक्रमे ॥ भद्रा निद्रा व्यतीपाते गह्वरो रुजि वैधृती ॥४॥ पर
 १४ लानु गृहं संध्या कुदेशे कृत्स्न वाससि ॥ प्रायजो वर्धनिं नेष्टं श्रुत्या तु शुभदं भवेत् ॥५॥
 प्रागुक्ता विलयं यांति रत्नो दर्शनं संभवाः ॥ सर्वे रोषालु सल्लभे स्तिष्ठेज्य युत वीक्षिते
 ॥ ६ ॥ अथ ऋगुक्ता लानम् ॥ पुनर्वसु संध्या चित्रा ज्येष्ठा पुष्या भिधेयुच ॥ स्वादा दतु मती
 नारी शुभे वारे शुभे तिथौ ॥७॥ रोहिणी हितये स्वातो हस्ते वैरेवती द्वये ॥ लानानु सुवती ग-
 र्भं विधत्ते शीघ्र मे वहि ॥ ८ ॥ अथ गर्भा धानम् ॥ जन्मर्क्षं स्मरणी मूलं नष्टं पुं रेवती मघां ॥
 पूर्वार्हं च व्यतीपातं वैधृतिं परिघाट्टकम् ॥ पित्रो भ्रातृ द्विनं संध्या दिवा बह्वी च पर्वच ॥
 आर्तं वाह चतुष्कं च विष्टी ऋक्ता र्कं संक्रमान् ॥ १० ॥ तथैव क्रूर वारंश्च गर्भा धाने विव-
 र्जयेत् ॥ स्वातो हस्ते ऽनुएधायां रोहिण्यां अवरा त्रये ॥ ११ ॥ अतरे मृग शीर्षे च शुभा
 हे शुभ ग्रशिषु ॥ गर्भा धानं प्रशस्तं स्यात् चंद्रे शस्ते पुमांसके ॥ १२ ॥ कारिकायाम् ॥ पुन
 क्षत्राणि चैतानि तिष्ठो हस्त पुनर्वसू ॥ अभिजिष्योष्ट या चैव ज्ञानुराधा भिष्युक् नघा ॥ १३ ॥

१३ ॥ केन्द्र कोण स्थिते सौम्ये पापेच त्रिविधायगे ॥ पुं लग्ने पुनर्वाशे च तथा पुं ग्रह वी-
 क्षिते ॥ १४ ॥ चित्रा पुनर्वसू पुष्य मघ्निभं मध्य मंस्तृतम् ॥ नियेके शेष चिह्नानि संत्या-
 ज्या न्य शुभानि च ॥ १५ ॥ अथ जन्म मंसीमंते निर्दिष्टं ॥ वशिष्ठः ॥ बालान्न भुक्तो व्रत बंधने च
 राजा भिक्षुके खलु जन्म धिलम् ॥ शुभं त्व निर्दृ सततं विवाह सीमंत यात्रा दिष्टु मंगलेषु ॥
 १६ ॥ मास त्रयुक्त कार्थ्येषु सूदत्तं गुरु सुक्रयोः ॥ न दोष कुन्मले मासे गुर्वीहि त्यादिकं त-
 या ॥ १७ ॥ अथ पुंसवन सीमंतोन्नयने ॥ द्वितीये वा मासि पुंस वनं स्मृतम् ॥ मासे
 षष्ठे ऽष्टमे वापि गर्भ सीमंतं कं विदुः ॥ १८ ॥ पुनर्वसू द्वये मूले अवलौ स्यग हस्तयोः ॥
 गुरु भौमार्कं चारिषु प्रोक्षेत् पुंस वनादिकम् ॥ १९ ॥ रेवत्या अतरे ऽप्ये के मृक्ने चंद्रे बुधे
 जगुः ॥ मासे श्रे सवले चंद्रे लग्ने पुंसां सके शुभे ॥ २० ॥ सौम्ये ऽर्केन्दु त्रिकोण स्थे पा-
 ने लाभे त्रिविधं के ॥ अथ मासेष्वरः ॥ मासे ष्वरा भृगु भौम गुरु सूर्ये नु सूर्यजाः ॥ बुधो-
 लग्न पति अश्विनः सूर्य्य अश्वे ते यथा क्रमम् ॥ २१ ॥ अथ संस्कारे विशेषः ॥ विवाहे गर्भ संस्कार ॥ २२ ॥

३२३ ॥ अत्रि स्त्रियाऽपि ॥ भूषां वरादि कार्येषु भर्तुरेवैदवंचलम् ॥ २२ ॥ गर्भधा-
 नादि संस्कारे तथा न्न प्राशने शिशोः ॥ न तत्र गुरु शुक्रा स्तमन् प्रासादि दूयणम् ॥
 २३ ॥ अथ विलुप्टजा ॥ सीमंतोद्धृति पक्षे रोहिण्यां अवगो तथा ॥ द्वादशे सप्तमे घले
 ह्यर्घ्यर्चा गर्भपुष्टये ॥ २४ ॥ अथ सति का ग्रह प्रवेशः ॥ अग्नि त्रयोत्तरा हस्त त्रये पुष्या नु
 रथयोः ॥ पुनर्भे रोहिणी युग्मे रेवती द्वितये तथा ॥ २५ ॥ शुभाहे प्रश बोधुक्ता सूति
 का मंदिरं विशेत् ॥ अथ जात कर्म ॥ जात कर्म क्रियां कुर्यात्पुत्रायुः श्री विदुदये ॥ च-
 हदोप विनाशाय सूत का शुभ विच्छिदे ॥ २६ ॥ कुमार ग्रह नाशाय पुंसां सत्ववि-
 दुदये ॥ एकादशे न्हि विप्राणा क्षत्रियाणां त्रयोदशे ॥ वैश्यानां योदशे नाम म्मासा
 मूढ जन्मनः ॥ २७ ॥ चैत्रादि मास नागानि वैकुंठे ऽथ जनार्दनः ॥ उपेन्द्रो य-
 ज्ञ प्ररुयो वासुदेव स्त्रि विक्रमः ॥ २८ ॥ योगीशः पुंडरी काक्षः कृत्स्नो नंतो ऽच्युत-
 सया ॥ चक्र धारीति चैतानि क्रमादाहुर्मनीषिणः ॥ २९ ॥ मार्गशीर्षे विप्राणा

क्षीपोये लक्ष्मींश्च देवता ॥ माघेनुरुविमर्णी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिर्नामिका ॥ ३० ॥
 चैत्रे मासिरमा देवी वैष्णवे मोहिनी तथा ॥ पद्माक्षी ज्येष्ठ मासे तु ग्राधाह कमलेति
 च ॥ ३१ ॥ कंति मती श्रावणे च भाद्रे तु अपराजिता ॥ पद्मावती आश्विने तु राधा देवी
 तु कार्तिके ॥ ३२ ॥ मित्रा दिल्य मघोत्तराश्वतं भिषक् स्वाती धनिष्ठा च्युत प्राजे प्राश्चिष्ठा
 प्राक् पौल्ल दिन कृत्युष्ये नुराश्वे तु स्थिरे ॥ छिद्रं पंचदशी विहाय नवमी पुनरे ॥
 दशमे भागविज्ञा चार्थ्या मृतपाद भाग दिवसे नामानि कुर्युः शिशुराश्वोः ॥ ३३ ॥ अ-
 मा संक्रान्ति विष्ट्यां तु प्रातःकालेऽपि नाचरेत् ॥ शर्मां तु ब्राह्मणस्याहर्मां तु क्षत्रियस्य
 शुक्लैश्च धन संयुक्तं शूद्रस्य प्रेक्ष्य संयुतम् ॥ ३४ ॥ मासं नामं गुरोर्नाम दद्याद्बालस्य
 वैपिता ॥ देवालय गजाश्वानां वस्त्राणां वापि कूपयोः ॥ ३५ ॥ सर्वा पराणां पराणानां चि-
 न्तार्थं यो धितो नृणां ॥ ३६ ॥ काव्यानाञ्च केवीनाञ्च पष्पादीनां च सर्वसिः ॥ राज-
 प्रसादं वस्तूनां नाम कर्म विधिष्यते ॥ ३७ ॥ तदक्षरादिकं नाम यस्मिन् स्थिते दद-

स्तरम् ॥ ये श्रीकृष्ण उ. अथा वर्णाना मादौ संति ते नहि ॥ नेतुर्वन्ति तदा द्वाया भजडास्ते
 यथा क्रमम् ॥ ३८ ॥ अथ जननसमयेदुष्टकालः ॥ तत्रादावभुक्तमूलम् ॥ जेखांत्ये घटिका युरमं
 मूलादौ घटिका द्वयम् ॥ अयुक्तमूलमेव तस्यादित्येवं नारदो ब्रवीत् ॥ ४२ ॥ वशिष्ठोक्तं त-
 योरित्याद्ययोरेक द्विनादिकम् ॥ अंगिरा घटिका मेका अन्ये पंचाष्ट तत्रसु ॥ ४३ ॥ जानं
 शिशुं त्यजेन्नानो नयश्ये दष्ट द्वायनम् ॥ अथ मूलजनने पादफलम् ॥ आद्ये पिता नाश्रमुयेति
 मूल पादे द्वितीये जननी तृतीये ॥ धनं चतुर्थेऽस्य शुभोऽथ श्रुत्या सर्वत्र सत्स्यादहि भे
 विलोमम् ॥ ४४ ॥ दिवा जातस्तु पितरं रात्रौ तु जननी तथा ॥ शात्मानं संध्योर्हिति नास्ति
 गंडो निरास्यः ॥ ४५ ॥ मूलादि पादो यदि रात्रि भागे तदात्मनो नास्ति पितुर्विनाशम्
 ॥ द्वितीय पादो दिन गो यदि स्यान्न मातुरत्योऽपि नदास्ति दोषः ॥ ४६ ॥ माघा पादा-
 ष्विने भाद्र पदमूलं वशेद्वि ॥ कार्तिके प्रावरो चैते पौषे मासे तु भूतले ॥ ४७ ॥ वैशाख
 रवे फाल्गुणे ज्येष्ठे मार्गे पाताल वर्जितम् ॥ भूतले वर्तमाने तत् द्वायो दोषोऽन्यथानहि

४८॥ अथ मूलवृक्षम् ॥ मूलं स्तंभं त्वचा शरत्वा पत्रं पुष्पं फलं शिखा ॥ मुनयोऽद्यो दिशो
 रुद्रा सूर्याः पंचाध्ययोऽरनयः ॥ ४९ ॥ मूले तु मूलनाशः स्यात् स्तंभे वंश विनाशनम्
 ॥ त्वचि मातुर्भवे क्लेशः शरत्वायो मातुलस्य च ॥ ५० ॥ पत्रे राज्यं विजानीया त्र्युख्ये मं-
 त्रि पदं स्मृतम् ॥ फले च विपुला लक्ष्मीः शिखाया मल्यजीवितम् ॥ ५१ ॥ मूलस्य घटि
 कान्यासो मूर्द्धि पंच नृपो भवेत् ॥ मुखे सप्त मृतिः पित्रोः स्तंभे वेदा महाबलः ॥ ५२ ॥ वा
 क्यो रथो बली पाण्यो त्तिस्त्रो हत्यान्वितो भवेत् ॥ हृदि खेटा भूप मंत्री नाभौ ह्यौ ब्रह्म वि-
 द्भवेत् ॥ ५३ ॥ मुखे दृशति कामी स्याज्जानुनोः परम हा मतिः ॥ पादयोः षट् मृतिस्त-
 स्य प्रोक्तवान्कमलाशनः ॥ ५४ ॥ अथ कन्याजनने गविभागः ॥ चतस्रो नाडिकाः शीर्षे कु-
 र्वीन्ति पशुनाशनम् ॥ मुखे षड्धनहानिः स्यात्कंठे पंच धनागमः ॥ ५५ ॥ कौटिल्यं हृद-
 ये पंच बाह्वोर्विन्तागमं नतः ॥ वेदाः पाण्यो र्दंयाधर्मं वेदा गुह्येति कामिनी ॥ ५६ ॥ ज्येष्ठ
 रानुलनाशश्च जंघयोर्युगनाडिका ॥ ज्येष्ठभात् विनाशश्च चतस्रो जानुयुग्मके

५७ ॥ पादयोर्दंष्ट्रा नाड्यश्च तत्र वैधव्यमादिशेत् ॥ दाति मूलप्रसूतायाः मुनिभिः फल
 मीरितम् ॥ ५८ ॥ अथाश्लेषाफलम् पुत्रकन्ययोः ॥ मूर्द्धि पंचसु राज्यानि मुखे सप्त पितृस्त्रयः
 ॥ नेत्रे द्वे जननी नाशे गोवायां स्त्रीबुलंपटः ॥ ५९ ॥ स्कंधे वेदा गुणैर्भक्तिः हस्तेऽष्टौ चक्व
 ली भवेत् ॥ हृदये कादृशमिश्रात्मघाती संजायते नरः ॥ ६० ॥ स्त्रीवाग्नाभौ भ्रमः ष-
 ङ्गि गुर्वेन वतयो धनः ॥ पादे पंच धनं हंति साय्या दैतफलं क्रमात् ॥ ६१ ॥ अथाश्लेषा
 वृक्षः ॥ फलं पुष्यं दूलं प्राणत्वात्त्वंगलता स्कंध एव च ॥ सार्धं वल्यां दृष्ट्वा क्षांक स्व रविश्चा-
 र्कसागरः ॥ ६२ ॥ नाडिका लङ्घ्ये वै वाले फलं ज्ञेयं यथा क्रमम् ॥ श्रीः श्री राजभयं हा-
 नि र्मातृ पित्रात्म संक्षयः ॥ ६३ ॥ अथ ज्येष्ठापादफलम् ॥ आद्ये पादेऽग्रजं हंति ज्येष्ठा
 या ननु जं द्विके ॥ तृतीये जननीं हंति स्वात्मानं च तुरीयके ॥ ६४ ॥ पुनः ज्येष्ठा द्वे
 जननी माता द्वितीये जननी पिता ॥ तृतीये जननीं भ्राता स्वयं माना चतुर्थके ॥ ६५
 ॥ अत्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्र क्षयो भवेत् ॥ सप्तमे चोभयं कुलं ज्येष्ठ भ्रातरश्च

मे ॥ ६६ ॥ नवमे स्वसुरं हन्ति सर्वं हन्ति दशं शकः ॥ निर्ऋत्यभोद्भूतं सुतं सुता वाल्मि-
 प्रादवश्य स्वसुरं निहन्ति ॥ तदं त्यपादे जनितो निहन्ति तस्योल्भमेणाहि भवेत्कलत्रम्
 ॥ ६७ ॥ सुरेयता राजनिता धवाग्रजं द्विदैवतं राजनिता च देवरम् ॥ पुंस्त्वर्क्षे जनि-
 तः सुतस्तथा स्वस्याग्रजं हन्ती न पुत्रिका यदि ॥ ६८ ॥ मूलजा स्वसुरं हन्ति व्याल-
 जा च तदंगजाम् ॥ माहेन्द्रजाग्रजं हन्ति देवरं तु द्विदैवजा ॥ ६९ ॥ धवाग्रजं हन्ति
 सुरेन्द्रजाता तथैव पत्न्या भगिनी पुमांश्च ॥ द्विदैवजा देवरमाशु हन्याद्वायूर्यो नृजामाशु
 निहन्ति सन्तुः ॥ ७० ॥ पत्न्यग्रजामग्रजं चाहन्ति ज्येष्ठा र्क्षतः पुमान् ॥ तथा भायूर्यो स्वसा-
 रं वाश्यालकं वा द्विदैवजः ॥ ७१ ॥ कन्यका देवरं हन्ति विशाखां त्यसमुद्भवा ॥ आ-
 चपादत्रये नैव आद्यमेतु पुमान् भवेत् ॥ ७२ ॥ न हन्या देवरं कन्या तुता मिश्र द्विदै-
 वजा ॥ तदृक्षां नोद्भवा चर्ज्या दुष्टा वृश्चिक पुच्छवत् ॥ ७३ ॥ चित्राद्यर्क्षे पुष्यमध्ये
 द्विपादे पूर्वाषाढा धिष्ण पादे तृतीये ॥ जातः पुत्रश्चोत्तरर्क्षे विधत्ते माता पित्रोऽर्थतरं

५७ ॥ पादयोर्दंष्ट्रा नाह्यश्च तत्र वैधव्यमादिशेत् ॥ इति मूलप्रसूतायाः मुनिभिः फल
 मीरितम् ॥ ५८ ॥ अथाश्लेषाफलम् पुत्रकन्ययोः ॥ मूर्द्धि पंचसु राज्याणि मुखे सप्त पितृस्यः
 ॥ नेत्रे द्वे जननी नाशे ग्रीवायां स्त्रीयुलंपटः ॥ ५९ ॥ स्कंधे वेदा गुरो भक्तिः हस्तेऽष्टौ चक-
 री भवेत् ॥ हृदये कादृशमिश्रत्मा घाती संजायते नरः ॥ ६० ॥ स्त्रीवात्राभौ भ्रमः व-
 द्भिर्गुह्येन वतयो धनः ॥ पादे पंचधनं हंति साय्या देतुफलं क्रमात् ॥ ६१ ॥ अथाश्लेषा
 वृक्षः ॥ फलं पुष्पं दलं प्रणतां त्यग्लता स्कंध एव च ॥ साय्यं वल्यां दृष्ट्वा क्षांक स्वस्ति श्वा-
 र्कसागरः ॥ ६२ ॥ नाडिका स्तब्धवे वाले फलं ज्ञेयं यथा क्रमम् ॥ श्रीः श्रीराजभयं हा-
 निस्मां तपित्रात्म संक्षयः ॥ ६३ ॥ अथ ज्येष्ठापादफलम् ॥ आद्ये पादेऽग्रजं हंति ज्येष्ठा
 यामनुनं द्विके ॥ तृतीये जननीं हंति स्वात्मानं च तुरिके ॥ ६४ ॥ पुनः ज्येष्ठा द्वे
 जननी माता द्वितीये जननी पिता ॥ तृतीये जननी आता स्वयं माना चतुर्थके ॥ ६५
 ॥ अत्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्र क्षयो भवेत् ॥ सप्तमे चोभयं कुलं ज्येष्ठ आतरमष्ट

मे ॥ ६६ ॥ नवमे स्वसुरं हन्ति सर्वं हन्ति दशं शकः ॥ निऋत्यभीद्रुत सुत सुता वाहि
 प्रादवश्य स्वसुरं नि हन्ति ॥ तदं त्यपादेजनिनो निहन्ति तस्योत्क्रमेणाहि भवेत्कलत्रम्
 ॥ ६७ ॥ सुरेयता राजनिना धवा गजं द्विदैवता राजनिना च देवरम् ॥ पुरं हर्षे जनि-
 तः सुत सत्था स्वस्या गजं हन्ती न पुत्रिका यदि ॥ ६८ ॥ मूल जा स्वसुरं हन्ति व्याल
 जा च तदं गजाम् ॥ माहेन्द्र जा गजं हन्ति देवरं तु द्विदैव जा ॥ ६९ ॥ धवा गजं हन्ति
 सुरेन्द्र जाता तथैव पत्न्या भगीनी पुमांश्च ॥ द्विदैव जा देवर माशु हंन्या द्वाय्या नृजामाशु
 निहन्ति सन्तुः ॥ ७० ॥ पत्न्य गजाम गजं वाहन्ति ज्येष्ठा सतिः पुमान् ॥ तथा माय्या स्वसा
 रं वा प्रयाल कं वा द्विदैव जः ॥ ७१ ॥ कन्यका देवरं हन्ति विशाखां त्य समुद्रवा ॥ आ
 द्य पाद त्रये नैव स्नाद्य भेतु पुमान् भवेत् ॥ ७२ ॥ नह्न्या देवरं कंन्या तुता मिश्र द्विदै
 व जा ॥ तदृक्षां तो इवा चर्ज्या दुष्टा वृश्चिक पुच्छवत् ॥ ७३ ॥ चित्राद्यर्द्धे पुष्य मध्ये
 द्विपादे पूर्वाषाढा धिल पादे तृतीये ॥ जातः पुत्र प्रसोत्तर्ह्य विधत्ते माता पित्रोर्भ्रातरं ॥ ७४ ॥

बालनाशम् ॥ ७४ ॥ द्विमासं चोत्तरा दोषः पुष्ये चैव त्रिमासिकः ॥ पूर्वा पादाष्टमे
 मासि चित्रा पारमासिकं फलम् ॥ ७५ ॥ नवमासं तथा श्लेषा मूले चाष्टकवर्षिकं
 ॥ ज्येष्ठा पंचदशे मासि वर्जितम्युत्र दर्शनम् ॥ ७६ ॥ व्यती पाते गहनि स्यात्परि
 धे मृत्युमादिशेत् ॥ वैधृती पितृहानि स्यान्मृच्छेन्दाबंधतां व्रजेत् ॥ ७७ ॥ मूले
 समूलनाशस्यात्कुलनाशो धृतौ भवेत् ॥ विकृतांगे च हीने च संध्ययो रुभयो
 रापि ॥ ७८ ॥ पर्वण्यपि प्रसूतौ च सर्वा रिष्टभयप्रदः ॥ तद्वत्सदन्तजातश्च पाद
 जा तस्तथैव च ॥ ७९ ॥ तस्माच्छांतिं प्रकुर्वीत गृह्णाणं क्रूरचेतसाम् ॥ पूर्णानन्द
 ख्यो स्तिथ्यो स्संधिर्नाडी द्वयं तथा ॥ ८० ॥ गंडांतं मृत्युदंजन्म यात्रो द्वाद्वना
 दिषु ॥ कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेषयोः ॥ ८१ ॥ गंडांतमंतरालं स्याद्द्व
 टिकार्द्धमिति प्रदम् ॥ तिथिगंडम् ॥ कृत्वा चतुर्दशी षोढा कुर्व्यादादौ शुभं स्मृतम् ॥ द्वि
 तीये पितरं हन्ति तृतीये हानिमातरं ॥ ८२ ॥ चतुर्थे मातुलं हन्ति पंचमेवंशनाशनं ॥

षष्ठे च धन नाशः स्यादात्मनो वंश नाशनम् ॥ ८३ ॥ अथैते यासानं ॥ तिथि गंडे च नष्टा हं नक्ष-
 त्रे धेनु रुच्यते ॥ कांचनं लग्न गंडे तु गंड दोषी विनश्यति ॥ ८४ ॥ उत्तरे तिल पात्रं स्यात्सु-
 खे गोदानं सुच्यते ॥ अजा प्रदानं त्वाक्त्रे स्यान्मूर्वा पाटे तु कांचनम् ॥ ८५ ॥ उत्तरा तिथ्य-
 चित्रासु पूर्वाषाढौ द्वयस्य च ॥ कुर्व्याच्छांतिं प्रयत्नेन नक्षत्राकारजां पुनः ॥ ८६ ॥ य-
 द्ये कस्मिन् धिले जायंते दुहितरोऽथवा पुत्राः ॥ पितु रंतं करह्ये ते यद्यपरे श्रीतिरनुला-
 स्यात् ॥ ८७ ॥ एकस्मिन्नेव नक्षत्रे भ्रात्रोर्वापित पुत्रयोः ॥ प्रसूतिश्च तयोर्मृत्युर्भवे-
 देकस्य निश्चितम् ॥ ८८ ॥ ग्रहणो चंद्र सूर्यस्य प्रसूतिर्यदि जायते ॥ व्याधिः पीडा तथा
 स्त्रीणां आदौ तु ऋतु दर्शनात् ॥ ८९ ॥ अकाल प्रसवानार्यः कालातीत प्रजास्तथा ॥
 विवृत प्रसवा ऋतुव युग्म प्रशवकास्तथा ॥ ९० ॥ समानुयायं मुंडाश्च अजातव्यं जना-
 स्तथा ॥ हीनांगा अधि कोणाश्च जायंते यदि वास्त्रियः ॥ ९१ ॥ पशवः पक्षिणाश्चैव तथै-
 व च शरीरस्थाः ॥ विनाशस्तस्य देशस्य कुलस्य च विनिर्दिशेत् ॥ ९२ ॥ निर्वर्त्तयेनां ॥ २३३

नगरा नतप्रशान्तिं समाचरेत् ॥ अथ निकटोपः ॥ सुतत्रये सुता चै तस्या नतत्रये वासुतो
यदि ॥ माता पित्रोः कुलस्यापि तत्पानिष्ठं महद्भवेत् ॥ ८३ ॥ एते द्रष्टव्याः ॥ गन्धान्तःप-
रिधः प्रह्लं व्यतीपातोऽथ वैदृगतिः ॥ मूला प्रलेपार्थ्य ना ज्येष्ठा जम पंथोऽर्क संक्रम
म् ॥ ८४ ॥ गन्धयोगो मृति भद्रा व्याघातो हग्ध वासराः ॥ कृत्वा चतुर्दशी पात स्त-
तस्मोदरजन्म भम् ॥ ८५ ॥ तथाव मद्दिनं नैष्टं जन्म काले शिशोः श्लेष्मिणः ॥ तद्दोष
परिहाराय श्रान्तिं कुर्व्याद्यथा विधि ॥ ८६ ॥ अथ जन्म समये द्वादश भाव फलम् अथ तन्नुस्या
नस्य ॥ लग्न रियतो दिनकरः कुरुते ग पीडां पृथ्वी सुतो वितनुते रुधिर प्रकीपं ॥ छाया सु-
तः प्रकुरुते वङ्ग दुःख भाजं जीवेन्नु भार्गव बुधाः सुख कांति दाः स्युः ॥ ८७ ॥ अथ
धन स्थानस्य ॥ दुःखा वहा धन विना शकरः प्रदिष्टा विन्ने स्थितारवि प्रनेश्वर भूमि पुत्राः
॥ चन्द्रे बुधः सुरगुरु भृगु नन्दनो वानाना विधं धन चये कुरुते धनस्थः ॥ ८८ ॥ अथ सह
ज स्थानस्य ॥ भानुः करोति विरुजं रजनी करोति कीर्त्या युतं क्षिति सुतः प्रचुर प्रकीपम् ॥ ८९ ॥

॥ अरद्धिं बुधः सुविनीतचेषं रत्नीणां प्रियं गुरु कवी रविजस्तृतीये ॥ २६ ॥
 अथ सुहृत्स्थानस्य आदित्य भौमः प्रथमः सुखवर्जितां गं कुर्वन्ति जन्मनि नरं सुचिरं चतु-
 र्धं ॥ सोमो बुधः सुरगुरु भृगु मन्दनो वा सौख्या न्वितं च नृप कर्मरतं प्रधानम् ॥
 ॥ २७ ॥ अथ सुतस्थानस्य ॥ पुत्रे रविः प्रचुर कोपयुतं बुधश्च स्वल्यात्मजं प्रनिधरा तनु-
 जावपुत्रं ॥ सुक्रं नु देव गुरुवः सुत धाम संस्थाः कुर्वन्ति पुत्र बहुलं सुखिनं सुरूपम्
 ॥ १ ॥ अथ पितृस्थानस्य ॥ मातङ्ग भूमि तनुजौ हत प्रानु पक्षं पंगु नरं रिपु गृहेऽप्यति पूज-
 नीयं ॥ काव्ये नु जौ मति विहीन मनल्य रोगं जीवः करोति विकलं मरणं प्रशङ्कः ॥
 ॥ २ ॥ अथ जायास्थानस्य ॥ तिग्मां प्रु भौम रविजाः किल सप्त मस्या जायां कु कस्मीनि
 रतां तनु संत तिच ॥ जीवे नु भागवि बुधा बहु पुत्र युक्ता रूपा न्विता जन मनो हर रूप
 प्रीला ॥ ३ ॥ अथ मृत्युस्थानस्य ॥ सर्वे गृहा दिन कार प्रसुरा नि तातं मृत्यु स्थि ता
 नि तनु ते किल दुष्ट बुद्धिम् ॥ शस्त्राभिघात परिपीडित गात्रयष्टिं सौख्ये विहीन ज-

ति रोग गणौ रूपे तम् ॥ ४ ॥ अथ धर्म स्थानस्य ॥ धर्म स्थिता रवि शनैश्चर भूमि पुत्राः कु-
 र्वन्ति धर्म रहितं विव्रति कुशील ॥ चन्द्रो बुधो भृगु सुतः सुर राज मंत्री धर्म क्रिया
 सुनिरतं कुरुते मनुष्यम् ॥ ५ ॥ अथ कर्म स्थानस्य ॥ आदित्य भौम शनयः किल क-
 र्म संस्थाः कुर्वन् नरं बहु कर्म रतं कुपुत्रम् ॥ चंद्रः सुकीर्ति मुशना बहु विज्ञयुक्तं रू-
 पान्वितं बुध गुरू शुभ कर्म भाजम् ॥ ६ ॥ अथ लाभ स्थानस्य ॥ लाभ स्थितौ दिन क-
 रो नृप लाभ युक्तं नाग पति बहु धनं क्षितिजः क्षितीशम् ॥ सौम्यो विवेक सुभगं च ध-
 नायुर्धन्यः सुक्रः करोति सगुणं रविजः सुकीर्तिम् ॥ ७ ॥ अथ व्यय स्थानस्य ॥ सूर्यः क-
 रोति पुरुषं व्यय गो विशीलं कारणं शशी क्षिति सुतो बहु पाप भाजं ॥ चंद्रांग जोगत-
 धनं धिषणः कृशांगं सुक्रो बहु व्यय करं रविजः सुतीव्रम् ॥ ८ ॥ राहु केतु फलं सर्वं म-
 न्द वत्कथित म्बुधैः ॥ अथ मृत्यु योगः ॥ चंद्राष्ट मं च धरणी सुत सप्त मं च राहु नवं च शनि
 जन्म गुरु स्ततीये ॥ अर्कस्तु पंच भृगु षष्ठ बुधश्च तुर्ये जातो न जीवति नरः प्रव दन्ति सं- १३६

तः ॥ २८ ॥ अथ स्त्रीहंतायोगः ॥ षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तम संभवः ॥ अष्टमे च यदा
 सौरि स्तस्य भार्या न जीवति ॥ २७ ॥ अथ पराक्रमयोगः ॥ मूर्त्तो शुक्रं बुधो यस्य केन्द्रे
 चैव बृहस्पतिः ॥ दशमों गार्को यस्य स ज्ञेयः कुल दीपकः ॥ २१ ॥ अथ दुर्बलयोगः ॥
 नैव शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ॥ दशमों गार्को नैव सजातः किं करि-
 व्यति ॥ २२ ॥ अथ जातिचंशकारकयोगः ॥ धन स्थाने यदा सौरिः सैहिके चो धरात्मजः ॥ शु-
 क्रो गुरुः सप्तमे च त्वष्ट सौरि चन्द्रको ॥ २३ ॥ ब्रह्म पुत्र पदे वापि वेण्यासु च सदा रतिः ॥
 प्राप्ते विंशति मे वर्षे म्लेच्छो भवति नान्यथा ॥ २४ ॥ अथ मातृपितृनाशकयोगः ॥ षष्ठे च
 द्वादशे राशौ यदा पाप ग्रहो भवेत् ॥ तदा मातृ भयं विद्या चतुर्थे दशमे पितुः ॥ २५ ॥ अ-
 थ मृत्युकारकयोगः ॥ अर्को राहुः कुजः सौरि लभे तिष्ठति पंचमे ॥ पितरं मातरं हंति आतरं
 स्वं शिशुक्रमात् ॥ २६ ॥ लग्न स्थाने यदा सौरिः षष्ठे भवति चंद्रमाः ॥ कुजस्तु सप्तमे
 स्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ २७ ॥ पातालस्थो यदा राहुः श्वेदुः षष्ठाष्ट मे पिच ॥ पाप

॥ ३० ॥ गुरुः कर्कच नत्रेच मीन कन्ये रसितस्य च ॥ मंदस्तु लायां मेवेच कन्या राहु ग्रह
स्य च ॥ ३८ ॥ राहु र्युग्मे तु चापेच तमो वंत्के तु जं फलम् ॥ प्रोक्तं गृहाणा मुच्चत्व नी
चत्वं च क्रमाहुर्धैः ॥ ३९ ॥ अथ जन्मलग्न फलम् ॥ मेवे दैन्य मुयैति गर्वित द्येष ना नामति
र्मन्मथे शूरः कर्कट के धृतीच वन पे कन्या च साया न्विता ॥ सत्यं चैव तुलैत्व लो मलि

अथ ग्रहाणा मुच्चत्व नीच व्यव्दानार्थ चक्रम्

| | | | | | | | | | |
|------|-------|---------|------|-------|------|-------|------|-------|------|
| गह | सूर्य | चंद्र | भौम | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
| उच्च | मेघ | हय | मकर | कन्या | कर्क | मीन | तुला | मिथुन | तुला |
| नीच | तुला | वृश्चिक | कर्क | मीन | मकर | कन्या | मेघ | भन | मेघ |

न ता पापा न्वितं वै धनु र्मुखं त्वं मकरे घटे
च तुरता मीने त्व धीरा मतिः ॥ ३० ॥

अथ स्त्री जातकम् ॥ अथ तनु स्थानस्य ॥ मूला
करोति विधवां दिन कृत्कुजश्च राहु र्विन

ए तनयां रवि जो हरिद्रां ॥ शुक्रः शशांक तनयश्च गुरुश्च साध्वी मायुः स्यं च कुरुते
त्रच सर्वरीशः ॥ ३१ ॥ अथ धन स्थानस्य ॥ कुर्वति भास्कर शनैश्च राहु भौमा दारि-
द्रा दुःख मतुलं नियतं द्वितीये ॥ वित्ते श्वरी मविधवा गुरु शुक्र सौम्या नारी प्रसूत तनया

कुरुते शशाङ्कः ॥ ३३ ॥ अथ सहज स्थानस्य ॥ सूर्येन्दु भौम गुरु शुक्र बुधा रव्यतीये कुतुः
 रित्रयं बहु सुतां धन भागिनीं च ॥ सत्यं दिवाकर् सुतः कुरुते धनाढ्या लक्ष्मी ददाति
 नियतं किल सैहि केयः ॥ ३४ ॥ अथ सुहृत्स्थानस्य ॥ स्वल्पं पयो भवति सूर्य सुते चतुर्थे दोर्भा
 र्य मुषा किरणः कुरुते शशी च ॥ राहुर्विन्दु तनयां क्षिति जो ल्यजीवां सौरव्या न्वितो
 भृगु सूर्य्य बुधाश्च कुतुः ॥ ३५ ॥ अथ सुतस्थानस्य ॥ नद्यात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्थौ
 चंद्रात्मजौ बहु सुतां गुरु भार्गवौ च ॥ राहुर्ददाति मरणं रविजस्तु रोगं कन्या प्रसूति नि
 रतां कुरुते शशाङ्कः ॥ ३६ ॥ अथ रिपुस्थानस्य ॥ षष्ठ स्थिताः शनि दिवाकर् राहु भौम जी-
 वास्तथा बहु सुतां धन भागिनीं च ॥ चंद्रः करोति विधवा मुग्धना हरिद्रं वेण्यां शशाङ्क
 तनयः कलह प्रियां च ॥ ३७ ॥ अथ जायास्थानस्य ॥ सौराजीव बुध राहु रवीन्दु शुक्रा द्युः
 प्रसह्य मरणं खलु सप्त मस्थाः ॥ वैधव्य वंधन मयं क्षय वित्तभाश व्याधि प्रवास मरण
 नियतं क्रमेण ॥ ३८ ॥ अथ मृत्युस्थानस्य ॥ स्थानेष्टमे गुरु बुधौ नयते वियोगं मृत्युं

भृगु सुतश्च तथैव राहुः ॥ सूर्यः करोति विधवां धनिनी कुजश्च सूर्यात्मजो बहु सुताप
 ति वल्लभां च ॥ ३९ ॥ अथ धर्मस्थानस्य ॥ धर्मस्थिता भृगु दिवा कर् भूमि पुत्र जीवाः सु-
 धर्म निरतां शशिशः सुभोगां ॥ राहुश्च सूर्य तनयश्च करोति वंध्यां नारी प्रसूत तनया-
 कुरुते शशशंकः ॥ ४० ॥ अथ कर्मस्थानस्य ॥ राहुर्नेमस्य लगतो विधवां करोति पापे परं
 दिन कश्च शनैश्चरश्च ॥ मृत्युं कुजो र्थ रहितां कुटिलां च चंद्रः शेषाग्रहा धनवती बहु
 वल्लभां च ॥ ४१ ॥ अथ आयुस्थानस्य ॥ ज्ञाये रवि बहु सुतां धनिनी शशशंकः पुत्रान्वितां हि
 तिसुतो रविजो धनाढ्यां ॥ आयुर्मती सुरगुरु भृगुजः सुपुत्री राहुः करोति सुभगां सुखि-
 नी बुधश्च ॥ ४२ ॥ अथ व्ययस्थानस्य ॥ अंत्ये धन व्ययवती दिन रुद्र रिद्रं वंध्या कुजः प
 ररतां कुटिलां च राहुः ॥ साध्वी सितेज्य शशिशजा बहु पुत्र पौत्र युक्ता विधुः प्रकुरुते व्यय
 गोदिनां धां ॥ ४३ ॥ अथ अष्टोत्तरी दशाक्रमम् ॥ आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्य ज्येष्ठा नृषा नरवेदशा ॥
 मघा पूर्वाषाढा चैव चंद्रस्य च दशा तथा ॥ ४४ ॥ हस्तो विशाखा चित्रा च स्वाती भौम दशास्तु ॥ ४५ ॥

ता ॥ ज्येष्ठा नुराधा मूले च सौम्यस्य च दशा बुधैः ॥ ४५ ॥ अभिजिच्छ्वराः पूषा ऊषा
 चैव शनेर्दशा ॥ धनिष्ठा शत तारां च पूर्वा भाद्र पदा गुरोः ॥ ४६ ॥ उभा पूषा ध्विनी का
 ल राहो ष्यैव दशा स्मृता ॥ कृत्तिका रोहिणी चोक्ता मृगः शुक्र दशा बुधैः ४७ एषां भानां क्षो
 भै रीव ज्ञेयाः सूर्यादि का दशाः ॥ क्रूरजा अश्लुभा भोक्ता पुभास्या त्सौम्य खेव जा ॥ ४८
 ॥ अथ महा दशा वर्ष संख्या ॥ सूर्यस्य षड्वर्षाणि इंद्रोः पंच दशैव च ॥ भौमस्य वसुवर्षाणि
 अग्नि चंद्र बुधस्य च ॥ ४९ ॥ मंदस्य दश वर्षाणि गुरो ष्यै को न विंशतिः ॥ राहोर्द्वादशव
 र्षाणि शुक्र स्यैको न विंशतिः ॥ ५० ॥ अथातर्दशा क्रमः ॥ महा दशा स्व स्व दशा वृ निष्ठा-
 भक्ताः स्ववाहू शशिभिः समाद्याः ॥ अंतर्दशा स्युर्गगने च रागांतर्देक भावो हि महा
 दशा स्यान् ॥ ५१ ॥ अथ विंशोत्तरी दशा क्रमम् ॥ नयनो न जनो भैमिक हृत् क्रमशो कैलुङ्ग
 जा गुरू रयः ॥ अग्नि चंद्रज केतु भार्गवाः परिशेषास्तु दशाधिपा स्ततः ॥ ५२ ॥ अस्तु
 दिग्गिरयो धृति र्नुपाति धृतिर्मेघ ह्या नखाः समाः ॥ क्रमतो हिमता अथादिमा जग्नि

| चिन्तादिः पु. पु. स्तेपा. | | | | | | चंद्रस्य मघा-पूर्वाफा उत्तराफा. | | | | | | भीमस्य हस्त चित्रा स्वाती विषाखा. | | | | | | मृगस्य अनुराधा ज्येष्ठा मूल. | | | | | | |
|---------------------------|------|-----|-----|-----|------|---------------------------------|------|-----|-----|-----|------|-----------------------------------|------|-----|-----|-----|------|------------------------------|------|-----|-----|-----|------|------|
| गताः | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल | ग्रह | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल | ग्रह | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल | ग्रह | वर्ष | मास | दिन | घटी | फल | |
| मृग | ० | ४ | १० | ० | अशुभ | चंद्र | २ | १ | ० | ० | शुभ | भौम | ० | ७ | ३ | २० | अशुभ | बुध | २ | ८ | २१ | २० | शुभ | |
| चंद्र | ० | १० | ० | ० | शुभ | भौम | २ | १ | १० | ० | अशुभ | बुध | २ | ३ | २० | १६ | ४० | अशुभ | शनि | २ | ६ | २१ | ४० | अशुभ |
| भौम | ० | ५ | १० | ० | अशुभ | बुध | २ | ४ | १० | ० | शुभ | शनि | ० | ८ | २६ | ४० | अशुभ | गुरु | २ | ११ | २६ | ४० | शुभ | |
| शनि | ० | १२ | १० | ० | शुभ | शनि | २ | ४ | २० | ० | अशुभ | शुक्र | २ | ४ | २६ | ४० | अशुभ | गुरु | २ | ११ | २६ | ४० | अशुभ | |
| गुरु | १ | ० | २० | ० | अशुभ | गुरु | २ | ७ | २० | ० | शुभ | गुरु | ० | १० | २० | ० | अशुभ | शुक्र | ३ | ३ | २० | ० | शुभ | |
| शुक्र | ० | ० | २० | ० | शुभ | शुक्र | २ | ८ | ० | ० | अशुभ | शुक्र | २ | ६ | २० | ० | शुभ | रवि | ० | ११ | २४ | ० | अशुभ | |
| रवि | ० | ० | ० | ० | अशुभ | शुक्र | २ | ११ | ० | ० | शुभ | रवि | ० | ५ | १० | ० | अशुभ | चंद्र | २ | ३ | २० | ० | शुभ | |
| शुक्र | २ | २ | ० | ० | शुभ | रवि | ० | १० | ० | ० | अशुभ | चंद्र | २ | १ | १० | ० | शुभ | भौम | २ | ३ | २० | ० | अशुभ | |
| संख्या | ६ | ० | ० | ० | ० | संख्या | २५ | ० | ० | ० | ० | संख्या | ८ | ० | ० | ० | ० | संख्या | १० | ० | ० | ० | ० | |

मस्या घटिका सप्तमाहताः ॥ ५२ ॥ अभोगेन भक्ताः फलं भक्त्याक स्तदूना दृष्टा सा भवे
 द्वोग्य संज्ञा ॥ एष विंशोत्तरीक्रमकोष्ठकः ॥ कृत्तिकादि क्रमेणैव क्षेत्रा विंशोत्तरी दृष्टा ॥ अंत
 १४५

| सूर्यस्य मंदवर्षे दैर्घ्ये व | | | | चंद्रस्य मंदवर्षे रोहि | | | | भौमस्य मंदवर्षे ७ मृगशिरा | | | | शुक्रो मंदवर्षे २० | | | | गुरोः मंदवर्षे मू | | | |
|------------------------------|------|-----|------|------------------------|------|-----|-----|---------------------------|------|-----|-----|------------------------|------|-----|-----|---------------------|------|-----|-----|
| मंदवर्षाः ४ या | | | | हस्त श्रवणा १० | | | | चित्रा धनिष्ठा | | | | आर्द्रा स्वाति प्रतभिष | | | | पुनर्विशा पूर्वा भा | | | |
| नाम | वर्ष | मास | दिवस | नाम | वर्ष | मास | दिन | नाम | वर्ष | मास | दिन | नाम | वर्ष | मास | दिन | नाम | वर्ष | मास | दिन |
| रवि | ० | ३ | १८ | चंद्र | ० | १० | ० | भौम | ० | ४ | २७ | राहु | २ | ४ | १२ | गुरु | २ | १ | १८ |
| चंद्र | ० | ६ | ६ | भौम | ० | ७ | ० | राहु | १ | ० | १८ | गुरु | २ | ४ | १४ | शनि | २ | ६ | १२ |
| भौम | ० | ४ | ६ | राहु | १ | ६ | ० | गुरु | ० | ११ | ६ | शनि | २ | १० | ६ | बुध | २ | ३ | ६ |
| राहु | ० | १० | १४ | गुरु | १ | ४ | ० | शनि | १ | १ | ६ | बुध | २ | ६ | १८ | केतु | ० | ११ | ६ |
| गुरु | ० | ६ | १८ | शनि | १ | ४ | ० | बुध | ० | ११ | २७ | केतु | १ | ० | १८ | शुक्र | २ | ८ | ० |
| शनि | ० | ११ | १२ | बुध | ० | ५ | ० | केतु | ० | ४ | २७ | शुक्र | ३ | ० | ० | रवि | ० | ६ | १८ |
| बुध | ० | १० | ६ | केतु | १ | ७ | ० | शुक्र | १ | २ | ० | रवि | ० | १० | २४ | चंद्र | १ | ४ | ० |
| केतु | १ | ४ | ६ | शुक्र | १ | ८ | ० | रवि | ० | ४ | ६ | चंद्र | १ | ६ | ० | भौम | ० | ११ | ६ |
| शुक्र | १ | ० | ० | रवि | ० | ६ | ० | चंद्र | ० | ७ | ० | भौम | १ | १ | १८ | राहु | २ | ४ | १४ |

॥ ५३ ॥ अथ रवि दशा फलम् ॥ दैवं तं च निज वं ध

॥ ५४ ॥ विद्योग दुःखं उद्देग रोग भय चौर भवा च पीडा ॥ पूर्व स्थितस्य निरिवल त्वपनस्य नाशो-

भानो

दै दशा

जनन

काल

दशा

भवंति

॥ ५४ ॥

॥ अथ

चद्रस्य

१४६

| प्रलेः गंदर्वर्धन १०० | | | | बुधस्य गंदर्वर्धन १०० | | | | कितीः गंदर्वर्धन १०० | | | | सुकस्य गंदर्वर्धन १०० | | | |
|-----------------------|------|----|-----|-----------------------|------|----|-----|----------------------|------|----|-----|-----------------------|------|----|-----|
| उतः भाष्यः भानुष्या | | | | ज्येष्ठा | | | | मूलः आश्विनी | | | | पूर्वाषाढा भरणी | | | |
| नाम | वर्ष | गम | दिन | नाम | वर्ष | गम | दिन | नाम | वर्ष | गम | दिन | नाम | वर्ष | गम | दिन |
| शनि | ३ | ० | ३ | बुध | २ | ४ | २० | केव | ० | ४ | २० | शुक्र | ३ | ४ | ० |
| बुध | २ | ० | २ | केव | ० | ११ | २० | शुक्र | २ | २ | ० | चर्य | २ | ० | ० |
| केव | २ | २ | २ | शुक्र | २ | २० | ० | एष | ० | ४ | २ | चंद्र | २ | ० | ० |
| शुक्र | ३ | २ | ० | गुरु | ० | १० | २ | चंद्र | ० | १० | २ | भौम | २ | २ | ० |
| गुरु | ० | १० | १२ | चंद्र | २ | ४ | ० | भौम | ० | ४ | २० | राहु | ३ | ० | ० |
| चंद्र | २ | ० | ० | भौम | ० | ११ | २० | राहु | २ | ० | १० | गुरु | २ | ० | ० |
| भौम | २ | ० | २ | राहु | २ | २ | २० | गुरु | ० | ११ | २ | शनि | ३ | २ | ० |
| राहु | २ | २ | २ | गुरु | २ | ३ | २ | शनि | २ | २ | २ | बुध | २ | २ | ० |
| गुरु | २ | २ | २ | शनि | २ | ० | २० | बुध | ० | ११ | २ | केव | २ | २ | ० |

भूतर्दशा फलम् ॥ हेमादि भूति वरवाहन यान लाभः शत्रु प्रताप वल हृदि परं परात् ॥ वृष्टा
 न्मदान शयना सन भोजनानि नूनं सदा शशिश दशा गमने भवन्ति ॥ ४५ ॥ अथ भीमस्य
 अंतर्दशा फलम् ॥ भूपाल चौरभय बन्धु कृता च पीडा सर्वाङ्गि रोग भय दुःख सुदुःखि
 ता च ॥ चिंता ज्वरश्च बहु कष्ट दरिद्र युक्तस्तथा त्सर्वदा कुज दशा जनने भवन्ति ॥ ४६ ॥
 अथ राहोः अंतर्दशा फलम् ॥ दीनो नरो भवति बुद्धि विहीन चिंता सर्वाङ्गि रोग भय दुःख सुदुःखि
 ता च ॥ पापानि बंधु बहु कष्ट दरिद्र युक्तं राहो दशा जनन काल दशा भवन्ति ॥ ४७ ॥
 अथ गुरोः अंतर्दशा फलम् ॥ राज्याधिकार परी वर्धति चित्त दक्षिं धर्माधिकार परी पालन
 सिद्ध वृद्धिं ॥ सहि गृहेऽपि धन धान्या समृद्धि ता च स्याद्विवाता गुरु दशा गमने भवन्ति ॥
 ४८ ॥ अथ ग्रनेः अंतर्दशा फलम् ॥ मिथ्या पवाद बंधवंधन मर्ष हानि क्षिन्ने च बंधु वचने बुच्च
 मुद् बुद्धिः ॥ सिद्धं च कार्यं नपि यत्र सदा विनष्टं स्यात्सर्वदा शनि दशा गमने भवन्ति ॥
 ४९ ॥ तुषस्य अंतर्दशा फलम् ॥ दिव्यांग नाम दन संगम केलि सौख्य नाना विलास मभिराग

॥ हेमादिरत्नविभवागमकोशध्यानं स्यात्सर्वदा बुधदशागमने भवे
 ति ॥ ६० ॥ अथकेतोः शतदशाफलम् ॥ भाव्या वियोगजनितं च शरीर दुःखं दुःखस्य हा
 निरति कष्ट परं परात् ॥ रोगाश्च वंधुकलहश्च विदेशता च केनोदशाजनन काल
 दशा भवति ॥ ६१ ॥ अथ शुक्रस्य शतदशाफलम् ॥ आगमं हृदि परि सर्वशरीरं हृदि प्रवेतात
 पत्र धन धान्य समी कुलं च ॥ आयुः शरीर सुत पौत्र सुखं नराणां दुःखं च भार्गव दशागमने
 भवति ॥ ६२ ॥ अथ योगिनीदशाफलम् ॥ तर्क्षपिना किं नयनेः संयोज्यं वसुभिर्भजेत्
 ॥ योगिन्यद्वैतो समाख्याता शून्य पातेन संकटा ॥ ६३ ॥ अथ योगिनीनां नामानि ॥ संगलापि-
 गला धान्या भ्रामरी भक्षिका पितृ ॥ उल्का सिद्ध संकटा च योगिन्यद्वैतो दशाः स्मृताः ॥ ६४
 ॥ अथ वर्य संख्या ॥ एक द्वित्रीणि चेदाश्च पंच षट् सप्त मानि च ॥ द्वादश वर्षाणि हि भवे मंगला
 यस्तनु क्रमात् ॥ ६५ ॥ अथ दशायाः फलम् ॥ संगला मंगला नंद यशो इविण दायिनी ॥ विंगला
 तनुते व्याधि म्मनसो बुध संभ्रमी ॥ ६६ ॥ धान्याधन सुहृद्वैद्य रूप सीमन्निनी करी ॥ म्या

मरी जन्म भूमि मी आमये त्सर्वतो दिशं ॥ ६७ ॥ भद्रिका सुख संपत्ति विला सवग्र दायिनी
 उल्का एज्य धना श्रेय्य हारिणी दुःख कारिणी ॥ ६८ ॥ सिद्धा साधयते कांक्ष्यं नृणां वै सु-
 खदा भवेत् ॥ संकटा शंकटा व्याधि मरण क्लेश कारिणी ॥ ६९ ॥ अथ दण्डवत्संख्या ॥ रविदि-
 न नख संख्या चंद्रमा व्योमवारौः क्षिति तनय गजाश्वी चंद्रजः षट् प्रराश्व ॥ प्रानिरस
 गुण संख्या वाचयति नागवाहौ नयन युग कैराहुः सप्ततिः शुक्र संख्या ॥ ७१ ॥ जन्मना
 विंशतिः सूर्ये तृतीये दश चंद्रमाः ॥ भौमश्चतुर्थे चाष्टौ च पथे बुध चतुर्थके ॥ ७२ ॥ सप्त-
 मं दश सौमिः स्या नवमे चाष्टमे गुरोः ॥ दशमे राहु विंशत्या तदूर्ध्वे तु भृगोर्दश ॥ ७३ ॥ अ-
 थ फलम् ॥ पंधा भोगो नृतापश्च सौख्यं पीडु धनं क्रमात् ॥ नाशः शोकश्च सौख्यं च जन्म स्म-
 र्य दश फलम् ॥ ७४ ॥ अथ ग्रहाणां दिनदश प्रकारः ॥ तिथि वारं च नक्षत्रं नासाक्षरसमन्वि-
 तं ॥ नवमिष्व हरेद्भागं श्रेष्ठं दिनदशो ह्येते ॥ ७५ ॥ रवि चंद्रौ भौम राहु गुरु मंद बुध के सिक्ते ॥
 क्रमेणैका दशा व्योमाः फलं पूर्वोक्तं ने वहि ॥ ७६ ॥ आपत्तं ॥ चतुर्गणा जन्मनाशतिश्च चार-

समन्विता ॥ नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ ७६ ॥ रवीच श्लोकसंतापो श-
 रांके क्षेमलाभको ॥ भूमिपुत्रे तु मृत्युः स्याद्बुधे भद्रा विवर्द्धनं ॥ ७७ ॥ गुरो विंशं भृगो सौख्यं
 ग्रनौ यीडा न संप्रथयः ॥ राहोच घातयातौ च केतौ मृत्युर्दश फलम् ॥ ७८ ॥ अथ स्तनयानम् ॥
 अन्नप्राशन नक्षत्रे दिवसोदय राशिरु ॥ जातकर्मोक्तनक्षत्रे श्रवा ॥ त्रयपुनर्वसौ ॥ ७९ ॥
 ॥ त्यक्ता स्वर्ती स्तन्यपानं शुभं प्रोक्तं शुभे हनि ॥ एकत्रिंशद्दिने चैव पयशं खेन पाययेत् ॥
 ८० ॥ अथ सूतिकाक्कायः ॥ भैवज्यगदिते धिले वारे दुर्व्योगवर्जिते ॥ आरोग्यहेतवे कौश्लः
 सूतिकायाश्च ताच्छिशोः ॥ ८१ ॥ अथ सूतिकापथ्यम् ॥ अन्नाश नोक्त नक्षत्रे शुभाहे सांशुमा
 लिनि ॥ हिल्वा ऋक्तां च दुर्व्योगं सूतिका पथ्यमीरितम् ॥ ८२ ॥ अथ पंचमी पक्षी पूजा ॥ जन्म
 तः पंचमे घत्नी जीवत्याः पूजनं निश्चि ॥ षष्ठे गृहि षष्ठिका पूजागीतैर्जागरणादिभिः ॥ ८३ ॥
 ॥ अथ सूतिका स्नानम् ॥ हस्ते मृगोऽनुराधायां रोहिण्या रेवती हूये ॥ उत्तरा त्रितये स्वर्तो जीवार्क
 कुजवासेरे ॥ ८४ ॥ सूती स्नानं प्रग्रास्तं स्याद्दिहाया इति त्रयं श्रवम् ॥ विप्रग्रास्वा भरांगीमूलं

चित्राख्यं कृतिकां संधा ॥ ८५ ॥ ऋतुं वुधं शनिं षष्ठीं द्वादशीं मष्टमीं नन्धा ॥ अथार्धक-
 स्य दंतोत्पत्तौ फलम् ॥ उपरि प्रथमं यस्य जायते च शिशोर्द्विजाः ॥ दंतैर्वा सह यस्य स्याज्ज-
 न्य भार्गव सत्तम ॥ ८६ ॥ स्वात्मानं प्रथमे मासि द्वितीये चानुजो स्तथा ॥ तृतीये भ-
 गिनीं तुर्थे मातरं पंचमेऽग्रजान् ॥ ८७ ॥ निहन्या द्वादशीं सप्तौ सप्तं स्त्वर्भकोऽखि-
 लान् ॥ षष्ठा दौ लभते भोगानूर्द्ध्वं पंक्ताव सत्सदा ॥ ८८ ॥ दंतानां मष्टमे मासि षष्ठे-
 मासि ततः पुनः ॥ दन्ता यस्य च जायते माता वाग्नियते पिता ॥ ८९ ॥ बालको मृत्यु-
 ते तत्र स्वयमेव न संशयः ॥ अथ दंतनिर्मुक्तिः ॥ प्रथमं दंत निर्मुक्तिं रुद्धं बालस्य चेद्भ-
 वेत् ॥ क्लेशाय मातुलस्यै ह तथा प्रीक्षा महर्षिभिः ॥ ९० ॥ अथ जलपूजा ॥ पुनर्वसू हूये
 हस्ते मृगे मूलानुराधयोः ॥ अवे गुरो वुधे चंद्रे सत्तिथौ जलं पूजनम् ॥ ९१ ॥ गुरोः शु-
 क्रेऽस्तमे चैत्रे पौषे च मलमासके ॥ मास पूतौ विशुद्धा हेन कुर्याच्च जलार्चनम् ॥
 ९२ ॥ अथ रोला रोहणम् ॥ खट्वारो हस्तकर्त्तव्यो द्वादशे द्वादशे दिवसे

॥ १ ॥ ततस्तृतीये कर्तव्ये मासि सूर्यस्य दर्शनम् ॥ चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोः प्र-
 दस्य दर्शनम् ॥ २ ॥ मैत्रे पुष्य पुनर्वसौ प्रथमभे यौलेऽनुकूले विधौ हस्ते चैव सुरे श्व-
 रे च मृग भेता ए सुशस्ता सुच ॥ कृत्ती निःक्रमणं शिशोर्बुध गुरु शुक्रे श्वरि के तिथौ क-
 न्या कुंभ तुला मृगा रिभवने सौम्य गहा लोकिते ॥ ३ ॥ अथ कटि स्नानं भूम्युपवेष्टनम् ॥ पुष्य
 हस्ताश्विनी मूले श्रुतरे रोहिणी मृगे ॥ ज्येष्ठाया सन्नुराधाया शुभाहे मासि पंचमे ॥ ४ ॥
 कुजे शुद्धे सम भ्यर्च्य वाराहं धरणी भुवि ॥ कटि सूत्र मयो बद्ध्वा वालं कं चोपवेशयेत् ॥
 ५ ॥ पुस्तकं लेखनीं प्रास्त्रं तथा रोप्य च कांचनम् ॥ तस्मिन्काले यदा दत्ते तद्बुल्या जीव-
 नं शिशोः ॥ ६ ॥ अथान्नप्राशनम् ॥ धुग्मेषु मासेषु च षष्ठ मासा तसो वत्सरे वानियतं शिशु-
 नान् ॥ अथुग्म मासेषु च कन्यकानां नवान्न सं प्राशनं सिद्ध मे तत् ॥ ७ ॥ रेवती हित
 ये पुष्ये पुनर्वसु नुराधयोः ॥ अवराणादि त्रये हस्त त्रितये रोहिणी मृगे ॥ ८ ॥ कर्णवैधं
 तथा पानं क्षुरकस्मीन्नं भोजनम् ॥ पटुबंधनं चैलान्न प्राशने चोपनायने ॥ ९ ॥ शुभमे ॥ २५३

१२४ ॥ जना नक्षत्र मशुभं त्वन्य कर्मीणि ॥ उत्तरा शु विष्टुद्धे च दश मे शुभ वासे ॥ १० ॥ गोष्ठ
 कुंभ तुला कन्या सिंह कर्क नृ युग्म काः ॥ शुभदा राशय श्रुते नमी न मेघ दृष्टिकाः ॥
 ११ ॥ हित्वा ऋतं तथा नंद मयमी द्वादशी तथा ॥ तिथेः क्षय ममां वारान् शनि भौमा-
 र्क संज्ञकान् ॥ १२ ॥ जन्म राशि विलग्नाभ्यां नैधने श्रे च वर्जयेत् ॥ संपूर्णे न्द्रभया
 दृश्यो मध्ये दुः पूर्ण संज्ञकः ॥ १३ ॥ विनष्टे न्द्र भयाद्यम्यो मध्ये ऽसौ क्षीणा सञ्ज्ञकः
 ॥ ॥ अथ तां वूल भक्षणम् ॥ सार्द्ध मास द्वये दद्यात्तां वूलं प्रथमं शिशोः ॥ कर्पूरदि कंसे
 मिश्रं विला शाय हिताय च ॥ १४ ॥ मूलार्कं तिष्य कर चित्र हरीन्द्र भेषु यौल्ले तथा सुग
 शिरो दिति वासवेषु ॥ अर्केन्दु जीव भृगु वौधन वासरेषु तां वूल भक्षणा विधि म्भूनि-
 भिः प्रादिष्टः ॥ १५ ॥ अथ कर्ण वेधः ॥ मासे षष्ठे सप्तमे वाद्यमेवा वेध्यौ कर्णौ द्वादशे यो-
 दुश्रे ऽन्दि ॥ मध्ये नान्हः पूर्व भागेन रात्रौ नक्षत्रे द्वे द्वे तिथी वर्जयेत् ॥ १६ ॥ रेव-
 ती हितये पुष्ये पुनर्वसु नुराधयोः ॥ अत्राण द्वितये चित्रा मृगे हस्ते शुभे तिथौ ॥ १७ ॥ १५

आरभ्य जन्म दिवसं याचस्त्रिंशद्दिनं भवेत् ॥ जन्म मासः सुविद्वो योषज्जितस्सर्वकर्मसु १५५

॥ हित्वा वमं चैत्र पौषौ जन्म मासं हरे प्रणयम् ॥ युगमादं जन्म दिक् चैकोन विंशतारं
 यथा क्रमात् ॥ १८ ॥ द्वेज्य शुक्रेन्दुवारेषु शस्तं विषम वर्षके ॥ सुतौ शुद्धे त्रिकारोऽ-
 थ केन्द्रे शुभ गृहा न्विते ॥ १९ ॥ स्वग्रहे गुरु शुक्रे वा त्रिषष्ठे कादशेऽशुभे ॥ गुरौ लब्धे
 ऽष्टवा कुर्व्यात्कर्णं वेधं शुभा वहम् ॥ २० ॥ कर्णं वेधोक्तं भे शस्तं कन्याया घ्राणवे-
 धनम् ॥ अथाब्दमुहूर्तम् ॥ प्रतिवर्षं तु जन्माहेत्याया दुत्सव पूर्वकम् ॥ गणेशं वा स-
 मभ्यर्च्य देवताश्चिरजीवितः ॥ २१ ॥ कृत्वा युष्यं च विधुक्तं कर्मदानान्यनेकशः
 ॥ वध्वा मंगलं घृतं च भुक्ता मिष्टं द्विजैस्सह ॥ २२ ॥ अथ चूडाकर्म ॥ जलाशयं सुरा-
 मप्रतिष्ठा व्रतवन्धनम् ॥ अन्या धानं विवाहं च चौलं राजाभिषेचनम् ॥ २३ ॥ शु-
 रं भागवियो रस्ते बाल्यं वार्द्धक्योऽपि ॥ केतूदयेऽपि वै न स्यादिति विद्वत्स्य संमतम्
 ॥ २४ ॥ दृष्टाद्देवपश्चिमे बाल्यं पंचाहं वार्द्धकं भृगोः ॥ प्राच्यानु निदिनं बाल्यं पश्चिमाहं

कमुच्यते ॥ २५ ॥ पक्षं वाल्यं च वार्द्धक्यं गुरोः स्त्याज्यं शुभे सदा ॥ दृग्गहं वाल्यवार्द्धक्यं
 गुरोः सप्ताहं सूचिरे ॥ २६ ॥ अहं चावश्यं के कृत्ये केचिद्भार्गवजीवयोः ॥ श्रुक्तो गुरुः प्रा-
 क्यरतश्च वालो विंध्येदृशावति यु सप्त रात्रम् ॥ वंगेयुर्हृल्लोयु च घटं च पंचशेषे तु देशे
 त्रिदिनं निषिद्धम् ॥ २७ ॥ अथ श्रुक्तो दयालमानम् ॥ प्राच्यानेत्रेषु दिग्घृत्तान् २५२
 दृश्यो भवति भार्गवः वसुशैल ७८ मितो स्तत्र यातोऽस्तं नैव दृश्यते ॥ २८ ॥ ख-
 वाणाश्च मितान् घृत्तान् २५० प्रतीच्यां दृश्यते शृगुः ॥ तत्रैवार्कं करग्रस्तो न बाहो
 निन दृश्यते ॥ २९ ॥ अथ गुरुर्दयालमानम् ॥ प्रायो वाचस्य तिम्र्मा स भवती क्षरागो-
 चरः ॥ प्राच्या मुष्यते मासं याति पश्चात्तु वत्सरान् ॥ ३० ॥ अथेक्षोर्वाल दृढत्वम् ॥ दृ-
 ष्ट्व मितो स्त्रिदिनं दिनार्द्धं वाल त्व मस्तत्त्व महर्द्धं च ॥ हिनोक्तं मेकं दिवसं प्राशु
 त्वमित्येतदिं दोस्तादयुक्तमेव ॥ ३१ ॥ अथ केतुद्वयम् ॥ त्रिष्टिं रवाश्च त्रिताराश्च रक्त
 लोहितरश्मयः ॥ प्रायश्चात्तूतारं माशं सचन्ते नित्यमेव हि ॥ ३२ ॥ केतो रस्तदिना २५६

स शिदूर्जं सप्त रात्राणि वर्जयेत् ॥ ब्राह्मणुन्नोद्गमे वर्ज्यं मृत यात्रादि मंगलम् ॥ ३३ ॥ ब्रह्मसु-

त एव निशि खोवर्गो स्त्रिभिर्धुगान्तकरः ॥ अनियत दिवसं प्रभुवो विद्वेयो ब्रह्मद्वारव्यः
॥ ३४ ॥ केतो रस्स दिना दूर्जं सप्ताहं मंगलं त्यजेत् ॥ यावन्केतुं ह्यस्ता वरं शुद्धस्समयोद्दि-

सः ॥ ३५ ॥ केतूद्वये सप्त दिनानि चोर्द्धं विहाय यात्रादिषु गर्हितानि ॥ दिनानि श्रेयाणि-
शुभानि नूनं वर्दन्ति रैभ्य प्रमुखा मुनीन्द्रा ॥ ३६ ॥ चैलं संवत्सरे पूर्णे त्रितया द्विषमे चरे-
त् ॥ सौम्याग्रने विचित्रेषु क्षेज्य शुक्लेन्दु वासरे ॥ ३७ ॥ जय स्याद्ब्रह्मण स्याकै क्षत्रिय-
स्य कुजे हनि ॥ मंदाहे वैश्य शूद्राणां चै लोक्त तिथिभादिषु ॥ ३८ ॥ हस्ताश्वि विसु-
षौलानि अविद्या दित्य पृथ्व्यभम् ॥ सौर्यचित्रे तथा क्षौरे उत्तमान वतारकाः ॥ ३९ ॥

श्रीरायुचराणि वायव्य रोहिणी वारुणं तथा ॥ क्षौरे षण्मा धमा प्रोक्ता श्रेष्ठा द्वादशग-
र्हिताः ॥ ४० ॥ क्षौरे देशजन्मलग्नं शुभम् ॥ कृषिं प्रयाणं क्षौरे च विवाहः प्राशनं तथा ॥ श्रि-
शोर्वर्त्तनं च नानं च जन्म राशौ शुभं भवेत् ॥ ४१ ॥ पातम राशुदये षष्ठे द्वादशे निधने

तथा ॥ शत्रुक्षेत्रे च नीचे च क्षौरं नैव प्रशस्यते ॥ ४२ ॥ सेवे दुःखो सुगेहे च वृद्धि
 के व्यग्रं भवेत् ॥ राजा वीधे च धनुषि शुभयुक्तेन सुख्यति ॥ ४३ ॥ विषयशत्रुजलेषु
 रे पीड्यते मरणा न्वितः ॥ क्षौरे मृत्युर्घटे लग्ने शुभयुक्तेऽपि सस्यतः ॥ ४४ ॥ यामित्रे
 भास्करे क्षौरे मृत्युस्स्याद्भूमिजे तथा ॥ शुक्ले सौख्यविना शस्त्रान्मंदभाग्यं घने प्रे
 ॥ ४५ ॥ लग्ने रवेदेव लोयेते चंद्रतारां वलान्विते ॥ ज्येष्ठे ज्येष्ठस्य नो मासे मार्ग
 शीर्षेऽपि के चन ॥ ४६ ॥ सूनो मार्गशिर्षे राश्यां चूडा कर्मन कारयेत् ॥ पंचमा
 व्यात्मा राश्यां राश्यां मपि कारयेत् ॥ ४७ ॥ यस्य नागालिकं कृत्यं तस्य माता
 रजस्वला ॥ तदा मृत्युमवाप्नोति पंचमं दिवं विना ॥ ४८ ॥ विवाहो तस्य कार्येषु
 माता चैव रजस्वला ॥ वैधव्यं जायते तत्र च नाथ्योः पारिणीहने ॥ ४९ ॥ अथाक्षरा
 रंभः ॥ सौम्यायने शुभे मासि स्वाध्याय दिवसे शुभे ॥ रवौ जीवे बुधे शुक्ले लग्ने रवेदव-
 ला न्विते ॥ ५० ॥ रेवती द्वितये पुष्ये पुनर्वसु नराधयोः ॥ आर्द्राख्ये अवरो हस्ते स्वातो

चित्राभिधेतथा ॥ ५१ ॥ हेरं चांवेच वाग्देवी तथा व्यर्च्यष्ट देवताः ॥ पंचमाब्दे नरः
 कुर्यात्स्त्रियां भंबुधः सत्वा ॥ ५२ ॥ अथोपनयनम् ॥ आयोदश द्वाह्म रास्यसावित्री
 नाभिवर्त्तते ॥ आच्छादित्वा द्वाह्म वंधोरा चतुर्विंशति द्विजः ॥ ५३ ॥ अन ऊर्द्ध त्रयी-
 व्येते यथा काल मसं स्मृताः ॥ सावित्री पतिना ब्राह्मी भवत्यपि च गार्हिता ॥ ५४ ॥
 कश्यपः ॥ अतौ वसंतं विप्राणां गोत्रे राक्षसं सरद्यथ ॥ विशं मुखं च सर्वेषां ह्रिजानां
 चोपनायनम् ॥ ५५ ॥ साधारणं च मासेषु माघादिषु च पंचसु ॥ विन तु ना वसंते न
 कृत्स्न पक्षे गल ग्रहे ॥ ५६ ॥ अपराह्णं चोपनीतः पुनः संस्कारं मूर्हति ॥ त्रिधा विभज्य
 दिवसं तत्रादौ कर्म वैदिकम् ॥ ५७ ॥ द्वितीये मानुषं कार्यं तृतीयेः श्रेतु ये तत्कम् ॥ चंद्रो-
 लभेऽति शस्तः स्यात् क्षययोगी श्लेते तरे ॥ ५८ ॥ शुक्ल पक्षे भवेद्यज्या स्वभेतुंगोति
 शेषतः ॥ वर्द्धमानोऽपि वा पूर्णः चन्द्रो यदि विलयतः ॥ ५९ ॥ निःसं करोति व्रतिनं लग्नगः क्षयरे-
 गिराम् ॥ श्राव्साधिपतिवारश्च श्राव्साधिपवत्वं शिशोः ॥ श्राव्साधिपतिलं न च भित्तयं दुर्लभं च-

ते ६० प्राखेष्ण गुरु शुक्राणां मौढ्यो वाल्ये च वार्द्धके ॥ ६१ ॥ नैवीप नयनं कार्यं विरो
 प्रो दुर्वले स्मृते ॥ प्रबुद्धीचाधि शत्रुस्ये स्वाश्रे वास्वो च भागमे ॥ ६२ ॥ प्राखे श्रे वा
 गुरो शुक्ले ननीच फल मस्युते ॥ जन्मो वये जन्म सुतारका सु मासे तथा जन्म तिथौ
 च राशौ व्रते न विप्रोऽल्य परिश्रुतौऽपि राक्षो विशेषः प्रथितः पृथिव्याम् ॥ ६३ ॥ म
 भीष्ट मे गर्ग पराशरद्वैः फलं यदुक्तं व्रत वंधने तु ततोऽधिकं जन्म सु तारका सु मासेऽथ
 वा जन्म निवाड वानाम् ॥ ६४ ॥ जन्म क्ष मास लग्ना दो व्रते विद्याधि को व्रती ॥ आद्य
 गर्भे तु विप्राणां क्षत्रादीना मनादिमे ६५ ॥ बालस्य बलहीनोऽपि प्रात्याजीवी बलप्रदः
 ॥ ६६ ॥ यथोक्त वत्सरे कार्यं मनुक्ते नोपनायनम् ॥ व्रतेऽपि वर्धन गुरु वली चेच्छा
 त्या प्रशस्त व्रत वंध कर्म्म ॥ अनुक्त वर्षे सुवल प्रहोऽपि नैव तयो रब्द बलं गरीयः ॥ ६७
 ॥ व्रत वंधे निवाहे च प्रातिद्यायां विशेषतः ॥ गोचरे लोव कर्त्तव्यं वेधादिक मकारणम्
 ६८ ॥ वेधस्तु ॥ व्यये पक्षे स्त्रिगे मेलीः खगे नंदे सुखे शरैः ॥ रंध्रे रुद्धे ग्रहे विद्धे गरुः ॥

॥ अथ पुनर्वापुः ॥ १० ॥ अथ वर्गविशेषेण गुरु शीतां शुभा नृषु ॥ वनोद्गा
होतुकर्त्तव्यौ गोचरेण कदाचन ॥ अष्टवर्गेण वे सुद्वयं स्ते प्रुद्धा सर्वकर्मसु ॥ ७२ ॥
मे ॥ ७३ ॥ यद्ये चैका दशे ऽब्दे वाक्षनिघ्राणा सुदीरितः ॥ वैश्यानां द्वादशे ऽब्दे स्या
नांतु चतुर्विंशद्गौरा कालप्रदाहतः ॥ ७४ ॥ निजवर्गेण शरावेण भ्रातृत्वद्वारा मृत-
पुत्रिवेशेभूमुजां रविमौलौ ॥ विष्णोर्द्वौ द्वौश्च संज्ञाणां ज्ञानं पतिः शक्तिः ॥ ७५ ॥
अथ वेदाधीशः ॥ ऋग्वेदे शो गुरुः प्रोक्तो यजुषां भार्गवः पतिः ॥ सामवेदे श्वरो मौनः पति
आथर्वणो बुधः ॥ ७६ ॥ अथ गुल्फदिक्पालः ॥ गुरुः सूर्यं वलं ज्ञेयं विचारं यद्विवक्ष्यते ॥
चंद्र तारं वलं पूर्वं मुक्तं मांसं वलः शुभम् ॥ ७८ ॥ अथ मासादिः ॥ साक्षात्यं च सुमासेषु १६

शुक्ले जीवन् भागवि ॥ केचिन्नु क्लृप्ते पक्षेऽपि प्रथमत्रिलवे जगुः ॥ ७६ ॥ अथ तिथयः
 द्वित्र्येकादशद्विकं च द्वादश प्रमिते तिथौ ॥ अश्विनी मृगशिरासु हस्ते स्वात्वां च शु-
 क्रभे ॥ ८० ॥ पुष्ये च पूर्वफाल्गुण्यां श्रवणे पौष्णभे तथा ॥ वासवेशत तारासु व्रतबंधः
 प्रशस्यते ॥ ८१ ॥ अथ प्रतिवेदनक्षत्राणि ॥ मूले हस्तत्रये सार्य्य सैके पूर्वात्रये तथा ॥
 चरवेदध्यायिनां कार्य्यं मेखलावं धनं बुधैः ॥ ८२ ॥ पुष्ये पुनर्वसौ पौष्णे हस्ते मेने प्र-
 शंकभे ॥ भौवेवु च प्रशस्तं स्याद्यजुषां मों जिवंधनम् ॥ ८३ ॥ पुष्यवासवहस्ता-
 श्विशिव करोन्नरात्रयम् ॥ प्रशस्तं मंजुलावंधे चट्नां सामगायिनाम् ॥ ८४ ॥ मृगश-
 र्वाश्विनी हस्ते रेवत्यदिति वासवम् ॥ अथर्वयाहिनां शस्त्रोभगणोऽयं व्रताप्यैरे ॥
 ८५ ॥ नच साधारणी नक्षत्रविशेषः ॥ पुनर्वसौ व्रतं नेष्टं शतभे केच नैतिच ॥ अथ व्रते नि-
 ब्धिम् ॥ क्लृप्ते पक्षे रान्त्रो व्रदेगे चागल गृहे ॥ अनाध्यायेऽपरहस्ते दानं कुर्वाद्वा
 तवंधनम् ॥ ८७ ॥ अथानाध्यायः ॥ संक्रातिर्युगमन्वादी द्वितीया ज्येष्ठ शुक्लगा ॥

चैत्र कृत्स्न तृतीयाच द्वादशी माघ शुक्ल जा ॥ ८८ ॥ प्रति पक्षे ऽष्टमी चैव चतुर्दश्याः
 दिनत्रयम् ॥ अनाध्याया दर्मेव ज्या स्वाध्याय व्रत वंधयोः ॥ ८९ ॥ अथ प्रहोयः ॥ च-
 नुधी प्रबसे यागे याम युग्मे त्रयो दशौ ॥ सप्तमी सार्द्ध यागे च अदोष सस्या न्निष्ण मुले
 ॥ ९० ॥ अथ गलग्रहाः ॥ सप्तम्या स्थितयं चैव त्रयोदश्या श्वतुष्टयम् ॥ चतुर्थी चैकतः
 प्रोक्ता अष्टा वैते गलग्रहाः ॥ ९१ ॥ अथ लग्नफलम् ॥ त्रि ३ षट् ६ संस्थाः खलाः रेव १०
 कं चंद्रो द्वि २ धन ७ ख १० त्रि ३ गः ॥ सौम्याः केन्द्र त्रिकोण स्थाः १।४।७।१०।९।
 ५। लाभे सर्वे व्रते शुभाः ॥ ९२ ॥ जीवेन्तु भृगु लग्ने ण व्रते नेष्टा षडष्टगाः ॥ शु-
 क्रेन्तु व्यय गौनेष्टौ खला लग्नाष्ट पंचगाः ॥ ९३ ॥ व्रते सौम्या ऋशुभाः प्रोक्ताः षड-
 षांस्त्य विवर्जिताः ॥ शुक्ले स्वर्क्षो च गंश्चक्ष्णेलग्ने अष्टो रविः कचित् ॥ ९४ ॥ द्वे-
 ज्य शुक्रांश गो लग्ने चंद्रः शस्तो व्रते मतेः ॥ नान्यत्राथ निजां श्रेष्ठः पुनर्वसु अवे शु-
 भः ॥ ९५ ॥ अथ केन्द्रस्य खेटफलम् ॥ भूपा अय्यौ चरिगक् वृत्तिः शस्त्र मृत्यात्य को मतः ॥ ९६ ॥

॥ पंडित प्रार्थ्य वानूस्तेस्सेवी केन्द्रेऽर्कतः क्रमान् ॥ ८६ ॥ अथ त्रतयोगः ॥ ल
 ॥ ग्ने गुरु भृगुः कोणो धुक्रांशेऽब्जे व्रते शुभः ॥ गुरु श्वंद्रो भृगुर्नेष्टो रवि भौमार्कि
 संयुतः ॥ ८७ ॥ अथ चैत्र प्राणस्थम् ॥ गो चण्डक वर्गाभ्यां यस्य शुद्धिर्नलभ्यते ॥
 तस्योप नयनं कार्यं चैत्रे मीन गते रवौ ॥ ८८ ॥ हरौ सिहां शरी जीवे नीच र्क्षे नीच
 भा गणे ॥ भौजीविंशः शुभः प्रोक्तं श्वेत्ने मीन गते रवौ ॥ ८९ ॥ अथात्र मातुः रजो दीये
 विधेयः ॥ मातूरज स्वला दोषो नादी आद्धोत्तरं तथा ॥ आषष्ठ्य के व्रतं चैलं शंगत्या
 शुद्ध्यात्कर ग्रहन् ॥ ९० ॥ अथ केशंत समावर्त ॥ चैलीक सनये काथ्यं केशांतं दोड ॥
 प्राव के ॥ व्रत वंधोक्त काले तु समावर्त न मीरितम् ॥ ९० ॥ अथ रत्नां क्षुरिका वंधनम् ॥
 व्रतोक्त मास तिथ्यादौ विचित्रे सवले कुजे ॥ विभेमे क्षुरिका वंधं प्रारिचवा हात्मही
 भुजान् ॥ ९० ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू दत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाक्षेया प्र-
 मेयं हि चतुर्दशे ॥ ९० ॥ इति संग्रह शिरो मणौ संस्कार कथनं नाम चतुर्दशी प्रभा

सं-श्रिः ॥ २४ ॥ अथ विवाह प्रकरणम् ॥ आया धन्मार्थे कामानां साध्वी चेत्सा धनं भवेत् ॥ प्रो
 १६५ लं लग्नव प्रातः स्याः शुभं लग्नमथोब्रुवे ॥ १ ॥ देवज्ञं सुदिनेऽय्यर्च्यतां वृत्त
 श्री फलादिभिः ॥ विद्वाप्यगंतयोः पुच्छे द्विवाहं वरकंस्ययोः ॥ २ ॥ प्रप्रेलना
 द्विगी २० प्रा ११ गिन ३ चाल ५ प्रेल अस्थिते विधौ ॥ सद्यः परिणयो जीव हृष्टे स्याद्दूर
 कंस्ययोः ॥ ३ ॥ गौ तुला कर्क लग्ने वा शुभे क्षितयुते तथा ॥ विधम क्षीप्र गौ शुक्र
 चंद्रे चेत्यश्वतस्तनुम् ॥ ४ ॥ बलिनीं वरदे तत्र स्त्री प्रदो सप्त भांशगौ ॥ चंद्रे षष्ठेऽ
 दमे पापे लग्ने वा धूनगे कुजे ॥ ५ ॥ लग्नेऽब्रे वा धून भौमे वैधव्यं चाष्टमेऽब्दे के
 ॥ लग्नाच्च पंचमे पापे नीचस्ये शत्रु वीक्षिते ॥ ६ ॥ सा कन्या मृतवत्ता स्यादथवा
 कुलता भ्रवम् ॥ द्यूने सेंदु भृगो रंहा भौमे वा कुलता शनी ॥ ७ ॥ शुश्रीला शुभ-
 गा जीवे वुधे च प्रश्न लग्नतः ॥ चन्द्रः षष्ठेऽष्टमे षष्ठे वाहुले सग राशिगः ॥ ८ ॥
 क्षरे क्षिते विवाहस्य भंगदः पारे कीर्तिनः ॥ वाहक् संमान संयुक्ता यो पितृस्त्वे संमा

१६६
 व्रजेत् ॥ ८ ॥ तां विलोक्य तथा पत्यं तस्य ग्रन्थे वदेत्सुधीः ॥ शंख भेद्यो दिना-
 द्ध्वेत्प्रश्ने स्यान्मंगलं सदा ॥ ९० ॥ वायसस्य शृगा लादिर वध्नेद् शुभं भवेत्
 ॥ दंपत्यो रंतरा मैत्री विवाहेन सुभा वहा ॥ ९१ ॥ जुंजा वर्गस्तथा वर्गो वष्टयता
 राथ योनिजा ॥ गृह मैत्री गणो राशि मैत्री नाडीति वैदश ॥ ९२ ॥ यथोत्तर वला
 श्चेति विज्ञेयास्तु परस्परम् ॥ गुराधिक्ये समुद्वाहः कर्तव्यो वरकन्ययोः ॥ ९३ ॥
 अथ जुंजा प्रीतिः ॥ पौष्ठादिकं यदुमुशंति पूर्व मार्गदिकं द्वादश मध्य भागम् ॥ पौरु-
 राद्यं नवकं भचक्रं परं च भागं गण काः विदधाः ॥ ९४ ॥ पूर्व भागे पतिः श्रेयो मध्य-
 भागे च कन्यका ॥ परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीति स्म हीयसी ॥ ९५ ॥ अथ वर्ग प्रीतिः ॥
 अश्वर्गो गरुडः प्रोक्तो मार्जारस्तु क वर्गिकः ॥ चवर्गः केशरी द्वयोः द्ववर्गः कुङ्कुरः स्तु-
 तः ॥ ९६ ॥ तंवर्ग स्तर्प्यं संज्ञं स्यात् पवर्गो मूष को मतः ॥ यवर्गो हरिण इत्यथ
 श्ववर्गो मेघ उच्यते ॥ ९७ ॥ गरुडो रगयो वैरं तथा मेघ शुनो रपि ॥ अथ श्वा रवुवि- १६६

डा लस्यात् प्रादूल मृगयो स्तथा ॥ १८ ॥ स्ववर्गा त्येचम प्रशनुश्चतुर्थो मित्र सं-
 हृक्तः ॥ उदाग्निं स्तृतीयं स्तु वर्गं भेदं स्त्रियो च्यते ॥ १९ ॥ वर्गारित्वे महद्गुहं
 वर्गेको घीति रुतमा ॥ कन्यका वर्योश्चेव स्वासि सेवक यो यदि ॥ २० ॥ अथ वर्णप्री-
 तिः ॥ मीनालि कर्करा विप्राः क्षत्री मेघो हरिर्ईनुः ॥ तुला हंह घटाः मूढाः लषक-
 न्या मृगा विशः ॥ २१ ॥ नोत्तमा मुद्ग हेत्कन्या ब्राह्मणी च विशेषतः ॥ मृयते हीनद-
 र्णश्च ब्रह्मण सहस्रो यदि ॥ २२ ॥ वर्षा श्रेष्ठा च या नारी तस्या भर्तानि जीवति ॥ य-
 दि जीवति चेद्भर्ता तदा पुत्रो न लभ्यते ॥ २३ ॥ अथ वयप्रीतिः ॥ युग्मं कुंभं स्तुला कन्या
 प्राग्दलं धनुषो द्विपात् ॥ पराई धनुषश्चैव पूर्वदिं समकरस्य च ॥ २४ ॥ केशरी ह-
 षभाख्यश्च मेघश्चैते चतुः पदाः ॥ मृगोत्तरं दलं मीनो जल चांगी प्रकीर्तितः ॥
 २५ ॥ ककर्दः कीट संज्ञश्च लुश्चिकस्तु सरी स्तपः ॥ सिंहं विना वशा स्सर्वे द्वि पदा-
 नां चतुः पदाः ॥ २६ ॥ मध्या जल चरस्तेषां भय स्थाने सरी स्तपाः ॥ २७ ॥ अथ-

योगे नारमेनी ॥ कन्या भंवर आद्रण्यं वधूभा दूर भक्षया ॥ नव हृच्छेष मेनेयं सप्त यं वज्रि
 संख्य के ॥ २८ ॥ अथ योनि मेत्री ॥ अग्निनी प्रातः अश्या भौ महिषौ स्वाति हरत वे ॥
 पूर्वा धनि यो सिंहाः भरणान्ना भयो गजिः ॥ २९ ॥ कृत्तिका सुखाद्यो मेषः सुखा
 द्या पादयोः कपिः ॥ ऊषा भिजिज्ञयोर्वभू रोहिणी मृगद्यौरहिः ॥ ३० ॥ मृगानुरा-
 धयो रेवाः श्वा मूलाद्रा भौ स्वया ॥ पुनरग्ले षयो रंतु रावुः पूषा मया ह्वयोः ॥ ३१
 ॥ विशाखा चित्रयोर्व्याघ्रौ गौ रुक्मीतर भाष्योः ॥ मैत्री वैर विचारार्थं भाणां प्रोक्तास्तु-
 योनयः ॥ ३२ ॥ गो व्याघ्रं गज सिंह मय्य महिषं श्वैरां च वभू रं वैरं वानरं मेघ
 कंच सुमहत्त द्द द्विहा लो न्दुर्म् ॥ ले कानां व्यवहारतोऽन्य दयि च क्षात्वा प्रयत्ना
 दिदं न्दम्पत्यो न्दं प भृत्य योरपि सत् वज्यं सुभ स्या र्थिभिः ॥ ३३ ॥ अथ ग्रह येनी ॥ सिं-
 न्नाणि द्युमणोः कुजेज्य शशिनः मृक्रार्कजो वैरिणौ सौम्यश्चास्य सन्नो विधो दुधिर
 वी भिन्ने न चास्य दिषत् ॥ श्रेवाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदं श्वं ज्जेज्य सूर्या दुधः

प्रात्रुः शुक्र प्राणी समो च प्राण मृतसूतोः सिता हस्करौ ॥ ३४ ॥ मित्रे चास्य रिपुः
 प्राणी गुरु प्रा निक्षमा जाः समाः गौर्धृते स्मिन्नाण्यर्कं कुजेन्दवी बुधसितौ प्रात्रूसमः
 सूर्यजः ॥ मित्रे सौम्य प्राणी कवे प्राण शिरवी प्रात्रू कुजे ज्यौ समौ मित्रः शुक्र बुधौ प्रा
 नेः प्राशिरवि क्षमा जाः द्विव्योऽन्यः समः ॥ ३५ ॥ वृषत्यो राशिपो मैत्री मिथ स्या-
 च्छोभन नन्दा ॥ ग्रहिते त्वहितं विद्यात्समे वै मध्यमं स्मृतम् ॥ ३६ ॥ अथ मैत्रीफल
 म् ॥ नवर्गवर्गे नंगणो नयोनि द्विद्वाशे नैव षडष्टकेवा ॥ तारा विरुद्धे नवपंचमेवा
 मैत्री यदं स्याच्छुभदो विवाहः ॥ ३७ ॥ अथ गण मैत्री ॥ हस्त स्वती शुक्तिः पुष्योऽनु
 राधारेवती हयंम् ॥ पुनर्वसु नृगश्चैवः प्रोच्यते देवता गणः ॥ ३८ ॥ तिलः पूर्वोत्त-
 राश्च तिलोऽप्यार्द्रं च रोहिणी ॥ भरणी च मनुष्याख्यो गणोऽशः कथितो बुधैः ॥ ३९
 ॥ कृत्तिका च मघा^१ ज्येष्ठा^२ विष्णवा^३ शततारका ॥ चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोग
 णः स्मृतः ॥ ४० ॥ स्वगणो परमा प्रीति र्मध्यमा देव मर्त्ययोः ॥ मर्त्यराक्षसयो र्मृत्युः

कल हो देव रक्षसाः ॥ ४१ ॥ राक्षसी तु यदानारी पुरुषो मानवो भवेत् ॥ विवा-
 हिताय मे मासि सा च भक्षयते पतिं ॥ ४२ ॥ अथ गणदोषा पवादः ॥ मेन्द्र्यां राश्रीं प्रयोरं
 श स्वामिनीं वीरकन्ययोः ॥ न तत्र गणदोषस्या हि वाहं शुभदीमतः ॥ ४३ ॥ रक्षो-
 ना च गणनारी चैतदोद्वाहनं तयोः ॥ योनिमैत्र्या दिनाकार्यमिदं गर्गादि भाषितम्
 ॥ ४४ ॥ अथ राशि कूटम् ॥ राश्योः षड्वाष्टके मृत्यु रित्र कोरो त्वन पत्यता ॥ नैष्वं द्विद्वाद
 ये ज्ञेयं सौख्यमन्यत्र चोभयोः ॥ ४५ ॥ कुमाय्या विषमा द्वाश्रोः षष्ठं तु वरभं न स
 त् ॥ समा द्वाश्रोः शुभं षष्ठं विपरीत मसत्सुतम् ॥ ४६ ॥ वरस्य पञ्चमे कन्या कन्या
 या नवमे वरः ॥ एतन्त्रिकाणकं ग्राह्यं पुनर्यौत्र सुखा वहम् ॥ ४७ ॥ अथ कूटपवादः ॥
 प्रोक्ते दुष्ट भ कूटे ऽपि राश्यो रेकाधिपत्यके ॥ मैत्र्योपनयः श्रेष्ठो हो क नापी न चैतयोः
 ॥ ४८ ॥ तुला वषभयोर्मर्भिनसिंहयोः कुंभ कन्ययोः ॥ धनुः कर्कटयोर्नक्त युगमयोश्चा-
 लिभेषयोः ॥ ४९ ॥ प्रीतिः षड्वाष्टकं चैतन्नदन्यत्वा ज्यमे वहि ॥ ५० ॥ राशि दोषैर्भावे

अपि मैत्री चेत्स्यात्तदंशयोः ॥ नाडी वश्येत्तु ताराणां शुद्धा बुद्धहर्तुं स्मृतम् ॥ ५२ ॥ भा-
 सिनी जन्म नक्षत्रा द्वितीयं पति जन्म भम् ॥ न प्रभुं भर्तुं नाश्रय कथितं ब्रह्मया मले
 ॥ ५३ ॥ अथ नाडी शुद्धिः ॥ ज्येष्ठा मूलाश्वि भार्गव्या द्वयं शत भियां द्वयम् ॥ उत्तरा फाल्गु-
 रणी युगमगद्या नाडी यमीरिता ॥ ५३ ॥ चित्रा पुष्योऽनुराधा च धनिष्ठा भरणी मृगः
 ॥ पूर्वा पादोत्तरा भाद्र पूषा वामय नाडिका ॥ ५४ ॥ रोहिणी कृत्तिका ज्येष्ठा मघा स्वा-
 ती द्वयन्तथा ॥ रेवती चोत्तरायाहा अवराश्चात्य नाडिका ॥ ५५ ॥ दंपत्योरेक नाडी-
 स्थे ऋक्षे नैद्यः करग्रहः ॥ मध्य नाडी गति मृत्यु स्तस्मात्तं सर्वं ध्या त्यजेत् ॥ ५६ ॥
 अथ नाडी दोषा पवादः ॥ राक्षसैके भिन्न भेष्ये के अन्य राशौ तेषैकमे ॥ भिन्नेऽघ्नौ न द्वयो-
 दोषा गण नाडी भकूट जाः ॥ ५७ ॥ अथैकमेऽपि विशेषः ॥ विष्णुयात्री श्रवः पुष्यो रो-
 हिरयुत्तरा भाद्र पात् ॥ रेवती च मघा श्रवः नेतराश्चैकमे द्वयोः ॥ ५८ ॥ अथ नाडी वि-
 षये विशेषः ॥ उक्तं नारदेन ॥ चतुस्त्रिंशं धिभो त्यायाः कन्यायाः कमशोऽश्वि भात ॥

संहि भा विंदुभा न्नाडी त्रि चतुः पंच पर्वसु ॥ गणयेत्संख्यया चैक नाड्यां मृत्यु
 ने संशयः ॥ ५६ ॥ एक नाडी विवाह प्रच गुणैः सर्वैस्समान्वितः ॥ वर्जनीयः प्रय-
 त्नेन दंपत्यो निर्धनयुतः ॥ ६० ॥ गर्गः ॥ चतुःपात्कन्यका ऋक्षं गणयेदाश्विना
 दिकम् ॥ त्रिभंसे व्याप सव्येन भिन्न पर्व शुभावहम् ॥ ६१ ॥ कन्यका मंत्रिपा-
 त्चेत्स्याद्गणयेत्कान्तिका दिकम् ॥ चतुर्भिः पर्वभिस्तद्द्वदभिजित्तारकान्वितम्
 ॥ ६२ ॥ कन्यकां क्षीद्विपात्चेत्स्याद्गणयेत्सीम्यभादिकम् ॥ पंच भिस्त्ववरो हेतुपं-
 चमां गुणिवर्जितम् ॥ ६३ ॥ चतुर्न्नाडी त्वहल्यायां पांचाले पंच नाडिका ॥ त्रि-
 नाडी सर्व देशेषु वर्जनीया प्रगल्भतः ॥ ६४ ॥ अथ नाडी विचारे चंडेश्वरः ॥ पृष्ठ म-
 ध्ये शुभ समान्वितः भोगः क्रोडिवनिता दित्त वियोगः ॥ मध्य रेखे भवति विवाहेऽ-
 भयो मर्माणं वदति चराहः ॥ ६५ ॥ अश्व्यादि नाडी वेधे क्षे क्रमात्यष्ट द्वितीय कम-
 ॥ याम्यादि तुष्यं तुष्यं च कान्तिकादि द्विषष्टकम् ॥ ६६ ॥ अर्धे नुजक्षोणि तनूज

संस्थि जीवाः केतुः सितो राहु प्रशंक प्रोराः ॥ जन्मादि नाडी त्रितये शुभा स्स्युः शुभे शुभं
स्याद शुभेऽ शुभं च ॥ ६७ ॥ नवधा अर्कः १। १०। १६ बुधः २। ११। २० भौमः ३।
१२। २१। गुरुः ४। १३। २२। केतुः ५। १४। २३। शुक्रः ६। १५। २४। राहुः ७। १६। २५।
चंद्रः ८। १७। २६। शनिः ९। १८। २७। अथ नाड्यादि दोषे दानानि ॥ हेमज्य रत्न गो
दानं मृत्यु क्षय जप स्तथा ॥ कुर्यादावश्य को द्वाहे नाडी दोषा पनुत्तये ॥ ६८ ॥ ता
मन्दि द्वाद प्रोदया त्सुवर्षा च्च षडष्टके ॥ गोयुगान्वव पञ्चाख्ये त्वां वर्यादि दोषजे-
॥ ६९ ॥ हेमान्नं वसनं धेनुं सर्व दोषा पनुत्तये ॥ ७० ॥ अथ वष्यादि गुणाः ॥ एकैक
द्वितीया दोषा वर्यादीनां गुणाः क्रमात् ॥ विवाह शुभमदस्तेषां गुरो त्वष्टा दष्टा-
धिके ॥ ७१ ॥ अथ जन्म कालिक भौम वीषः ॥ लग्ने व्यये च पाताले या मित्रे चाष्टमे
कुजे ॥ कन्या भर्तृ विनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः ॥ ७२ ॥ एवं विधे कुजे
संस्थे विवाहो न कदाचन ॥ कार्यो वा गुणवाहुल्ये कुजे वा तादृशे द्वयोः ॥ ७३ ॥ १७

संस्थिः ॥ अथान्निविधो विषययोगः ॥ कन्यायां सूर्य भौमार्कि वारेषु तिथि भद्रा प्राता शिधम्
१७४ ॥ अश्लेषा कृत्तिका चेत्या तत्र जाता विवांगना ॥ ७४ ॥ अथ द्वितीयः ॥ तनुर्लेने
रिपु क्षेत्रे संस्थितः पाप रेचरः ॥ हो सौम्या वपियोगेऽस्मिन्संजाता विष कन्यका
॥ ७५ ॥ अथ तृतीयः ॥ लग्ने शनैश्च रोयस्यास्तुतेऽकोनवमे कुजः ॥ विषारख्यासा-
पिनो ह्यह्वा त्रिविधो विष कन्यका ॥ ७६ ॥ अथ कन्या दोषापवादः ॥ सावित्र्यादि ज्ञतं
कृत्वा वैधव्य विनिवृत्तये ॥ अश्वत्थादिभिरुह्य ह्य दद्यात्तौ चिरजीविने ॥ ७७ ॥
अथ जन्म कालिक द्यु नक्षत्र फलम् ॥ मूल जाम्ब सुरं हति ज्येष्ठा जा स्वध वा गुजम् ॥ क-
न्यका तु विष्णोषो त्या निहन्या देवरं स्वकम् ॥ ७८ ॥ अस्यापवादः ॥ अश्लेषा प्रथमः
पादः पादो मूलांति मस्तथा ॥ विष्णवा ज्येष्ठ यो राद्यस्त्रयः पादा शशु भो वहाः ॥
७९ ॥ इति वधूवरयो र्मेला पक विधिः ॥ अथ वाग्दानम् ॥ धरणि देवोऽद्य वा कन्यका
सोदर श्रुभ दिने गीत वाद्यादिभि संस्युतः ॥ वरदातिं चरन् यज्ञो यवी तादिना क्रव

पुते वर्न्ति पूर्वा त्रये राचरेत् ॥ ८० ॥ अथ कार्यविशेषे जन्म नामस्त्वोऽप्रधानता ॥ अ-
 ज्ञात जन्म नो नृणां नाम मे परि कल्पना ॥ तेनैव चिंतयेत्सर्वं राशि कूटं हि जन्म
 वत् ॥ ८१ ॥ जन्म भं जन्म धिल्लेन नाम भं नामा धिल्लतः ॥ व्यत्ययेन यदा योज्यन्-
 म्यत्योर्निधनं प्रदम् ॥ ८२ ॥ देशे याम ग्रह द्युत व्यव हरि रणो ज्वरे ॥ दाने मंत्रे च से-
 वायां का किन्यां वर्ग योजने ॥ ८३ ॥ पुनर्भे मेलने द्वेया नाम राशेः प्रधानता ॥ अ-
 तोन्यत्र विवाहादौ प्राधान्यं जन्म भस्य हि ॥ ८४ ॥ अज्ञात जन्म धिल्ले तु नाम भादेव
 चिंतयेत् ॥ जाया पत्यो भकूटाद्यं गोचराख्यं खिलं तथा ॥ ८५ ॥ एकस्मादिह दम्यत्यो
 रज्ञाते जन्म भे तथा ॥ जन्म भादुरु शुद्धादि मेलने नाम भातयोः ॥ ८६ ॥ अथ विवाह
 संवत्सर हि शुद्धिः ॥ गर्भजन्म दिना ह्यपि हाय नात्पंच मास्यम् ॥ आदशाब्दे तु कन्याया
 विवाहः समवत्सरे ॥ ८७ ॥ विशेषः ॥ षडब्द मध्ये नो हाशा कन्या वर्ष द्वयं यतः ॥ सो
 मो भुंक्ते ऽथ गंधर्व स्ततः पश्चाद्भुता प्रानः ॥ ८८ ॥ अष्ट वर्षा भवेद्गौरी नव वर्षा-

च रोहिणी ॥ दश वर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजसला ॥ ८८ ॥ गौरी नृद्वल्ल-
 लोकं सावित्रं रोहिणीं ददत् ॥ कन्या दद्वल्ल लोकमतः परमसद्गतिम् ॥ ८९ ॥ मासत्रया-
 दूर्ध्वं मयुगसु वर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत् ॥ विवाहं शुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्याद-
 योगा गविराहमुख्याः ॥ ९० ॥ विशेषः ॥ क्षीया गुरुवला गौरी रोहिणी आनुमहला ॥
 कन्या चन्द्रवलो द्वाह्या ततो लग्नं चलेतरा ॥ ९१ ॥ अथ विवाहे गुरु रवि चन्द्र वलम् ॥
 गुरोर्वलनु कन्याया वरस्याथ चलं रविः ॥ ग्राह्यं परिणये प्राज्ञैः चलं चन्द्रात्तथो-
 भयोः ॥ ९२ ॥ अथ कन्या वरयो गुरु वलम् ॥ कन्याया गृहं शुद्धिं दश वर्षा वर्षा वधिस्तु-
 ता ॥ दश वर्षं व्यतिक्ता कन्या शुद्धिं विवर्जिता ॥ ९३ ॥ तस्या स्तारस्तु लग्नानां
 शुद्धौ पारिता गृहोमतः ॥ जन्म एषे गुरुः श्रेष्ठः पंचमो नवमो द्विगः ॥ ९४ ॥ एकाद-
 शः सप्तमस्थः कन्यायाश्च वलो व्रतम् ॥ त्रिषद्व दशाय गोमध्यो नष्टस्तु व्योऽष्टमो
 ऽत्यगः ॥ ९५ ॥ एकया पूजया मध्यस्तु व्योऽन्यो द्विगुणार्चया ॥ कालानि क्रमरो-

धनात् ॥ ९७ ॥ गुरुस्त्वोच्चैस्वर्गमेनेवास्वभेवर्गोत्तमेऽपि वा
 धर्मोऽत्योऽपि न चारिष्यद्भुभोप्यसत् ॥ ९८ ॥ वक्राति चार्गोवा
 यस्मिन् राशौ समागतः ॥ तद्वाग्निजं फलं धत्ते जीवो नो परराशिजम् ॥ ९९ ॥
 कन्यायाः विशेषः ॥ नष्टात्मजा १ धनवती २ विधवा ३ कुशीला ४ पुत्रान्विता ५ परता
 ६ सुभगा ७ विपुत्रा ८ स्वामिप्रिया ९ विगतकोशधना १० धनाढ्या ११ वंध्या १२
 भवेत्सुरगुरौ क्रमशो विवाहे ॥ १०० ॥ कस्यचिन्मते विशेषः ॥ अष्टमे द्वादशे वापि च
 तुर्थे वा दृश्यते ॥ पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहः प्राणनाशकः ॥ १०१ ॥ षष्ठे जन्म
 नि देवे ज्ये तृतीये दशमेऽपि वा ॥ भूरिपूजा पूजितश्च कन्याया भ्युभकारकः ॥ १०२
 ॥ एकादशे द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपि वा ॥ नवमे च सुराचार्ये कन्यायाः कथित-
 भ्युभः ॥ १०३ ॥ अथ वरस्य रविवलम् ॥ तृतीयः षष्ठगश्चैव दशमे कादश स्थितः
 रविः शुद्धो निगदितो वरस्यैव करग्रहे ॥ १०४ ॥ जन्मस्थे च द्वितीयस्थे पंचमे सप्तमेऽ

पिवा ॥ नवमे भास्करे पूजां कुर्व्यात्प्राणि ग्रहात्सवे ॥ १०५ ॥ चतुर्थे वायुमे चैव ह्य-
 दशे भास्करे स्थिते ॥ वरः पञ्चत्वमाप्नोति कृते प्राणि ग्रहोत्सवे ॥ १०६ ॥ कालाति-
 क्रान्ते विशेषः ॥ रविस्त्रिषट् वर्षायस्थो वरस्यो द्वादशे शुभः ॥ मध्यः पंचविंशतैक-
 नवगाः पूज्योत्तमः ॥ १०७ ॥ हिरन्योद्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात् ॥
 अथोभयोश्चंद्रवलम् ॥ ग्राह्यः प्रागुक्तमुद्वाहे द्वयोश्चाष्टमसंवलम् ॥ १०८ ॥ अथजन्म-
 मासादि दोषा पवादः ॥ स्वजन्ममास क्षीतिथि क्षणेषु चैनाशिका दृष्ट गणेषु चैवम् ॥
 ॥ नो ह्यहमात्मा भ्युदया भिकांक्षी नैवाद्य गर्भद्वितयं कदाचित् ॥ १०९ ॥ जन्ममा-
 सादि के ज्येष्ठे विवाहो वरकन्ययोः ॥ आद्यगर्भभवो नैद्यो नानाद्यजनयोस्तयोः ॥
 ॥ ११० ॥ त्रिज्येष्ठं नेष्टमुद्वाहे द्विज्येष्ठं मध्यमं स्मृतम् ॥ कृत्तिकास्थे रवौ केचित्त्रिज्येष्ठं
 तु शुभं जगुः ॥ १११ ॥ अथ केया विन्मते विशेषः ॥ नेष्टं त्युद्वाहनं केचित्त्रिज्येष्ठयोस्तु परस्पर-
 म् ॥ पुत्रोद्वाहान्तु षणमासान् नो कन्याकर्पीडनम् ॥ ११२ ॥ मुंडनामुंडनवापि - १

इति कुले सप्तमतीऽन्यथा ॥ सीमन्तो द्वाहनं चोत्तं केशान्तं व्रतबंधनम् ॥ ११३ ॥ गुरु
 मंगलमेतत्स्यात्तदन्यत्त्रयु मंगलम् ॥ गुरु मंगलतो नेष्टं परमासा त्रयु मंगलम् ॥
 ॥ ११४ ॥ शुभत्रयं तथा पित्र्यं कृत्यं स्वीय कुलेन सत् ॥ सहोदर प्रसूतानां भ्रातृणां
 गालं कुल्यादद भेदेऽथ वा पुनः ॥ ११५ ॥ चतुर्हिना न्तरे वापि संकटे तु दिना न्तरे ॥ प्रागुक्तं सं-
 यो दितं ॥ यमयोस्तु विशेषोऽयं काव्यांस्सर्वा स्सह क्रियाः ॥ ११६ ॥ एको हरसं-
 द्यन्न मेक स्मे कन्य का हयम् ॥ न देयं न च देये च सोदराभ्यां सहोदरे ॥ ११७ ॥ एको हरसं-
 वाह निम्बया दूर्ध्वं कुले वध्वा वरस्य च ॥ पित्रा देर्मरणो याते विवाहो नतयो ष्यु-
 भः ॥ ११८ ॥ अथ वा वत्सरा दूर्ध्वं मास षड्वादथोऽपि वा ॥ ना सोर्द्वं सूनूकान्तो वा-
 रा न्या घ्रास्तः कार गृहः ॥ ११९ ॥ अथ विवाहे शुभमासाः ॥ मेष दृष्टिष्वेक कुम्भेयु मका

रे मिथुने वृषे ॥ रवौ पाणि ग्रहः श्रेष्ठः युग्मे विष्णुश्रया वधि ॥ १२२ ॥ वैशाखः फाल्गु-
 ल्गुणौ माघौ ज्येष्ठ श्रैवे शुभ प्रदाः ॥ मासा उद्धहने मार्गो नध्यो ऽन्ये त्व शुभामताः
 ॥ १२३ ॥ वृश्चिके मकरे मेघे विधमाने दिवा करे ॥ कार्तिकः पौष चैत्रौ वा विवाहे
 त्वेव शोभनाः ॥ १२४ ॥ मार्गशीर्षे धनुष्यर्के मीनार्कः फाल्गुणे शुभः ॥ सौर-
 ज्ञत विवाहा दौ मासः सर्वत्र शस्यते ॥ १२५ ॥ चान्द्रो मासस्तु विंध्यादे भर्गो दक्षि-
 णा कै मतः ॥ योगस्तयो विवाहा दौ शोभन स्सौर चान्द्रयोः ॥ १२६ ॥ अथ विवाहे
 तिथिवार नक्षत्राणि ॥ वक्ष्यी दशोऽष्टमी ऋक्ता कल पक्षान्य पञ्चकम् ॥ शुक्ला चैत्र्य
 ति पक्षेष्टा तिथयो ऽन्येतु शोभनाः ॥ १२७ ॥ सौम्या वाराशुभामध्यास्तूर्य
 मन्दकुजा धमाः ॥ रोहिण्यां व्युत्तरे मूले ऽनुगधारेवती मृगे ॥ १२८ ॥ हस्ते स्वाती
 मृगा क्षीरां शोभनं कर पीडनम् ॥ सतूदा पूर्व फाल्गुण्यां नो लभेच्छं ततो न स-
 त् ॥ १२९ ॥ पुष्योपि काम योषि त्वाच्छा यमाप प्रजा पतेः ॥ अथ विवाहे दश महा

१८१
 शि- दीपाः ॥ लता पातो युतिर्वेधो यामित्रं बुधपंचकम् ॥ एकार्गलो पग्रहो चक्रांति
 साम्यंततः परम् ॥ १३० ॥ दग्धा तिथिं च विज्ञेयं दश देवा महा वलाः ॥ एतान्दे-
 या न्यरित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः ॥ १३१ ॥ अयलता ॥ नक्षत्रं द्वादशं भानुस्त-
 तीयं लक्ष्म्या कुजः ॥ षष्ठ्यक्षीवोऽष्टमस्मन्दो हन्ति दक्षिणतस्सदा ॥ १३२ ॥ वामे-
 न सप्तमं चान्द्री नवमे सिंहिका सुतः ॥ हन्ति भं पंचमं शुक्रो द्वादशं पूर्णचन्द्रमाः
 ॥ १३३ ॥ रवेर्लज्जा हरेर्द्वित्तं कुजस्य कुरुते मृतिम् ॥ बृहस्पतेर्वन्धुनाशं शनैः कुं-
 ध्यां त्कुल क्षयम् ॥ १३४ ॥ बुधस्य कुरुते त्राशं लत्ता राहोर्विनाशनम् ॥ शुक्र-
 स्य दुःखदा नित्यं त्राशदाच कला निधेः ॥ १३५ ॥ अथ यातः ॥ सूर्य युक्ताच्च नक्ष-
 त्रा वेद्यु पातो विधीयते ॥ मघा श्लेषाच्च चित्राच्च सानुराधाच रेवती ॥ १३६ ॥ श्र-
 चणोपि च षड्भूय पातदुष्टं निगद्यते ॥ अश्विनी मघा चिन्ता गणयेत्लग्न आ वधिं
 ॥ १३७ ॥ पावकः पवमानश्च विकारी कलहोपरः ॥ मृत्युः क्षयश्च विज्ञेयः

पात बद्धस्य लक्षणां ॥ १३८ ॥ पातेन पतितो हरिः ॥ आते-
 न पतित इष्टांस्तस्मात्पातं विवर्जयेत् ॥ १३९ ॥ अथ युतिदोषः ॥ यन्नेराशौ
 भवेच्चन्द्रे गृहस्तत्र बदा भवेत् ॥ युतिदोषस्तदा द्यौयो विना शुक्रप्रभुभा शुभः ॥
 १४० ॥ रविणा संयुतो हानि भौमे न निधनं प्राप्तिः ॥ कुर्वन्ति मूलनाशं च राहुके
 तु शनैश्चराः ॥ १४१ ॥ अथ वेधः ॥ बधू प्रवेष्टाने दाने वरणे पाणि पीडने ॥ वेधः
 पंच शलाकारव्योऽन्यत्र सप्तशलाककः ॥ १४२ ॥ रेखाः पंचोर्द्धगास्तिर्यग्देहे
 रेखे च कोणादयोः ॥ चक्रं यच्च शलाकारं विवाहे वेधसाधनम् ॥ १४३ ॥ ईशा
 द्वितयरेखा तस्मा भिजि त्कतिका दिकम् ॥ लिखेत्सव्य क्रमात्तत्र गृहा देया यथाय
 यम् ॥ १४४ ॥ एकरेखा स्थितो विद्धादिन नाथा देयो गृहाः ॥ विवाहे तत्र मांसं तु न
 जीवति कदाचन ॥ १४५ ॥ अश्विनी पूर्व फाल्गुण्या भरणी चानुराधया ॥ अभि-
 जिच्चापि रोहिण्या कतिका च विप्रायया ॥ १४६ ॥ मृगश्वोत्तरादेन पूर्वाषाढात-

संश्लिष्टाद्र्या ॥ पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया ॥ १४७ ॥ धनिष्ठाया तथा ज्येष्ठ्या
 मघायाऽपि अत्रवर्णो न च ॥ रेवत्युत्तर रोहिण्या हस्ते नोत्तर भाद्र पात ॥ १४८ ॥ स्वा-
 त्या शत भिषा विद्वा चित्रया पूर्व भाद्र पान् ॥ विज्ञान्येतानि वज्र्यानि विवाहे भानि-
 को विदेः ॥ १४९ ॥ रविर्वेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुल क्षयः ॥ बुधवेधे भवेद्वध्या प्रव-
 ज्यर्था गुरु वेधतः ॥ १५० ॥ अशुक्रा शुक्र वेधे च सौरे चन्द्रे च दुःखिता ॥ परपुरुषरता
 राहो केतो स्वच्छन्द चारिणी ॥ १५१ ॥ अथ यमिन्त्र देवः ॥ चतुर्दश च नक्षत्रं यामित्रं
 लग्नभा त्सूतम् ॥ शुभयुक्तं तदिच्छंति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥ १५२ ॥ चन्द्रश्चाग्नी
 शुक्रजीवौ यामित्रे शुभकारकम् ॥ स्वर्भानु भानु मंदाशयामित्रे चाशुभप्रदाः ॥
 १५३ ॥ चंद्रा ह्यलग्नतो वापि ग्रहा वज्र्याश्च सप्तमे ॥ तत्र स्थिता ग्रहा नूनं व्याधिवै-
 धव्यकारकाः ॥ १५४ ॥ अथ बुधपञ्चकम् ॥ धार्त्र्या तिथि १५ मीस १३ दशा २० सु ८
 वेदा ४ संक्रान्ति तो जात दिने प्रच योज्याः ॥ ग्रहे विभक्ता यदि पञ्चकं स्याद्भोगस्त- १५५

१८४ सं. श्रि. याग्निर्नृपचौरमृत्युः ॥ १५५ ॥ अन्यच्च ॥ तिथिचारमलग्नां कोरसाग्न्यजा-
 सवेत्युक् ॥ नन्दाप्तपंचशेषेरुक् वह्निराट्चौरमृत्युदत् ॥ १५६ ॥ शेषैके-
 नवभिर्भक्ते पंचशेषे सश्रल्यकं ॥ अथ दक्षिणात्यप्रसिद्धपंचकं ॥ शुक्लाद्यास्तिथयो
 याता लग्नाख्या भाजिता ग्रहेः ॥ शेषेष्टद्विचतुस्तर्कभूमिते वाराणपचकं ॥ १५७
 रोगोग्निर्नृपतिश्चौरौ मृत्युश्चेति यथा क्रमात् ॥ प्रसिद्धदक्षिणात्यानां शुभे का-
 र्ये विवर्जयेत् ॥ १५८ ॥ रोगचौरं त्यजेद्वात्री दिवा राजन्यपंचकम् ॥ संध्य
 योर्मृत्युर्दंत्याज्यं सर्वदा वह्निपंचकम् ॥ १५९ ॥ रवौ रोगकुजे वह्निः शनौ
 च नृपपंचकम् ॥ वर्ज्यं पुनः कुजे चौरं बुधवारैश्च मृत्युदम् ॥ १६० ॥ नृपा-
 रं नृपसेवायां गृहगोपे ऽग्निपंचकम् ॥ याने चौरं व्रते रोगं त्यजेन्मृत्युकरं
 ग्रहे ॥ १६१ ॥ लग्ने पूर्णवलोपेते नदोषः पंचकस्य च ॥ १६२ ॥ अथैकार्गलदो-
 षः ॥ योगांके विषमे सैके साष्टा विंशति के समे ॥ तदर्द्धं संख्यमं मूर्द्धि चक्रे १८

स्वाज्जीरि के न्यसेत् ॥ १६३ ॥ अथैतस्योदाहरणं ॥ व्यतीपाते अमश्लेषाव्या-
 घाते च पुनर्वसुः ॥ अतिगंडे नुराधा च मूर्द्धिभं परिधे मघा ॥ १६३ ॥ विष्कुंभे-
 चाश्विनी पुष्यो वज्रो चित्रा तु वैधती ॥ तथा मूले मृगे गंडे मूलभं मूर्द्धि कीर्ति ॥
 १६४ ॥ चोगे ध्ये तेवृ संभूतिर्नान्येव्ये कार्गलस्य च ॥ अथैतस्य चक्रम् ॥ एका चोर्द्ध
 गता रेखा तिर्यक् कार्व्यात्रयो दश ॥ मूर्द्धिभं मूर्द्धि विन्यस्य साभिजित्तनीन्य-
 सेत् ॥ १६५ ॥ एका गलितो मिय अथैक रेखा गश्चे द्विधूरविः ॥ विवाहादि शुभे कार्ये
 नेष्ट त्वेका गलाभिधः ॥ १६६ ॥ अथोपपन्न देवः ॥ सूर्य भात्यंत्वमे विद्युन्नक्षत्रेष्ट
 लमष्टमे ॥ चतुर्दशे शनैः पातः केनुरखा दशे तथा ॥ १६७ ॥ ऊनविंशे भवेदु-
 क्ता निघन्ति च द्विविंशती ॥ अथोविंशति केकं पश्चतुर्विंशे च वज्रकः ॥ १६८ ॥
 दिक् सप्त तिथि तत्वारव्य स्वर्ग संख्यानि आनि च २०।१७।१५।२४।२१ ॥ एता-
 न्यपि जगुश्चोपग्रह क्षणीति केचन ॥ १६९ ॥ पुननाश करी विद्युच्छूलः पुन वि- १८५

नाशकः ॥ शनेः पत्नी वंशघातः केतोर्देवनाशकः ॥ १७० ॥ द्रव्यनाशकरी
 चोक्ता निघीतो वंधुनाशकः ॥ कंपः कंपयते नित्यं वज्रेस्त्री व्यभिचारिणी ॥ १७१
 ॥ उपग्रहेषु लतायां तथा चण्डा युधा न्ह्ये ॥ ग्रहोऽस्ति यत्प्रमारां प्रो विद्वांशस्त
 त्रमारा कः ॥ १७२ ॥ अथक्रांति साम्यदोषः ॥ ऊर्ध्वस्तिस्त्रास्तिस्त्रिखो मध्ये मीनं लिखे
 द्रुधः ॥ सूर्ये चन्द्रमसोर्दृष्टे क्रांति साम्यं निगद्यते ॥ १७३ ॥ मीनः कन्यकया
 युक्ता मेघस्सिंहेन संगतः ॥ मकरे च वृषः क्रांतिः चायोऽपि मिथुने न च ॥ १७४
 कर्क वृश्चिकयो र्बेधो वेधश्च तुलकुंभयोः ॥ क्रांति साम्ये कृतो ह्यहेन जीवति कः

| | | | |
|----|-------|-----|----|
| | ११ | १२ | १३ |
| १० | क्रां | ति | २ |
| २५ | सा | म्य | ३ |
| ८ | ७ | ६ | ५ |

दाचन ॥ १७५ ॥ अथ दग्धा दोषः ॥ द्वितीया धन मीने बुचतु
 धी द्यपकुंभयोः ॥ मेघकर्कटयोः वृषी कन्यायां मिथुनेऽष्टमी ॥
 १७६ ॥ दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ॥ एतास्तु तिथि-
 यो दग्धा प्रशुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ १७७ ॥ अथ दश दोषाः ॥

तिष्ठ्यग वेदैक दिगून विंशप्रस्तन्यं भवाद्या दश विंश संख्याः ॥ दृष्टो हुना सूर्ययुतो
 हुना च योगा दमी च दश योग दोषाः ॥ १७८ ॥ मरुन्मेघाग्नि भूपाल चौर मृत्यु रु-
 जो शनिः ॥ कलिर्हीनि दंशो द्वाहे दोषा स्त्याज्या सदा बुधैः ॥ १७९ ॥ योगां
 के विषमे सैके समे सव सुलोचने ॥ दली कृत्वा श्विनी पूर्व दश योग मुदा हृतम् ॥
 १८० ॥ दश योगे महाचक्रे प्रमादाद्यदि विभ्र्यते ॥ क्रूर सौम्य ग्रहेर्वीपि संपत्यो रे-
 क नाश्रनं ॥ १८१ ॥ अथ दश दोषापवादः ॥ गुरौ लग्नाधिपे श्रुक्ते सर्वोर्थे लग्न केंद्र जे ॥
 दश दोषा विनं प्रयंति यथाग्नौ तूल राशयः ॥ १८२ ॥ गुरुणा भृगुणा वापि संयुतो
 दृष्ट मेव च ॥ दश योग समा युक्त मपि लग्नं शुभावहम् ॥ १८३ ॥ एकार्गलोपग्रह
 पात लक्षाया मित्रकर्तृर्युदया स्तदोषाः ॥ नश्यन्ति चन्द्रार्क वलोप पन्ने लग्ने यथा
 कभ्युदयेतु दोषाः ॥ १८४ ॥ उपग्रह क्षुद्राक्षुद्राक्षु कलिङ्ग वंगेषु च याति
 ततम्भम् ॥ सौराष्ट्र साल्वेषु चलति तं भंत्यनेन विदं किल सर्व देशे ॥ १८५ ॥

शि-लता मालव के देशे यातः कोशल के तथा ॥ एका गलितु कस्मीरे वेधं सवर्जं व-
 र्जयेत् ॥ १८६ ॥ युति दोषो भवेद्दोषे यातित्र स्य तु यामुने ॥ वेधये वस्तु विव्या-
 र्व्ये देशे नान्येषु केचन ॥ १८७ ॥ अथापरः यमघंटयोगः ॥ शैला ह्यश्रुनयः सूर्ये ७।
 ५। ४। चन्द्रे षट् षट् वेद ४ यवर्ताः ॥ ७ ॥ भौमे वाणा ५ ग्नि ३ नेत्राणि २ सोम्ये
 वेदा ४ क्षि २ वायवः ५ ॥ १८८ ॥ गुरु वारे ग्नि ३ चन्द्रे १ माः ८ शुक्रे नेत्रा २ द्वि ७
 वन्तयः ३ ग्रानौ चन्द्रे १ भ ८ तर्काः ६ स्युः कुलि को व्या मघं एतकः ॥ १८९ ॥ अ-
 र्द्धप्रहर संज्ञां स्तान्मंगलेषु विवर्जयेत् ॥ निधनं प्रहरार्द्धे तु निस्स त्वं यमघंट के ॥
 कुलिके सर्व नाशः स्यात् रात्रा वेतेन दोषदाः ॥ १९० ॥ अथ कर्त्तरी दोषः ॥ इविणा
 व्याययो १२ र्लग्ना च्छन्ना द्वापा यखे चरी ॥ यदि स्यातां तदा ज्ञेया कर्त्तरी दोष कार-
 का ॥ १९१ ॥ अथ महा कर्त्तरी ॥ धने क्रूर गृहवक्त्री व्यये मार्गी भवेद्यदि ॥ सामहा-
 कर्त्तरी ज्ञेया ग्रयत्नात्तां विवर्जयेत् ॥ १९२ ॥ अथ दोषा पवादः ॥ धने मार्गी व्यये व-

श्रीवक्तो वामार्गगावु भौ ॥ लग्नेवाद्वादशे सोम्यो यदि चेत्कर्त्तरी नसा ॥ १८३ ॥
 श्रुक्त जीव बुधैः केन्द्र कोणगैः सानहुः खदा ॥ कर्त्तरी कािका यासौ श्रुनु नीच क्षगो
 याद ॥ १८४ ॥ अथ वास्तुमिती तन्न न दोषः कर्त्तरी भवः ॥ अथा परे दोषः ॥ मर्मवेधः कंठ
 कश्च शूल्यं क्षिद्रं चतुर्थं कम् ॥ एत द्वौषं चतुष्कं च परित्याज्यं प्रयत्नतः ॥ १८५ ॥
 लग्ने पापे मर्म वेधः कंठको नव पञ्चमे ॥ चतुर्थे दशमे शूल्यं क्षिद्रं भवति सप्तमे ॥
 १८६ ॥ मणामर्म वेधे स्यात्कंठके स्यात्कुल क्षयः ॥ शूल्ये च नृपते भीतिः पुत्र
 नाशश्च क्षिद्रं के ॥ १८७ ॥ मासान्ते दिन मे कंतु तिथ्यन्ते घटिका द्वयम् ॥ नक्ष-
 त्रान्ते घटी त्रीणि विवाहादौ विवर्जयेत् ॥ १८८ ॥ अथ नक्षत्र विषघटिकाः ॥ खवा-
 णाश्च जीना रिंश त्ववेदा मनवः कमात् ॥ स्वर्गलिंश न्स्वा न्न्ताः खरा मा विंश

| अ | भ | रु | रे | मृ | ज्या | पु | पु | पु | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | भुज्ये | मू | पू | उ | अ | ध | श | पू | उ | रे |
|----|----|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|------|----|--------|----|----|----|----|----|----|----|---|----|
| ५० | २५ | ३० | ४० | १४ | २५ | ३० | ३० | ३० | ३० | २० | २० | २० | २० | १४ | १० | १४ | २५ | २० | १० | १० | १० | १० | ३० | | |

तिर्धृतिः ॥ १८६ ॥ भूनेत्राः खयमाः शक्राः मनुकाः श्वनुर्यशः ॥ वटपञ्चाश-
 ज्जिनाश्चैव विंशतिश्च ककुपुदिशः ॥ २०० ॥ धृतिर्भूपाजिनारिंशद्विंश-
 द्घटिकाः स्मृताः ॥ आर्यश्चतुष्टयं त्याज्यं घटिकानां विद्याभिधम् ॥ २०१ ॥
 सर्वर्षघटिकाभिश्च प्रोक्तर्षघटिकाहताः ॥ वक्ष्यामक्ताः स्फुटा नाड्यस्तथास्युर्वि-
 षनाडिकाः ॥ २०२ ॥ अथतिथिविषघटिकाः ॥ तिथिवाणाहसत्तागुपञ्चवेदरा-
 धराः ॥ दिग्वन्त्यर्कमनुस्माभृद्वसवो घटिकाः क्रमात् ॥ २०३ ॥ आभ्यो घटीच-
 तुष्कञ्च विषंप्रति यदा दितः ॥ अथवारविषघटिकाः ॥ नखयुगमार्कदिक् सप्तवारा-
 त्वमिताः क्रमात् ॥ आभ्यो नाडी चतुष्कञ्च विषन्नद् विवासरात् ॥ २०४ ॥ ति-
 थिविषनाडिका चक्रम् ॥ सुतीधनार्थम् ॥ अथवारविषघटी चक्रम् ॥ अथ विषनाडी दोषापवादः ॥

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

कोणा ६।२ स्ता ७ धि ४ नभः १० संस्थः सुहृत्सीम्ये क्षितोऽपिवा ॥ सद्वाशवा
 विभुः स्वांशे लभेवा केन्द्र १०।१।४।७। कोणागः ६।५। ॥ २०५ ॥ निहन्याद-
 रितलं दोषं विपनाही समुद्रवम् ॥ अथ ग्रह दृष्टिः ॥ तृतीय दशमे पादे त्रिको-
 णोऽग्नि द्वयं ग्रहः ॥ पश्येत्तुर्योऽष्टमे पादत्रयं पूर्णान्तु सप्तमे ॥ २०६ ॥ पूर्णान्तु त्रिदश
 मंभः पंचमं नवमं गुरुः ॥ भौमीषुमं चतुर्थ्यं सप्तमं सकला ग्रहाः ॥ २०७ ॥ अथ लम्ब
 शुद्धिः ॥ लभे लम्बं लवे वापि लम्बांशे शयुते क्षिते ॥ लवे श शुभमित्रेण दृष्टे वा स्वामिना
 शुभः ॥ २०८ ॥ धूनांशे पूनलभे वा धूनांशे शयुते क्षिते ॥ धूनांश पति सन्मित्र दृष्टे व
 ध्वा शुभं स्मृतम् ॥ २०९ ॥ लभे शो लम्बमंशे शः स्वांशं पश्यति वामिथः ॥ तद्वरस्य
 शुभं ह्येय मन्यथानैव शोभनम् ॥ २१० ॥ धूर्ने शेशः नद्या स्वांश पति धूनांशमीक्षते
 ॥ तन्मिथो वा तथा वधाः शुभन्वितरथानहि ॥ २११ ॥ नीच राशि गते शुक्रे शत्रुक्षे
 त्र गते पिवा ॥ भगु बह्व स्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः ॥ २१२ ॥ अस्तगे नीच गेभौ-

मे शत्रु क्षेत्र गतेऽपि वा ॥ कुजाष्टमो द्वयो दोषो न किंचिदपि विद्यते ॥ २१३ ॥ गुरुरेको
 ऽपि केन्द्रस्थः शुक्लो वा यदि वा बुधः ॥ हरेस्सृतिर्यथा हति तद् दोषास्त्रिकोणगाः ॥ २१४
 लनोपग्रहचरदीशचन्द्रया मित्रसम्बन्धः ॥ तत्केन्द्रो गुरुर्हन्ति सुपक्षः पन्त्रगानिव ॥
 २१५ ॥ सङ्करराशेरशुभो नवांशः प्रोक्तस्स पापोऽपि विलम्बसंस्थः ॥ त्रिकोण केन्द्रेषु
 गुरुः सितो वायदा तदा साव शुभोऽपि शस्तः ॥ २१६ ॥ यत्रैकादशगः सूर्यो दोषानाश्र
 ययुस्तदा ॥ स्मरणा देवरुद्रस्य पापजन्म प्रातोद्भवम् ॥ २१७ ॥ वर्गोत्तमगते लग्ने स-
 र्वदोषा लयं ययुः ॥ चन्द्रे वाप्यथ वायेऽपि ग्रीष्मे कु प्रारितो यथा ॥ २१८ ॥ सुहृत्तल-
 नवद्वर्गकु नवांश ग्रहोद्भवाः ॥ ये दोषास्त्रानिहन्त्येव यत्रैकादशगः शश्विः ॥ २१९
 ॥ नक्षत्र दोषं कु नवांश दोषं गंडांत दोषं च मुहूर्त दोषम् ॥ विरुद्ध पंचांग विरुद्ध दोषं
 निशान् करो स्नाभं गतो निहन्ति ॥ २२० ॥ त्रिकोणो केन्द्रे वा मदन रहिते दोष शतकं हरे
 त्सौम्य प्रशुक्लो द्विगुणं मपि लक्षं सुरगुरुः ॥ भवे दायकेन्द्रे गयउग्र लवे प्रो यादितदा

समूहं दोषाणां दहनं द्रव तूल प्रमथति ॥ २२९ ॥ अथ पञ्चधा दित्याज्यलग्नानि ॥ दिने सदा
 न्या चष मेघ सिंहाः रात्रौ च दन्या मिथुनं कुलीरः ॥ मृगस्तु लालिर्वधिरो पराक्षि संया
 सु कुला घटधन्वि मीनाः ॥ २३० ॥ दिवान्धो वरहंता च रात्र्यं धा धननाशकाः ॥ दुः
 ख दो वधिरो लग्नः कुक्षो वंश विना शकः ॥ २३१ ॥ अथ होलाष्टकम् ॥ मुक्ताष्टमीं समा
 भ्य कालरास्य दिनाष्टकम् ॥ पूर्णिमा मवाधिं कृत्वा त्याज्यं होलाष्टकं प्रभुभे ॥ २३२ ॥
 ऐरावत्यां विषाशायां शतद्वी च त्रिपुष्करे ॥ होलाष्टकं विवाहादौ त्याज्यं मन्यत्र शोभन
 म् ॥ २३३ ॥ राश्रयो मास प्रून्याश्च लग्नं कारणाधपंगुयत् ॥ तत्याज्यं मालवे गौडिना
 न्यत्रा शुभदं स्मृतम् ॥ २३४ ॥ हन्यादिनार्हजन्देशं तिथिस्सिद्धा वनोद्भवम् ॥ गुरुः
 केन्द्रगतः शून्य तिथिजं लाभग प्रशुभः ॥ २३५ ॥ अन्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षनिष्ठ्य
 क्ष संभवाः ॥ कारणाधवधिरोद्भूता दग्धलग्न तिथेर्भवाः ॥ २३६ ॥ अकालजाश्चनी
 हारविद्युत्याताश्च संभवाः ॥ यो वेष प्रतीसूर्य्य शक्रचापध्वजादयः ॥ २३७ ॥ दोष १३

प्रदा मंगलेषु कालजाश्चेन्न दोषदाः ॥ दृष्यमीदृशिको मीनः कन्या मकरकर्कटाः ॥
 २३० ॥ लग्नेष्वेतेषु नो दोषो जन्मतो ह्यष्टमे व्यपि ॥ अथ शुभनवांशाः ॥ कन्या युग्मतुला
 धन्वि नवांशश्शुभदा ग्रहाः ॥ विवाहे न्येतु मीनस्य नवांशाः शुभदा जगुः ॥ २३१ ॥
 अथ मंगदाग्रहाः ॥ लग्ने प्रेने श्वरः सूर्यो लग्नारिर्निधने प्रशी ॥ लग्नेऽष्टमे मही स्रुतुरष्ट-
 मे बुधवाक्यती ॥ २३२ ॥ एतु सुख्ये विलग्ने वा निधनारि गतो भृगुः ॥ द्यूनेतु रवे च रास्व
 र्वे विवाहे मंगदाः स्मृताः ॥ २३३ ॥ कुजः रवे द्वादशे मन्वे लग्ने शो निधनारिगः ॥ तृ-
 तीये भार्गवश्चन्द्रो व्यये नैनेऽपि शोभनाः ॥ २३४ ॥ अथ रेखा प्रसङ्गाः ॥ व्यायाष्टषट्
 सुरविकेतु तमोऽर्क पुत्राः व्यायारिगः क्षिति सुतो द्विगुणाय गो हतः ॥ सप्त व्यायाष्टरहि-
 तौ द्वि गुरू सितोष्ट त्रि द्यून षट् व्यय ग्रहान्यरिहन्त्यशस्तः ॥ २३५ ॥ अथ दिनज्ञानम् ॥ छा-
 या पादो रस्तो पेतो एक विंश शतं भजेत् ॥ लब्धो कै घटिका ज्ञेया शेषा के च पलाः
 स्मृताः ॥ २३६ ॥ अथेष्टकालाह्नग्रायनम् ॥ सायनार्कस्य भवानि निजोदय विनाडिकः

खत्रि भक्ता भवेद्भोग्य कालो लब्ध पलात्मकः ॥ २३७ ॥ सोध्योऽभीष्ट घटी श्यञ्च
 तदग्रम् निजोदयः ॥ शोभ्याः शेष खरा मधान शुद्ध तिष्ठि भाजितम् ॥ २३८ ॥ ल-
 ब्धमंशादिकं योज्य मेवादौ शुद्ध राशिभिः ॥ अयनांश विहीनाय विलग्नं तत्स्फुटं
 भवेत् ॥ २३९ ॥ भोग्य कालेन शुद्धिं श्रेदिष्ट कालः पलात्मकः ॥ खरा मधो हृतस्त्री
 योदये नातिल वादिकम् ॥ २४० ॥ योज्य सूर्ये स्फुटं लग्न मयनांश विवर्जितः ॥
 रात्रीष्ट कालतो वापि सयङ्काच्च पूर्ववत् ॥ २४१ ॥ अथास्यष्ट लग्नादिष्ट काल ज्ञानम् ॥
 भानी भोग्य स्तुयः कालो भुक्त काल स्तयातनीः ॥ तदैक मेतयो र्मध्यो हया ह्वं सम-
 य स्फुटः ॥ २४२ ॥ यद्ये कर्क्षे नु लग्ना क्तैतियो र्भागान्नै र्हतः ॥ स्वीयो दयः ख-
 रा माप्तीऽभीष्ट काल स्फुट तदा ॥ २४३ ॥ अथ प्रप्रस्तयोगः ॥ शुभै स्तनुगतैः खेटै र
 शुभै र्निधनी पगैः ॥ ध्वजो यं परिणी तात्र युवती प्रिय वल्लभा ॥ २४४ ॥ कुजेऽ
 के लाम गी षष्ठे शनौ चन्द्रे द्वितीयगे ॥ धर्मस्थे खेचै रन्यैः श्रीवत्सोयोग उत्तमः ॥

२४५ ॥ यदि स्यात्कन्यका लग्ना तृतीये चन्द्रवाक्यती ॥ पञ्चमेश्वगुरानन्दो योग-
 श्वानन्दकृत्सहि ॥ २४६ ॥ लाभोऽर्केऽरिगृहे भौमे दुश्चिकेऽथ दाने श्वरे ॥ यो-
 गो यमई चन्द्राख्यस्तनो हा शुभगासती ॥ २४७ ॥ गुरो धर्मवुधे भूतो लाभो भूतो
 गजाभिधः ॥ परिलीताहि वा मासी साध्वी धर्मार्थिदायिनी ॥ २४८ ॥ खतूर्या नव
 ने सौम्यैः शंखोयं शुभ कृत्सदा ॥ अथनेष्टयोगः ॥ पापा चक्रस्य पूर्वार्द्धे पञ्चदशिसो-
 म्यरवेचराः ॥ विवाहे चक्रयोगो यं न दूहा स्त्रैरिणी भवेत् ॥ २४९ ॥ सर्वैः केन्द्र गतैः
 पापैः वापी योगोऽति निन्दितः ॥ सौम्ये लग्ने व्यये विज्ञे पापैः कोटलड कोऽप्यसत् ॥
 २५० ॥ भौमे द्वादश गोषष्ठे शुक्रे तुर्ये दाने श्वरे ॥ कुठारेऽयं समारख्यातः शुभचल्ली
 विदारणः ॥ २५१ ॥ व्यये केन्द्र विगो शुक्रे रिपो मन्देऽद्यमे विधौ ॥ योग स्यात्कर्मना
 मायमत्रोदाभिंक्षुकी भवेत् ॥ २५२ ॥ रवौ लग्ने व्यये मन्देऽद्यमेऽत्रो मुशला युधः
 ॥ तत्रोदायां कुमारी सा कुल मारी भवेद्भुवम् ॥ २५३ ॥ अथ गोधूलिकलमं ॥ विद्ययादिकुलि

कं क्वात विद्धमपाय युक् तथा ॥ लभाद्यारिगतं चन्द्रलम्बे गोधूलिकं त्यजेत् ॥ २५४ ॥
 ॥ नान्यो गोधूलिके चित्तो दोषाश्चण्डा युधाह्यः ॥ प्रयद्यन्ते यत सर्वे गोरजो भिस्स
 संततः ॥ २५५ ॥ यत्र चैकादशुश्चन्द्रे द्वितीयो वा तृतीयगः ॥ गोधूलिकस्स विद्वे-
 यश्चोषा धूलिसुखाः स्मृताः ॥ २५६ ॥ कुलिकं क्वाति साम्यं च मूर्तौ षष्ठाष्टग प्रशसी ॥
 पंच गोधूलिके त्याज्या अन्ये दोषा प्रशुभा चहाः ॥ २५७ ॥ पावहिं नोते निशि पश्चिमा
 यां पश्ये तृतीयं रवि विंव भागम् ॥ तस्यात्परं नाडिक युग्म मेके गोधूलिकालं मुनयो व-
 दन्ति ॥ २५८ ॥ अर्द्धास्तात्पूर्वं मयूढं घटि कार्दं तु गोरजः ॥ शनौ सार्कं गुरो चास्ते उ-
 भयत्रान्य वासरे ॥ २५९ ॥ स कालो मंगले श्रेया न्विवाहादौ शुभ प्रदः ॥ अर्द्ध विंवा-
 त्परं केचिद्वृटी हय मिदज्जगुः ॥ २६० ॥ निदाघे सार्द्ध विवेर्कं पिहो भूते हि सांग के ॥ मेघकाले
 तु पूर्णस्ति प्रीतिं गोधूलिकं शुभम् ॥ २६१ ॥ प्राच्यानां च कालिगानां मुख्यं गोधूलिकं स्मृ-
 तम् ॥ गंधर्वादि विवाहेषु वैश्यो द्वाहे तु योजयेत् ॥ २६२ ॥ विप्रेषु घटिका लाभे दातव्यं -

गो रजोनुधैः ॥ सकीर्णो गोरजस्सत्तं परेषु दितयं शुभम् ॥ २६३ ॥ महादीयान्यरित्य-
 ज्य प्रोक्तान् धिसादि के सुच ॥ कारवेहो रजोयावतावल्लग्नं शुभावहम् ॥ २६४ ॥ अ-
 थ गृहवशात् ज्ञानम् ॥ सूर्या सति स्त्री च विधौ स्तथा राहितं सुतो ज्ञान्च सुखं गुरो न्च ॥ अ-
 धर्मस्सिता वर्क सुता च वेष्टम जूयात्स मुद्वाह विधौ च युक्त्या ॥ २६५ ॥ लग्नोद्देहः
 ॥ २६६ ॥ सुखं स्वोच्चो दिते ज्ञेयं दुःखं नीचास्तगादिभिः ॥ अथावश्यं हे राज्ञां खड्गविवाहः
 ॥ चंद्रयच्चांग संप्रुद्धौ सौम्याय न विवाह सं ॥ राज्ञो गोधूलीदौ लग्ने खड्गोद्देहः ॥ अ-
 थ स्पते ॥ २६७ ॥ अथ हीनजालीनां विवाहे विशेषः ॥ अनुकृतिविधौ आसर्षे संकीर्णानां शु-
 भप्रदः ॥ विवाहो धनपुत्रायुः प्रीति सौख्य करो भवेत् ॥ २६८ ॥ अथ मृदादीनां स्नि-
 या पुनर्विवाहः ॥ मृदादीनां विवाहर्षे पुनरुद्देहनं स्त्रियः ॥ राज्ञो बुधार्थं न तत्रास्ति ति-
 थि मासादि दूषणम् ॥ २६९ ॥ सूर्यभादे च ४ नेत्रा २ चि ३ भू १ चन्द्रा १ स्थिरसा ६

नयः ३ ॥ भू १ राम ३ संमितास्तार गंधर्वीदि विवाहके ॥ २७० ॥ नेष्टाः श्रेष्ठाः
 क्रमा देतास्त्रिपद्यां गदिता बुधैः ॥ २७१ ॥ अथ विवाहांगकार्यं ॥ कार्यं विवाहका-
 र्यं विवाहोदित भोजनैः ॥ विवलेऽपि विधौ हित्वा त्रिषष्ट नवमं दिनम् ॥ २७२
 ॥ चित्रा विशाखा शत तारकाश्विनी ज्येष्ठा भरणी शिवभास्वतुष्टयम् ॥ हित्वा
 प्रशस्तं फलतैलवेदिका प्रदानकं कंडुन मंडनादिकम् ॥ २७३ ॥ मूलेन्दु रुद्र
 अवराणार्कं पौषा विण्वेष्ट चित्रा नलं खतीषु ॥ संस्थापनं कंजिक कुंडिका यावारे
 रवे भूमि सुतस्य शस्तम् ॥ २७४ ॥ अथ तैल लेपने दिन संख्या ॥ सेयादि राशि जातानां
 कुर्यात्तैलादि लेपनम् ॥ शैल दिग्वाण दिग्वाणान्सप्तंगेषु श्रेष्ठेषु ॥ २७५ ॥
 वाण शैलेषु घरेषु क्रमात्कैश्चिद्विती रितम् ॥ अथ वेदिका निर्माणम् ॥ हस्तोद्धिता च तु-
 र्हस्तैश्च तुरक्षां समंततः ॥ स्तंभैश्च नुर्भिस्सु शूलक्षौर्वा म भागो स्व सद्यनः ॥ २७६ ॥
 ईशान्यां स्थापयेत्स्तंभं सिंहादि त्रिनये रक्षौ च्छिन्वादि त्रिभे वायौ नैऋत्यां कुंभतरित्रिभे

नमः ॥ दृष्ट्वा त्रयं तथा मे यो स्तंभ खात स्तथैव हि ॥ २७७ ॥ अथ विवाहानंतरं मंडपो ह्यसन्म
 २० ॥ मण्डपो ह्यश्रानं कार्थ्यं समे च शुभ भेतिथौ ॥ षष्ठं तु विषमं नेष्टुं मुक्ता सप्तमं पंचमौ
 ॥ २७८ ॥ उत्पानान्सह पात दग्ध तिथिभिर्दुष्टाश्च योगोऽस्तथा चन्द्रे ज्योश्रान
 सामथा स्तमयनं तिथ्याः क्षयर्द्धी तथा ॥ गंडानं सच विष्टि संक्रमं दिनं तन्वं प्रथास्त
 तथा तन्वं श्रेष्ठ विधुन यादृग्गुणान्या पस्य वर्गोऽस्तथा ॥ २७९ ॥ सेतुः क्रूरस्वर्गो
 द्योगाश्च सुदया स्ता सुद्धि चंडा युधान् खार्जूरं दश योग योग सहितं यामि च तत्ता-
 भिधम् ॥ वारणो पग्रह पाप कर्त्तार तथा तिथ्या क्षयो गोत्यतं दुष्टं योग मथार्द्र यामकु-
 लिकाद्यान्वार दोषानपि ॥ २८० ॥ क्रूरं क्रांत विमुक्तं भंग ग्रहा भयं क्रूर गन्तव्य भंगे
 गोत्यान हतं च केनु हतं भं संध्यो दितं भंतथा ॥ तद्वच्च ग्रह भिन्न युद्ध गतं भं सर्वा निमा-
 सं न्यजे दुद्धौ शुभं कर्म सुग्रह कृतान् लग्नस्य दोषानपि ॥ २८१ ॥ द्विर्बहि कुल
 सम्भूत सारू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्तैवा प्रभा पंच दशैः शुभा ॥ २८२ ॥ इति २०

श्रीसंग्रहशिरोमणौ विवाहकथनं नाम पंचदशीप्रभा १५ ॥ अथ वधूप्रवेशप्रकरणम् ॥ १ ॥
 स्यो द्वादहदिवसात्प्रेष्ये वाप्यष्टमे दिने ॥ वधूप्रवेशस्तस्यैतदेष्टमेऽथ सप्तमे दिने ॥ १ ॥ ब-
 धूप्रवेशानं कार्यं म्यञ्चमे सप्तमे दिने ॥ नवमे च शुभे वारे सुलग्ने प्रणि नो वले ॥ २ ॥
 विवाहमारम्य वधूप्रवेशे युगमे दिने षोडशवासरा न्नः ॥ ऊर्ध्वन्ततोऽब्देऽयुजि पंच
 मांतपुनः पुरस्ता न्नियमो नवास्ति ॥ ३ ॥ अत्राण द्वितये मूलेऽनुराधारेहिणी मृगे
 ॥ हस्तत्रये मघा पुष्ये त्र्युत्तरे रेवती द्वये ॥ ४ ॥ प्रवेशे शुभदो वध्याः सोमे शुक्ले गुरो
 शनौ ॥ नध्यो बुधे कुजा कौर्त्तुनेत्ये रिक्ता तिथि स्तथा ॥ ५ ॥ विवाहात्प्रथमे पौषे
 प्राषाढे चाधि मासके ॥ नसा भर्तृ मृहे तिखे चैत्रे तात गृहेऽपि च ॥ ६ ॥ ज्येष्ठे पति
 ज्येष्ठ मथाधिके पतिं हन्त्यादिमे भर्तृ मृहे वधूः शुचौ ॥ अथ शुभसहस्ये प्रसुरक्षये-
 तनु तातं मधौ तात मृहे विवाहतः ॥ ७ ॥ द्वितिवधूप्रवेशम् ॥ अथ द्विरागमनम् ॥ विवाहा
 द्विषमे वर्षे कुंभे मेवाल्लिगे रवौ ॥ वलिन्यर्के विधौ जीवे शुभा हे चाश्विनी मृगे ॥ ८

रेवती रोहिणी पुष्ये च्युतरे अवरात्रये ॥ हस्तत्रये पुनर्वसोस्तथा मूला नृगधयोः ॥ ८
 ॥ कन्या मीन तुले युग्मद्वये प्रोक्तं वलान्विते ॥ लग्ने यस्य दला क्षीणां द्विरागमन मि-
 न्ते ॥ १० ॥ सन्मुखं दक्षिणे शुक्रे नो गच्छेत्तु कदाचन ॥ गर्भिणी तु विगर्भा स्यान्नवो-
 यता मियात् ॥ ११ ॥ बालकश्च विपद्येत विमोहादपि चेद्वजेत् ॥ भौमार्किं व-
 वारं वृक्ता षष्ठी च निर्दिष्टे ॥ १२ ॥ द्वादश्यमासदा वज्यां द्विरागमन कर्म-
 णि ॥ दीपोत्सवे देया प्रवादः ॥ अस्मिं गते गुरो शुक्रे सिंहस्थे वा दृहं त्यते ॥ दीपोत्सव दिने चै-
 व कल्या भर्तृ गृहं विप्रोत् ॥ १३ ॥ स्वभवन पुरप्रवेशे देशानां विभ्रमे तथोद्वाहे ॥ नूत-
 नं प्रति शुक्रं विचारो नास्ति ॥ १४ ॥ एक ग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राज वि-
 हेतीर्य यात्रायां प्रति शुक्रं न दुष्यति ॥ १५ ॥ पित्रा गारे कुच कुशुमयो-
 यदि स्यात् पत्न्य शुद्धिर्न भवति रवेः सम्मुखो वायु शुक्रः ॥ शुद्धे लग्ने
 तिथौ चन्द्र तारा विशुद्धौ स्त्रीणां यात्रा भवति सफला भवितुं स्वामि सच्च ॥

॥ १६ ॥ कश्यपेषु वशिष्ठेषु भृगवः श्यामिसेषु च ॥ भारद्वाजेषु वत्सेषु प्रति शुक्रं न
 दूयति ॥ १७ ॥ विवाहे गुरु शुद्धिश्च भृगु शुद्धिर्द्विगमे ॥ त्रिगमे राहु शुद्धिश्च च-
 न्द्र शुद्धिश्चतुर्गमे ॥ १८ ॥ आद्यर्क्षे भ्रमते राहुः पूर्वाश्लदिक् चतुष्टये ॥ सराहुर्द-
 क्षिणौ त्याज्य स्तृतीय गमने स्त्रियः ॥ १९ ॥ गमोक्त तिथ्यादिषु कारयेद्बुधो वध्वा
 तृतीयं पतिवैश्वनो गमः ॥ तत्रालितस्त्रिभिः संस्थितैरवौ प्रागादि राहुर्न भु-
 भोग्रदक्षे ॥ २० ॥ गेहात्पुनश्चान्यग्रहे पुरे वा देशे तृतीये च वधू प्रवेशे ॥ युद्धे ऽ
 लिगेहास्त्रिभगेन सूर्ये प्रागादि राहुर्न भुभोग्रदक्षे ॥ २१ ॥ मार्गादि केषु त्रिषु मा-
 स्तु पूर्वाद्याभ्यां तथा फाल्गुणतः प्रयाति ॥ ज्येष्ठा त्रतीची चिन्दिश मुत्तरस्यां भाद्रादि-
 केषु त्रिषु याति राहुः ॥ २२ ॥ सौरैर्न मासेन विचिंत्य मेतत् मार्गाद्यथा वृश्चिकत-
 त्तथैव ॥ त्रिभिस्त्रिभीराणि भिरिन्द्रदिक् तौ ककुप्सु राहु प्रचति सृष्टि हेति ॥ २३ ॥
 ॥ मेघादि राशीषु चतुर्षु गते पतंगेभ्या वत्स्य पूर्व ककुभः क्रमतः प्रयाति ॥ राहुः

ककुप्सु च तस्यैवपि वर्जनीयो ह्यंगेषु कर्मसु ससन्मुख दक्षिणस्थः ॥ २४ ॥ अ-
 ग्रेन्न गह्वैर्वैधव्यं दक्षिणे सुखदो भवेत् ॥ पृष्ठे पुत्रवती नारी वामे दो भग्यवर्द्धि-
 नी ॥ २५ ॥ छागे नर्क्ष १ शरां ५ क ८ राशिषु गते पूर्वे भृगो ह्यं १० गनास्थे २६
 याम्ये वरुणा लये घट तुलायुग्मर्क्ष ११ ७३ संस्थेऽसुरे ॥ सौम्येऽन्तान्य च कर्क-
 शे च १२ ४ धव गृहे वध्वा स्तृतीये गमे वामः पृष्ठगतः शुभो मुनिवैर्भूसासिकः
 कीर्तितः ॥ २६ ॥ आदित्य हस्तेऽन्य मृगांश्च भैत्रे तथा अत्र विद्या स्वपि वातपित्रे
 ॥ वध्वा स्तृतीये गमने प्रशस्तं स्याद्यो गिनी शूलतमे विशुद्धौ ॥ २७ ॥ न सन्मुख-
 स्थे न च दक्षिणस्थे यात्रा तृतीया पति साधनेष्टा ॥ वध्वा स्तृतीये गमने स्व भर्तुर्गु-
 हे सुवोरसु तिथौ प्रशस्तम् ॥ २८ ॥ वत्सोऽयं वाम भागे गुर्दक्षिणो पुरुषस्थ च ॥
 उभयोः पृष्ठदेशो च शोभनं यामले मतम् ॥ २९ ॥ अथ विशेषः ॥ त्रिमासं मासि-
 कं चैव त्रिपक्षं द्विमुहूर्तकम् ॥ चतुर्विधं गतिं गह्वरे स्मृनीनां चाभि भाषितम् ॥

॥ ३० ॥ गृह्णां रमे त्रिमासं च वधूयात्रा र्मुमासिकम् ॥ गृह प्रवेशे त्रिपक्षं युद्ध
 काले ऽर्द्धयामिकम् ॥ ३१ ॥ द्विवेदिकुलसंभूतसस्यूकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ
 समाक्षेया प्रभेयं योडशी शुभा ॥ ३२ ॥ इति संग्रहशिरोमणौ वधू प्रवेश द्वि-
 रागमनादि कथनं नाम योडशी प्रभा १६ ॥ अथान्याधानम् ॥ सौम्यायने विशा-
 यायां कृत्तिका रोहिणी मृगो ॥ अतरे रेवती ज्येष्ठा पुष्ये ऽग्न्या धान मिष्यते ॥ १ ॥
 कुजे ऽर्के ऽज्ञे गुरोः सुक्रे नो नीचे ऽस्तं गते ऽग्निभे ॥ नो ऋक्तायां तिथौ कर्के लग्ने नै-
 व मृगा त्वये ॥ २ ॥ अग्न्याधानं प्रकुर्वीत नेन्दोर्लग्न गतिऽपि च ॥ त्रिकोणोपचये
 केन्द्रे सूर्य्य जीव कुजेन्दु यु ॥ ३ ॥ शेषे चाप चये शुद्धे रंध्रे ऽग्न्या धान सुत्तमम् ॥ लग्ने
 जीवे धनुर्गेवाद्यूने ७ ख १० वाजगे कुजे ॥ ४ ॥ चन्द्रे चात्रियडा यस्थे सूर्य्ये वा दीप्ति
 तो भवेत् ॥ यस्य चा धान लग्नस्ये चंद्रे वा भृगु नंदने ॥ उपैति नस्य जातो ऽग्निनिर्वी
 रां स ततं कुले ॥ ५ ॥ द्विवेदिकुल संभूत सस्यूकृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाक्षेया प्र-

तिः ॥ ताभ्यामुपचयं भवायातुस्याद्वैरिसंक्षयः ॥ ३ ॥ जयो लगनेऽथ सद्गर्गे भवे
 च्छीर्षोदयेऽपि वा ॥ शुभैर्युक्ते क्षिते वापि शुभायात्राचरोदये ॥ ४ ॥ स्थिरोदये
 गमो नस्याच्छुभैर्दृष्टेयुते शुभे ॥ द्विस्वभावोदये गपैर्युक्ते वाथ निरीक्षिते ॥ ५ ॥
 प्रस्थितोऽपि निर्वर्त्तत निर्जितोऽरिजनैः पुनः ॥ रम्ये भूमि तले दृष्टे शुभे मांगल्य
 वस्तुनि ॥ ६ ॥ अत्यादरेऽपि चेत्प्रश्ने जयो लानोऽपि जायिनाम् ॥ भृगो लगनेषु
 धेतुर्धे सप्तोत्थेऽर्क्षे सुते गुरो ॥ ७ ॥ लाभैर्गौरयैः शत्रून्नित्राभ्येतिन्यो गृहम्
 । लगने भौमे यवा मन्दं सुते जीवेऽथवा रवौ ॥ ८ ॥ लाभे कर्मणि वा चन्द्रे शुक्रोऽ
 ऽपि विजयो भ्रवम् ॥ लगने भौमे न्युयुक्ते वा दिने शतनुजे क्षिते ॥ ९ ॥ चंद्रवानि
 धनेऽस्तस्थे भास्करे लग्नवर्त्तिनि ॥ पौषे वर्षा षून् लग्नाष्ट दिवुको पगते गृहेः ॥
 १० ॥ समिन्निभिश्च दुर्योगैः प्रकुर्मंगो न संप्रथः ॥ कोणे भौमा दुधे ज्या किं शु
 का वेषु चतुर्ध्वपि ॥ ११ ॥ एकश्चेद्गमनं न स्यात्सूर्याद्वा कोणे विधौ ॥ नयेद्ग

स्वदिशं सोऽन्नयः खेटो वलवो स्तयोः ॥ १२ ॥ अन्ने गम्य दिगी प्रात्वेदः पंचमंगो
 यः ॥ वो भूया हल युक्तं स्त्वा माशं नयतेऽसौ ॥ १३ ॥ अथ संक्राति यात्रा ॥ मेषसिं
 ह धनुः संस्थे यात्रा शस्तां शुक्लालिनि ॥ कुंभ नक्रांगना युग्म राशि संस्थे तु मध्य-
 मा ॥ १४ ॥ कर्कालि मीनगेऽर्के तु यात्रा दीर्घतमा मता ॥ विशेषेऽपि ॥ यात्राज
 सिंह तुरगे पतते वरिष्ठा मध्या शनैश्चर बुधो शन सां रवे ह्यु ॥ भानौ कुलीरं चषट्
 अश्वकगेऽतिदीर्घां शस्तं देवल मतेऽध्य निष्ठु गोऽर्कः ॥ १५ ॥ अर्द्धयामावशे
 षाया रात्रे र्याम प्रमायातः ॥ अष्टास्वपि क्रमादिषु अमरां भास्वतः स्तुतम् ॥
 १६ ॥ अङ्गुलिणी दिग् विणा चिमुक्ताय स्यां रवि स्मिधति साग्रदीपा ॥ प्रभूमिताया स्व
 तिया दिने शः शेषाश्च शान्ताश्च दिशो भवंति ॥ १७ ॥ दग्धादि गे श्री ज्वलिता दि
 भेन्द्री धूना न्विता वानल दिक्च भति ॥ इत्येव जेवं प्रद्वारासु केन भुक्ते दिशं ना
 मिहति गम रस्मिः ॥ १८ ॥ लग्नस्थे चरुणा शंगि ह्युक् स्थे दक्षिणां रवौ यायात्

संक्षि
२६
भा सप्तदशी शुभा ॥ ६ ॥

इति श्रीसंग्रहशिरोमणावरण्या धनकथनं नाम सप्तदशी प्रभा २७ ॥ अथ राजाभियेकप्रकरणम् ॥ उदितेऽब्जे गुरो शुक्ले विचित्रे चोत्तरायणे ॥ जन्मे शेषास्वके गे श्रे रवौ भौमे वलान्विते ॥ १ ॥ गेहिणी दितये पुष्ये ज्येष्ठा यां च्युत्तरतया ॥ रेवती युगले हस्ते चित्रायां श्रवणोऽपि च ॥ २ ॥ तिथौ चारे शुभे ऽर्क्षेऽपि कुर्याद्भजाभिषेचनम् ॥ स्थिरे चोपये लग्ने जन्म भान्मस्तकोदये ॥ ३ ॥ शुभे युक्ते क्षिते वापि पापदृग्योगवर्जिते ॥ धनकेन्द्रत्रिकोणारव्यरहितैः पापखेचरैः ॥ ४ ॥ सौम्यैरषष्टगैः सर्वैर्व्ययमृत्युविवर्जितैः ॥ केन्द्रत्रिकोणैः सौम्यैरसौम्यैः षट्त्रिणाभगैः ॥ ५ ॥ सुहृत्स्वर्क्षे च गैः खेटैः नीचाराति रुक्निधने मृतिः सुते पुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता ॥ ६ ॥ पापैस्तनूनाम्बुगैः सर्वशुभं केन्द्रगते प्रशुभग्रहैः ॥ ७ ॥ गुरुर्लग्नकोणो कुजौ रौमिः

रवे स राजा सदा मोदते राजलक्ष्म्या ॥ तृतीयाय नो सोरि सूर्यो रव वंधो गुरुश्च दूरि-
 नी स्थिरा स्यान्नुपस्य ॥ अथ युव राज्याभियेकः ॥ युव राज्याभियेकस्या दभिवे को कृमा
 दिव्य ॥ अथ युवराज्येऽन्यस्याभियेचनम् ॥ स्वज्ञाति राज्ञस्तत्स्थाने पुत्राभावे कुलोद्भवम्
 ॥ नो चिंत्या स्तिथि वाराद्यास्तत्कालमभियेचने ॥ २६ ॥ राजचिन्हधारणम् ॥ चामरं
 छत्रदोलादि पीठसिंहासनादिकम् ॥ यदा मिथेकके सर्वे चिदध्याच्छेभनेहनि
 ॥ १० ॥ द्विवेदि कुलसम्भूतसरयूकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ समाज्ञेया प्रभा ह्यष्टा-
 दशी शुभा ॥ ११ ॥ इति श्री संग्रह शिरोमणौ राज्याभियेक कथनं नामाष्टा-
 दशी प्रभा १८ ॥ अथ यात्राप्रकरणम् ॥ विज्ञातजन्मनां राज्ञां ज्ञात्वा शुभफलोदयम्
 ॥ योज्या यात्रा शुभे प्रशस्ता प्रश्नादज्ञातजन्मनाम् ॥ १ ॥ अथ प्रश्नलग्नाद्यात्राया
 प्रशुभाशुभफलम् ॥ अनुयो लभ्य राशौ चालभ्येऽस्ते वातदीर्घ्वरे ॥ ताभ्यां चोपच-
 यलनं तदा राज्ञां जयो ध्रुवम् ॥ २ ॥ जन्मतोलभ्ये राशौ स्तूय्येऽस्ते वातयोऽप-

तिः ॥ ताभ्यामुपचयं भवायातुस्स्याद्वैरिसंक्षयः ॥ ३ ॥ जयो लगनेऽथ सच्चर्गे भवे
 च्छीघोदयेऽपि वा ॥ शुभैर्युक्ते क्षिते वापि शुभायात्राचरोदये ॥ ४ ॥ स्थिरोदये
 गमोनस्याच्छुभैर्दृष्टेयुते शुभे ॥ द्विस्वभावोदये गपैर्युक्ते वाथ निरीक्षिते ॥ ५ ॥
 प्रस्थितोऽपि निर्वर्त्तते निज्जितोऽरिजनैः पुनः ॥ रस्ये भूमि तले दृष्टे शुभे मांगल्य
 वस्तुनि ॥ ६ ॥ जत्यादरेऽपि चेत्प्रश्ने जयो लानोऽपि जायिनाम् ॥ भृगो लगनेषु
 धेतुर्ये सप्तोत्थेऽर्क्षे सुते गुरो ॥ ७ ॥ लाभगौरयैः शत्रून्जित्वाभ्येतित्युपगृहम्
 । लगने भौमेऽथवा मन्दे सुते जीवेऽथवा रवौ ॥ ८ ॥ लाभे कर्म्मणि वाचने शुक्रेऽ
 ऽपि विजयो भ्रवम् ॥ लगने भौमेन्दुयुक्ते वादिनेऽतनुजे क्षिते ॥ ९ ॥ चंद्रवानि
 धनेऽस्तस्थे भास्करे लगनवर्त्तिनि ॥ षोडशैर्बभूव लगनाष्ट हि वुको यगते रश्मिः ॥
 १० ॥ एभिस्त्रिभिश्च दुर्योगैः प्रबुभंगे न संशयः ॥ कोणे भौमाहुधे ज्या किं शु
 वेयुचतुर्थ्यपि ॥ ११ ॥ एकश्चेद्भमनं न स्यात्सूर्याद्वा कोणगे विधौ ॥ नयेद्गु

त्वाद्वा साऽत्रयः खटो वल्वौ स्तयोः ॥ १२ ॥ अश्वगम्य दद्यात् ॥ तत्पदः ॥ १३ ॥
 यः ॥ वीभूया हल युक्तस्त्वा माशानयतेऽहो ॥ १३ ॥ अथ संक्रांति यात्रा ॥ मेघसिं-
 ह धनुः संस्थे यात्रा शस्तां शुभालिनि ॥ कुम्भनङ्गो गनायुग्म राशि संस्थे तु मध्य-
 मा ॥ १४ ॥ कर्कालिमीनगेऽर्के तु यात्रा दीर्घतमा मता ॥ विशेषोऽपि ॥ यात्राज-
 सिंहतुरगे पगते वरिष्ठा मध्या शनैश्चरबुधो शन सां गृहेष्टु ॥ भानौ कुलीरं च पट्ट-
 श्वकगेऽतिदीर्घा शस्तश्च देवल मतेऽथ निष्टु गोऽर्कः ॥ १५ ॥ अर्द्धयामावशे-
 वाया रात्रे र्य्याम प्रमायातः ॥ अष्टास्वपि क्रमादिषु चमरांश्चास्वतः स्तुतन् ॥
 १६ ॥ अङ्गारिणी दिग् विणा विमुक्तयस्यो रविस्तिष्ठति साग्रदीप्ता ॥ प्रभूमिना यास्व-
 तियां दिने प्राः शेषाश्च शान्ताश्च दिशो भवंति ॥ १७ ॥ दग्धादिगौ शीज्ज्वलितादि-
 गेन्द्री धूम्रा न्विता वानल दिक्च भाते ॥ इत्येव भवं प्रहाराष्टु केन भुंक्ते दिशं ना-
 मिहति गमरस्मिः ॥ १८ ॥ लग्नस्थे बरुणा शोहि बुधस्थे दक्षिणा रेवौ यायात्र-

॥ सप्तमगे पूर्वाग्रामे बूरा संस्थिते सौम्याम् ॥ १८ ॥ अथ तारा तिथ्यादि शुद्धिः ॥ ता-
 रानि पंच सप्ताद्या नृत्ता मा पूरिमासुमी ॥ शुक्लाद्या द्वादशी षष्ठी हित्वा चंद्रव-
 ले गमः ॥ २० ॥ एतत् तिथिफलम् ॥ कृष्णा च प्रति पञ्चैका नो शुक्ला गमना दिव्यु ॥
 च्चितीया कार्यसिद्धौ स्यात्तृतीया क्षेम संपदे ॥ २१ ॥ चतुर्थी क्लेशदाज्ञेया लाभ
 दा पंचमी तथा ॥ व्याध्यर्तिदायिनी षष्ठी सप्तमी भक्ष्य भोज्यदा ॥ २२ ॥ रोगदा
 चाष्टमी ज्ञेया नवमी मृत्युदा सदा ॥ दशमी लाभदानित्यं हेम देका दशमी स्मृता
 ॥ २३ ॥ प्राणहृदा दशमी प्रोक्ता सर्वसिद्धात्रयो दशी ॥ शुक्ला चतुर्दशी नेत्रा कलपक्षे
 विशेषतः ॥ २४ ॥ पूर्णिमा माध्यमा प्रोक्ता त्याज्यो दशैस्त्व सर्वदा ॥ तिथीनां फल
 मेतद्वि विचार्यैतन्मने बुधैः ॥ २५ ॥ अथ शुभवारः ॥ सूर्ये चरैश्चोपचयस्य स्या
 पितृसरे ॥ अत्राश्वेद्या बुधे मध्या लोके एण्डे तु न कंचित् ॥ २६ ॥ रवौ सूर्ये द्ययाया
 बुधकाले शनौ नरः ॥ भौमे शुक्रा सदान्यत्र वरै कैश्चिद्विती रितम् ॥ २७ ॥ अथो- २१०

शिक्तममध्यमाधमनक्षत्राणि ॥ धनिष्ठा अवरुणो हस्तोऽनुराधारेवतः द्रुवम् ॥ चतुर्गः पुनर्वसुः
 पुष्यः श्रवणं ज्येष्ठानि च ॥ २८ ॥ मूलं पूर्वात्रयं ज्येष्ठारोहिणी धनतारका ॥ उ
 त्तराणान्द्रियोयानि मध्यान्येतानि भानि च ॥ २९ ॥ चित्रात्रयं मघाश्लेषा कृत्तिका द्रु
 मरएयपि ॥ वज्र्या न्येतानि धिष्णानि यात्रायां जन्मभूमं तथा ॥ ३० ॥ अथावश्य केनक्षत्रो
 णां त्याज्य घटिकाः ॥ पूर्वासुयोदशौ वाघा कृत्तिका स्वक विप्रतिः ॥ मघा स्वैका दश त्याज्या
 भरणी सप्त नाडिकाः ॥ ३१ ॥ स्वात्यश्लेषा विशाखा सुज्येष्ठा याश्च चतुर्दश ॥ यायास्त-
 र्गन वले शेष नाडी ख्यावप्रद के सति ॥ ३२ ॥ मन्तारम् ॥ कृत्तिकायां मघा स्वात्यो रैके प्र-
 र्वहलं जगुः ॥ उत्तरार्द्धं च चित्राया भरणी श्लेषयो रपि ॥ ३३ ॥ सर्व स्वाती मघा त्या-
 ज्यो सन सो मत मीदृशम् ॥ ३४ ॥ अथ नक्षत्र विशेषे विजययात्रा ॥ संप्रस्था या नुराधायां
 स्थित्वा ज्येष्ठाभिधेततः ॥ मूले गच्छेन्मही पालो यदि स्याच्च ज्यो प्रवम् ॥ ३५ ॥ हस्ते
 प्रस्था य वा स्थित्वा तत्रैव स्वाति चित्रयोः ॥ विशाखायां व्रजन्भूपो विजयं लभते प्रवम् ॥ ३६ ॥

॥ ३६ ॥ प्रस्थाय मृग प्रीर्यैवास्थित्वाद्र्योततो ब्रजेत् ॥ पुनर्वसो ग्रही यालो लभते
 च जयञ्जयम् ॥ रेतस्याम्युद्यमे वापि धनिष्ठायां ग्रही श्वरः ॥ उद्यित्वा स्वीय शिवि-
 रे रत्नो गच्छन् जयत्यरेन् ॥ ३८ ॥ अथ दिक् प्रलम् ॥ दिग्बलं पूर्वादिग्भागे ज्येष्ठ्यायां श-
 नि सोमयोः ॥ पूर्वं भाद्रपदे याभ्यां तथैव गुरुवासरैः ॥ ३९ ॥ रवौ शुक्रे च रोहिण्यां
 पञ्चमायां त्यजेद्बुधः ॥ उदीच्या मुत्तरा फाल्गुणाय भिधे मंगले बुधे ॥ ४० ॥ अथ विदि-
 क् प्रलम् ॥ ज्ञानेय्यां च गुरौ चन्द्रे नैऋत्यां रवि शुक्रयोः ॥ द्वाग्रान्यां चंद्रजे वायौ मंग-
 ले गमनं त्यजेत् ॥ ४१ ॥ अथ दिक् प्रलम् परिहारः ॥ सूर्यं वारे घृतं भास्य सोम वारे दध्नस्त-
 था ॥ गुड मंगारके वारे बुध वारे तिलान्यपि ॥ ४२ ॥ गुरु वारे दधि भास्य शुक्रवा-
 रे यवानपि ॥ माषान्मुक्ता शर्नैर्वारे गच्छन्मूलेन दोष भाक् ॥ ४३ ॥ अथापरः ॥ तो-
 वूलं चंदनं मृच्च पुष्यं दधि घृतं तिलाः ॥ वारभूल दूराण्यर्कात्स्मरणादपि वानि शि-
 ॥ ४४ ॥ अथ समय विशेषे त्यान्यानि भानि ॥ पूर्वोक्ते रोहिणी धिले विष्णवा कृत्तिका हरः ॥ ४५ ॥

॥ मध्यान्ह सप्तये ज्येष्ठा श्लेयाद्गमूल भन्तथा ॥ ४५ ॥ अपराह्णे परित्याज्या गमने
 चाब्धिनी सदा ॥ चित्रान्त्यमनुराधा च यामिन्याः प्रथमेशके ॥ ४६ ॥ मध्येऽशके
 त्यजेत्पूर्वा त्रितयं भरणी मघा ॥ प्रान्ते पुनर्वसू स्वाती धनिष्ठा प्रततारका ॥ ४७ ॥
 अथ सर्वकालेऽश्विनक्षत्राणि ॥ अत्रोपुष्ट्यो मृगो हस्त श्रेष्ठा यात्रा सुसर्वदा ॥ ४८ ॥ अथ
 युद्धयात्रायां विशेषः ॥ राहु सुक्ता निजरक्षाणि जीव पक्ष रत्रयो दश ॥ मृत पक्षस्तु भोग्या
 नि कर्त्तरी तदधिष्ठितम् ॥ ४९ ॥ ततः पंचदशे ग्रस्तं चित्यं युद्धे गमादिषु ॥ जीव-
 पक्ष शुभो द्वे यो मृत पक्षस्त्वशोभनः ॥ ५० ॥ मृत पक्षाच्छुभं ग्रस्तं ग्रस्त भारक-
 र्त्तरी शुभा ॥ मृत पक्षे सहस्रांशौ जीव पक्षे विधौ स्थिते ॥ ५१ ॥ यात्रायां विजय
 रत्नत्र विपरीते पराजयः ॥ उभौ चेज्जीव पक्षस्थौ यात्रातत्रापि शोभना ॥ ५२ ॥
 चेदुभौ मृत्यु पक्षस्थौ रविन्दूतत्र कष्टदा ॥ याथिनो जयदश्चंद्रो जीव पक्षे व्याद-
 स्थितः ॥ ५३ ॥ भानुमान् जीव पक्षस्थः स्थायिनो विजया वहः ॥ अथ कुलकुल कुलाङ्ग

श्रे ल गणाः ॥ आदेशकुलम् ॥ धनिष्ठाभरणी स्वाती हस्तो ज्येष्ठा पुनर्वसूः ॥ रोहिणी ज्यु-
 त्तं चान्त्या नुराधा विद्यमातिथिः ॥ ५४ ॥ सूर्येन्दु गुरु मंदारव्यवागश्चैव गणोऽ-
 कुलः ॥ अत्र संग्रस्थितो राजा शत्रून् जयति संगरे ॥ ५५ ॥ अथ कुलगणः ॥ पूर्वोच्चि-
 नी मघा पुष्यः कृत्तिका अवरोग मृगः ॥ चित्रा ज्येष्ठा विशारवा च कुज शुक्रौ चतुर्द-
 शी ॥ ५६ ॥ अष्टाकांश्च मितास्ति ध्यो गणोऽयं कुलसंज्ञकः ॥ संग्रामे या यिनोभे-
 गः स्यायिनोऽत्र जयो भवेत् ॥ ५७ ॥ अथ कुलाकुलगणः ॥ अभिजिन्मूलमाङ्गि च श-
 तं संवुधवासरः ॥ द्वितीया दशमी षष्ठी कुलाकुलगणस्त्वयम् ॥ ५८ ॥ राज्ञस्सम्य-
 स्थितस्यानसंन्यि भवति वैरिणा ॥ अथ नामादि वर्णविशने सार्गिको वर्णस्वरः ॥ कच्छाधन-
 वानां स्यादकारो वर्सर्जः स्वरः ॥ खजद्वानसमानानुस्वरद्वकार उच्यते ॥ ५९ ॥ ग-
 भतापयथावर्णा उकारस्वरभाजिनः ॥ घटथा फरश वर्णा एकारस्वरसङ्ज्ञकाः ॥
 ६० ॥ चट्टा वल्हा श्वेवाभोकारः कथितस्वरः ॥ नाम्नियश्चादि मो वर्णस्तद्वशात् ॥ ६१ ॥

पुनस्तदः ॥ ६१ ॥ अथतिथिस्वरः ॥ अकारादिस्वरः पंच नंदाद्यास्तिथयः ज्ञानात् ॥
 निजस्वरतिथेर्ज्ञेयावालप्रभृतयस्वरः ॥ ६२ ॥ आद्यो वालः कुमारोऽन्योयुवा वृद्ध-
 स्तथा मृतः ॥ ईषस्त्राभ करस्त्वाद्यः कुमारस्त्वईलाभदः ॥ ६३ ॥ सर्वासिद्धियुवाकु-
 र्भ्यहृद्दोमध्योऽधमोऽन्तिमः ॥ अथपथिराहुचक्रम् ॥ विशगरवापुष्यमश्लेषानुराधा-
 ण्विप्रान्ताभिधम् ॥ धनिष्ठे नानि धर्मस्युश्रक्तेऽस्तिन्यथिराहुके ॥ ६४ ॥ भरणी
 अवणोज्येष्ठा मघा स्वाती पुनर्वसू ॥ पूर्वभाद्रपदैतानि भान्यर्थे गदिता निच ॥ ६५ ॥
 चित्रार्द्रा कृत्तिका मूलं पूर्वा फाल्गुणि काभिर्जित् ॥ तथाभाद्रोत्तरैतानि कान्ते धित्वा
 नि सप्त च ॥ ६६ ॥ उत्तरा फाल्गुणी हस्तो रेवती रश्मि मृगः ॥ पूर्वाषाढा ह्यश्लेषोक्षे
 भान्येतानि बुधा जगुः ॥ ६७ ॥ धर्मर्क्ष संस्थिते सूर्ये चन्द्रे मोक्षार्थं गच्छुभः ॥
 मर्षर्क्षे भास्करे चंद्रः प्रशस्तो धर्म मोक्षगः ॥ ६८ ॥ सूर्ये काम क्षिप्रो मोगो
 क्ष धम्नार्थं गच्छ प्रणि ॥ मोक्षधिस स्थिते सूर्ये चंद्रना धर्मं गच्छुभः ॥ ६९ ॥

| स | पुष्य | श्ले | वि | श्रु | ध | श | धर्म |
|----|-------|------|------|------|-----|----|-------|
| भ | पु | म | स्वा | ज्ये | श्र | रू | अर्थ |
| क | गा | रू | चि | मू | अ | उ | काम |
| रू | म | उ | ह | रू | उ | रे | मोक्ष |

सु मासेषु तिथ्यो द्वादश सञ्जूकाः ॥ लेख्याश्च के त्रयो द्रष्टव्या सविहायति
 धि त्रयम् ॥ ७१ ॥ तृतीयादित्रये तत्र त्रयो द्रष्टव्यादिके फलम् ॥ यानि प्राच्या
 दिकाद्या सुवक्ष्ये द्वादशधा क्रमात् ॥ ७२ ॥ सौरव्यं मूल्यं धनार्तिश्च लाभोला
 भोभयं धनम् ॥ कथं सौरव्यं कलिर्मृत्युः मूल्यं प्राच्यां फलं क्रमात् ॥ ७३ ॥
 क्लेशो नैश्वं व्यथा सौरव्यं द्रव्यापि निर्भयिवने ॥ सौरव्यं लाभः कष्ट सिद्धिः लो-
 भस्सौरव्यन्तु दक्षिणे ॥ ७४ ॥ भयं नैश्वं प्रियापि भयं भयं द्रव्यं मृतिर्द्रव्यम् ॥

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----------|------------|--------------|-------------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | सौख्यं | लेश | भीति | अर्थागम |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | शून्यं | नीचं | नेषं | मिश्रता |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | इत्यल्ले | दुखं | व्याप्तिः | अर्थः |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | लाभः | सौख्यं | मंगलम् | वित्तलाभः |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | लाभ | इत्याप्ति | धनम् | सौख्यम् |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | भीति | लाभः | मृत्युः | अर्थागमम् |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | लाभ | कष्ट | इत्यलाभः | सुखम् |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | कष्टम् | सौख्यं | लेशलाभः | सुखम् |
| ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | सौख्यं | लाभः | कार्यसिद्धिः | कष्टम् |
| १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | लेश | कायसिद्धिः | अर्थः | धनम् |
| ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | मृत्यु | लाभ | इत्यलाभः | प्रवृत्तम् |
| १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | शून्य | सौख्यं | मृत्यु | अन्यतकष्टम् |

लेशलाभो यं सिद्धिस्त्वं लाभो मृत्युश्च पश्चिमे ॥ ७५ ॥ धनं मिश्रं धनं लाभः

शि शेरव्यं लाभस्सुखं सुखम् ॥ कसं द्रव्यत्वं शून्यत्वं कष्टमुत्तरदिकृ फलम् ॥ ७६ ॥
 ॥ अथ सर्वकियोगफलम् ॥ तिथिनक्षत्रवारैक्यं सप्ताष्टादिनविभाजितम् ॥ आदि-
 शून्येऽतिपीडास्यान्मध्य शून्ये अयं तथा ॥ ७७ ॥ शून्येत्ये वपुषो रोगो मृत्यु-
 श्मून्यत्रये भ्रवम् ॥ जय प्रत्वायी गमस्सौरव्यं शेषे च स्थानकात्रये ॥ ७८ ॥ चिं-
 त्यमेतद्विद्यागादौ सुक्ताद्यास्तिथयोऽनृतु ॥ अथाडलश्रमौ त्याज्यौ ॥ यान्नायंत्रहं-
 लप्रवाह समरे चौर्ये च संधौ तथा कूपागम तडागबंधन विधौ पापहिं दुर्गि-
 हे ॥ अन्वे भोक्तृ रसाधिरोहण विधौ त्याज्यं सदैवाडलं यत्नान्नात्रशुभेषु मंगल-
 विधौ देवी नतस्तद्विहितम् ॥ ७९ ॥ रविमात्स्याभिचान्द्रे सप्तभिर्ह्यर्द्धे ७ शेष-
 के ॥ आडलोऽथत्रिंशत् ६ शेषे अमोनेष्ट्ये गमे त्विमौ ॥ ८० ॥ अथ प्रशस्तो हरेव
 गोगः ॥ चंद्रं सूर्यं भाद्रुतं पक्षादि तिथि वासरैः ॥ नवाप्तं सप्तशेषे तु हरेव स्थ-
 च्छुभोगमे ॥ ८१ ॥ अथ घवाडलव्यः शुभयोगः ॥ सूर्यं भाद्राण्ये चांद्रं त्रिगुणं तिथि-

संयुतम् ॥ सप्तभिस्तु हरेद्भागं त्रि श्रेयं स्याद्द्वादकम् ॥ ८२ ॥ गमेऽभुमंसदा
 द्वैर्बैधवाङ्गैरवात्सदा ॥ अथटेलकम् ॥ सूर्य्यभाङ्गराये च्चाङ्गं तिथि वारच चि-
 त्तिलम् ॥ सप्तभिस्तु हरेद्भागं पञ्च श्रेयैरुटेलकम् ॥ ८३ ॥ अथ गौरवम् ॥ सूर्य्य
 भाङ्गराये च्चाङ्गं तिथि वारच मिश्रितम् ॥ अर्कैः संख्ये हरेद्भागं नव श्रेयैतु गौर
 वम् ॥ ८४ ॥ प्रवेष्टे गौरवं दद्यान्निर्गमे हरेवन्नया ॥ तस्करे टेलकं दद्याद्द्वादं
 सर्वकर्मसु ॥ ८५ ॥ अथ मेवादीनां घातचंद्रः चंद्रघाती लाघवत्वेन ॥ मेषकन्या घटहरी
 नक्र युग्मधनुर्दृषाः ॥ मीनसिंहधनुः कुंभा घात चन्द्राऽप्रजादितः ॥ ८६ ॥ युद्धे
 चैव विवादे च कुमारी पूजने तथा ॥ राजसेवा चाह नादौ घात चंद्रं विवर्जयेत् ॥
 ८७ ॥ तीर्थयात्रा विवाहान्न प्राशनोपनयादियु ॥ मांगल्य सर्वकार्येषु घात
 चन्द्रं न चिंतयेत् ॥ ८८ ॥ जन्मस्थो मेष राशे स्याद्दृषभस्य तु पंचमः ॥ नवमे
 मिथुनश्चेन्द्रः द्वितीयः कर्कटस्य च ॥ ८९ ॥ षष्ठस्तु सिंह राशेऽथ कन्याया दश ॥ ९०

मस्मृतः ॥ तृतीयत्तुदुलाराशे र्दृश्विकस्य च सप्तमः ॥ ८० ॥ चतुर्थीधन्विनो
 द्वेयो मकरस्याश्वस्तथा ॥ कुंभस्यैकादशः प्रोक्तो मीनस्य द्वादशः स्मृतः ॥
 ८१ ॥ घातचंद्रादग्नेवज्याद्यात्रायां राजदर्शने ॥ विवादे वाहना रोहे युद्धे भे-
 यज्यसेवने ॥ ८२ ॥ विवाहादिभ्युभेऽन्यत्र नैते चिंत्या मनीषिभिः ॥ अथमेया
 दीनाघातक्षारिण ॥ मेघमघाद्वेधे हस्तो मिथुने स्वाति रुच्यते ॥ कर्कटचानुराधारव्यं
 सिंहमूलं प्रकीर्तितम् ॥ ८३ ॥ कन्यायां श्रवणो द्वेयस्तुलायां श्रततारकाः ॥ वृ-
 श्विके रेवती धिष्णं भरणी धनुर्वि स्मृता ॥ ८४ ॥ मकरे रोहिणी कुंभे चार्द्राश्ले-
 षातु मीनगे ॥ एतानि घातधिष्णानि जन्मराशे र्न्मरस्यच्च ॥ ८५ ॥ अथ घातवाराः ॥
 मेघे रविर्बुधः कर्क मिथुने चन्द्र एवच ॥ कन्या वृषभसिंहेषु शनिः स्यान्मकरे कुं-
 जः ॥ ८६ ॥ धनु र्दृश्विक मीनेषु शुक्रोऽथ तुलकुंभयोः ॥ जीवश्चेज्जन्मराशे
 च घातवारा बुधे स्मृताः ॥ ८७ ॥ अथ घाततिथयः ॥ मेघवृश्विकयोर्नन्दा भद्रा

मिथुन कर्कयोः ॥ जया सिंह धनुः कुंभे रिक्ता च तुल कुंभयोः ॥ ८८ ॥ कन्या वृषभ-
 मीनेयु पूर्णा घात तिथि स्मृता ॥ अथ घात तिथीनां त्याज्य घटिकाः ॥ कार्त्तिके ८ त्या वश्यके
 नाडी बद्धं घात तिथौ बुधैः ॥ आदिमं शोपरित्यज्य नो निंद्या शेष नाडिकाः ॥ ८९
 ॥ अथ घात लग्नानि ॥ मेष गे कर्कट तोलि नक्र मीनां ग नालयः ॥ धन्वि कुंभौ युग्म
 सिंहौ घात लग्नानि मेष भात ॥ ९० ॥ अथा वश्यके घात चन्द्र नक्षत्र पाद त्याज्यः ॥ मे-
 धेनु कृत्तिका द्यौः द्विद्वेषे चित्रा द्वितीयकः ॥ युग्मे प्राते तृतीयोऽद्विर्म घाया अपवि
 कर्कटे ॥ ९१ ॥ धनिष्ठा घात तथा सिंहे रित्रय श्वाद्रा तृतीयकः ॥ तुले मूले द्विती-
 योऽघ्निरलो रोहे स्तृतीयकः ॥ ९२ ॥ पूभा तुर्थोधनुः संज्ञे मघा तुर्थो मृगे तथा ॥
 कुंभे मूल चतुर्थोऽघ्निर मीने प्रभा तृतीयकः ॥ ९३ ॥ त्याज्या घात विधौ चोक्त पादा
 आवश्यके बुधैः ॥ अथ सूर्यादयो घात ग्रहाः ॥ अथ सूर्यः ॥ वेदाद्या केयु नंदे हुरसदिक्
 शैल संमिताः ॥ रुद्र नेत्राग्नि संख्या अघात सूर्यास्तु मेघतः ॥ ९४ ॥ अथ चंद्रः ॥ २२

संशि द्रुवाणा कनत्राग दिगांमशैलसख्य काः ॥ वेदाद्ये शार्क संख्या का शेषा ह्वाने
 २२२ तवः क्रमात् ॥ २०५ ॥ अथ भौमः ॥ वाराण केन्दुरसाश्रादृक् शैल रुद्र भसंसिताः
 ॥ सूर्याग्न्यब्धिमिनासेषाब्जमाह्वानो धरात्मजः ॥ २०६ ॥ अथ बुधः ॥ नेत्रांगाश्रा

अथ यात तिथिवा एनक्षत्र लग्नचंद्रमा लिख्यते ॥

अथसूर्यादयो घातगृहानः

[illegible]

दिग्निशैलेषा वेदाष्टैस्त्वं कं संमिताः ॥ हादशेस्तु मिताघातवोधनः क्रमतस्त्वजात् ॥
 १०७ ॥ अथगुरुः ॥ रसनेत्रेषा शैलेषा वह्निनागार्कसंमिताः ॥ नरेन्द्रद्वित्रिसं-
 रख्याता घातेज्या मेघनः क्रमात् ॥ १०८ ॥ अथशुक्रः ॥ शैलदिग्वह्निनागार्कवेद
 नरेन्दुभिर्निमिताः ॥ आश्राश्ववाणदक्संख्याघातशुक्रस्तु मेघनः ॥ अथशनिः
 नैश्वरः ११० अथलीलां घातचन्द्रः ॥ भूनागाख्यं कं वेदाग्निरसाख्याश्राशिवेषु
 भिः ॥ सूर्यैश्च प्रमिता मेघाह्वातचन्द्रो मृगी दृशाम् ॥ १११ ॥ अथचंद्रवासः ॥ ति-
 थिपंचगुराणीकृत्यतथैकेनचसंयुतम् ॥ रुद्रनैत्रेहिरेद्वागं चन्द्रवासस्त्रिधाभवे
 त् ॥ ११२ ॥ एकशेषेवसे त्वर्गेद्विके पातालमेवच ॥ तृतीये मृत्युलोकेचच-
 द्रवासस्त्रिधाभवेत् ॥ ११३ ॥ स्वर्गलोकेयदाचंद्रो ह्यमृतत्रियदृशनिः ॥ मृ-
 त्युलोकेयदाचंद्रस्सर्वकर्मसुसिद्धिदः ॥ ११४ ॥ पातालेचयदाचंद्रः पंचक-

शि स्मारी दिवज्जयेत् ॥ वास्तौ पुरुष नाशाय होमे हगनिः प्रजायते ॥ ११५ ॥ कू-
 २४ पादियु जलं नस्या न्नि रन्ता मेदिनी भवेत् ॥ यात्रायां कार्यं हानि स्यान्नभि प्या
 रुद्र भाषितम् ॥ ११६ ॥ अथ चद्रांगवासफलम् ॥ शिरः प्रदेशे गुण ३ पंच ५ जन्म १
 षट् ६ नंद ४ दृष्टे हृदि सप्त ७ रुद्रैरिष्या १२ ८ वेदे च शिरः प्रदेशे कोच दिग्
 १० युग्म ३ विधुर्न देहे ॥ ११७ ॥ कालम् विधु द्व्यर्धं लग्नं शिरो भाग के स्या-
 च्छुभं हस्तप्रदेशे च दृष्टे च प्रहन्यम् ॥ पदे युद्धकारी कोरे सर्व लाभं प्रकुर्व्या च्छ प्री
 मानवानां फलं च ॥ ११८ ॥ अथ सन्धुलचन्द्रफलम् ॥ करला भगण दोषं वार सं-
 आति दोषं तिथिज कुलिक दोषं योगिनी मूल दोषम् ॥ रवि स्तिन कुज दोषं या-
 मयामार्द्ध दोषं हरति मकल दोषं चन्द्र मा सम्मुख स्थः ॥ ११९ ॥ अथ द्वादशचंद्रफ-
 लम् ॥ पारिा गृहे स्त्री सुरते ऽभिवेके निषेक यात्रा व्रत बंधने च ॥ जतोपवासादियु
 गर्ग पूर्वैः प्रोक्त प्रशुभो द्वादश नो हि मांशुः ॥ १२० ॥ अथ चन्द्रवासफलम् ॥ मेघशि- २२५

हृधनु संस्थः पूर्वस्यां दिशि चन्द्रमाः ॥ दक्षिणं वशे नित्यं कन्या वृषभन
 क्रगः ॥ १२१ ॥ तुला मिथुन कुम्भस्थः पश्चिमायां निशाकरः ॥ कर्क वृश्चिक
 मीनेषु गतस्तिष्ठेत्तयोर्नरे ॥ १२२ ॥ सन्मुखेऽङ्गेऽर्धलाभाय मुख संपञ्चद-
 क्षिरो ॥ पृथगे निधनं यानु वमिभागे वसु क्षयः ॥ १२३ ॥ अथ तत्कालचन्द्रा-
 वद्विषु ॥ नाड्य स्तप्त दश प्राच्यां याम्यां तिथिमितास्ततः ॥ ततः स्वर्गमिताऽत्रा-
 त्य गुत्तरस्यां नुषोडः ॥ १२४ ॥ पुनः स्तप्त दश प्राच्यां दक्षिणस्यां चतुर्विंश
 पश्चिमे नख सरल्या ताडहीच्यां पंच भूमिताः ॥ १२५ ॥ वार ह्वय भूमे चैतुः स्व
 चास स्यान्तः क्रमात् ॥ एक एषि स्थितोऽपी दूतदि प्राज्ञं फलं दिशेत् ॥ १२६
 ॥ अथ योगिनी वासस्तत्कालच्च ॥ नवमी प्रतिपत्तिर्घ्नोः प्राच्यां निवृत्तिर्योगिनी ॥
 अग्नि कोरोत्तृतीया यामे कावश्यां तथैव हि ॥ १२७ ॥ त्रयोदश्यां च पंचम्यां
 दक्षिणस्यां च योगिनी ॥ द्वादश्यां नैर्ऋते क्षीया चतुर्थ्या मपि सर्वदा ॥ १२८ ॥

| ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २७ | १५ | ३१ | १६ | १७ | १४ | २० | २५ | ३३ |

चतुर्दिशं च वक्ष्यामि यद्विष्णोर्दिशि-
क्ष्वम् ॥ वायु कोरो तु तप्तस्यां पूर्णिमा

यां तथै दहि ॥ १३८ ॥ योगिन्युत्तरदिग्भागे द्वितीया दशमी दिने ॥ अमास्या-
च तथा दृम्यामी श्रान्त्या योगिनी भवेत् ॥ १३९ ॥ योगिनी सन्ध्यायु द्यूते गर्भेयु-
द्धे च द्यूता ॥ अशुभा वाम भागस्था पृष्ठे दक्षे जय प्रदा ॥ १४० ॥ अथेतात्का-
लयोगिनी ॥ प्राच्युत्तराग्नि नैर्ऋत्य धाम्य पश्चिम वायुयु ॥ ईशान्या योगिनी
गच्छे त्वदिशः कथितः क्रमात् ॥ १४१ ॥ यामार्द्धभोग कालोऽस्या स्तिथौ
दिग्भमरान्तथा ॥ तत्काल योगिनी त्रैवाजयदा पृष्ठ दक्षिणो ॥ १४२ ॥ अथ
कालपाशौ ॥ उत्तरस्यां रवे वीरे वायो चन्द्र दिने भवेत् ॥ भौसवारे प्रतीच्यानुनै-
र्ऋत्या बुध वासरे ॥ १४३ ॥ यमा प्रायां गुरवेव वन्देर्द्विदिशि मृगोर्दिने ॥ प्रा-
च्यां दिशि शने वीरे कालः प्रोक्तो महर्षिभिः ॥ १४४ ॥ कालस्याभिमुखः

पाशो वैपरीत्यं तयो निर्निशि ॥ तावुभौ सन्मुखौ त्याज्यौ वाम दक्षिण गौ शुभौ
 ॥ १३६ ॥ अथयामार्दराहुः ॥ दंद्वायु समरुद्र तोयाग्नि प्राग्नि मारुते ॥ यामार्दमु-
 दितो राहु र्भूमत्येवं दिगल्के ॥ १३७ ॥ सूर्यो दयात्कमे रौवं दिने ज्ञेय मयो नि-
 शि ॥ अथ सुहृत्तत्तिकराहुः ॥ दर्शगत कमरुच्छक्र रक्षश्चंद्रानलोभं साम् ॥ दिशि
 असत्यं गुर्नीडी ह्यमानं दिवा निशम ॥ १३८ ॥ ज्ञेयोऽत्र वेदि प्राग्गस्तु मुहुर्तो
 ऽयन्दिवा निशि ॥ १३९ ॥ अथ राहोऽफलम् ॥ द्विविधः दृष्ट गौराहुः पुभंदो दक्षि-
 रौऽपि च ॥ मवेद्यो गिनिका युक्तं सदा युद्धे जयो ध्रुवम् ॥ १४० ॥ वामगस्म-
 न्मुखस्याज्यो आत्रा युद्धे जये सुना ॥ अथ परिदंडः ॥ छत्तिका नश्च तर्दिस्तु सप्तत-
 प्त च पूर्वतः ॥ पश्चिं लंघयेन्नैव वायव्या नल दिग्गतम् ॥ १४१ ॥ प्राची मुख-
 ग्गुरि मिरत्र याथात्मा गुरिकैश्चोडु भिरप्युदीचीम् ॥ तथैव आख्यास्य रा-
 त्रिने भैरव्या अथैश्चाव्य ए प्रया यात् ॥ १४२ ॥ अथा वप्रयके परिदोस्तु पनम् ॥

ॐ शि कृत्ये ऽत्यावधूयके गच्छेद्विलंघ्यापि च पारिधम् ॥ कृत्वा वप्रयंभूल प्रुद्धिं दि-
 २५२२८ गलग्नस्य सदानृपः ॥ १४३ ॥ पुथ्य हस्तानुराधाभ्ये सर्वदिग्मनं सुभम् ॥
 १४४ ॥ पुथ्याब्धिहस्तं मेत्राणि योस्तवैस्तव सोम्यभम् ॥ वासवं सर्वदिदृश्या
 प्रुयात्राया शोभनानिहि ॥ १४५ ॥ अथ वक्रग्रहस्य वारदित्याज्यम् ॥ ग्रहः केन्द्र
 गतो वक्त्री लग्नं वा वक्त्रि वर्गगम् ॥ वक्त्री खेटस्य वारे वा तत्र यातुर्विनाशनम्
 ॥ १४६ ॥ अथायनानुकूलम् ॥ दिवा सोम्यायने सूर्य्यायादुत्तरपूर्वयोः ॥ चंद्र
 सोम्यायने रात्रौ प्रोक्ता यात्रा नयोर्दिशोः ॥ १४७ ॥ सूर्य्यायाम्यायने गच्छेत्
 त्यग्दक्षिणायोर्विवा ॥ दिशयोस्त्वेतयोश्चान्द्रे रात्रौ याम्यायनं गते ॥ १४८ ॥
 उभौ सोम्यायने यायात्तथा चोत्तरपूर्वयोः ॥ तौ चेचाम्यायने प्रत्य ग्याम्ययो-
 स्तु दिवानिशम् ॥ १४९ ॥ अन्यथा गमनेन्दृणां भवेद्वन्द्यो वधोऽपि वा ॥ अथ
 त्रिविधः शुक्रः ॥ यन्नो देति भृगो र्यत्ना तां दिशं सम्मुखी त्यजेत् ॥ भागवाधिष्ठितो

राशिर्दिशिवायत्र लग्नतः ॥ १५० ॥ कृत्तिकादिषु दिग्द्वारभेसु यत्र स्थितो
 ऽपिवा ॥ त्याज्या सापि दिशाय स्मात्सम्मुखस्त्रिविधो मतः ॥ १५१ ॥ अथ शु-
 क दोषा पचादः ॥ रेवत्यां मेघगे चंद्रे भवत्यंधो भृगोः सुतः ॥ यात्रा दोनैव दोषाय
 सम्मुखो दक्षगोऽपिवा ॥ १५२ ॥ भृगवादि गोत्र जातानां न दोषः प्रतिशुक्र
 जः ॥ अथ गमने शुक्रस्यास्त्रादि दोषः ॥ विवरो विजिते नीचे वक्रिते वासिते ऽस्त्रो
 ॥ शत्रु क्षेत्रगते वापि तदंशे तन्निरीक्षिते ॥ १५३ ॥ भौमांशे भौम संयुक्ते मंदां
 शे मंद संयुते ॥ यात्रा नैव प्रकलव्यालस्य युर्वल हानिदा ॥ १५४ ॥ अथ बुधोऽ-
 पिसम्मुखस्त्याज्यः ॥ अनुकूले बुधे यायादित्यं भूतेऽपि भार्गवि ॥ सन्मुखस्ये बुधे
 सर्वे वृथा रवेता शुभा अपि ॥ १५५ ॥ असामान्य यात्रायां शुक्र दोषा भावः ॥ प्रति शु-
 क्रदि दोषोऽयं नूतने गमने नृणां ॥ राज्ञां विजय यात्रायां नान्यथा दोष मंह-
 ति ॥ १५६ ॥ अथावश्य के तीर्थ यात्रायां न दोषः ॥ अर्द्धोदयो परागा दो पुरत्ययोगे तु-

दुर्लभे ॥ तीर्थाधीतु सुखं याया त्कालेव स्तादि केक्यपि ॥ १४७ ॥ अथमार्गगु-
 र्गुणकृपासेनयैव ॥ जीव प्रप्राप्ताद्ने मुक्तो वानार्गसंख्येऽस्तगोद्यदि ॥ तत्रैव निव-
 सेद्राज्ञाया वदभ्युदितो भवेत् ॥ १४८ ॥ सन्मुखश्चंद्रजोयत्र मार्ग कथ्यो दितो
 यदि ॥ यावदस्ते गतस्तस्मिंस्तावत्तत्रैव संविशेत् ॥ १४९ ॥ अथ यात्रायां लघुवि-
 चारः ॥ तत्राहो त्याज्यलघुनि ॥ कुंभ कुंभांशं को त्वाजो सर्वमायत्नतो बुधैः ॥ तत्र प्र-
 यातु नृपते रथं नाशः पदे पदे ॥ १५० ॥ नीने मीनांशं केयानुः यं यावत्को धनदा-
 तिः ॥ निगिह्य गमने कं चिन्मीनं दृष्ट्वा कर्कटाः ॥ १५१ ॥ लघुनस्था वानवा-
 प्रस्थाः प्रीक्ता राक्षोजयार्थिनाम् ॥ भूभुजां जन्मलग्ने वा जन्म राशे च लघुनगे
 ॥ निधने निधनेंशे वा गमनं निधनायते ॥ १५२ ॥ वैरिणो जन्म राशे स्तु वैरिभे-
 वा तदीश्वरे ॥ यात्रा काले विलग्नस्ये सापि यात्रा विषायते ॥ १५३ ॥ अथ पु-
 न्रलघुनि ॥ जन्म राशे लघुन गते तदीशे वा विलग्नगे ॥ अभीष्ट फलं दायात्रा राशे

शश्वेच्छुम गृहः ॥ १६४ ॥ लभेवर्गोत्तमे चंद्रे यात्रोक्ता कार्यसिद्धये ॥ अंशो रा-
 शौ तदंशे वा नो कायानं प्रप्रस्यते ॥ १६५ ॥ जनौ य प्रशुभं युगा शिर्वेक्षि संज्ञो
 ऽथ वा भवेत् ॥ स्वाधनाभिधनस्यो वा स राशिर्लग्न ग प्रशुभः ॥ १६६ ॥ अथवा
 प्रीर्षो दये लग्ने यात्रा सर्वार्थदायिनी ॥ राजयोगोचिते लग्ने प्रप्रल्ला व सुधाशु-
 जान् ॥ १६७ ॥ अथ दयाप्रयः ॥ सेषादि रा प्रयो दिष्टु चतुर्वर्षे पि च पूर्वतः ॥ त्रि-
 क्रमा द्दशकैः प्रोक्ता एते द्विग्वार स द्वैकाः ॥ १६८ ॥ दिग्द्वार भे लग्नगते प्रप्र-
 स्ता यात्रार्थदात्री जय कारिणी च ॥ हाणिं विनाशं रिपुतो भयं च कुर्व्यात्तथा-
 तन्मूर्ति लोम लग्ने ॥ १६९ ॥ अथ दिगीशः ॥ सूर्यः सितो भूमि सुतो ऽथ गतुः प्र-
 नि प्रप्रशीलं प्र वृहस्पतिः ॥ १७० ॥ आच्या दिलो दिष्टु विदिष्टु चापि दिष्टु मधी-
 राः क्रमतः प्रादिष्टाः ॥ १७१ ॥ द्वितीयं स्वीयं दिक्षं स्थो लालाटी काथितो
 रः ॥ लज्जां दी संन्मुख स्थाज्यो गने मृत्यु करीयतः ॥ १७२ ॥ अथ ललाटी स्थानम्

दूद्वेयं गमादिषु ॥ जयंती सिद्धिदाक्षेया राक्षसी व्याधिदायिनी ॥ १८७
 ॥ तारिणी कार्क्यं कृद्भेया संहारी मृत्युदा सदा ॥ साधारिणी शुभा सम्य-
 गैरावती शुभप्रदा ॥ १८८ ॥ महोवला राज्यदात्री कालारव्या भयदा स-
 दा ॥ १८९ ॥ अथ यात्रावा जन्मफलं च ॥ जन्मभादिनभंगरायं नवभिर्विभिजे द्वित-
 म् ॥ श्रेयतो वाहनं प्रोक्तं गर्धभादिनरस्य वै ॥ १९० ॥ गर्दभः तुरगो हस्ती मे-
 योजंभुके सिंहकौ ॥ काको मयूरहंसौ च नैवेते नरवाहनाः ॥ १९१ ॥ राशभे
 धनहानि स्याद्वल्लामस्तुरंगमै ॥ लक्ष्मी प्राप्तिर्गजे सम्यङ्मेघे च मरणं भवेत्
 ॥ १९२ ॥ जंभुके ह्यायुषो हानि रायुर्द्विस्तथा हरो ॥ काके तु कलहश्चैव मयूर-
 सुखसंपदा ॥ १९३ ॥ हंसे मिथ्यान्मभोजी स्याद्वाहनानां फलं त्विदम् ॥ अथ या-
 त्रादृश ॥ जन्मर्क्षाच्च चतुर्गुरायं तिथि वारसमन्वितम् ॥ नवभिस्तु हरेद्भागं ३ः
 श्रेष्ठं यात्रादृशं भवेत् ॥ १९४ ॥ रविश्चंद्रः कुजो राहुः जीविमंदो बुधस्तथा

॥ केतुशुक्रः क्रमाद्द्वयं बुधैर्यत्रा दशाफलम् ॥ १८५ ॥ भास्करे श्लोकस-
त्तापौ चंद्रलक्ष्मी वरगना ॥ भौमे शस्त्रभयं हानी राहो मंगो ऽथ वंधनम् ॥
१८६ ॥ जीवे लाभं शुभा प्रज्ञा मन्दे मन्द गतिर्भवेत् ॥ शुक्रे सर्व सुखं द्वये
जयं चागममेव च ॥ १८७ ॥ अथ यात्रायां श्रेष्ठ नैराग्रहाः ॥ हित्वा सप्तमं शुक्रं के-
द्रे कोटौ शुभा शुभाः ॥ पापाश्चोपचये प्रस्ता याने नो दशमः प्राशिः ॥ १८८
॥ चन्द्रस्तु गमने नैद्यो लग्ना रिख्यय रन्ध्रगः ॥ द्यून षष्ठाष्टरिः फस्यो लग्ने शो-
ऽपि न शोभनः ॥ १८९ ॥ सुरेश स्याहितो लग्ने सत्वेदो ऽपि न शोभनः ॥ पा-
पो ऽपि चेत्सुहृत्तस्य तनौ भव्य फल प्रदः ॥ २०० ॥ जनने जन्म लग्ने श जन्म
राश्री प्रवरोदये ॥ सुहृच्चैत्कर्मगः रवेदो नैद्यो पीद्यो विलम्बगः ॥ २०१ ॥ अथ-
लग्नादि भावानां संज्ञाः ॥ लग्नाज्ञावाः क्रमाद्देह १ कोश २ धानुय्य ३ वाहनम् ४
मंत्रो ५ रिद्धिर्मीर्ग ७ आसुश्च ८ हृत् ९ व्यापार १० गम ११ ख्ययाः १२ ॥ २०२ ॥

दिने प्राधिष्ठितो राशिर्गर्ह्यदा लग्नगतस्तदा ॥ आतुर्गृह्यु प्रदः प्राच्यां दिशि सूर्यो
 ललाटगः ॥ १७३ ॥ सूर्यस्य राशितस्तस्मात्तद्वा दशे लग्नगो गृहे ॥ एकादशे
 वा आग्नेयां दिशि शुक्रो ललाटगः ॥ १७३ ॥ ललाटगः कुजो यास्ये दशमे
 लग्नगो गृहे ॥ लग्नगे नवमे राशा वष्टमे वापि नैऋते ॥ १७४ ॥ ललाटग
 सौमि के यो यातुर्द्रोक्षि धन प्रदः ॥ लग्नगो सप्तमे राशौ शनिः प्रत्यगलला-
 टगः ॥ १७५ ॥ वष्ट राशौ लग्नगते पंचमे वापि चन्द्रमाः ॥ ललाटगो वा-
 यु दिशि यातुर्मृत्युप्रदस्तदा ॥ १७६ ॥ चतुर्थे राशौ लग्नस्ये बुधस्तौम्यले
 लाटगः ॥ राशौ तृतीये लग्नस्ये द्वितीये चन्द्र पूजितः ॥ १७७ ॥ ललाट
 गश्चन्द्रमौलेर्दिशि यातुर्विना प्रादः ॥ इत्थं ललाटगो लग्ने सम्मुखे गमनं
 त्यजेत् ॥ १७८ ॥ दिगीशो केन्द्रगे गच्छेन्नतु लालाटिगे क्षपित ॥ अथोक्तं
 मये लग्नाद्य लाने समय निषेधः ॥ १७९ ॥ उषः कालो विना पूर्वगो धूलिः पश्चिमा

विना ॥ विनोत्तरं निप्रणयस्सन् यानेयाम्यां विना भिजित् ॥ १८० ॥ पूर्वा-
ले तूत्तरं गच्छेन्मध्यान्हे पूर्वतो व्रजेत् ॥ अपराह्णे व्रजेद्याम्यां मर्दिरन्नेतु प-
रिसाम् ॥ १८१ ॥ अथ सजीवनिर्जीवयान्ना ॥ सूर्य्यभादिनभंगरायमष्ट भि-
जित् ॥ निजभादिन नक्षत्रं पञ्चमं मेलयेत्समं ॥ १८२ ॥ द्वाद-
शमं शेषं यात्रा तु कथ्यते ॥ रूप १ यस्स २ गुण ३ द्वीपे ७ दिक् १०
पादिकम् ॥ १८३ ॥ वेद ४ रुद्रो ११ ग ६ मातंग ८ नन्द
॥ सजीवे गरायेस्त्रामं यात्रा युद्ध विवादिकम् ॥
अथ यात्रानाम ॥ ति-
नसुभिश्च हरेद्भागं श्रेष्ठं यात्रा च
साधारि
करोति सत
धर्मं वामार्धं लान्
त्रोजनयति शृगुजो धर्मं वामार्धं लान्

अथ द्वादशभावफलम् ॥ राहुः क्षमाजदिवाकरेन्दुरविजास्तं प्रस्थितो लभ्यते ॥
तस्मान्निविवादकांश्च कुरुते रोगाश्च नानाविधान् ॥ जीवस्सोम सुतस्सथैव
भृगुजो यात्रोदयस्यो नृणां सायात्रा धनधान्यलाभ शुभदायुरप्येहिं स लभ्यते ॥ २०३ ॥
वित्तस्थाने नृपाणां मसुर गुरुविधौ सर्वकार्यार्थं सिद्धिं वल्नो
पेतश्च जीवो हृदि सुखमनुलं प्राप्नुयस्स क्षयं च ॥ मन्दो मार्गेषु दीर्घं स्थिति सु-
तसहितः कोश हानिश्च भानुश्चंद्रः कुर्यान्नरेंद्रः प्रियजनसहितं राहु रुद्रादं-
कारी ॥ २०४ ॥ प्रस्थाने भूमिलाभं स्थिति सुतरविजौ भानुना सं प्रयुक्तौ ॥ शुक्र
श्चंद्रोत्सजौ च सुरगुरुरथवाप्रीतरश्चिर्यदा च ॥ भानुः स्थानस्थितस्तथा नर-
वरगमने सर्वकारार्थं सिद्धिं ॥ राहुप्रशन्नो विनीशं सुखयति सततं प्रस्थितः
पार्थिवोऽपि ॥ २०५ ॥ सौरव्यस्थानगते ददाति विपुलाभोगान् भूगोरात्मजः
प्राचूणां सयमीहते सुरगुरुः सौरव्यं तथा चंद्रजः ॥ हानिं चित्तगतं करोति रवि-

संक्षिप्तः स्तिग्धस्त्रयं चंद्रमा राहु भूषि सुत स्तथा कं सहितः कुर्वीति पुःखं महत् ॥

२३७

२०६ ॥ जीवः पुत्रार्थं लाभं जनयति भृगुजः सर्वं कार्यार्थं सिद्धिं प्रीतिं चैवाव-
शेषं सुत धन सहितं पुण्य मारोग्य कर्तुम् ॥ सूर्यं श्रद्धे महीजो दिनकर तनयः
सैहिकेयः प्रयुक्तो सर्वेते पंच नस्था स्सनत भयकरः पार्थिवानां प्रयाणो ॥ २०७
॥ बखे भानुर्नराणां दिनकर तनयो भूमि पुत्र स्तथैव प्रीतां प्रुद्धैत्यसंजी रत्ननि-
कर सुतः सैहिकेयो ऽथ जीवः ॥ कुर्वन्सर्वार्थं लाभं यद्यपि हृदिगतं साध्यते स-
र्वं कार्यं तन्नै को भूमि पुत्रो ऽप्यरिवल मयनं सर्वं सिद्धिं ददाति ॥ २०८ ॥ नि-
त्यं प्रुक्त्वा दिवा कर्कतनया श्रद्धं स्तथा भूमिजः छिन्नं प्रश्नं प्रणाशनयति च चर-
मे स्थाने स्थिताः सप्तमे ॥ सौम्यो भिन्न सखा गमं सुर गुरुः कार्यार्थं सिद्धिं परा-
राहुर्द्वैषितं करोति सततं यात्रा सुयाभिन्न गः ॥ २०९ ॥ क्षारोऽयं सोम पु-
त्रो जनयति भृगुजो धर्म वामार्थं लाभं जीवो रक्षत्य श्रेष्ठं सुत भिन्न जननी-
२३८

यात्रिकं नैधनस्यः ॥ चन्द्रो वंधं विधत्ते जनयति सचिना शत्रु यद्धेऽपि स-
 र्वो राहुश्चेद्भूमिपुत्रो हि मरि पुतनये क्षिप्रमर्थस्य नाश्रम् ॥ २१० ॥ शुक्रो
 ऽति सौरव्य नर्वमै बुधश्च जीवो विधत्ते सुखसंपदर्थम् ॥ चन्द्रश्च सौरिस्तह
 भूमिजश्च कुर्वति पौराः पुरुषस्य दोषम् ॥ २११ ॥ कर्मस्थानं गतोऽर्कः प्र-
 चुरधनकरः पुष्टिदः प्रीत रस्मिः जातस्संग्राम काले जयति रिपु वलं सौम्य
 शुक्रो च सौरव्यम् ॥ नित्यं यात्रा स्थितानां भवति भयकरः सर्वकार्येषु
 भौमो राहुर्वैरन्तथोयं जनयति सततं दीर्घ कालं तथार्किः ॥ २१२ ॥ भृगु सुत
 बुधजौ वै श्वन्द्र सूर्या किं भौमे व्रजति यदि नरेन्द्रः क्षिप्रमेका दशस्थैः ॥ सज
 यति रिपु वर्गं स्वेच्छयानि विप्रं कं विचरति गजराजो यूथमध्ये व्यथेष्टम् ॥ २१३
 ॥ क्षितिजरवि सिगार्क संहि केयो नराणां जनयति कुल नाशं श्रेष्ठ भृत्यस्य भे-
 दम् ॥ जनयति रिपु सौरव्य भृत्य हानिं च कष्टं यदि बुध गुरु शुक्रा ह्यादशस्था-

॥ लग्न गते भृगु पुत्रे स्य प्रभालभा इव सर्वे ॥ २३२ ॥ उदये रविर्द्यदि सोरि
 ॥ प्रभाप्री दशमे ऽपि ॥ वसुधा पतिर्यदि याति रियुवाहिनी वसमेति ॥ २३३
 ॥ मन्दे कुजे तनो रवे ऽर्के षुक्ते च विदित्वा भगो ॥ संव्रजन्मृयाति प्रभान्द्विजि
 त्यश्रियमस्रुते ॥ २३४ ॥ मन्दरो ज्ञिषहा दस्थो बलिर्नो ह्येज्य भार्गवाः ॥
 प्रयारो भूयते र्यस्य वसुधा तस्य हस्तगा ॥ २३५ ॥ लग्ने जीवे विधौ द्यूने च
 तुर्थे ह्ये तथा भृगो ॥ पाया हि ज्यो मर्माही पालः प्रस्थितो लग्नभते श्रियम्व ॥ २३६
 ॥ जामे ऽर्के रवे बुधे षुक्ते दुश्चिक्ये भूमि ते शानो ॥ द्यूने ऽह्ये तनुगे जीवे प्र-
 स्थितस्य भवे ज्ञायः ॥ २३७ ॥ लग्ने ऽह्ये वागुरो सूर्ये षडे व्याज गते प्रा-
 नो ॥ सुते ह्ये हि बुधे षुक्ते राजा हंति गये रिपून् ॥ २३८ ॥ बलिनीन्दु सुते
 लग्ने केन्द्रे जीवे ऽथ निर्वले ॥ त्रिषट् त्वाङ्गो चन्द्रे संव्रजन् श्रियमाप्नुया
 त् ॥ २३९ ॥ भृगुभं रवो रन वाटमहस्ये हिबुक सहोदर लाभमहस्यः ॥

कविरिह केन्द्र गगीः पति दृष्टो वसु च य लाभ करः खलु योगः ॥ २३० ॥ रि-
 शुलभ कर्म हिबुके शशिशे परि वीक्षिते शुभन भोग मनेः ॥ व्यय लभ मन-
 य महं शुजायः परि वर्जिते व प्रथ नामधैः ॥ २३१ ॥ लगने यदि जीवः पा-
 पा यदि लाभे कर्मण्यपि चेद्वा ज्याधिग मस्त्यात् ॥ दूने बुध शुक्रौ चन्द्रे
 हिबुके वा तह त्फलं मुक्तं सर्वेर्मुनि वर्यैः ॥ २३२ ॥ षडाद्याद्य गते शुक्र जीवा
 जैर्मने जयः ॥ तुर्य वोषा न सिद्धे च मन्दे चन्द्रे च तत्फलम् ॥ २३३ ॥ बु-
 ध भार्गव यो रत्नार्थानि कुमुद बांधवे ॥ तुर्यस्ये ऽङ्गे जयन्मायु गमने ऽरिन्म-
 रे श्वरः ॥ २३४ ॥ लगना १ रत्ना ७ र्य ६ म्बु ४ वह्नि स्ये षष्ठ्युक्ते ज्यार बुधा-
 र्कजैः ॥ योगो ऽयं क्रमतः प्रोक्तो गमने जय द्यो बुधैः ॥ २३६ ॥ षट् ६ त्रि ३ रत्ना
 १० री ६ न्दु १ वेदे ४ षा ११ संस्थिते तर्पणा दिभिः ॥ रे च चरैः क्रमतो जीव वारेषो-
 गोऽय सुतमः ॥ २३६ ॥ जीवे ऽर्के ऽरि गते भौमे जिगो रंघ्र गते र्दुगो ॥ द्नेन्दु-

एभिर्नेच शुभा जानाभू भुजां जय दाधिनी ॥ २३७ ॥ शुभाकी ज्यास्त्रि नूर्यस्थि
 प्राचुस्थे वन्द भूमिजे ॥ याजा भूमि भुजां प्राप्ता प्राचुहंद विहादिणी ॥ २३८
 ॥ एको द्वेज्य सितेधु पंच भतपः केहेयु योग स्तथा द्वे चैते व्याधि योग एव स
 कला योगाधि योग स्सहतः ॥ योगे स्मेम मयाधि योग गमने स्मेम रिष्टां
 वधं चाथो स्मेम यष्टो ऽवनिश्च लभते योगाधि योगे व्रजन् ॥ २३८ ॥ पंच
 मेज्यो एविः षष्टे वर्हते नवमे गुरुः ॥ भाग्ययोगाभिधि योगे निहन्ता वैरिणां
 सदा ॥ २३९ ॥ गुरुः केन्द्रे त्रिकोणे वा एवि लोभेच कर्मणि ॥ कल्याणयोगो
 भूपस्य यातुः कल्याण कइवेत् ॥ २४० ॥ दिगीष्टो दिग्बली चैस्स्या स्त्रिमे प्रा
 स्य सुहृदादि ॥ विजयो नाम योगो ऽयं यातो राजा जायी भवेत् ॥ २४१ ॥ सह
 ङ्ग स्थान गो भोमो भाग्यस्य ष्व सह स्थितिः ॥ चिन्ता मणि सुमाख्यो ऽयं यातु
 स्संकल्प पूरकः ॥ २४२ ॥ लगेते शुक्र प्रष्टी वंधो कर्म स्थाने गुरु र्यदा ॥ २४३

गोर्वो ॥ अभयमभिधयो गोयं भयं करविनाशनः ॥ २५३ ॥ आर्ये प्रो व्यय
 गो नीचः पुत्रस्थाने प्रोनेधरः ॥ विदारिक समाख्योऽयं यातुः पत्नी निह-
 न्यसो ॥ २५४ ॥ मार्गे प्राः शनि संयुक्तः सप्तमेऽस्तं गतो ग्रहः ॥ विदारिक
 मिमं मन्ये यातुः पत्नी विनाशकम् ॥ २५५ ॥ सप्तमे चन्द्रमा स्तस्मात्सप्तमे
 नीच रवेचरः ॥ कुटुंब हारको योगो यातुः श्रिय तमा हरेत् ॥ २५६ ॥ दुर्बलो
 यदि मार्गे प्रो निवसे त्याय मध्यगाः ॥ पाप कुंजरयो गोय यातुः पत्नी निह-
 न्यसो ॥ २५७ ॥ मार्गे प्राः सप्तमे भानुः पञ्चमे हार रवेचरः ॥ विदारिका रव्य
 हवासो भाव्या मरिचं न येन ॥ २५८ ॥ सो च मूल त्रिकोण स्थः सोम्यः पा-
 प विवर्जितः ॥ ज्ञानन्दार्णवयोगीयं धर्मेणैव जया वहः ॥ २५९ ॥ उद-
 याग्नि भस्त्रलग्ने दिन कृद्यथ शीत करैः ॥ न भवन्त्यरयोऽमि मुरवा हरिणा इ-
 व के प्ररिणाः ॥ २६० ॥ ज्योतिने न सहितेऽस्त गो विधौ च धुगे प्रवसता मही

भुजा ॥ संगरेरिदु गणौ विकीर्त्यते तूल राशि रिवृत्तातरि भुजा ॥ २६९ ॥ सु-
 त्तिं विन सहजेषु संस्थिताः शुक्ल चन्द्र सिततिग्म रश्मयः ॥ यस्य यान्न समये
 रणा गणेतस्य याति शूलभाङ्गवारयः ॥ २६९ ॥ यो याति जीवे तनुगे महीशः
 ह्यस्मिन्नेव्यो मन्त्र एवाय संस्थेः ॥ तस्या मृतसंयति वैरि सेनां प्रीति नृपाणा
 भिवना स्थिरा स्यात् ॥ २६९ ॥ लाभार्दुश्चिक्व गतो यमरो वलान्विताभा
 गोवर्जोवसोभ्याः ॥ यस्य प्रयागो विलयं प्रयान्ति तस्य द्विषस्सर्वरसं यथाप्नु
 ॥ २६९ ॥ लाभ विक्रमसुखस्थिते कंदकस्य गुरुणा निरीक्षिते ॥ दूनरं प्रभ
 ववर्जितैः खलैः स्यात्ततोऽभिमत सिद्धिभाक् नृपः ॥ २६९ ॥ सोम्य ग्रहेः केन्द्र
 तपस्सुतस्थेः ह्यैः स्त्रिजलाभा रिगते र्गताये ॥ क्षोपा नल प्रशान्ति सुपैति तेषां
 विरोधि नारो नयनां वृषातैः ॥ २६९ ॥ एकोऽपि जीवार्क कुजा र्क जानां स्वोच्च-
 विलमे स्वग्रहे यदीन्दुः ॥ यातस्य यान्त्यत्र पराः प्रणाशं महाकुलानी वबुद्धं

शिवभेदः ॥ २६७ ॥ चन्द्रेऽस्तमे देवगुणे विलम्बे क्षुब्धयोः कर्मणि लाभगोऽर्थे
 ॥ सौरायो र्मातृगयोऽथ यातो नृपस्त्वभृत्या निवशति प्राकृतम् ॥ २६८ ॥

सोऽस्थे लम्बमे जीवे चन्द्रे चाप गते यदि ॥ गतो राजा रिपुन्हन्ति पिनाकी विपु-
 रं यथा ॥ २६९ ॥ शुक्ले त्रिकोणे केन्द्रस्थे लम्बे चन्द्रेऽथवा रक्षी ॥ प्राञ्जुहन्ति-
 गतो राजा ब्रह्म द्वेषः कुलं यथा ॥ २७० ॥ पापास्तनीये हि वृके स्तितक्षी जीवे
 विलम्बे मगलां वनोऽस्ति ॥ यस्योद्गतस्यापि वलं रिपूणां कृतं हतमे दिव यथा
 ति नाशम् ॥ २७१ ॥ यस्योदयास्तारिचतुस्त्रिंसांस्थाः शुक्रोऽगिरां गारक-
 सौम्य सौराः ॥ द्विष हलं रक्षी वदनानि तस्य हतां तानि कान्तानां विजो कयन्ति
 ॥ २७२ ॥ पूर्वाक्षि यो गो धन गो वृधश्चेच्छ्प्रां कसूर्यो च दशाय संस्थो ॥ प्रा-
 स्मिन् गतस्यालि कुलोप गीता नाना वनस्था दिग्दा भवन्ति ॥ २७३ ॥ त्रिष-
 चन्द्रेऽवलः वृधो वली उभो च त्रिषण्वान्येव भवत स्तदायोगः ॥ ९ ॥

५०
 शि तान्मवान्त्येऽनुवलप्रप्राप्रां को बुधो वली यस्य गुरुश्च केन्द्रे ॥ तत्प्राप्तियो वा भ-
 रणेः प्रियाणि प्रियाप्रियाणां जनयन्ति सैन्ये ॥ २७४ ॥ केन्द्रेऽप्यगते न वीक्षिते गु-
 रुरास्वायतु र्यगो सिते ॥ पाथेन वाय सप्तगो र्वसु किं तन्न यदा शुभान्नुपः ॥
 २७५ ॥ यथाय गौ शुक्र बुधो प्रयाणे सुरेष्टा पूज्यो गगने यदि स्यात् ॥ रिपुः प्रणा-
 शं विषयेषु सौख्यं प्राप्नोति कीर्तिं विपुलां च भोगम् ॥ २७६ ॥ दुश्चिक्कलाभारि-
 गतेऽर्कपुत्रे चतुर्थगो दैत्यगुरो प्रयाति ॥ तदा पुमान्सिद्धिर्देन्दुयानं कीर्तिं यष्ट-
 स्तिद्धिं सहस्रमेति ॥ २७७ ॥ केन्द्रस्थाने सुरपति गुरो कंठकस्थेऽसुरेज्ये कि-
 द्रे सौम्ये प्रवसति यदा त्वष्टमेन्दुर्यदि स्यात् ॥ येषां क्रूररिपुः सहजगाराहके-
 त् च मूर्त्ता वायुः कीर्तिन्द्विरागमूलं तैलमन्ते यष्टश्च ॥ २७८ ॥ मूर्त्तौ शुके-
 सुरपति गुरो छिद्रगो वा त्रिकोणे केन्द्रस्थाने शनिरिव कुजा लाभगा वा यदि स्युः
 ये मृपायानि प्राप्नुवितुलधनमयो सैन्यनाशं विपुलां कीर्तिं शुद्धं यष्टश्च प्रमथि-

एवं स्ते सुरवाद्यज्जन्ति ॥ २७२६ ॥ दोहसंस्थे सुरपतिगुराभावात् ॥
 स्वये चन्द्रे च जति यदि वा कार्ययो गास्तितीष्णः ॥ प्राप्नोत्युग्रं कनकतुल्यां ॥ २७२७ ॥
 यद्ये चन्द्रे कोप्रमायुः कीर्तिजयति च तदा मत्तमातां दूष्यम् ॥ २७२८ ॥
 यद्यारत्नादि कोप्रमायुः शुभे क्षितेशु दूनात्यलम् राहिते च शुभमर्हेशु ॥ २७२९ ॥
 जगन्नारिकर्म हि वुंकषु शुभे क्षितेशु दूनात्यलम् राहिते च शुभमर्हेशु ॥ २७३० ॥
 तुभ्यन्न भवति प्रतरे त्समुद्रं यवप्रमनापि किमुना रिसमागमेषु ॥ २७३१ ॥
 ॥ एकांते रक्षीन्मनुजा त्कुजादा सोम्ये स्थिते सूर्य सुताहुरेव ॥ २७३२ ॥ निरन्तरं यदि भवते
 तेऽरिर्नेचिराद्गतस्य वेवाधि को भूत्यद्वे प्रवरस्य ॥ २७३३ ॥ प्राक्पालं स्थे र्गृहेः पश्चिम दिशि
 वुपंचसु ग्रहाः स्थिता दिवस करेण वर्जिताः ॥ २७३४ ॥ प्राक्पालं स्थे र्गृहेः पश्चिम दिशि
 स्तदापशान्वलानि दिवा सुकन्तानि ॥ २७३५ ॥ प्राक्पालं स्थे र्गृहेः पश्चिम दिशि
 एतज्जालं शूण्यं कपालं स्थेः ॥ २७३६ ॥ प्राक्पालं स्थे र्गृहेः पश्चिम दिशि
 युक्ताद्दोमादा सो राज्जीवादा वृधः सकान्ते तृतीय स्थाने यत्र कुत्र स्थातदायोगः ॥

६
 ण दिशि ॥ २८६ ॥ बुधभावि नध्यगते हिमगो हिवुको पगते च नृपः ॥ प्रावि-
 द्रोऽमरुहृत दिशं यदिवा त कृतः पुरुहृतयमं प्रति ॥ २८७ ॥ सितेन्दुजो चतुर्थगो
 निष्ठाकरश्च सप्तमे ॥ यदा तदा गतो नृपः प्रष्टास्त्यशीन्वि तारणात् ॥ २८८ ॥ शु-
 क्त वाक्यति बुधैर्द्धन संस्थैः सप्तमे प्रष्टि निलग्न गतोऽर्कः ॥ निर्गतो नृपति रिति कृ-
 तार्थो वर्धन्ते यदशीन्वि निहत्य ॥ २८९ ॥ सूर्येन्दु बल वर्जितौ बल युतौ लग्ने-
 प्राजन्ते पूर्वरे पाताले दशमे पिवा प्रष्टि सुतो लग्न स्थितो वाक्यतिः ॥ षट्स-
 ष्ठाष्टमवार्जिते बुभुगुजः स्थाने बुधस्य स्थितो यातुस्तस्य न विद्विषोरणा मुरवे-
 ति स्थानि योषा दव ॥ २९० ॥ सौरे भौमे लग्नगोऽर्कैरव मध्ये कर्म राधावे भार्ग-
 वे चन्द्रजे वा ॥ याथाहूय प्रष्टातु गेहं निहन्तुं दहं प्रातुं काल वक्तुरचैष्टः ॥ २९१
 ॥ शुरे विलग्नो यदिवा प्रष्टाके षष्ठे रवौ कर्म गतेऽर्कयुजे ॥ सित क्षयो वर्धुसु-
 तस्य योश्च यात्रा जानित्री वहिता निधत्ते ॥ २९२ ॥ त्रिनिधन तनु सप्तमारि सं-

रेखाः कुजसितजीवबुधारविश्वयस्य ॥ खलजनजनितेऽवलोकयान्नानभव
 तितस्य चिरायप्रवृत्तेना ॥ २६१ ॥ कुजखिजयुते हिमे गतानां जलमहजायग
 ते स्मितार्कजीवेः ॥ परवलमुपयाति नाशमाशु भुतमधनस्य कुट्टं च चित्तयेव
 ॥ २६२ ॥ भृगुपुत्रमहेन्द्रगुरुर्मने सहितो यदि भंयुगपत्पज्जतः ॥ ह्यगुरुयदि
 नवांशकमेकगतो समरेऽमराडिव भाति तदा ॥ २६३ ॥ सिंहाति तनययुतान्न-
 वांशजे यदि शतमे भृगुजीववागुरुः ॥ शतगुणमथ हन्यरेर्वलं विषं भिवकाय
 मसृक्य षोडशम् ॥ २६४ ॥ स्वोच्चो परो जीव कुजार्कवर्गे रेभिस्त्रिभिर्वा कथितैरे
 कलने ॥ राक्षःप्रणाशं समुपैति प्राशुसौरव्यहिभार्यस्य तथा धनस्य ॥ २६५ ॥
 शतांशकादूर्ध्वमवस्थिते बुधेयमारयस्तत्र गतस्य भूभूतः ॥ प्रयाति नाशं समरे
 द्विषद्वलं यथार्थभावोपगतस्य गौरवम् ॥ २६६ ॥ सिंहाजतोलि सिधुना भृगाक-
 र्केतो च स्वेषान्विता भवति यस्य शानिश्चलने ॥ तत्सेनिकाः परवलं क्षययन्ति या

तु भूर्वास्य विज्ञ विव चारण च दं मं ह्यः ॥ २६७ ॥ अथ सम आत्मा ॥ गुरो वीर्य केन्द्र
युते बुधे वा भृगु नन्दने ॥ विजयो नाम यो गोयं यातु विजयदः सदा ॥ २६८ ॥
स्वराग्रिगे बुधे लगने सिने वा सुर वन्दिते ॥ नंदा वर्त्तक यो यो यातु रिष्टार्थ सि-
द्धिदः ॥ २६९ ॥ स्वाग्र संस्थे बुधे लगने शुभे वा देव प्राप्तिने ॥ प्रां व संज्ञा क्य यो यो
गो यातुः कीर्ति प्रदः सदा ॥ ३०० ॥ स्व राग्रो स्वाग्र गो सौम्ये लग्न स्ये वा भृगो स्सुते
॥ जीवे वा ज्ञान यो गो इयं यातु प्रपन्न विनाश कृत् ॥ ३०१ ॥ अग्नि मित्रांश गो सौ-
म्ये सिने वायु सुर चिंते ॥ लग्न गो भात यो गो इयं प्राज्ञा संधि कृत् सदा ॥ ३०२ ॥
यत्रै का दश ग अश्विनो भानुर्वा प्रवल प्रशुभः ॥ अश्वयो नाम यो गो यो यं अग्नि भित्ति वि-
नाश कृत् ॥ ३०३ ॥ त्रिकोण गो शुभे खेदे सव ले वा द्वितीय गो ॥ कल्याण सञ्ज्ञो
योगो इयं यायिनां संगल प्रदः ॥ ३०४ ॥ यत्र स्वो ज्ञात अश्विनो लग्नो देका दश
स्थितः ॥ जयन्तो नाम यो गो इयं प्राज्ञ पक्ष विनाश कृत् ॥ ३०५ ॥ वर्गो जगज्जने

लभे शुभे वायवलाचिह्ने ॥ शुभ ग्रह युतैः केन्द्रे योगोऽयं सिद्धिदायकः ॥ ३०६ ॥
 पक्षे वायव गते सूर्ये ताम गेहरसच्चकः ॥ योगो महारणे प्राञ्चपक्ष क्षयकरस्सदा ॥
 ३०७ ॥ उच्चस्थे लाभो शुभे त्रिषधे देव पूजिते ॥ सुदर्शनी महा योग प्रपञ्च भ्यंस
 करोरणे ॥ ३०८ ॥ लग्नान्ये केन्द्रे चन्द्रे लग्नस्थे देव पूजिते ॥ महा प्राञ्चक्यो-
 योगः प्रति पक्षाच्च मानदः ॥ ३१० ॥ भूसुते स्विच्च गो लाभे मृग कुम्भ गते यमे ॥ नं-
 द्यावर्त्ताह्नयो योगो रणे प्राञ्च लण नलः ॥ ३१० ॥ मेघ गो भास्करे पक्षे लाभो गो स्वि-
 च्च गो यमे ॥ नक्षत्र पाद योगोऽयं प्राञ्च मेघा निलो रणे ॥ ३११ ॥ भीमे स्वर्गशि-
 गो लग्नमे सौम्ये केन्द्रे त्रिकोणा गो ॥ पुष्य योगोऽति विविध कुटारः संगरो गतो ॥ ३१२
 ॥ एकांतरे गते लग्नाच्छुभ रवेदेऽथवा शुभे ॥ वापी योगास्त्व रिज्ञान तिजिरेषु
 दिवा करः ॥ ३१३ ॥ आचक्षुके तथा याने सौम्येऽस्ति निधनेऽपि वा ॥ ब्रजिरे
 कोदयेऽस्ति वा मथ्यान्हे वायव प्रंकितः ॥ ३१४ ॥ प्रभय ह्युति तारका स्फुट

तदी प्राची भवे न्निर्मला त्वीष इत्त विलोहिता न भवला देवे स्सदा वांछिता
 ॥ नो वारं न तिथिं न चापि कारणं लभं न चापि क्षते हत्वा दीष सहस्रकंचय शुखा-
 नूपा करो ल्युन्नतिम् ॥ ३१५ ॥ मध्यं व्योम प्रयाते स्फुरद नलनि भेके परै रार्क-
 विंवे छाया साध्वी व कांता प्रचलति पुरेष यत्र तत्पाद लभा ॥ तावत्सोरिर्न्म-
 विदिः कुञ्जकत मयुभं नैव न्रहं न योगः सम्माना रोग्य संपत् स्थिति मय्ययु-
 वतिं तत्र गन्ता लभेत ॥ ३१६ ॥ अथ मय्यन्ते किंचिदिशेषः ॥ अंगुल्यो विप्रगतिः सूर्येभ्य-
 कुस्सोमे च षोडश ॥ कुजे पंच दशं गुल्यो वुधवारं चतुर्दश ॥ ३१७ ॥ त्रयोदश-
 गुरो वारं द्वादशा क्तेज शुक्रयोः ॥ शंको मूर्त्ति यदा छाया मय्याहं च प्रजायते ॥
 ३१८ ॥ तदा चाभिजिदाख्या ता षटिका च सदा वुधैः ॥ अत्र कार्याणि सिध्यंति
 सर्वा नीह कृतानि च ॥ ३१९ ॥ जातोऽभिजिति राजा स्या द्यापारं सिद्धिरुत्तमा ॥
 आचक्षिंश्चरणं गतं तल गतं भानु विंदं च नास्ति यावन्मो दिक्षु प्रणतिं प्रजाति

॥ ३३३ ॥ अहं पौरोडाहं माघे दिने नैकेन फाल्गुणे ॥ चै-
 न्रे घटी द्दयं दीपो नाथं गार्भं समुद्भवे ॥ ३३४ ॥ भावस्य तु सूर्या चंद्र मरुतो विं-
 कत्वा हेम मये तदा ॥ दत्त्वा भूमिपतिर्यायात्कार्यः ॥ तथा वश्यं कैः सति ॥ ३३५ ॥
 ॥ अथ कश्चिन्दिने निर्गम प्रवेश्यो विचारः ॥ महीपते रैक दिने पुरात्पुरं यदा भवेतां गमनं प्रवे-
 शको ॥ भवारं पूज्यं प्रति शुक्रं योगिनी विचारये नैव कदापि पाण्डितः ॥ ३३६ ॥
 यद्येकस्मिन्दिनसे महीपते निर्गमं प्रवेष्टो स्तः ॥ नहि विचार्यं स्तुथिया प्रवेष्टका-
 लो न यात्रि कस्तन ॥ ३३७ ॥ प्रवेष्टा निर्गमं प्रवेष्टे च निर्गमाच्च प्रवेष्टानय ॥ नवसे-
 जातु नो कुर्याद्विष्टे वारे ति यावपि ॥ ३३८ ॥ अथ यात्रा विधिः ॥ अग्निं जुत्वा देवतां पू-
 जयित्वा नत्वा विप्रान् संधित्वा दिगी प्राप्त ॥ दत्त्वा दानं ब्राह्मणेभ्यो दिगी प्रोक्ष्यात्वा-
 चित्ते भूमिपालोऽधि गच्छेत् ॥ ३३९ ॥ अथ नक्षत्र होहम् ॥ कुलमावा तिलतलं दुत्वा-
 नपि तथा माघांश्च गव्यं च धित्वा ज्यं हुयधं मयेण मां सम परं तस्यैव रक्तं तथा ॥ तदा

ॐ त्वाय समेव चाष पललं मार्गं च प्राणान्तथोषादि कथं च धृत्यं च दूषमथवाचि
त्राह जान्स त्कलम् ॥ ३४० ॥ कौर्मि सारिक गौधिकं च पललं प्राणं हविष्य
हवा हस्ते स्यात्तु शरान्न मुद्रमपि वापिष्टं जवानां तथा ॥ मत्स्थान्म रवतु
चित्रितान्न मद्य वा दध्य न्न मेवं क्रमाद् दृश्यामह्यमिदं विचार्य मतिमान्म ह्मे तथा
लोकयेत् ॥ ३४१ ॥ अथ दिग्देहदम् ॥ आज्यं तिलोदनं मत्स्यं पयश्चापि यथा
क्रमम् ॥ भक्षयेद्दीहदं दिश्य माशो द्वादि कां त्रजेत् ॥ ३४२ ॥ अथ चारद्देहद
म् ॥ रसालोपायस काजी मुखं हुण्धं तथा दधि ॥ पय पूतं तिला न्नं च भक्षये-

[illegible]

६३

नारदीयदत्तम् ॥ अथ विधि होहदम् ॥ अर्कं पत्रं भवेद्यातु भस्मं सत्तु लोदकम् ॥ तृती
 याया स्वर्गार्जं वागुस्थानतः परम् ॥ ३४३ ॥ पंचभ्यां तद्विविधं स्यात्पुण्यां व
 कान्तनीदकम् ॥ अथ भुक्तिं स्वर्गं च महाभ्यां वीजं पूरकम् ॥ ३४४ ॥ नवभ्यां
 यथानस्थानं शिलानुत्ततः परम् ॥ एकादश्यां जवानुद्यादश्यां पाथं भवेत्
 ३४५ ॥ अथ दश्यां गृहं लिखं स्थाप्य तु ईशे ॥ सुशोदनं भवेद्भोज्यं पंचदश्यां
 विद्यामतः ॥ ३४६ ॥ अथ सोमं लभ्यो देवं वाचा योगे विधिः स्मृतः ॥ ३४७ ॥ का
 ते दोहदे त्रयो भव्या भव्यं दिवाभ्युत् ॥ भस्म मात्साद्य संपाद्याद भव्यं भव लो

[illegible]

ਦਿਆਈਏ

संज्ञा

242

१५८
 ३४८ ॥ दोह दस्याप्यलभेत् ॥ ध्यात्वा नदीहृदं व्रजेत् ॥ अथ प्रसंगाद्देहजस
 रविचारः प्रोक्तः ॥ यदुक्तं सारतत्त्वकौस्तुभस्य यागलालादिषु ॥ वक्ष्ये देहोपबुक्तं च सं-
 क्षेपाद्भूमनादिषु ॥ ३४९ ॥ नाडी डावा मगा चान्दी पिंगला दक्षिणारवेः ॥ सुदु-

न्नाश्रे भवीमिष्या सातु यो गीन्द्र गोचरा ॥ ३५० ॥ अथ तिथि परत्वे स्तोत्रम् ॥ शुक्ले प्र-
 नि पद्मारम्भा दादौ चन्द्र तिथि त्रयम् ॥ ततस्तिथि त्रयं सूर्योद्देश्यमेव धुनः धुनः
 ॥ ३५१ ॥ ततो न्यस्य तथा चैवं तिथौ हादश संक्रमे ॥ कृत्स्ने तु प्रथमे सूर्यस्तत
 श्चन्द्रोऽन्यतुक्तं च ॥ ३५२ ॥ निज नाड्युदयाहृत्यः पंच स्वीय स्वरोदयः ॥ अ-
 थ वार परत्वेन निज स्वरोदयः ॥ अथ सूर्य्य स्तराद्देश्य भातु जीव धरातज्जाः ॥ शानि-
 भार्गव चंद्रज्ञाः प्रोक्ता चन्द्र स्वरादौ मे ॥ ३५३ ॥ स्वस्व चारे स्तरा रम्भो न्यह्यः पंचो-
 दया देवेः ॥ निज स्वरोदिनं कार्यं स्व चारे स्व स्वरोदये ॥ ३५४ ॥ काले सूर्य्य स्वर
 स्वन्दोः स्वरे चंद्र मसो रवेः ॥ उद्देश्यत्वायुभं हानिः स्वेस्वे काले रविलंघुमयम् ॥

॥ ३५५ ॥ अथ प्रातस्त्वरर्ध्वं गृह्यान्म ॥ प्रातर्नित्यं समुत्तिद्ये त्वारं अस्य स्वरं राहि ॥
 अयने दक्षिणे ऽङ्गस्य स्वरेणेवोत्तरे रेवेः ॥ ३५६ ॥ निजस्वरो दये कार्यं न भवेत्तो
 ज्ञवत्तदा ॥ प्राणा यात्रा दिपत्येन चाहर्ध्वं स्वरं सुधीः ॥ ३५७ ॥ अथ चंद्रस्वरं कल्पम् ॥
 प्रवेशे द्वाह यात्रा पश्य च स्वात्तं कारं धारणम् ॥ संधिप्रशुभानि कार्याणि कार्याणि
 त्वुत्तरो दये ॥ ३५८ ॥ योऽष्टिकं श्रान्तिकं प्रीति मोषधं चरं सायनम् ॥ योगाभ्यासा
 दिकं कर्म सिधेत्सर्वं स्वरे विधी ॥ ३५९ ॥ आन्ते शोके विधोर्न च मूर्च्छिते ज्वरिते
 पि च ॥ सज्जनस्य प्रवोधे च चन्द्रनाडी प्रवाहयेत् ॥ ३६० ॥ अथ सूर्यस्वरं कल्पम् ॥ कु
 र्यात्सूर्यं स्वरे युद्धं व्यवहारं च भोजनं ॥ मेधुनं विग्रहं दूतं स्नानं भंगं भयन्तथा ॥
 ३६१ ॥ विदिषां सारणं शस्त्रं मोहनोच्चादनं वसं ॥ सूर्यनाड्यामिधा तिसिद्धिस्तत्पुत्रं
 कर्मचारिवलम् ॥ ३६२ ॥ मंदमिभोजनादूर्ध्वं वष्यार्धं यो विता मपि ॥ सूर्यना
 ड्यां नरकुर्व्यात्तयत्नेनापि सर्वदा ॥ ३६३ ॥ अलिङ्गने प्रसंगे यो वष्यार्धं प्रायने

३६ ॥ अथ वह नाडी स्वर कल्पम् ॥
 ३६ ॥ चन्द्र स्वर सूर्येणा सकाम स्तु पिवन्भवेत् ॥ ३६ ॥ अथ वह नाडी स्थिते प्रान्त्यं संक्रमेऽपि न सि-
 ३६ ॥ पूर्णा नाडी स्थिते पूर्ण कार्यं सिध्यति पृच्छके ॥ ३६ ॥ अथ वह नाडी स्थिते प्रान्त्यं संक्रमेऽपि न सि-
 ३६ ॥ ध्यति ॥ ३६ ॥ अथे दत्त्वा वजे ह्यो मान्पूर्ण नाड्याः पदत्रयम् ॥ ३६ ॥ अथे प्र समये नाड्या न-

याद्यं सर्वे सिद्धि दम् ॥ ३६ ॥ हरे बुद्धे स्वर प्रान्त्यः समा सन्ने रवेः शुभः ॥ ३६ ॥ यायी सूर्य
 स्वर जंता स्थायी चन्द्र स्वे जयी ॥ ३६ ॥ रिक्त मंगं पुरः कत्वा वह नाड्या स्थितो ज-
 येत् ॥ ३६ ॥ अथ भगो स्थित प्रश्नानु हेन्य ते नात्र संशयः ॥ ३६ ॥ अथ भुक्त बुधे नृनां वास-
 रे वाम नाडिका ॥ ३६ ॥ सीदित्वा सर्व कार्यं यु शुक्ल पक्षे विशेषः ॥ ३६ ॥ अथ प्रवाहे गम-
 नादि प्रस्तं सूर्य प्रवाहे नहि किंच नाऽपि ॥ ३६ ॥ अथ ज्येष्ठ मस्या हृद् मान भगो रिक्ते च भा-
 ने विप्रलं समस्तम् ॥ ३६ ॥ अथ स्वर परत्वेन तत्त्वोदयः ॥ ३६ ॥ तत्त्वानि पंचभूत प्रसेजो वायु
 नेभः क्रमात् ॥ ३६ ॥ एकै कस्य घटी योगः पंच घट्यात्म के स्वे ॥ ३६ ॥ अथ तत्त्वानां प्रचारः
 अथ हस्तं दहे ह्यपु एतेन अ चतुर गुलः ॥ ३६ ॥ माहे योऽर्को गुलो दोयो वारुणः षोडशं गुलः

वि ॥ विभीषणो शुभं कार्यं यंत्र कार्यं सुनन्दने ॥ ३८६ ॥ याम्ये भवे त्मारण कार्यं मय
 सो सोम्ये सभाया मय वेदानं स्यात् ॥ रगि से वनं भार्गव के सुहृर्त्सा विविचि नाभिन् प्रप
 ट सुविद्याम् ॥ ३८७ ॥ अथ मुहूर्त्तोदयं कार प्रत्वेन ॥ उदये रौद्र मादित्ये भेजं सोमं प्रकी
 र्त्तितम् ॥ जयदवं कुजे वारे तुर देव बुधे तथा ॥ ३८९ ॥ रावणाच्च गुरो द्वेयं भार्ग
 वे च विभीषणम् ॥ प्रानो याम्य मुहूर्त्तञ्च दिवा रात्रि प्रयो गतः ॥ ३९० ॥ अथ
 मुहूर्त्तगत्वेन गुणोदयम् ॥ गुरु सोम दिने सत्त्वं रजः प्रयागार के भृगो ॥ रवौ मन्दे बुधे
 चैव तमो नाडी चतुष्टयम् ॥ ३९१ ॥ सत्त्वं गौर रजः प्रयास तामसं कलस मेव च
 ॥ इमं दणमिष जानीया त्सत्त्वा दीना यथो दितम् ॥ ३९२ ॥ अथ सत्त्वादि गुणानां फ
 लम् ॥ सत्त्वेन साधवे त्सिद्धिं रजसा धनसं पदात् ॥ तमसा साधये न्मोक्षं दाने द्वेयं
 सदा बुधेः ॥ ३९३ ॥ सत्त्वे रजसि सत कार्यं मय वा शुभमेव च ॥ तमसा चेद भे
 दादि साधयेन्मोक्ष मागिकम् ॥ ३९४ ॥ अथ मुहूर्त्तगत्वेन रेखा ज्ञानम् ॥ प्रत्येकं न-

५ भः रवादिभिरेव वर्णैर्विभं धनुर्धुम गणाधिपाद्यैः ॥ मृत्युं तथा पादयमादिच-
 रैः श्रीविह्वनामा मृत सङ्क्षुसिद्धिः ॥ ३६७ ॥ असुरध्वोर्द्धरेरैका कालरेखा
 जयं भवेत् ॥ विप्रमावर्तं कन्तत्र धन्ये धन्यमिति क्रमात् ॥ ३६८ ॥ अथरेखा
 लम् ॥ धन्ये नैव भवेत्कायं विप्रमावर्तं के भवेत् ॥ कालरेखा मृत्यु करी सर्वसि-
 द्धिस्तथा मृते ॥ ३६९ ॥ धनुर्मनिकर्कदानां घातं सत्वे विनिधिर्भेत् ॥ तुलालि-
 ष्व मेघानां घातो रजसि निश्चितम् ॥ ४०० ॥ कन्याभिष्टुनसिंहानां कुम्भ
 स्य मकरस्य च ॥ घानस्नाम सेवेलायां विपरीतं शुभावहम् ॥ ४०१ ॥ ध-
 नुः कर्कटमीनारव्या गोरवर्णाः क्रमो दितः ॥ द्रवे मेघे तुलायां च दृष्टिके स्या-
 मवर्णिता ॥ ४०२ ॥ मिष्टुने मकरे कुम्भे कन्यासिंहे च हस्तता ॥ गोरस्य मय-
 ते सत्वे प्रथम वर्णो रजोगुणो ॥ हस्तं तामस वेलायां मयते नान्न संप्रायः ॥ ४०३
 ॥ यस्मिन्वर्धं भवेन्मासो गोरणाधिक्यस्तथा क्षयः ॥ मासेन गृह्यते मासस्तत्त्वं

[illegible]

॥ पदं निशायां एव ख विस्तु रज्ज्वं भुवनं च नाशयता विद्वनाद्यो ॥

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|------|--|----|---|----|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|------|----|
| मे | दा | क | वै | हु | आ | ए | वा | वि | सु | या | सो | भा | सा | तै | ज्ये | | चा | ज | वै | तु | आ | ए | वा | वि | सु | या | सो | भा | सा | तै | ज्ये | मे |
|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|------|--|----|---|----|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|------|----|

[illegible]

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| ۱ | ۲ | ۳ | ۴ | ۵ | ۶ | ۷ | ۸ | ۹ | ۱۰ | ۱۱ | ۱۲ | ۱۳ | ۱۴ | ۱۵ | ۱۶ | ۱۷ | ۱۸ | ۱۹ | ۲۰ | ۲۱ | ۲۲ | ۲۳ | ۲۴ | ۲۵ | ۲۶ | ۲۷ | ۲۸ | ۲۹ | ۳۰ | ۳۱ | ۳۲ | ۳۳ | ۳۴ | ۳۵ | ۳۶ | ۳۷ | ۳۸ | ۳۹ | ۴۰ | ۴۱ | ۴۲ | ۴۳ | ۴۴ | ۴۵ | ۴۶ | ۴۷ | ۴۸ | ۴۹ | ۵۰ | ۵۱ | ۵۲ | ۵۳ | ۵۴ | ۵۵ | ۵۶ | ۵۷ | ۵۸ | ۵۹ | ۶۰ | ۶۱ | ۶۲ | ۶۳ | ۶۴ | ۶۵ | ۶۶ | ۶۷ | ۶۸ | ۶۹ | ۷۰ | ۷۱ | ۷۲ | ۷۳ | ۷۴ | ۷۵ | ۷۶ | ۷۷ | ۷۸ | ۷۹ | ۸۰ | ۸۱ | ۸۲ | ۸۳ | ۸۴ | ۸۵ | ۸۶ | ۸۷ | ۸۸ | ۸۹ | ۹۰ | ۹۱ | ۹۲ | ۹۳ | ۹۴ | ۹۵ | ۹۶ | ۹۷ | ۹۸ | ۹۹ | ۱۰۰ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

五

संवि विचार पूर्ववि बुधै वि विं त्यम् ॥ ४१४ ॥ सूर्ये नृसिंहो द्विपदं च चापो हरिर्नरभः रवं पदम्
 च्युतोऽग्निः ॥ एतौ पदं चापख मच्युतं च युगं यगो वशुख सिद्धि सञ्ज्ञौ ॥ ४१५ ॥ सि

में अघि चपं ख न न्यौ भूकुन्ते नभश्च यभ हरी रवं हरिश्च ॥ पदं निशायां ख युगं नृराशिर्वि

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|---|----|----|---|---|----|---|----|----|----|----|----|----|---|----|----|----|----|---|---|----|----|----|---|----|---|----|----|---|----|----|----|
| होम | मं | च | ज | वै | तु | अ | ए | का | व | रु | सा | सि | भा | सा | रै | ऋ | चा | जा | वै | तु | आ | ए | का | वि | सु | अ | सै | भ | सा | रै | ऋ | गै | सै | |
| दिग | स | म | र | र | त | त | स | र | र | त | त | स | म | र | र | | न | त | स | स | र | र | त | त | स | ख | र | र | त | व | त | ग | र | नौ |
| ० | ५ | ९ | ५ | ० | ५ | ५ | ५ | ० | ९ | ९ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ९ | ९ | ० | ५ | ५ | ५ | ५ | ९ | ९ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | | |

नायको विस्तु नमश्च विस्तुः ॥ ४१६ ॥ भौमे महे भास्व नभोऽद्य विस्तुर्न भौयुगो गोपति रवंग
 रो प्राः ॥ नक्तं गजेंद्रस्य ख मच्युतं च युगं च मूल्यं नृ हरिश्च युगमम् ॥ ४१७ ॥

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|------|----|----|---|---------|
| भौम | ज | वै | तु | अ | रा | वा | वि | सु | या | सै | भा | सा | रै | ष्वे | मै | चा | | वै | तु | अ | रा | वा | वि | सु | या | सै | भा | सा | रै | ष्वे | मै | चा | न | भौम |
| दिने | र | र | त | त | स | म | र | र | त | त | स | ख | र | र | त | त | | स | स | र | र | त | त | स | ख | र | र | त | त | स | स | र | र | सञ्ज्ञे |
| ९ | ९ | ९ | ० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ९ | ९ | ९ | ० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | |

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीपतिपादश्रुणं नारायणस्थानावसिद्धिः ॥ रात्रीतुकादींहरिभूयका-

270

[illegible]

लो नो विंद मोरी सुव शून्य सिद्धिः ॥ ४९८ ॥ गुणे हरि ष्णुन्य युगं सुरेशः श्री विष्णु राजो भग
नंतथा श्रीः ॥ निशंभि रैत्या रिव कामु कंच पदे गुणैः रवं युग पुनः श्रीः ॥ ४९९ ॥

[illegible]

धुक्तेऽभुनं चाप नरिन्द मध्य नंदी दः के शव मृत्य पाद म ॥ नक्तं च धुमं हृदि हरिः स्वधुमं हृ-

[illegible]

प्रसिद्धं गानं च युगं ॥ ४२० ॥ प्रतोपदं श्री ननभो नकंलः खं श्री प्रदं विलुनभो ह
 २ रिः पद ॥ एतो पदं खं पदं नंद खं न गंजा ननो गोपति शून्य प्रादः ॥ ४२१ ॥

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|
| प्रमि | या | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए |
|-------|----|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|--|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|

ज्येष्ठे मासे तथा धादे तथैव च मलिभुत्वे सूर्यादिवारं संप्रोधाः सुहृती निक्ता त्विमाः ४२६

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|
| गवि | ते | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | या | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | या | सो | भा | सो |
| दिवा | न | त | स | र | र | त | त | म | स | र | र | त | व | स | स | र | र | त | व | स | स | र | र | त | व | स | स | र | र | त | व |
| ० | ० | ६ | ० | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | |

अर्धे शून्ये च कस्यो युग पद युगं खं हरि विवि सु चापम् ॥ रात्रौ प्राल्नी प्रा युगं युगं खं हरि विवि सु चापम्

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|------|----|----|---|----|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|------|
| सो | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | या | सो | भा | सो | प्रे | मे | चा | ज | वै | तु | ज | ए | वा | वि | सु | या | सो | भा | सो | प्रे |
| दिवा | स | स | र | र | त | त | म | स | र | र | त | व | स | स | र | र | त | व | स | स | र | र | त | व | स | स | र | र | त | व |
| ० | ० | ० | ० | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० | ६ | ० |

स पृथ्वे च क्लृप्तः ॥ ४२४ ॥ जीवे विष्णुश्च चापि गगनमजितरवमं प्रि पादो नृसिंहः ॥ रा-
त्रौ नोखं सुरारि गगन युगम जीविष्णु चापं द्वि युगमम् ॥ ॥ शुक्रे युगं सुरारि गगन यु-
गम जीविष्णु चापं द्वि युगम् ॥ तद्वा त्रौ युगम गोपी प्रति युग गगनं श्रीवरः खं पदे श्रीः ॥ ४२५

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|----|----|---|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|---|----|----|---|----|----|----|-----|
| सुक्र | वि | सु | पा | सो | भा | सा | से | खे | भै | चा | ज | वै | तु | ज | रा | वा | सु | क्र | सो | भा | सा | से | खे | भै | चा | ज | वै | तु | ज | रा | वा | सु | क्र |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | |

मंदे श्री युगम सिद्धिः ख हरि हरि नमः शैरि खं सिद्धि खं वा ॥ ॥ तं श्री युगम सिद्धिः खं वा युगल हरि श्री मंगो विंद

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|----|----|---|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|----|----|---|----|----|----|-----|
| प्रा | नि | पा | सा | भा | सा | से | खे | भै | चा | ज | वै | तु | ज | रा | वा | सु | क्र | वि | सु | पा | सा | भा | सा | से | खे | भै | चा | ज | वै | तु | ज | रा | वा | सु | क्र |
| र | र | र | त | त | स | स | र | र | त | त | स | स | र | र | त | न | स | स | र | र | त | त | स | स | र | र | त | त | स | स | र | र | त | न | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | | |

अथ यात्रा विधिः ॥ देव मुहा द्वा गुरु सदनं द्वा खं रुद्रा न्मुख्य कलत्रं भृहा द्वा ॥ प्राशु रुद्र
विषय विधानं नूतनतः पश्यन् प्रह्लाद भगल नैयात् ॥ ४२७ ॥ उरु रुद्र प्रथम नलव दक्षि-

एतां विद्वानिष्टात्मदमभियात्यदिश्यमानम् ॥ आतोहेतिलयतहेमताभ्रभात्रं दत्वा दीमा
 णा कलशयच प्रगच्छेत् ॥ ४२८ ॥ केचिन्नुदसिंहं पाद नये दत्वा दर्जनं दिति ॥ शोक्तं
 तत्तु स्वकालोक्तं खरश्चैव भवेत्तदा ॥ ४२९ ॥ प्राच्यां राजं रथं याम्यं प्रतीच्यां तु गोक्षम-
 न् ॥ उदीच्यां शिविको भूपस्समारुह्य व्रजन् जयेत् ॥ ४३० ॥ दिश्युक्तं दाहना भावे भ्या-
 त्वा तद्दाहनं व्रजेत् ॥ अथ सगमनविलंबे गति निमित्तेन प्रस्थानम् ॥ प्रस्थाने आह्वयणादीनां द-
 द्वा सूत्रं मया द्रुधम् ॥ मध्यामल फलं चैव प्रशस्तं तद्विद्वि कारणम् ॥ ४३१ ॥ अदत्ता तप-
 न्नां भ्यज्जन्तानां भ्य विभूषणोऽस्तीक्ष्णजां वराणि ॥ अंशो लिङ्गरत्नं रथांश्च चारान् प्र-
 द्याश्च नाद्यं भन सस्त्वभीष्टम् ॥ ४३२ ॥ द्रुत प्रस्थान को वापि स्वयं सं प्रदियतोपि वा ॥
 ततोऽपि गच्छने चित्तं सच्चन्द्र प्रकुनादिकम् ॥ अथ प्रस्थितस्य गमनविधिः ॥ अथ मेऽन्वि-
 त्पथः क्रोधां हिंसां च हनि योजनम् ॥ कोशवद्धं तृतीयोऽन्विद्य छेच्छन्नुत्तलः परम् ॥ ४३३ ॥
 ॥ अथ प्रस्थितविलंबे दिन निर्णयः ॥ प्रस्थाने भूपति रस्ति हेतुर्नैकं न दशा एतन्नि कम् ॥ सप्त दानं

तुसागतः पचाह प्राकृतो जन्मः ॥ ४३३ ॥ अथ द्विक्पलत्वेन प्रस्थानं ॥ प्राच्या महाग्निं धुनयः प्रवह-
 न्ति सप्त धाम्या भतीव शुभं दानि दिग्गानि पंच ॥ श्री एषे वषथिश्च स दीर्घा हि तन्मायकानां प्रस्था-
 नकेषु विषसह्य मुत्तरं स्थानम् ॥ ४३४ ॥ अथ प्रस्थान प्रमाणम् ॥ गेहा द्वेहा न्प्र अषि गम रसहिं यात्रे-
 ति गार्गसी भ्रास्ती यांतरं अपि भृगु वर्णि विच्छेप मात्रम् ॥ प्रस्थानं स्यादिति कथयते ऽ सो भरद्वा-
 ज एव यात्रा कार्या वहिरिह पुरा तस्या दृष्टिष्टो ब्रवीति ॥ ४३५ ॥ प्रस्थानं भव धनुषां हि प्राता-
 निपंच के चिच्छत ह्य मुष्टानि दर्शेव न्याये ॥ सं प्रस्थितो यद्वह मन्दिरतः प्रयानो गंतव्य दिक्षु त-
 दपि प्रयतेन कार्यम् ॥ ४३६ ॥ यात्रायां प्रथमं तस्या ज्ञानि ॥ दात्रा हा ल्यूर्ध्वं तस्मै श्वरात्रं रक्षी से वलं
 त्यजेत् ॥ अथ क्लेशे न्दुप श्वे करात्रं तु सर्व धैर्यं हि ॥ ४३७ ॥ दुरधं त्याज्यं पूर्वमेव त्रि रात्रं-
 शीरं त्याज्यं पंच रात्रं तु पूर्वम् ॥ शौचं तैलं दासरे ऽ स्मिन्व निश्च त्याज्यं यत्राहु नि पात्नेन नून-
 म् ॥ ४३८ ॥ भुक्ता गच्छति यदि चेत्तैल गुड शार पक्कं च रात्रि ॥ विनिवर्त्तते शूरपाणः रक्षी-
 हि जमव मान्द गच्छतो मरणात् ॥ ४३९ ॥ अथ यदि रत्नार्थं याते पुष्य रक्षाता स मायमं कृत्वा

दुहितौ गच्छन्त्यभते मनो रथान् विरकोत्तेन ॥ ४४० ॥ अथ यात्रा काले प्रभुः ॥ शुभ २०० ॥
 नागर्षणे ॥ प्राथम्यं च वज्रं यनिर्गच्छ प्रज संभरेति सिद्धि करः ॥ रत्नैवेति ऽप्य धिक्ताः म-
 मोद जगत्जीव प्राक्काश ॥ ४४१ ॥ मागासि रत्न वर्तय क गम्यते मूढ दुर्भर्ते भीहान् ॥ वा-
 ने च्छन्ति दुधाः क्षुण्ण काष्ठेन भीति प्रादैश्व ॥ ४४२ ॥ अथ ग्रह होरा प्रकुन्तानि ॥ आदि त्य हो-
 दे प्रकुन्तान् स भुखं रक्षी पुन बुद्धा कलशं च दधत्येति ॥ आद्ये विभागे नग्नं च वायु संघात आ-
 गे वा न को नृणां प्र ॥ ४४३ ॥ चंद्र होरे मृगश्रैव फलं वा कुल भंदधीः ॥ रज की धीति वर्यो-
 ण नापितो दय्य रणा न्वितः ॥ ४४४ ॥ भीम होरेण साकुनं काय भारं न पुंस्तकम् ॥ वलीक-
 च प्राकुर्नेन न तान्भी न्मतो मदी न्मनः ॥ ४४५ ॥ सोम्ये होरे द्विज श्रैव सवत्ता गौः श्र-
 द्यते ॥ नारी सुवासिनी दासो तद्ये दक्षे मृगस्तथा ॥ ४४६ ॥ होरे देव गुरो प्राप्य सा-
 पत्या रत्नी गुरो भवेत् ॥ पूर्णा कुम्भं द्विज श्रैव सवत्ता गौः श्रदर्शनम् ॥ ४४७ ॥ भृगु हो-
 रे सदा प्रोक्त सप्त कुनश्च विरोधतः ॥ नारी स कल प्रा चेव स पादि द्विज दर्शनम् ॥ ४४८ ॥

स क्रि. शानि होरे सद न्यासी नाक्या दुर्भोग दर्शनेन ॥ काद पाषाण भारश्च सवि ज्ञेयो न संप्राप्यः
२७७ ४४८ ॥ अथ ग्रहशकुन्तम् ॥ लग्ने वाक्यति शुक्राणां ब्राह्मण स्स न्मुखगति यः ॥ बुधभु-

क्रौंच केन्द्र स्थो सदत्सगोः ग्रहप्रयते ॥ ४५० ॥ चंद्रः सूर्यश्च भवति दशम स्थो यदा
यदा ॥ दीपादग्ने सुमन सो रजकीधौ न वाससा ॥ ४५२ ॥ सुत स्थाने यदा सोम्यो द-
धो दृष्टस्तु सन्मुखः ॥ चन्द्रे गुरुश्च सहजे स्वानी दावा म आगमाः ॥ ४५३ ॥ सर्वे कर्मा
य नवमे भारद्वाजो हिना कुलः ॥ चापस्य दर्शनं वास्या द्वा मंगोऽत्यंत दुर्लभम् ॥ ४५४
॥ आदि स्थो राहु शैरो च सहज स्थो कुमारिका ॥ द्रौढानां भुभगानां च दर्शनं सर्व का-
मदम् ॥ ४५५ ॥ घटे ततीये कर्माये भोगे भ्ये कल्कलं भवेत् ॥ दासो वैश्या सुरा मांसं-
लाभ भ्येव सुनिष्ठितः ॥ ४५५ ॥ सप्ताष्ट पंचमे यस्य जीवो ज्ञो ता न्न वर्हते ॥ आदर्श
पुत्र्य मांसादि सुरा दर्शित्वा लाभदः ॥ ४५६ ॥ राहु भोगे भ्ये यन्मृच्छ लयना यादिततीयगः
॥ उद्धृत गोमयं पश्ये च्छोऽन्नं लाभं धनं दिशेत् ॥ ४५७ ॥ अथ याज्ञवल्क्य पुनः शकुन्तानि ॥ पृथि-

३७
 गान्धो वाजो रघो धेनु स्रवत्सा तु विशेषतः ॥ भवेतो हृषोऽन्यदहोऽपि हृद्देवप्रदे तदा शु-
 भः ॥ ४६७ ॥ वर्णी स्त्रियत्र मुक्षीवं दर्शो हंसो मयूरकः ॥ नकुलश्च शरहाजश्चाप-
 ३७
 यश्चाणस्तथैव च ॥ ४६८ ॥ चित्तोत्साहकरं वस्तु शुभान्येतानि दर्शनात् ॥ अथ शुभ-
 वस्तुनि विशेषः ॥ कीर्तनाच्छृणो भ्रेष्टं प्रवणा तु विलोकनम् ॥ दर्शनात्सर्पनिर्चेषां
 दध्यादीनां गमादिषु ॥ ४६९ ॥ शुभदं दर्शनं ये वा तमिवाद्या तथा नृपः ॥ कत्वा द-
 क्षिणतस्सर्वानाच्छस्त्रिदिग्गवाशुयात् ॥ ४७० ॥ अथ दुःप्रकुंजाः ॥ कार्पासं कृत्वा श-
 न्यं च लोहकारश्च रोदनम् ॥ लोहं च रक्तपुष्पं च गुडतैलं धुतन्तथा ॥ ४७१ ॥ पि-
 एषा कटुणा तक्राणि भस्मा स्थिजतणं तुषः ॥ चापाणो न्यत्र च स्मरिणः सधूसो वनिहरे
 यधम् ॥ ४७२ ॥ मत्तो वा त्तः रक्तलोहिं लो मुंदि तश्च द्रुमुश्चिंतः ॥ अदिलश्च तमा
 रोमी संन्यासी मलिनोरियुः ॥ ४७३ ॥ रवंजो नन्दो गह्वानश्च तैलाश्च त्तोऽथ गार्भि-
 रणी ॥ काषायवस्त्रधारी च सुक्तकेयोऽथ पाषाणान्द ॥ ४७४ ॥ वंश्चा च रं दं दत्तली

चौरः त्वंही पान पलायनम् ॥ रचरोय महिषा रुढाः कुवाक्य भवरा तया ॥ ४७३ ॥
 कृष्ण सव्योऽथ मंडूक प्रभारटो गाम प्रह्वरः ॥ कृपणाः पीतनो ज्यंगः कुडोऽभ्यो वधिसि
 जडः ॥ ४७६ ॥ आर्द्ध चाभभ्रु विधवा स्वर्ण कारो रज स्वला ॥ उपानत्क दे मां गाराः
 धुरीपंच वसा दृणाम् ॥ ४७७ ॥ तथा रजोवती पुष्पं कृष्णो च्छ महिषो दृकः ॥ स्व
 गेह रहनं युद्धं माञ्जरिं स्व कुले कलिः ॥ ४७८ ॥ गोक्षुतं प्राणिना मंगशिरः श्रो
 त्र प्रकंपनम् ॥ अञ्जरि मार्ग रोधप्र सवलं रक्ति कुंभकः ॥ ४७९ ॥ एतद्गुः प्राकु
 नाद्याने सर्व कार्य निवेय काः ॥ अथ महाप्रा कुनानि ॥ सर्वदिक्षु क्षतं भिदं गो क्षुतं क्षर
 णा प्रदम् ॥ अफलं तच्छुतं वाक्यं वद्ध पीन सके तवैः ॥ ४८० ॥ अथ कस्मिंश्चित्का
 र्यं शुभाक्षिका ॥ नोपयेद्यान मारो दे विवां दे प्रयत्नेऽयने ॥ विद्यारंसे रत्न वापि क्षुतं
 सन्नसु प्रोभनम् ॥ ४८१ ॥ क्षिका विजाल सप्रभियां मार्ग रोधो हृते र्वचः ॥ मा
 ज्जरि माहिषं युद्धं युनः कर्ण प्र कम्पनम् ॥ ४८२ ॥ अतिधूसा न्वितो वन्हिः वेदेते मरण प्र

संक्षि- दः ४८३ अथ दुःशकुनावाप्तत सत्याज्याः ॥ एते दुःशकुना वामि कृत्वा चेच्छकुनोत्तरम् ॥ अष्ट-
 ३८१ द्या स्वते रोयाः प्राकुना दक्षिणो शुभाः ॥ ४८४ ॥ अथ केयं चिन्वीर्त्तिनं केया चिदर्शिनं शुभमशुभं
 च ॥ प्राश्रजाहं क गोधानां सर्वं सूकरयो रपि ॥ कीर्त्तिनं शुभदं नाश्यां नीरुत न्न च दर्श-
 नम् ॥ ४८५ ॥ अरुवा नरयो र्यानि दर्शनं चरते शुभम् ॥ नाम संकीर्त्तिनं श्रेष्ठं द-
 क्षिणो च रवरस्व नः ॥ ४८६ ॥ अथ वामागो शुभाः ॥ वाद्यो को किला पक्षी पीत की भू-
 को रला ॥ विंगला छुच्छुका श्रेया शिवा पुरुष संहिता ॥ ४८७ ॥ मध्याह्ने जुरत-
 श्रेष्ठो चाप वधू च वायव्यो ॥ रवरोत्तु क प्रगा लानां वाने पृथे शुभ रस्वनः ॥ ४८८
 अथ दक्षिणागो शुभा ॥ श्री कण्ठो वानरो भायः छिक्कारः पिक्को कोरुः ॥ प्रया प्रस्त्रो
 वायसः श्रेष्ठो र्ज्ञी संज्ञा श्चापि दाक्षिणो ॥ ४८९ ॥ न च भवी सुग वच्छ लतः संभ्या
 यां दक्षिण शिवा रवी ॥ प्रदक्षिणा गताः श्रेयाः याने तु सग पक्षिणाः ॥ ४९० ॥ दिव-
 माश्चेद ति श्रेयाः व्रज तो भूपते भर्तृणाः ॥ वाम दक्षिणा गाः श्रेयाः सग वधू पतत्रि-

णाः ॥ ४८२ ॥ अथ विशेषः ॥ प्रणाला सारमेयाश्च दक्षिणा हाम गा प्रभुभाः ॥ पूर्व
 दिगमने पूर्णवदनः शंकरः पिकः ॥ ४८३ ॥ वाम गोदक्षिणाः काक प्रभुभोऽन्यत्र
 गमेऽन्यथा ॥ चाव पूर्णाननो व्योम्नि विधत्ते यदि तोरणाम् ॥ ४८४ ॥ अन्योन्य
 विजयस्तनुकाकश्चेत्तरां भवम् ॥ अथ पुनश्चेष्टा विशेषः ॥ प्रीर्षीदरहनुर्घ्राणा हत्कं-
 एह स्कन्ध पृष्ठकम् ॥ अथा दक्षिणेन पादेन कराड्डयेद्रमनादियु ॥ ४८५ ॥ लाभं क्षे-
 मं जयन्दत्ते दक्षिणां गं विशेषतः ॥ वाम पादेन सर्वस्य नाशं प्रीतं फलस्य च ॥ ४८६ ॥
 विष्टापं कादिलिप्तो गं अवरा स्फालनं क्षुतम् ॥ दत्त प्रकाशानं निजालस्यं कुर्वन्मु-
 निप्रदः ॥ ४८७ ॥ नृत्य क्रीडोत्सवाद्यं श्रवा विदधन्चि लिहन्त सन् ॥ अरत्नन्मोसं चि-
 तास्थः सन् सहगच्छन् जयप्रदः ॥ ४८८ ॥ अथ प्रवेशे प्रकृन्वत्यथः ॥ प्रवेशे निम्नगो-
 तारे नष्टसंवीक्षणो भवे ॥ दहाना जयाः प्रवाहे च द्यूते भेषज्य कर्मरीणि ॥ ४८९ ॥ द्युष्टे
 ते व्यत्यया ज्ञेयाः प्रागुक्ताः प्रकृन्वाश्च ये ॥ वामे च दक्षिणे च सं प्रीताः प्रकृन्वाश्च ते ॥

॥ ५०० ॥ वैपरीत्येन विद्धेयाः प्रवेष्टो नृपते वरुधैः ॥ यात्रोत्ताः प्राकुनाये च तस्य च नृ-
 पद्वर्धने ॥ ५०१ ॥ अथ प्रकुनानां कियता कालविशेषेनैवैल्पमाह ॥ नगरं प्रे ३ राय या ह्या-
 नाराया ग्रामसंस्थिताः ॥ दिवा च येन प्रवर्ध्या न च नक्तं चरो दिवा ॥ ५०२ ॥ हं-
 द्रो रोगादिस्तत्र कलहामिषकांक्षिणाः ॥ आपगांतदितामत्तान ग्राह्याः प्राकुना-
 कचित् ॥ ५०३ ॥ रोहिताश्वजवाले यदुरंगो हृमृगा प्रपाशाः ॥ निःफलाः शि-
 शिरे ज्ञेयाः वसन्तो काक कोकिलौ ॥ ५०४ ॥ ननु भाद्रपदे ग्राह्या प्रभूकराश्च वृकाद-
 यः प्ररद्याक्षादगोत्रौ चः प्रावणो हस्तिचातको ॥ ५०५ ॥ व्याधर्षवानरहीषिमहि-
 षा सविलेखायाः ॥ ५०६ ॥ हेमन्ते निःफला ज्ञेया वालाः सर्वेपि ज्ञानुयाः ॥ मभ-
 नभ्युक् हुमकंदकीयु प्रसमान भस्मास्थितुषानलेषु ॥ ॥ आकार प्रह-
 न्यालयजर्जरीयु सौम्योऽपि पापः प्रकुनः प्रवल्गः ॥ ५०७ ॥ वरं प्रदेहूर्ज्जन कालसूर्यो
 वरं क्षिपेद्याश्च मुखे स्वमंगलम् ॥ वरं तरे ह्यदिनिधिं भुजाभ्यां नोलेद्यये दुः प्राकुनं क-

दापि ॥ ५०८ ॥ अथ वायोः शुभाशुभप्रकृतम् ॥ शुभदोदक्षिणो षष्ठे मन्द प्रक्षीतोऽद्या क्षा-
 रतः ॥ प्रवरादस्सभुरवो वामे भृगादस्समरादिषु ॥ ५०९ ॥ आद्ये पशुकुने स्थि-
 त्वा प्राणानेकादश ब्रजेत् ॥ द्वितीये षोडश प्राणां सत्तीयेन क्वचिद्ब्रजेत् ॥ ५१०
 ॥ याने द्दुश्रुकुनं त्याज्यं स्वर्गन्दत्वा ब्रजेत्सुखम् ॥ स्थित्वा सच्छुकुनं भूयो हृष्टा
 हृष्टो ब्रजेत्पुनः ॥ ५११ ॥ विरुद्धे शुकुने पादौ प्रच्छाज्या च स्य भूयतिः ॥ स्थित्वा सत्त्व-
 क्षीरहृष्टाभ्यां भूयः सच्छुकुनैर्ब्रजेत् ॥ ५१२ ॥ अथ त्याज्य दोषाणां संग्रहः ॥ लिप्य-
 क्षयनमासाहर्भवाऽशूलादयश्च ये ॥ सभुरवस्थो भृगुस्तो म्यो भृगो वक्रादिक्-
 न्तथा ॥ ५१३ ॥ ललाटीपरिषो दराहः रजस्तत्त कमुद्भवं ॥ कृतपक्षोऽर्कषट्प-
 तास्तिथयः पापवासराः ॥ ५१४ ॥ पृष्ठवामगतश्चन्द्रेऽभिजिह्वाभ्यां भृगुं च कश्च-
 जन्मराशिभृतो रंभे लवने प्रवृभृतोऽरिभम् ॥ ५१५ ॥ रिपु राशिभृतो र्जंभे लवना-
 शो कुंभमीनगौ ॥ लानघृष्टोदयं षष्ठदिग्दक्षचशानि सत्त्ववम् ॥ ५१६ ॥ चूर्णे शु-

स षि क्रस्तथा केन्द्रे वक्त्रो वक्त्रा वासराः ॥ स्तनेऽन्येऽपि विवाहोक्ता योगानेष्टा प्रयाणा
 २८५ के ॥ ५१७ ॥ अथान्नमुद्रयात्रा वसा भूतम् ॥ अथो वक्त्रेऽथ नक्षत्रे वारचोपचयावहे

॥ चंद्रताणवल्लोपेने कुमारेष्टनि वास्वरे ॥ ५१८ ॥ कालजोदि राभवे वापि स्वस्व
 पूर्णवले स्वरे ॥ योगिनी कालदिक् प्रज्ञान चंद्रताणतुकूल के ॥ ५१९ ॥ दृष्टा
 यामष्ट वर्गो वा गोचरे लाभगेरवो ॥ युद्धोक्तजयदे योगे प्रोभने देहजे स्वरे ॥
 ५२० ॥ घृत कार्यं विनोदाय भनलाभाय भूतये ॥ ५२१ ॥ अथ युद्धेष्टने स्वरभू-
 तलम् ॥ पूर्वदि तश्चतुर्दि क्षुनदाद्यास्तिथयः क्रमात् ॥ मध्ये पूर्णो द्दर्शयंच ह्यकाद-
 राद्याः स्वरास्तथा ॥ ५२२ ॥ दिक्प्रतिषेधे स्वरतश्चैव षटी षट् प्रमाणतः ॥ ता त्का
 लिकस्वरो द्वेयो दिक्स्वरस्तत्त्ववेदिभिः ॥ ५२३ ॥ वालाप्रभृतयोऽवस्था स्ते-
 यो द्वेयाः क्रमाद्बुधैः ॥ पूर्णो जय स्वरे द्युनि वाले द्याता ज्ञतयो भवेत् ॥ ५२४ ॥
 दधेद्वातः कुम्भारे च दृढे अंगो घृतो मृतिः ॥ स्वये स्वरवल्लोपेन दिग्नि स्थित्वा द्याशा

शुभाचीनां निजपंचम वैरिणा मखो ॥ ८ ॥ स्ववर्गात्पंचमप्रशुभ्यनुर्थश्चानि निजकः
 ॥ तृतीयो निजसंज्ञस्तथा हृदाश्रयिनी द्वितीयकः ॥ ८५ ॥ नाप्रमाद्यकयोर्वयोर्वैकेस्याह
 तमोत्तमः ॥ ८६ ॥ अथ काविका ॥ स्ववर्गाद्विगुणीकृत्यपरवर्गेरायो जयेत् ॥ अथ तिस्रुहरे
 ज्ञायां योऽधिकस्तत्तद्वर्गं यवेत् ॥ दस्येकाकिर्षाकाधिक्ये निवसे न्यगरे नरः ॥ ९१ ॥
 अथ एते दिक्प्रकरणे ॥ ग्रामस्य भागं नवधा विधाय मध्ये हरिर्न्मकं वृषोऽथ युग्मम् ॥
 पूर्वदिशो वृष्टिक मीनकन्याकर्काधनुस्तोत्थ ज कुम्भजाश्च ॥ ९२ ॥ वसेयुर्धार्द्दिन-
 रानतजवासे तथा हानि रिहा रिवलस्य ॥ बुधास्वदिग्भागा गताश्च वर्गास्तौ पूर्णशु-
 रव्याः कथिताः क्रमेण ॥ ९३ ॥ अथ प्रः ॥ मध्ये ग्रामस्य गोहन्तृनक्रसिंहा रव्य राश-
 यः ॥ मीनालि कन्यकाः पूर्वो दक्षिणो कर्कराशिकाः ॥ ९४ ॥ धन्विनः पश्चिमे मेघ
 तुला कुंभा स्तथोत्तरे ॥ नोवसेयुर्नरास्तौ रव्यध्वनलायात्मजा धिनिः ॥ ९५ ॥ दू-
 नतेय मुरवा वर्गा वलिद्या पूर्वतः क्रमात् ॥ स्वदिशा स्थ मद्रहं श्लेखं पञ्चम्या न्दिशि

संनि मृदु हम् ॥ १६ ॥ अग्निं चतुर्थं कोणेषु वसेयुर्हीन जातयः ॥ विप्राश्चास्तुदिशस्त्वेवम

२८३

श्चेत्वासस्तुल्ये स्मरः ॥ १७ ॥ अथ द्वाविचारः सप्तदशः अथाष्टदशः ऋग्नोऽष्ट द्वाविचारः सप्तदशः अथाष्टदशः

विश्वे १ सप्त ७ न्दु १ गुणा २ भिवनोच ३ नृग्रामदिग्वर्गमितो क यो गो मूर्ध्या दृशे प्रावसु
भक्त प्रोधात् ॥ १८ ॥ दूर्यन्तु भोगा वृध सौरि जीवास्सिंहा सुतो वै भृगुजः कर्मणा
॥ यद् द्वाणा चंज्ञा १५ व सवो ८ धर्माश्च नाश्या १० नवेन्दवो १३ को १२ कुय मा-
२१ न्तथे ह्यम् ॥ १९ ॥ त्वेत्वे ध्रुववर्ष प्रमितेयु तेष्वा दशा फलं तन्न निवासिनां च ॥
तदुत्तरा द्दुत्तर तो दृशे प्रा फलं विकल्पं च दशा ऋगेण ॥ २० ॥ अथ दशा फलम् ॥ च-
द्विभनचित्तः परि पूर्य विनो वन्त्या भित्तो वहु सौरव्य युक्तः ॥ रोगा भित्तो वहु द्र-
व्य युक्तो ज्वरा न्चित्त स्मर्द मुरवा न्चित्त अ ॥ २१ ॥ यथा दृश सौरव्य फलानि रक्ता
तत्त दृशोक्तं सकलं शुभं स्यात् ॥ अथ सप्तकलायाः फल भेद देव दृशोक्तरीत्या त्व स-
द्व्यरीत्या ॥ २२ ॥ अथ वर्ण प्रत्नेन भूमि विचारः ॥ प्रवेता भूमिस्तु विप्राणां रक्ता शक्ता

भूतभुजाम् ॥ विश्रं पीताद्य प्रहारां प्रयामाभिभ्रं तरस्य च ॥ २३ ॥ याभूः कुशा
 द्याप्रार संयुताच दूर्वान्विताका प्रायुताः क्रमेण ॥ माधुर्य्य युक्ताच कथा विक्ता
 क्लृप्ता कट्टी प्रशस्ता हिजवर्त्यतीवा ॥ २४ ॥ प्रागादिप्रवराभूतिः सुआदीनां धुभा
 क्रमात् ॥ सर्वदिक्प्रवराभूतिर्विप्रादीनां गृहादिषु ॥ २५ ॥ अथ प्रत्यक्षानम् ॥ भू
 हस्वभिरिडकां चैव कृत्वा वै न व खंडिकाम् ॥ तेषु तेषु च भागेषु पूर्वार्दि क्रम
 तोबुधः ॥ २६ ॥ तिरवे हकच तावर्णिएह साश्व पयस्तथा ॥ मध्यान्तं क्रमं ज्ञा-
 तु च्छेद्वा हारागमुद्यमेव च ॥ २७ ॥ क्षत्रियान्तिक्ष्णगा प्रस्रं वै प्रयादिव गणं स्तथा
 ॥ प्रह्लाकलभिति क्त्वा त्या प्रशनावर्णादिमंतदा ॥ २८ ॥ पूंगी फलाक्षता दीप्यगृहि
 त्वा संनै संनैतान् ॥ प्राक्षिपे न्नव कोष्ठे द्युखेष्ट कोष्ठे विचक्षणाः ॥ २९ ॥ गृहप्र-
 श्नाक्षरं पूर्वयदि वर्णादिमंतथा ॥ प्राल्यं तद्विप्रिजानीयात् हयाद्यै र्मिथ्यगं वेदेत्
 ॥ ३० ॥ वकारं मानुषं प्राल्यं पूर्वस्यां सार्द्धं हस्तके ॥ मृत्युदं मनुजां न्नत्र वासिनां

संक्षि- नान्नसंप्रापः ॥ ३२ ॥ ककारेऽन्तोऽर्द्धमास्थि कटि मात्रे भुवि स्थितम् ॥ राडो
 ३३१ दण्डि त्विजानीया दण्डादुत्तरतो मृतिः ॥ ३३ ॥ चकारे यम दिग्भूमौ मर्कटास्थि-

स्थितं वदेत् ॥ कटि मात्रे गृहे प्रास्य मृत्युर्भवति नान्यथा ॥ ३३ ॥ तकारे राक्षसे
 ऽथ यस्य शाल्यं वैसाह्वं हस्तके ॥ एङोऽण्डं विजानीया दण्डादुत्तरतो मृतिः ॥
 ३४ ॥ सकारे चैव चारुकां साह्वं हस्ते शिरोरे वदेत् ॥ शल्यं मृत्युं प्रवासादि कृत्वा
 वै शून्यतां व्रजेत् ॥ ३५ ॥ हकारे वायु दिग्भागे योरुवं शल्यमा वदेत् ॥ भूमौ
 हृदि किते शुभ्रं वंसुखं भिजना शानम् ॥ ३६ ॥ शकारे हिज शल्यं च कोविध्या
 कटि मात्रके ॥ निर्धन त्वं भना कानाम ल्यायुः करमेव च ॥ ३७ ॥ पकारे-
 श्च भुवि बायो शल्यं मृच्छं भवं वदेत् ॥ साह्वं हस्तभित्ते भूमौ धन नाशं पशु-
 शयम् ॥ ३८ ॥ दकारे भानुवं मुहुं मध्ये भस्म चित्ता भवद् ॥ हृत्पानेऽङ्गुलिना-
 शाय निःशाल्यं शुभ्रं भवेत् ॥ ३९ ॥ अथ भुजप्रक्षोधनं हठी करणम् ॥ मध्ये चोर्ध्वे

हस्तमितं रव नि त्वा सं प्र दे त्पां शु भिण शुनस्य ॥ सं प्र दित्वा धि क ता मु धे तः
 पां शु र्ध द्वा त द्द ह सु त्त मं हि ॥ ४० ॥ समे समं न्यूनतरे सर्वो न न कारये द्द न म द हं क
 दा चित् ॥ त द्द त्तं मध्ये जल प्र रितं स्या नि प्र ण मु रवे पूर्ण जले ऽप्य प्रातः ॥ ४१ ॥ शु
 भ भव दे च्छु व्य ति चे हि दुःखं भवे नि वा से स त त ज्ञ ना ना म् ॥ स्थि रे जले वै स्थि र ता
 वि धे या स्या द्द हि णा वर्त्त जले न सो र व्य स्म ॥ ४२ ॥ हि मं जलं प्र णे य य ती ह र वा तो
 न्म द्यु हि वा मे न ज ज्ज न कर्तुः ॥ र वा ते अ दि प्र मा ल भ ते हि रा यं त थै ह का धं च स मृ द्धि
 र च ॥ ४३ ॥ इ व्यं हि इ व्य णि सु र वा नि ध ने ता आ दि धा नु र्ध दि त न हृ द्धिः ॥ वि र्पा
 लि का द दु र का हि चे त्स्या द्द सं ज न ता वि ल का र्थ ह्वा निः ॥ ४४ ॥ तु वाः स्थि च्ची
 रा णि त थै व भ स्या द्वां हा नि श र्था मि णा प्र दा स्युः ॥ द रा टि का दुःख द रि द्द दा न्नी क
 र्था स र वा ति द दा ति रो गा भ् ॥ ४५ ॥ का स प्र द र्ध य दि रो गा द्द हिः कालि र्भे वे त्त्व
 र्ध र ल ध के ल ॥ लो हं न कर्तु र्भे रां प्र ण स ते वि चार्य वा त्तुं प्र व द्ति न द्वाः ॥ ४६ ॥

नेरी मृदंगान कहुं दुभीनां प्रव प्रव प्रवस्य च संगलानि ॥ शुभानि इव्याणि भवंति
 तत्र विज्ञाश्रवाला स्तरणी सवाला ॥ ४७ ॥ वेप्रयासु वेप्रारज की सुवत्वा दद्यादि चे-
 तन सुवर्ण दृष्टिः ॥ अन्येऽपि चे न्मंगल वादिनःसु भवन्ति तत्रैव सु संगलानि ॥
 ४८ ॥ ददाति कश्चिद्भूतिं फलं वेतनं ददा हिरण्यादि समृद्धयस्तुः ॥ अथ समभूतो
 दिक्शेषतम ॥ दिक् शुद्धि रहितं गेहं प्राणदो वाजला प्रयः ॥ कुर्याद्भूतिं सृतिं त-
 स्मादादौ दिक्प्रोभनं चरेत् ॥ ४९ ॥ द्विप्रायामसितं सूत्रं द्विप्रां प्रांत योर्दृष्ट-
 म् ॥ कृत्वा यामे ततीयेऽद्यो चिन्हं तत्कर्षणापि च ॥ ५० ॥ विस्तारार्द्धं तु को-
 णार्धक्षेत्रस्य मध्य सूत्रतः ॥ प्राग्नेप्रंकुद्वये प्राग्ने कृत्वा षोडशर्षणाभिधम् ॥ ५१ ॥
 चिन्हं माकथ्य कोणार्धे चिन्हे प्रांकुनिधापयेत् ॥ एवं कृते चतुःकोणाः स्वेष्टक्षेत्रे भ-
 वंति च ॥ ५२ ॥ अथ गृहस्य आभाः ॥ आयः क्रमाद्भूजो धूम्रः सिंहः श्वा वृषभः रवः ॥ रा-
 जो भ्यां क्षद्रमेन्द्रे या प्राक्षौर्गोहादिकर्मसु ॥ ५३ ॥ विस्तारश्रुयिते क्षेत्रे स्वाद्यामेऽप्या-

रंक्षि रंक्षिर्दत्ते ॥ श्रेष्ठे ध्वजादिक आद्यः प्रशस्तो विषमोऽखिलः ॥ ५५ ॥ प्राचीनो च
 स्तिन्न आद्याः ध्वजाद्याः क्रमस्तिल्यमे ॥ सर्वदिष्टु ध्वजे वभ्रांसिहे प्रादक्षिणोत्तरे
 ॥ ५५ ॥ आद्यां द्युधे गर्जे आन्ये पूर्वयोः शुभ मालयोः ॥ ध्वजे प्रत्यङ्मुखं वापि सिंहे कु
 र्याद्मुखं मुखम् ॥ ५६ ॥ दक्षिणाभिमुखं नागो गेहे प्राची मुखं मुखे ॥ द्वात्रिंशद्भुक्तकं
 या वदे कादशाय वात्परम् ॥ ५७ ॥ चित्त्य आयादिकं तावन्नो चित्त्य मधिके ततः ॥
 अलिं द्यादि मुखे वागे वा चतुर्भुखे ॥ ५८ ॥ आयादिकं तु नो चित्त्यं तारो मासा
 दिकं तु न ॥ विशेषोऽपि ॥ ध्वजे प्रतीची मुखं मज्जाना मुखं मुखं भूनिभुतां च सिंहे ॥ वि
 शं द्ये प्रायदनें गर्जे तु द्धुस्य आया नन मा मनंति ॥ ५९ ॥ अथ आया नं प्रयोजनम् ॥ ६०
 ह्वं सिंह गतं चैव रंक्षे कर्षद कादयोः ॥ द्विषः पुनः प्रयोक्तव्यो वापी कूपस्य स्तु च ॥ ६०
 ॥ मृगेन्द्र नासने दद्यात् प्रयनेषु गर्जं पुनः ॥ ह्वं भोजन पात्रेषु च्छनादिषु पुनर्ध्वजम्
 ॥ ६१ ॥ अग्नि देवस्य सु सर्वेषु गृहे कन्दु पञ्चविनाम् ॥ पूर्वो नियोजयेत्केचिदस्थानं रं

शि च्छादि जातिषु ॥ ६२ ॥ त्वरो वे प्रयागदे प्रस्ताध्वांस्तथापि कुटीषु च ॥ दृष सिंहा
 १ ॥ भज थापि प्राप्ता दधुरवे प्रभनि ॥ ६३ ॥ गजार्थे वा भज जाये वीण जानां सदनं शुभम्
 ॥ भग्नालयं भज जाये च त्वराये तृपये ॥ ६४ ॥ अमंत्र प्रस्तव स्त्राणां तृपाये वा
 भज ॥ पिपा ॥ पादुको पान हो कार्ये सिंहारव्ये ॥ व्यथ वा भज ॥ ६५ ॥ उक्ता नाम व्य-
 नुक्तानां सर्वेषां च भज जः शुभः ॥ अथ यदा सं निषेधमाह ॥ नीचे प्राप्नु गते जीवे शुक्ते चन्द्रे
 ॥ अवार को ॥ निर्भिर्मेतं सदनं सन्वद तिनि स्व त्व मातृयात् ॥ ६६ ॥ अस्त दीपो ॥ अन्न-
 रासः प्राति दैव सिको वृधैः ॥ नास्ति दोष सदा चन्द्रे न भैत्रे ॥ अस्त नीच ता ॥ ६७ ॥
 राहाय लब्ध अष्टक्षेत्र गन्त क्षेत्रे च चन्द्रमाः ॥ प्रलाका सप्तकं देयं कानि कादि क्रमेण
 च ॥ ६८ ॥ वाम दक्षिण भागे तत्प्रस्तं शान्ति कारकम् ॥ अग्र पृथेन दातव्यं पृथी
 क्षे च्छेत्र शान्तनः ॥ ६९ ॥ अस्त प्रचन्द्रस्य वास्तोश्च अग्र पृथेन प्रस्यते ॥ पुरस्त्रे
 पृथगे वास्तोः त्वनिःस्था विधुभे मृतिः ॥ ७० ॥ अथ क्षेत्र प्रलाप नम् ॥ विस्तृति प्रो मृदा

॥ १६ ॥ यामो द्वेयं क्षेत्रफलं चरेत् ॥ राशि कृतादिकं सर्वदं पत्यो रिव चिंतयेत् ॥ स्वेष्टमं वैक-
 ॥ १७ ॥ नाडीस्थं चिन्तयेत्सततं बुधः ॥ ७१ ॥ देशे ग्रामे पुरे गेहे प्रभो मित्रे ऽन्यथो विधिः ॥ स-
 कनाडी प्रशस्ता स्याद्विरुद्धा भिन्ननां विका ॥ ७३ ॥ गेह गेहेष्टाथो स्मै ज्यो र्वर्णाथा-
 त्तु विवाहवत् ॥ गेहे शालयभौके तु भूतुदं तद्गृहं स्मृतम् ॥ ७४ ॥ काष्ठपाषाणयो-
 र्वाह्यमिष्टि कानां तद्वर्कम् ॥ मृत्तिकागर्भमात्रं च्छदाती प्राह पराशरः ॥ ७५ ॥ जयेष्ट-
 र्वाग्रोधनम् ॥ त्रिभिस्त्रिभिर्वैष्टमनि कृत्तिकाया हृद्ध्येदुन्नासिधना निष्टो कः ॥ प्राज्ञो-
 र्भयं राजभयं च भूतुः सुखं प्रवासी च नव प्रभेदाः ॥ ७६ ॥ त्रिकोणाभं क्षौद्रं वापि षडष्ट-
 भं वा भौकं न प्रास्तं भूतुः च्चाभिर्नो प्रच ॥ द्वारक्षकं पृथदि गार्क्षकं च स्थितिं चर्चो ररूप-
 यो हितस्स्यात् ॥ ७७ ॥ अथपि गृहज्ञानम् ॥ एकोनिते वृक्षा हता द्वि ति व्यो १५२ स्तो-
 निते श्याय हते नु जागैः ॥ युक्ता धर्मे प्रचापि युता १७ विभक्ता भूया ध्विभि २१६
 प्रशेष नितो ऽहि पिंडः ॥ ७८ ॥ अस्मार्थः ॥ यदेव नक्षत्रं व्यवहारनाम्ना विवाहो-

धिनाशुभदंस्थत् ॥ तदेवं स्वेष्टभं कल्पम् यश्च ज्ञाद्योये विषमः ॥
 यद्दीप्सितः स्यात् तस्य वेद्यायः कल्पः ॥ ताम्याभिविस्तायामज्ञानम् यथानोक्तं
 तस्य अग्नुराधानक्षत्रस्य रोहिण्या सहस्रे लापकः संभवति तस्येष्टभं रोहिणी कल्पि
 तम् ॥ तत्संख्या ४ स्को नितेष्टर्क्षिम् ३ अनेन हितिष्ठोः १५२ हताः ४५६ दूष्ययः
 सिंहः कल्पितः लतीयः ३ रूपो नित दूष्ययः ॥ अनेनेन्दुनागाः ८१ गुणिताः १६३
 युताः ६१८ घनैश्च १७ युताः ६३५३ भाषिभिः २१६ विभक्तः शेषे २०३ दूदमेव
 क्षेत्रफलम् ॥ गृहस्य दूष्याय नक्षत्रं भवम् ॥ पिएडम् ॥ अथ क्षेत्रफलादर्थे विस्तारज्ञा
 नम् ॥ भक्ते क्षेत्रफले स्वेष्ट विस्तारेण च दीर्घता ॥ स्वेष्ट दीर्घे तथा भक्ते विस्तारे वेष्ट
 नः स्फुटः ॥ ७६ ॥ अथ कल्पितैर्धर्मैश्च अनेन भक्ते लब्धो विस्तारः ७ अथ कल्पित वि
 स्तीः ७ ॥ अनेन भक्ते लब्धदं धर्मम् २७ ॥ अथ वयादं प्रज्ञानम् ॥ गृह नक्षत्र संख्या कै
 नागतये व्ययो भवेत् ॥ भुवादिनाम वर्णैश्च युक्ते क्षेत्रफले तथा ॥ ८० ॥ त्रिभिः

तथेऽप्राकाशे वे प्राकः तत्कं नृपः क्रोधात् ॥ इन्द्रभूर्धोऽसुभवा वंशो यमो नैद्यो गृहः दि
 त्तु ॥ ८१ ॥ अथ भुवादिगोहनाय सारज्ञानम् ॥ अथ यत्नशमं विप्रलम्भं निरुद्धाश्वाभिधम् ॥
 श्रेष्ठानि त्र्यक्षरणि स्युः सप्तमञ्चतुरक्षरम् ॥ ८२ ॥ अथ भुवादिगृहाणि ॥ अक्षवधन्य
 श्वयन्तत्त्वं खरं कंठं मनोरमम् ॥ सुमुखं दुर्मुखं चो गं रिपुदं वितदं तथा ॥ ८३ ॥
 नाश्रज्जाक्रंद विपुलं विजयञ्चेति धोहप्रा ॥ अथ भुवादिगोहज्ञानम् ॥ दिक्षु पूर्वो दित
 प्रणाला भुवा भू १ द्यौ २ कृता ४ गजाः ८ प्राणा भुवाङ्कः संयोगः सेको वे प्रम भुवादि
 कम् ॥ ८४ ॥ अथ क्षेत्रफलादायाद्यानयनम् ॥ गो ८ क ८ र्त्वे हे सु ८ गुण ३ सु ८ नाग
 ८ जलधि ४ व्यालं ८ हंसं २ फलम् नागा ८ ह्यं ७ क ८ दिवा क १२ सु ८ म २ ७
 तिथी १५ यो गोः २ ७ खसूर्यो १२ ० रजित् अयं चारमयां प्राकं धनमृणं तारं तिं-
 थिं चिंतयेद्योगं चाद्दु रित्ती ह श्रेष्ठ कपर्दे भागे हते तां तिर्कैः ॥ ८५ ॥ अथैतेषां प्रयोज-
 नम् ॥ अथायः ॥ विषमा यश्च भुवायेव समाय प्रसो कदुःखदः ॥ अथ चारः ॥ सूर्या

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|------|------|------|------|---------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| धुवम् | धाम् | धाम् | नरम् | वरम् | कांताम् | मनोसं | सुखम् | सुखम् | धुवम् | विषम् | विषम् | नाशम् | नाशम् | विषम् | विषम् |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |

तयं ह्ये ॥ मूलाख्यं धनुर्व्येव ह्ये भे प्रो ष रा शीषु ॥ ८७ ॥ गृहस्थागत नक्षत्रे तद्वि
 शयात्मकं यदि ॥ तन्मवांशावशात्तत्र ज्ञातव्यं सर्वदा गृहम् ॥ ८८ ॥ धनस्योक्त्य
 ॥ धनाधिकं गृहं नृह्ये निर्द्देनं गृहाणाधिकम् ॥ नक्षत्रस्य ॥ विषमस्य विषमता प्रत्यरी
 प्रति कूलदा ॥ निधनाख्यातारका तु सर्वदा निधनप्रदा ॥ ८९ ॥ द्वातेदुःखं तृतीयार्द्ध
 पंचमर्द्धे यशः क्षयम् ॥ आयुः क्षयं सप्तमर्द्धे कर्तुं भावादि सप्तमम् ॥ ९० ॥ तिथि
 प्रयोजनम् ॥ दृष्टिं ऋजोच वर्ज्येत् योगानां मपि दुःखं योगाः प्रज्योतिः ॥ आयुः प्रयोजनं
 नावत्कालं गृहस्थितीः ॥ अथ वर्णपत्रेन गृहशुद्धिः ॥ द्वात्रिंशदष्टाधिक विंशति पञ्च

रकाराख्यं प्राः सदा
 वन्द्यमयप्रदाः ॥
 ८६ ॥ अष्टविंश्यादि

त्रयं मेवे मया तस्मिन्

[illegible]

ገላታ ምስጋና ይጻፍ ምስጋናዚ ቅዱስ ኢሉ

२५

संभ्रमवर्त्मनिः ॥ वृषप्र कन्या मकरोऽथ वैश्यः शूद्रा तुला शुभ्रपटा भवानी ॥ २७ ॥ सा
 त्वाङ्गुलं वासरा राशि सद्य चोदङ्गुलं क्षत्रिय राशि कन्याम् ॥ वैश्या कर्जानां यमदिङ्गु-
 लं हिष्णुद्विभिधानामथ पश्चिमं स्यात् ॥ २८ ॥ अथ द्वाविधारः ॥ पूर्वार्थे प्रानान्यान्नेयदक्षि-
 णानीयात् ॥ द्वाणाने क्रत्यादीनि पश्चिमानि वायोश्च ॥ २९ ॥ अथ पूर्वार्थे हिष्णुद्वारणं फलम्
 अनलभयं १ सुतजन्म २ धनता ३ नोद्ग तो लाभः ४ कोध परता ५ नृतत्वं ६ क्रोर्ध्वं ७ चो-
 र्यं च ८ पूर्वार्ण ॥ १०० ॥ अत्य सुतत्वं १ प्रेष्ठं २ नीचत्वं ३ भक्षयानासिः ४ ॥ ऐदं भूकतम् ६
 मधनं ७ सुतवीर्यं च ८ याम्येन ॥ १०१ ॥ सुत पीडा १ रिपुवृद्धिः २ धन मुतासि ३ स्मस्त-
 गुण संपत् ४ ॥ धन संपत् ५ वृषति भयं ६ धन नाशः ७ योग ८ द्रव्येव धन वंधो ॥ १०२ ॥ वंधो १
 रिपुवृद्धि २ र्द्धि सुत लाभः ३ समस्त गुण संपत् ४ ॥ पुत्र धनासि भर्वे ६ सुतेन दोष ७ स्त्रियो
 नै प्रलम्भ ८ ॥ १०३ ॥ अथे प्रान्यादि चतुर्ण फलानि ॥ दुःखं १ प्रोको २ धना सिद्धि ३ नृप पूजा ४ म-
 हानन्द ५ स्त्री जन्म ६ पुत्रता ७ क्षत्रिः ८ अर्था द्वा फलानि च ॥ १०४ ॥ निधनः १ वंधनं २ नीति

२०३

३ पुत्रासि ध्व ४ धनागमः ५ य प्रो लब्धि र्दृष्टो गमय ७ व्याधि रसो न श्व द्दर्शण ॥ १०५ ॥ न प्रव
 र्त्नी दृषणं चैव लक्ष्मी प्राप्ति र्द्नागमः ॥ सोभायं धन लाभश्च दुःखं प्रो क्त्य प्रथिमे ॥
 १०६ ॥ प्राप्नु वी र्द्धि र्म हृदुः खं हानि रसस्य त्सुखा गमः ॥ प्राप्ति र्दुःखं प्राप्नु वाधा चोत्तरस्यादि
 शि क्रमात् ॥ १०७ ॥ अय संश्रानि परत्वेन यद्दृष्टानि श्वयः ॥ कुंभी र्की फाल्गुणे मासे श्रावणे कर्क
 सिंहयोः ॥ पौषे न के यद्दं कुर्यात्सर्वं पश्चिम दिङ्मुखम् ॥ १०८ ॥ मार्ग तुला शिरो भानी वैशाख
 वै वृष भाजयोः ॥ दक्षिणो दङ्मुखं प्रोष्ठं मंदिरं नेष्ट मन्मथा ॥ १०९ ॥ पूर्णिमातो ऽष्टमी या
 वत्पूर्वास्य वर्जयेद्गृहम् ॥ उत्तरास्यं न कुर्वीत नवम्यादि चतुर्दश्या ॥ ११० ॥ अमाया व्यावृ
 मी यावत्पश्चिमास्यं विवर्जयेत् ॥ नवम्या दौ दक्षिणास्यं यावच्छुक्लं चतुर्दश्या ॥ १११ ॥ न
 वभागं यद्दं कुर्यात्सं च भागं च दक्षिणो ॥ त्रिभाग मुत्तरे त्याज्यं प्रोष्ठं द्वा रं विनिर्दिशेत् ॥ ११२
 तिथि पंचगुणी कल्प न्या मास्राशुगो र्धुतम् ॥ शिव नेत्रे हेरे ज्ञानं प्रोष्ठां के फल मादिशेत् ॥
 ११३ ॥ एकेन लभते राज्यं द्वितीये सुखं संपदम् ॥ शून्ये च मरणं प्रोक्तं यद्द्वारं मे विप्रो वतः ॥ ११४ ॥

॥ अथ मंगलं लभनविचारः ॥ हिस्त्र भावे स्थिते लभने शुभैर्दृष्टा त्यगे महः ॥ पाप रज्ज्वा ॥ १९५ ॥ दुः
 १९५ ॥ अन्दिशरं गणं बुधः ॥ १९५ ॥ अथ गेहासीसभयोगः ॥ लभने गुरो रदौ पश्ये द्यूने चै भा
 गीवे सुखे ॥ मन्दे त्रिगो कृतं तिथे न्यदि रं प्रारदां प्रतम ॥ १९६ ॥ ततः शुके महोत्थे ५
 कं पद्ये भोगे सुते गुरो ॥ सभा रज्ज्वा गृहं तिथे द्वाय नानां प्रत द्वयम् ॥ १९७ ॥ सूर्ये लाभ
 गते शुके तनो नभसि चन्द्र जे प्रोहं वर्ध प्रता पुष्य निष्पिनं नृचै र्भवेत् ॥ १९८ ॥ चतु
 र्धे वाक्या तौ लाभे भोगे मन्दे च विविधोः ॥ अश्रुति हायना पुष्य मारज्ज्वा मन्दिरं स्तनम
 ॥ १९९ ॥ शुके स्वीचे तनो वापि जीवे पाताल गो ५ धवा ॥ लाभ गो वा प्रभौ स्वीचे संप्रधु
 लं चिरं गृहम् ॥ १९० ॥ लग्नस्थे त्वस्मिं चन्द्रे केन्द्रे जीवे ५ पश्ये चरैः ॥ स्त्रीश्च मित्रांशु
 र्गहं लक्ष्म्या शुक्लं स्थिरं भवेत् ॥ १९१ ॥ अथ नेष्टयोगः ॥ नीचांशु स्थे स्तथा रवेर्दे निर्ध
 नं मन्दिरं हिनत् ॥ रवेरश्चै को हिस्त्रे द्यूने परांशु स्थोष्ट मभ्यगः ॥ १९२ ॥ कुप्यास्त्रिभं
 पराधीनं लभने शो ददि निर्दलः ॥ अथ नक्षत्र ग्रह वरा हिशेषयोगः ॥ पूर्वाषाढो जहा पुष्ये प्लुते

तं हि पा रोहि त्रवे सुगे ॥ जीव युक्ते मुरो वीरे गोहो राज्या धर्ष पुत्रदः ॥ ११३ ॥ विप्रगवादी ॥
 ३५५ निर्या धिव प्रात चित्रा स्थिते भृगो ॥ भृगु वार कृतं वेप्रम धन धान्य सुत प्रदम् ॥ ११४
 ॥ पूर्वो धादा मया हस्त पुष्य मूलो न्यगे कुजे ॥ कुजे हि निर्मितं गोहं भस्म सा दयित ना
 भवेत् ॥ ११५ ॥ उक्ता हस्ता धिनी चित्रा रोहिणी मृगगे बुधे ॥ बुधे ऽन्हि भंदि रा रक्षः
 सुरव पुत्रार्थे सिद्धये ॥ ११६ ॥ भरणी स्वात्य नूरा धा ज्येष्ठा पुष्या द्यौ प्रानौ ॥ शनि वार
 कृतं वेप्रम रक्षो भूत युतं भवेत् ॥ ११७ ॥ शेषे चैत्रे द्यौ ज्येष्ठे आषाढे कर्कटे रवौ
 ॥ सिंहो भाद्र पदे तोलि ना धिने कार्तिके ऽलिंगो ॥ ११८ ॥ पौषे नर्के तथा माघे मक
 रे कुंभगे ऽपि च ॥ प्रकुर्यान्मंदि रं विद्वान्मा न्यैः कौश्लि दिती रितम् ॥ ११९ ॥ कृत्वा
 पक्षा द्यौ मासा विज्ञेया ह्यत्र सूरिभिः ॥ अथ मृगा रंभ सय ध्यां द मास परत्वेन ॥ श्लोको ध्या
 न्यं मृति प्रप्नु हती द्रव्य दृढि र्विनाशो भुद्ध भूत लक्ष्मि रथ धनं श्री ध्वज न्हे भूयं च ॥
 लक्ष्मी प्राप्ति भवति भवना रंभ कर्तुः क्रमेण वैवा दूचे मुनिभिरिति फलं वास्तु श्ला -

३०६ स्त्रियोपदिष्टम् ॥ १२२० ॥ त्यक्त्वा चतुर्दशैः षष्ठं चतुर्थी मयमी ममात् ॥ नवमी च दशमी
 मंग्रहारेभ्यो विपञ्चके ॥ फलञ्च ॥ दारिद्र्यं प्रतिपत्कुर्याच्चतुर्थी भूतहारिणी ॥ अथ
 मृत्वा दनं चैव नवमी प्रत्ययातिनी ॥ १२२१ ॥ दर्शे राजभयं क्षेप्य भूति दारविना प्राप्ता
 म् ॥ १२२२ ॥ विपञ्चके दति ॥ रुगानल चप चौरमृत्यु सञ्ज्ञक पञ्चक रहिते ॥ प्रत्येष्टयोऽनु
 राधायां भनिद्या युगलोत्तरे ॥ हस्तत्रये च रोहिण्यां रेवत्यां गृहमारभेत् ॥ १२२३ ॥ ह
 तिका मन्दिरं कुर्यात्पुनर्भः भिज्जिति श्रवे ॥ १२२४ ॥ अथ भूमिसूक्तम् ॥ प्रद्योतना न्यं च
 नगां कसूर्यन वेन्दुष दिश मिता निभानि ॥ श्रोते महीने व गृहं विधेयं तद्भागवा पीद
 ननं न प्रस्तम् ॥ १२२५ ॥ अथ गृहारेवत्तचक्रम् ॥ शीर्षे द्युषे गोह विधा विनक्षोद्वाहो
 नि निश्चिध्वाधिभिरग्रपादे ॥ धूम्यं द्युगेः पश्चिम पादजातेः स्थैर्यं गुरोः दृष्ट्वा गतेर्हना
 द्युः ॥ १२२६ ॥ स्नाभो द्युगे दक्षिणा कुक्षिपातेः पुच्छेऽग्निभिस्सप्त पतेर्विनाशाः ॥ वा
 मे द्युगे निर्द्वेनता च कुक्षो पीडा च पत्युर्मूर्खगोत्रिभिश्च ॥ १२२७ ॥ अथैतदेव पुनः स्पष्टी

संक्षिप्तये ॥ राविभास्महनेयानि शुभान्येकादशसुभात् ॥ इषाशेषाण्यनियुक्तानि साभिभिजिह्व-
 ३०० पदास्तु नि ॥ १२८ ॥ अथखलम ॥ अथोमुखैर्भैर्विदधीत रवातं शिलास्तथैवोर्ध्वमुखैश्चपद-
 म् ॥ तिथ्यङ्मुखैर्दक्षिणपाददानं गृहप्रवेशे मृदुभिर्दुर्वर्तैः ॥ १२९ ॥ अथशेखरासंज्ञादिवा-
 स्तोमुखैश्चकटिश्च ॥ दद्यात्कादित्रयं वेद्यां सिंहदिग्गणयेद्गृहे ॥ देवालये च मीनादि तडा-
 गो मकरादिकम् ॥ १३० ॥ दर्शनतः सूर्याति कालसूर्यो विहाय स्थितं गणयेद्दिदिष्टम् ॥
 श्रेयोऽस्य वास्तो मूर्खमथ पुच्छं त्रयं परित्यज्य रवने च तुर्यम् ॥ १३१ ॥ कन्या सिंहवु-
 लायां सुजाग पतिमुखं ग्राम्य कोणेऽग्निखानं वायव्ये स्यात्तदास्यं त्वलिपुन मकोर्वेषां
 खानं वर्तते ॥ कुंभे मीने च मेघे निवर्तते दिशि मुखं खानं वायव्य कोणे चाम्भेः कोणे मुखं
 वैदव्यमिधुनं गते कर्कटे रक्ष रवातम् ॥ १३२ ॥ ऊर्ध्वभागा त्रयं त्र्यङ्गं पृथग्भागा त्रयं तथा ॥
 मध्ये बीडशः त्र्यङ्गाणि रवननं तत्र शेषे भनम् ॥ १३३ ॥ अथवा त्र्यङ्गासा द्वारं निष्य वायव्यं वास्तु भि-
 रे ॥ खाने भाद्र पदास्तुः क्रमान्मास त्रिषु त्रिषु ॥ प्रागा शदिग्गणयेद्गोहा द्वारं शीर्षे दि-

मन्त्रिः प्रसूतम् ॥ १३४ ॥ वास्तो प्रशीर्षे दिशो दिवं पुच्छं समुखं दिगा तम् ॥ अथ चाली नमि
 १३५ कुक्षौ स्वाने प्रकुरेणाम् ॥ अथा विप्रति कान्मा स्तु पुच्छा तस्य दशां सत्यजेत् ॥ १३५ ॥ अ
 थोत्तया दश रवात चाभे भागे च मध्यतः ॥ गेहा रथे मुहूर्त्तः नश कुन्त्वा स्म दूरणाम् ॥
 १३६ ॥ चतुर्हस्त प्रमाणान्नुखात्वा गर्त्तं समन्ततः ॥ कुम्भो दके प्रशेचयेयुः प्राप्तिप्रादुर
 त्सरम् ॥ १३७ ॥ ततर्द्दृष्टानं दिग्भागे साक्षत रत्न पंचकम् ॥ साज्यं कुम्भ स्थिर कृत्वा वा
 लु पृजन पूर्वकम् ॥ कुम्भो परिप्रिला न्यासः कर्त्तव्य सदनन्तरम् ॥ १३७ ॥ अथ द्वार प्रा
 ख्यते ॥ अष्टि वन्या भुजरा हस्त पुष्य भुलि मृगे सुन्न ॥ रोहिण्यां स्वाति भेत्ये च द्वार प्राखा
 प्रयेपयेत् ॥ १३८ ॥ अथ द्वार चक्रम् ॥ सूर्य भावे रभे प्रशीर्षे स्थिते रत्न धन संपदः ॥ गेह
 स्यो द्वासनं तस्मादष्टभिः कोणा संस्थितैः ॥ १३९ ॥ प्राग्वा स्वष्ट भित्ते स्तस्माद्भुजं सौरव्य
 भवेद्द्वे ॥ देह ल्या न्नुच्चिभि द्विष्टे मृत्यु र्देह प्रते भवेत् ॥ १४० ॥ चतुर्भिर्मध्यगै स्तस्मा
 द्द्वय लाभः सुखं भवेत् ॥ एतच्चक्रं विचार्या दी द्वारं कुर्यात्स्वमन्त्रि ॥ १४१ ॥ कस्याचि

नमो
३०८

नते विप्रोः ॥ कृतः कणादि युगमन्त्रेन संतकश्चकारिभिः कास्ससुद्धसूर्यभादिनसितस्त
तः क्रमात् ॥ धनाग्रामविनाशसौख्यचंधने मृतिः क्षतिः शुभं न स त्पुनरवपदक्रमाकृतं वि
चक्षणेः ॥ १४२ ॥ अथ गवाक्षनिर्ययः ॥ पूर्वदिताभ्यशस्तासुगवाह्मदिष्टुक्रारयेत् ॥
अथ हारस्यतिथ्यन्तान्निर्ययः ॥ आषाढे नवभाभे ते हारमेकाप्रमान्तः ॥ माघातुल्ये कृती
ये चारुद्रकोणादिधीयते ॥ १४३ ॥ यास्यां षष्ठे चतुर्थे च तुरीयेऽश्लेषपंचमे ॥ उशीच्याभ्या
मनीच्या वा सव्यमार्गेण धीमता ॥ १४४ ॥ अथ हारस्मोचना ॥ गेहोच्चस्य चतुर्धा श्लोदिगु
णे हारचच्छूयः ॥ अथ गेहोचना ॥ विस्तारघोडशेषभागश्चतुर्भिर्मर्मैः करैर्युतः ॥ गेहो
च्चं तन्मृतं क्षेपं न्यूनाधिक्यमसत्स्य तम् ॥ १४५ ॥ विस्तारतुल्यप्रमितिं गृहस्य चोच्छूय
ताभ्यं नारभूप्रदेशात् ॥ गृहोपरिस्थस्य गृहस्य तद्विस्तारहस्तोच्छूयता विधेया ॥
१४६ ॥ अथ हारस्ये वेधविचारः ॥ कोणाभागीभूमिद्वारकर्दमस्तमभूरुहाम् ॥ देवास्तपप्रक
पाणां वेधो द्वारेऽथ सन्मुखे ॥ १४७ ॥ अथ वेधपवादः ॥ गेहोच्चद्विगुणाधिक्ये शान्तरे सखि

१॥ सति ॥ नैव कोणादि को वेधो भिति मार्गान्तरेऽपि च ॥ १४८ ॥ कुलम् ॥ कृपेनाप्रमारे
 भवति विनाशो देवता विद्मे ॥ स्तम्भेन स्त्री दोषः कुलनाशो ब्रह्मणोऽभिमुखे ॥ १४९ ॥
 उन्मादस्त्वय मुहुटितेऽप्यपि हिते स्वयं कुलविनाशः ॥ मानाधिक्येन भय व्यसनदेभि-
 ति दुर्गोचे ॥ १५० ॥ द्वारद्वारस्यो परियत्नं न शिवाय शोकदाय च ॥ अग्निस्त्रिभुवः सुभ-
 दं कुब्जाः कुलनाशनाय भवति ॥ १५१ ॥ पीडाकस्मति विततं भति न्यूनं भवेदभवाय
 ॥ बाह्ये विततप्रवाशो दिव्यास्ये द्रस्युभिः पीडा ॥ १५२ ॥ दृष्टानादिव कोणेषु संस्थि-
 ता बाह्यतो गृहस्थिताः ॥ चरकी विदारिनामाय पूतनापाय राक्षसी चेति ॥ १५३ ॥ दृष्टि-
 ता भूषणानि दादे व्योमस्त्यमांसाश्च वादिभिः ॥ अन्यदा विप्रकारिण्यो वासिनातु विना-
 वत्तिम् ॥ १५४ ॥ अष्टांगणज्ञानम् ॥ अष्टांगणायाम विस्तार्य वेकी कृत्य गृहे भजेत् ॥ अ-
 गी १ विचक्षुरागोऽभिरुः ३ कुलही ४ दान ५ चान्द्रपुः ६ ॥ १५५ ॥ कृतिवृष्ट्योरोऽधुनी
 ७ चेतोऽस्मान्नवफलं त्विदं ॥ अथ हव विचारः ॥ उद्गगादिलवसिष्ठ विप्रो दीना इक्षिणो नै-

३११
 वि ॥ १५६ ॥ अथ धीदृष्टमह निर्माणम् ॥ प्राचीतः क्रमतस्नातपाकः शय्या च शास्त्रम् ॥
 भोजनस्यान्नभांडार देवतानां महं स्मृतम् ॥ १५७ ॥ मथनाज्यपुरीषारव्यविद्याभ्या
 संश्रुचां क्रमात् ॥ एतिभेषज्ययोः सर्वभासस्तन्मथ्यागमहः ॥ १५८ ॥ अल्पत्वेवाभु-
 वोऽप्राक्तेस्नादीश्वग्रहाभ्युधः ॥ प्राक्तेभुवोऽनुसारेण प्रकुर्वीत ययारुचि ॥ १५९ ॥ उ-
 त्तरवत्तपटाद्यं वु स्यान्ननुल्लादि कंततः ॥ ह्मालनं पितृपादानां गेहा दाक्षिणातस्तदा ॥
 १६० ॥ अथ चित्रारम्भः ॥ हस्तत्रयेऽनुराधान्त्ये सगोऽधिवन्यां प्रवत्रये ॥ पुनर्भेरोहिणी
 पुष्ये पूर्वपादाभिधेतया ॥ १६१ ॥ नंदयांच भुर्भेवोरे प्रकुर्याद्भ्राजवे प्रमनि ॥ चित्रं-
 नाना विधं रस्यं शिल्पी रामाप्रणं विना ॥ १६२ ॥ अथ नेहोपकरणं चल्ही कल्पम् ॥ पूवाद्भि
 रोहिणी पुष्ये उत्तरा त्रितये भिभे ॥ स्थितिर्मज्ञानसस्येयागेहोपकरणं स्मृतम् ॥ १६३ ॥
 सूर्योद्भाद्रसभैर्वधो नृपसुरवं वेदर्क्षसंख्योऽमुरवम् ॥ तारात्राय मितारमाहि रुमयोश्चु-
 ल्लसोऽसदा प्रारवयोः ॥ मध्ये पंच भवेद्गृहे प्रमणीना प्रोऽतिनके चाख्यस्तत्तं स्यात्सततम् ॥ ३११

संक्षिप्तं विचार्य मतिमान् चुल्ही गृहे स्थापयेत् ॥ २६४ ॥ अथ गृह समीपं कलम् ॥ समिचवालेयं

३१३ र्थनाशो भूतं गृहे सुत वधः समीपस्थे ॥ उद्देशे देव कुले चतुःपथे भवति चाकीर्तिः ॥

२६५ ॥ चेत्यभयं गृहं कृतं चल्मीके स्वकुले विपदम् ॥ गार्हायां तु पिपासा कुम्भीकारे

धनविनाशः ॥ २६६ ॥ अथ गृहं गणेशमवस्थाः ॥ पुंनागश्चंपकोऽशोकः पिप्यली दाहिमीष्टा

मी ॥ चकुलात्तिलकोद्भासापि चुमंदोऽमराजपाः ॥ २६७ ॥ गार्हिके लं तथा ज्ञाती पाद-

लागेद मक्षिका ॥ मक्षिका प्राग्वधकाः पनसः सरसी रुहम् ॥ २६८ ॥ एते महां गच्छे-

क्षाः शरीरव्यामंगल प्रदाः ॥ अथ गृहं प्रदेशात्तलिदिष्टं वक्षारोपणम् ॥ न्ययोर्धरोपयेत्मा च्यां-

गे हाद्याभ्यामुदं चरम् ॥ उदक् स्नानं च कर्कशुः प्रगीच्यां कुंचराप्रानम् ॥ २६९ ॥ अथ

गृहं गणेशमवस्थाः ॥ मातुलुंगं रुद्धीरं भादृत्तिना च वमहम् ॥ एते हः स्वप्रदाने हे संजा-

नारोपिता अपि ॥ २७० ॥ अथ केषां चिन्मते सर्वेषु वक्षा अंगणे निविष्टाः ॥ केचिद् चुनुं चारोप्यो-

निजवास गृहं गणेशो ॥ कोऽपि वक्षो यतः स्वर्गं हुषोऽपि न शुभो गतो ॥ २७१ ॥ अथ गृहं सम-

प्राकारादीनां निर्माणे सत्त्वं साधनम् ॥ प्राकारपुत्रनश्रमाभिर्मितो सत्त्वं साधनम् ॥ अथारु-
 स्याच्छुभे काले गोहारस्मोक्तभादिषु ॥ १७१ ॥ अथ देवालये महाधारंभः ॥ गृहारंभीक्त-
 नस्त्रैर्मदं कुर्यात्तु साधिवैभैः ॥ सर्वदेवालयन्तेस्तु पुनर्भ्यश्चरणा न्वितैः ॥ १७२ ॥
 अथ जैन्यालय प्रपादरीणा मारुतः ॥ पूर्वाद्रिभरणीधिसिरोहिरयां च राखिरोद्देये ॥ शुभाहेजै-
 न्यगोहस्य प्रपादर्योः कतिष्ठुभा ॥ १७३ ॥ अथ कृपलवननप्रदेशः ॥ ऐश्वर्य्यं पुत्रहानि-
 श्वरत्नीनाशो निधनं भवेत् ॥ संपच्छुभयं सौरव्यापुष्टिः प्रागादितः क्रमात् ॥ १७४ ॥
 कूपैकाने मध्यदेशे धनहानिर्हिवास्तुनि ॥ अथ जलाशयांतः ॥ अनुशया मवाहस्तेरे-
 वनीयूजरात्रये ॥ रोहिणीयुगले पुष्ट्ये धनियं दितये तथा ॥ १७५ ॥ पूर्ववादादिभि-
 र्येभेन च शुभे नासि शुभे दिने ॥ वापीक्ष्णं तद्व्यागान्मासारंभः काश्चितो ह्युधैः ॥ १७६ ॥
 अथ कृपारंभे चारफलम् ॥ रवि चोरे जलं नास्ति सोमे पूर्णजलरश्मवेत् ॥ चालुका भोम चारेदु-
 वृधे वहुजलं भवेत् ॥ १७७ ॥ गुरौ च मधुरं तोयं ह्युक्ते क्षारं प्रजायते ॥ शने अथैरजलं ना- ३३

संक्षिप्ति कीर्तितं दारुजं फलम् ॥ १७८ ॥ रोहिण्यक्षाभ्यो ममात्सूर्यभाच्च राहोऽरुक्षा दारुण
ते कूपचक्रम् ॥ यस्मिन्काले सर्वमेतत्प्रप्राप्तं तस्मिन्मौ निर्वर्त्तते सज्जलत्वं ॥
१७९ ॥ अथ रोहिण्यक्षात्कूपचक्रम् ॥ रोहिण्यादिलिखेच्चक्रं यावत्तिष्ठति चंद्रमाः ॥ एकं म-

ये द्वयं पूर्वततयं चानि कोणा के ॥ १८० ॥ याम्येव वाणसंज्ञं स्थाने ऋत्ये रसमेव च
॥ पश्चिमे शुगलं वायो युगं च त्रय मुन्ने ॥ १८१ ॥ ईशाने त्रिणि हातव्यं ब्रह्म ऋक्षा इनु
क्रमात् ॥ नार्थे शीघ्रं जलं स्वादु पूर्वे मू. सौ च खंडजम् ॥ १८२ ॥ आग्नेयं सजलं प्रोक्तं
याम्ये च निर्वर्त्तलं भवेत् ॥ नैऋत्ये सजलं प्रोक्तं पश्चिमे क्षारमेव च ॥ १८३ ॥ वायव्ये च
व पाषाण मुन्ने च तमुद्रवत् ॥ ईशाने कटुकं वारिकूपचक्रं विचारयेत् ॥ १८४ ॥ अथ भौ-
मभाक्षुपचक्रम् ॥ प्राग्निश्रेयु त्रिधा धिगुणाद्वयः . वयजलं च सुसिद्धिरभंग दम ॥ रु-
जमसिद्धि यशोऽर्थ प्रसिद्धि दं जलविभंग करः कुंजभादिति ॥ १८५ ॥ अथ सूर्यभात्कूपच-
क्रम् ॥ सजलं खंडजलं सजला जले शुभजलं लवणं च पिला जलम् ॥ लवणं मुसक-

राहुभादिनिनवकलानि विदुस्त्रिनयोदुभिः ॥ ९८६ ॥ अथ राहुभाक्पचक्रम् ॥ राहुक्रेष्ठा-

३१५ त्वयमूर्वेत्रयमनोनः क्रमात् ॥ मध्येचत्वारिदशानफलवाच्यशुभाशुभम् ॥ ८२५

पूर्वप्रोक्तकरोराहुः श्रमे यथा जलसंपदा ॥ दक्षिणे स्वाभि मणो नैत्रह्येदुःखदायकम् ॥ १८७ ॥ पश्चिमे सजलं प्रोक्तं वायव्ये बालुका तथा ॥ उत्तरे निर्जलं वारिर्दृष्टानेव स-

सुद्वन्द ॥ १८८ ॥ मध्ये सख्यज्जलं वाच्यं नान्यथा रुद्रभाषितम् ॥ अथ जलज्ञानम् ॥ नक्ष

न चारो निधि सं प्रयुक्तो वेदाहत न इण केन कार्यः ॥ एका वशिष्ठे च जलं हि नागो ह्यभ्याश्च
 प्रोवे सलिलं हि स्वर्गो ॥ निप्रलून्य श्रेये भुवि संस्थितो चं प्रजापतीनां त्व न नेजला प्रायः ॥ १८८६

अथ कृषे निर्कोर विचारः ॥ वर्नेमान तिथि वार नारका वारि राशि सहिता वसकृता ॥ शेष तुल्य-

[illegible]

दिशि पर्वतः क्रमात् निर्भरो भवति
कृप कर्मणि ॥ १८० ॥ अथि-
न्या हो षाधि र्द्यत्रितिथि निश्चस

कृष्णकर्मणि ॥ १८० ॥ अत्रि-

न्या हो प्राप्ति र्थन निधि निश्चर

संक्षिप्तमन्त्रम् ॥ चतुर्भिस्तु हरेः श्वां मेधां के फलमादिशेत् ॥ १८१ ॥ एके जलान्तरादि विद्या-
 ३३६ तद्विदो पातालमेव च ॥ त्रिभिः क्षारं विजानीयाच्च न्ये प्रान्यं विनिर्दिशेत् ॥ १८२ ॥ अथ
 नेवारचक्रम् ॥ निवारि हर्वत स्त्रीणि त्रीणि च सवतः ॥ मध्ये च त्वादिरिधिसाक्षिः शतुभा न
 एये बुधः ॥ १८३ ॥ मध्ये पूर्वजलं सौरव्यस्तरे धनवर्द्धनम् ॥ धाम्य नैऋत्ययोर्द्वैतं अप
 मरतो परे कक्षम् ॥ १८४ ॥ अथेककारमाशुभालेपश्च ॥ उत्तराश्विश्च भवे पुष्ये ज्येष्ठान्तरे रो-
 हिणी करे ॥ स्थिरेऽङ्के गुरो मन्दे द्वादिकार भूषणं चरेत् ॥ १८५ ॥ तथा गेहे सुधा ले-
 पः द्वादिकार भूषणं दिष्टु ॥ १८६ ॥ अथ द्वादिकचक्रम् ॥ द्वादिकं प्रवक्ष्यामि भोस नन्दक्यात्
 प्रयत्नतः ॥ पंच त्रीणि त्रिकं पंच सप्त पंचावन्ती जभात् ॥ १८७ ॥ शुभा शुभं नन्दे रो-
 व द्वादिका स्थापने मतम् ॥ अथाग्निदानम् ॥ सप्त पञ्च मुनिर्देद पंचभिः घणैक ज्ञाभरु-
 जभीति सुखाक्षिः ॥ स्थापनेऽग्निं किल द्वादिका गृहे भोम भादिति बुधाः प्रवदन्ति ॥
 १८८ ॥ अथ तद्वागचक्रम् ॥ सूर्यभा चन्द्रभंग्या वदन् एये त्सर्वदा बुधः ॥ दिक्षु दिक्षु ह्यं ३९६

न्यस्य मध्ये यच्च निधाय जयत् ॥ १२४ ॥ पट्टं च वारवाहं च फलं तस्य वाचयत् ॥ पूवस्त्वा
 वारि शोषं स्स्यात् ॥ अग्नेय्यां हलिलं वदु ॥ २०० ॥ दक्षिणस्यां वारि नाग्रे नैऋत्यां मधुतं
 जलम् ॥ पश्चिमायां जलं स्वादु वायव्या वारि शोषणं ॥ २०१ ॥ उत्तरस्यां स्थितं तो-
 यं मेघान्या कुस्मिन् जलम् ॥ मध्ये पूर्णं जलं दुग्धं वारि चामृतं मेव च ॥ २०२ ॥ तडा-
 गेषु सर्वेषु चक्रमे तद्दिचारयेत् ॥ द्विषेदि कुलं संभूतं सरयू कृतसंग्रहं ॥ शिरो मणौ
 समाहेया प्रमेयं विंशतिं प्रभुभा ॥ २०३ ॥ द्वाविन्नी संग्रहं शिरो मणौ वास्तु कच्छुलं
 नाम विंशतिः श्रमा ॥ २०४ ॥ अथ गृह प्रवेश प्रकरणम् ॥ प्रवेशे नव गौहस्यं कुर्यात् स्त्रीभ्या-
 यने नृपः ॥ आरमणे हि तस्मात्सेऽपि कृत्वा प्राग्वास्तु पूजनम् ॥ १ ॥ सावधानं वास्तुवेष्टा
 स्वयेष्टा शस्ता नवे गृहे ॥ प्रवेशे आवाणे मार्गे कार्तिकेऽपि प्रशस्यते ॥ २ ॥ पुनर्विनि-
 र्भिने जीर्णं गृहं युक्तं स्तये वह्निः ॥ प्रवेशे प्रज्ञानं गौहस्यं प्रस्तादि प्रविचारणात् ॥ ३ ॥
 श्रुत्वा चाहु एवाग्रे वत्यां रोहिणीं हवे ॥ चित्रायां प्रविशेद्गृहं द्वारभेतुं विप्रोद्यतः ॥

४ ॥ हार भेति ॥ यस्मिन्नाहे प्रवेशः कर्तुं शिष्यते तस्य यस्यान्दिशि मुखं तदिह ॥ क्षत्र्यैः

पूर्वादिषु चतुर्दिक्षु सप्त सप्ता नल क्षीत दत्ता द्युक्तेः मृदुभुव नक्षत्रैः प्रवेशो न स्यात् ॥

यदि गद्गार मंदिरं तादृशं रक्तैः स्यात्स प्रवेशो न सर्वे रिति वक्ष्येते ॥ अर्कानिला-

र्यादिति दत्त विष्णु ऋषिप्रविष्टं नव मंदिरं यत् ॥ अक्षत्रया तत्परा हस्त पातं शेषे द्युधि-

स्तेषु च मृत्युदं स्यात् ॥ ५ ॥ अथ जीर्णं गृह प्रवेशः ॥ धनिष्ठा हितये पुष्ये अश्लेषे रोहिणी द्ये

॥ चित्रा स्वात्या नृ राधान्ये प्रवेशे जीर्णं मन्दिरे ॥ ६ ॥ अथ प्रवेशे अन्य नक्षत्र फलम् ॥ अक्षरा

दित्रये ॥ भ्रिन्यां स्वाती पुष्ये तथा कोरे ॥ पुनर्वस्यैः पुनर्व्याजो राजा नाशो प्राताभिधे ॥

७ ॥ पूर्वात्रये भरण्यां च विषाखायां च भूक्षयः ॥ ज्येष्ठा श्लेषा रव्य मूलार्द्र कुमारे ना-

श माश्रयात् ॥ ८ ॥ कृत्तिका यान्दहे देहे प्रवेशे नव मन्दिरे ॥ तथा यात्रा निवृत्तौ च भूयानां

फलमीदृशम् ॥ ९ ॥ अथ वार फलम् ॥ गुरु शुक्र बुध राव्ये शु वासरेषु सु राव्ये दम् ॥ प्रवेशे

तु भर्तौ स्थैर्यं किञ्चि चौर भयमभवैत् ॥ १० ॥ वशिष्ठः ॥ नव प्रवेशे ह्यथ काल शुद्धिर्न द्वन्द्व

३७

॥ इत्यत्राभ्याः फल ॥ चत ॥ अथश्रुप्रच ॥ ॥ इत सुलभवास्तत्त्वेन पूर्ववदेव कुर्वन्ति ॥

११ ॥ नित्ययाने गृहे जीर्णे प्राशने परिधानके ॥ बभ्रुप्रवेशे मांशाल्ये न मोक्षं गुरुशुक्र-
योः ॥ १२ ॥ अथप्रवेशेत्याज्यः ॥ चैत्रोमासः कुजाकोच्च अह्नादग्यातिथिस्त्वभा ॥ दुरक्ष
न्नाद्भ्यो वज्र्यर्निवगेह प्रवेशने ॥ १३ ॥ अथलग्नवलम् ॥ चैत्रे लग्ने चरांशे च प्रवेशे न शु-
भानहः ॥ शुभो श्रेण द्युते चोपचयस्थेऽपि चरेऽपि सत् ॥ १४ ॥ शुभैः केंद्रत्रिकोणाद्यदि
गैरायन्निपद्येगैः ॥ पौषे शुद्धेऽष्टमे तुल्ये राविर्जन्माष्टमे गैके ॥ १५ ॥ शुभे मकंदके मे-
हे विधायाद्ये हि जन्मनः ॥ जलपूर्णा घटं दीपं वेदयोद्यैर्गृहे विधेय ॥ १६ ॥ रन्ध्रासुजा-
हनादायात्तंच स्वर्के स्थितं क्रमात् ॥ पूर्वाश्रादिभूखं गेहं विधेद्दामो भवेच्छदि ॥ १७ ॥
अष्टमपंचमद्वितीये कादशस्थानेभ्यः पंचसु स्थानेषु स्थिते रक्षो सवित्रा गवदनादिभेदि
प्रवेशे कर्तव्यो मोरविर्द्वेयः ॥ यथा ॥ यस्मिन् लग्ने गृहं प्रवेशः कर्तुं दिव्यते तस्माद्दष्टमं
तत्स्थानं ततः पंचसु स्थाने क्वर्के सति पूर्वाभिमुखे गृहे प्रवेशः कर्तुः ताम्रसूक्त्यः स्यात् ॥ १८ ॥

५२ तथा लग्नमप्येवमस्थानं ततः पंचसु स्थानेषु रवौ स्थिते दक्षिणाभिमुखे वा मोऽर्कः ॥
 ५३ तथैव लग्नमप्येवमस्थानं ततः पंचसु स्थानेषु रवौ स्थितः पश्चिमाभिमुखे वा मोऽर्कः
 तथैव लग्नमप्येवमस्थानं ततः पंचसु स्थानेषु सूर्यो स्थिते उत्तराभिमुखे एहे प्रवे-
 प्रकर्तुं चाभिः सूर्यः ॥ अथ ग्रहद्वयवर्णनमथः ॥ प्रवेशे प्राङ्मुखे पूर्वाभिर्नद्याभ्यां मुखे
 शुभा ॥ अथ प्रत्यङ्मुखोऽथोदङ्मुखे गेहे तथा जया ॥ १८ ॥ अथ गेहे तत्प्रवेशे च विशेषः ॥
 वेप्रसहस्यं दिवा प्रसप्तं प्रवेशो रजनी क्वचित् ॥ सती नृर्कवल्ले यान्नाह द्रव्यां नभुंगो नि-
 क्षि ॥ १९ ॥ अथ ग्रहप्रवेशे कलप्रचक्रम् ॥ अर्कभाङ्गमिति १ चक्रे वनिह द्वाहः प्रवेशने ॥ उदा-
 सोऽधिमितैः ४ प्राच्यां याम्यां जामोऽधि ८ संभितैः ॥ २० ॥ पश्चिमेऽधिमितैः १९ स्वर्ध्वीर-
 दन्वदभितैः १७ कलिः ॥ नाशो युगमितैः २१ र्मध्येऽधः कोटत्रि २४ त्रिभिः २७ शुभम् २१ ॥
 अथ तदेव स एवति ॥ आन्यदोऽसूर्यो भातयथा द्वाविंशच्चैव भाति पदद्वि ॥ कुम्भचक्रे च विष्टा
 निगेहं प्रविशतां नृणां ॥ २२ ॥ अथ प्रवेशविधिः ॥ यथोक्तसमये प्राच्या विताने स्तोत्रं गेह्यु-

तम् ॥ वेदमंगलनिर्घोषे स्संप्रविश्य महं शुभम् ॥ २३ ॥ शिखितं गीता तल्लभम् ॥
 धि विद्धं पुरोधसम् ॥ पूजयेच्च यथा देवं देम रत्ने स्तथां वीरैः ॥ २४ ॥ कृत्वा गीतो द्वि-
 ज्वरान्मथ पूर्णकुंभं दध्य क्षताम्ब दत्तपुष्प फलोपयोगम् ॥ दत्त्वा हिरण्यवस-
 नान्नि तथा द्विजेभ्यो मंगल्य गान्ति नित्यं स्वपदे विशेच्च ॥ २५ ॥ गीहोक्त होम-
 विधिना चालि कर्म कुर्यात् प्राणद वासु रामने च विधिर्यजक्तः ॥ सन्नय्येदे द्विज-
 वरान्मथ मध्यमो ज्यैः शुक्लां वारः स्वभवनं प्राविशे त्व रूपम् ॥ २६ ॥ नमः प्रवेष्टि-
 विधः ॥ अपूर्वसंज्ञः प्रथम प्रवेशो याज्ञा वशानेन स पूर्वसंज्ञः ॥ दत्त्वाभयस्त्वभि-
 मयो हि जातस्त्वेवं प्रवेशस्त्रिविधः प्रदिष्टः ॥ २७ ॥ आत्मोद्दिगभे भूयैः कार्यो पूर्वप्रवे-
 षकः ॥ पूर्वा पूर्वोऽभिवनी मूलश्रवो पतैः कार्स्थितैः ॥ २८ ॥ स पूर्वस्त्वज्ञे रात्रिज्ञानु-
 राधारेवती मृगे ॥ रोहिण्यां कथितः प्राज्ञैः प्रवेशस्त्रिविधो महः ॥ २९ ॥ अथ वासु पूजादि-
 कं विना प्रवेशो निषेधः ॥ यद्वास्तु पूजा रहितं त्वदज्ञे चालित्वनाच्छन्य महं विरूपं ॥ कपटदो-

सति न न विप्रोद्य न तत्सर्वा पदा भालय मेव तत्स्थानम् ॥ ३० ॥ अथ बालु हृज्जनम् ॥ अथ बालु-
 ३३ मे मृगो मूलः ॥ नुराधान्ये करत्रये ॥ पुनर्भेऽभुनोः पुष्ये रोहिण्या मधिभे नथा ॥ ३१
 ॥ अस्तो रभ्यर्च्चनं श्रुतं वलिदानपुरस्सरम् ॥ अथ नवदुर्ग प्रवेष्टः ॥ रोहिणी रेवती ह-
 स्तत्रये पुष्ये श्रवत्रये ॥ अनुराधोत्तरे नव्ये पुरे दुर्गे प्रवेष्टानम् ॥ ३२ ॥ अथ जितस्त्र प्रज्ञोः
 पुरे प्रवेष्टः ॥ विषारत्ना कान्तिका हर्षोत्तरे षाढे मिधे नथा ॥ श्रानो ज्यार्क्के जितस्थारे दि-
 ज्यो नगरं विप्रोत् ॥ ३३ ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ द्विरो मणो समा-
 दैषा प्रमेयं चैक विंशतिः ॥ ३४ ॥ द्वाति श्री संग्रह शिरो मणो गृह प्रवेश कथनं ना-
 मस्क विंशतिः प्रभा २१ ॥ अथ देवालय विप्रतिष्ठा प्रकरणम् प्राप्ता दामरयोः कार्या प्रतिष्ठा
 चोत्तरायणे ॥ तथा जलां श्रया रामोत्सर्ग प्रणस्तो विचैत्रके ॥ १ ॥ चैत्रो मासः प्रति-
 ष्ठायां वृधैः कैश्चिदितीरितः ॥ शुक्ल पक्षे अनुराधान्ये पुनर्भे रोहिणी सृगे ॥ ३ ॥ अ-
 वत्रयोत्तराहस्तत्रये पुष्ये विधीं पुरी ॥ स्ववाक्षणा नक्षत्र निषिद्ध स्थापनं स्मृतम् ॥ ३

१॥ विस्वादि देव सुराद्यानां विलम्बे भुव लोकिने ॥ अथ देवताविशेषेण नक्षत्रविशेषः ॥ चि-
 स्तोः पूर्वोदिते भेत्वा नुराधाशिवयोः शिवम् ॥ रोहिण्यां भवरो ज्येष्ठा पुष्ये चाभिजि-
 दीरितम् ॥ ४ ॥ विधिवासवयोस्तस्य कर्मातिष्ठापनमायुर्कैः ॥ ५ ॥ भाजोर्हस्तौऽनु-
 राधायां कुबेरस्तकन्दयो रपि ॥ मूलेऽनुगोदि कानां च भवरो सुगतस्य हि ॥ ६ ॥ रेवत्यां ध-
 र्महेरं वफणि प्रथम राक्षसाम् ॥ यक्षभूता सुराणाञ्च वारदेव्याः स्थापनं स्मृतम् ॥ ७
 व्यासाग रुद्रय यहाणाञ्च चाल्मीकैः पुष्यमेव च ॥ यत्र सप्तर्षयो यान्ति धिक्तेनैकाञ्च तन्न
 च ॥ ८ ॥ सर्वेया भेवरो हिरण्या मुत्तरा जितये तथा ॥ धनिष्ठायां हि गोपानां प्रतिष्ठाप-
 नमौरितम् ॥ ९ ॥ अथ देवविशेषे लयविशेषः ॥ सिंहैः सूर्यः शिरो हन्ते लये स्थाप्यस्त्रि-
 यां हरिः ॥ कुम्भे वेधाश्च रे सुद्धाः द्यौर्देव्यस्त्रिचरेऽखिलाः ॥ १० ॥ गणा परिहृत्त रक्षो-
 यक्षभूता सुराणां प्रथम फणि सरस्वत्यादि कानां च पीप्से ॥ भवसि सुगत नाचो ज्ञा-
 सवे लोकपानां निगदिन मखिलानां स्थापनो हि स्थिरेषु ॥ ११ ॥ अथ चारफलम् ॥ प्रति-

२५ ॥ १२ ॥ अथ देव विप्रयेण माकमनम् ॥ याम्यायनेऽपि चाराहमात् भवेत्वा मन्वान् ॥ महि
 ते ह्येता तथा क्षिमावन्ति दा वरदा ददा ॥ ज्ञानन्द दायिनी कल्प स्था धिन्य कर्तिरिवासे
 पासुरहन्त्री च नृसिंहं स्थापयेद्बुधः ॥ १३ ॥ विप्रैः ॥ आवणे स्थापयेत्स्त्रिंशमाभिदने
 जगदं विकासम् ॥ मार्ग प्रीये हरिं वैव यैये सर्वासु केचन ॥ १४ ॥ अथ प्रतिष्ठायां लभ
 तम् ॥ केन्द्रकोणद्विजामस्थैः शुभैः पापेभ्यः सेतुभिः ॥ आचारिणैस्तैः प्रवर्त्य प्रदा
 देवाः प्रतिष्ठिताः ॥ १५ ॥ द्विवेदि कुलसंभूत सरसूक्तन संग्रहे ॥ शिरो सरणे समाहे
 वा प्रमेयं च द्विविंशतिः ॥ १६ ॥ इति श्रीसंग्रह शिरो मणौ प्रतिष्ठा कथनं नाम
 द्वाविंशतिः प्रश्ना २२ ॥ अथ निम्न प्रकरणम् ॥ तत्राक्षवंग सुराणाम् ॥ १ ॥ दृष्टी
 तं वक्ष्ये दक्षिणांग समुद्रं ॥ पुरुषाणाम्नु तद्देयं चामभागे मयीदृशम् ॥ १ ॥ दृष्टी
 लाभ शिखरस्थाने धन लाभो ललाटके ॥ प्रियाङ्गिः स्याद्बुधोर्म्ये च्चुबोर्म्ये मुखे
 वहा ॥ २ ॥ शुभा चार्ताश्रुतौ कर्णे लोचने प्रिय दर्शनम् ॥ हर्कोणाभागयोर्हस्मीर

भिः पक्ष्मणि सज्जयः ॥ ३ ॥ गणद्वेशे स्त्रिया सौख्यं नाश्यायां गंधजं सुखम् ॥ उन्नते-
 हेतुवागवाद् ध्रुवनं चाधरे स्त्रियाः ॥ ४ ॥ हनुदेशे भयञ्ज्येयमुरले मधुरभोजनम् ॥ भू-
 वाहिः कंठदेशे स्यात् प्रीवायां रिपुञ्जं भयम् ॥ ५ ॥ द्वीपः पराजयः दृष्टे स्तन्ये मित्र-
 सभायाम् ॥ भिषासि दादुदेशे स्थान्मथ्ये चाहोर्दनायाम् ॥ ६ ॥ द्रविणानिःकरविद्याहि-
 जयं वक्षसि भ्रुवम् ॥ प्रमोदं च कलं कलायां ध्वं प्रीतिमनुक्षयम् ॥ ७ ॥ स्थानात्प्रचल-
 नं नाभौ कोष्ठाद्वह्निस्थान्मथ्ये ॥ कोष्ठासि रुद्रे नाय्याजयने पति सं गमः ॥ ८ ॥ स्फिरागु-
 र्वाहनासि स्स्यात् लिंगे योयित्समायाम् ॥ तृपणे पुत्रलाभश्चाभ्युदयो वसि देश-
 के ॥ ९ ॥ ऊरौ सहाससं प्राप्तिरिषु संधिस्तु जायुनि ॥ कश्चिद्वा निरुजं चायां स्थाना-
 नि ध्वरणोपरि ॥ १० ॥ पादाधोलाभदंयानमङ्गस्फूर्तिफलं त्विदम् ॥ वामभ्युत्तां-
 फलं चैतद्बुधे क्षीपं विपर्ययात् ॥ ११ ॥ नासिकां दक्षिणां गोस्यादङ्गः स्वस्फुरती तयाः
 ॥ अंगस्फूर्तिः समाक्षेपा लक्षणा मध्यकास्तिलाः ॥ १२ ॥ कण्डूतिर्दक्षिणो पाणी-

सन्नि- नृपाणां ज्ञाप्यदां स्तुता ॥ अन्त्येषां ताभूदापाह तस्मिं गच्छन् कारिणी ॥ १३ ॥ अथ प्रह्वीप-

१३ तन्मन्त्रम् ॥ तन्नाश्रुभाश्रुभतिथिवारनक्षत्राणि ॥ भू१ नेत्रा २ शि ३ शरां ४ गा ५ द्या १० विद्या

१३ दित्वे १२ अ १२ संमिताः ॥ तिथयः प्रशुभदा प्रह्वीपतिऽन्यास्त्यशुभामताः ॥ १४

॥ सैन्या वाराः प्रशुभा नोक्ताः पापादुह फलप्रदाः ॥ पुण्याश्चिह्नोद्दिष्टाश्चिह्नं पुनर्भविष्य-

कारणम् ॥ १५ ॥ अनिष्टान्त्यानुगाधारकं प्रतभंच प्रुभप्रदम् ॥ दूतोऽन्याङ्गं निविद्धस्या-

त्यह्वीपावे नृणां सदा ॥ १६ ॥ दृष्टिणां मेऽरविस्ते पुंसां वा मां चोच मृगा हृष्टाः ॥ नाभौ ह-

ृष्टौ चैव मन्त्रके हनु वाज्जिने ॥ १७ ॥ प्रह्वीपात प्रशुभो द्यौषस्ततो न्यङ्गं च प्रोभन् नम् ॥

यत्फलं प्रतने पश्याः शरदारो हरोऽपितत् ॥ १८ ॥ शरदस्य प्रपते च चरद्वारा रोहो लुप-

त्यम् ॥ स्नातकं स्पर्धने पश्याः शरदस्य सवाससा ॥ १९ ॥ जन्म ह्ये मृत्यु यो यो च द-

रयो विद्यादि ह्विते ॥ लभे पापयुगे चन्द्रेऽद्यमेरिहं प्रजायते ॥ २० ॥ तन्न प्रानि ज्ञ-

पं होमं रुद्रं मृत्युं ज्ञेयादिकम् ॥ पंच गव्ययुगं ज्ञानं हुत्वा इन्द्रया वलोकनम् ॥ २१ ॥

अथ खल्वन दृष्टि फलम् ॥ किं च ह्यणि कार्य सिद्धिं तुला प्राक्ते हुताद्यो भयं याम्ये रोगभ
 यं सुएरि कल हो विनं समुद्रालये ॥ वायव्ये वर वरुणयान प्रयनं दिव्यांगना चोत्तरे
 दृष्टाने मराणं न्धुनं निगादित न्दिगलक्षणं खल्वने ॥ २३ ॥ अथासमीपेण जमस्तके वा
 सूर्यो द्यवे वाराणा सन्निधौ वा ॥ आकाश मार्गे गहने वने वा धन्यो नरः पश्यति खल्वहोद
 न् ॥ २३ ॥ अथ स्कन्धेन शकुने वशंत एकः ॥ अपदे धु गोखु गज वाजि महो रगेषु राज्ञ्य भद्रः
 कुशलदः शुचि प्रादुर्लेषु ॥ अस्मास्थिकाख न विददन्ति चतुर्क केयु सद्यो ददाति
 मराणं खलु खंजरीदः ॥ २४ ॥ यः कंधरोदः शिरसा समंतात् विभर्ति कायञ्च समंत
 भद्रः ॥ आकाश वद्यो गल मान्य रुद्रः श्रितान नो यः खलु कार्य नाशः ॥ २५ ॥ सा
 र्थो हरिद्रा रस सन्निधौ यो गो मूत्रभाभः खलु खंजनो धमः ॥ सर्वत्र कार्यं विपुलां च ल
 क्ष्मी समंत भद्रः प्रददाति भद्रम् ॥ २६ ॥ स्वरोष्ठ के व्देव च पृष्ठ यातः छिदं
 स पक्षो विदधाति मृत्युं ॥ पक्षे विपुल न्दिख संस्थ चान्ते रुद्धो मृतो चान शुभः कदा

३८ ॥ चित् ॥ ३९ ॥ यादृशवस्थाशकुनेरमुष्यमुखापुमावाप्रपद्येतिदृश ॥ स्वस्था-
 ३८ ॥ धितादृश्युपलक्षणायातद्विस्तरेणालम्बित्वापरेण ॥ ३८ ॥ अथक्षतम् ॥ श्रीवध्यध्य-
 यनंवादेवाहनेशायनेऽशने ॥ वीजवर्षबुधेऽशोक्तंश्रीभनंसहसुक्षुतम् ॥ ३९ ॥
 मृदुर्वन्तिभयंहानिस्तुष्टिर्देव्यागमस्सुखम् ॥ तैशोऽर्थागमनंश्रीकंदिष्टुष्टि-
 धाफलंक्रमत ॥ ३९ ॥ अत्रोहल्लाम् ॥ यामार्द्धेसञ्ज्ञकाद्यातोविज्ञेयंचष्ट्यङ्कदुष्ट-
 क्र ॥ अथोऽर्द्धमहरेऽर्ध्याद्वितीयेऽग्निदिशिक्रमात् ॥ ३९ ॥ तृतीयेयाम्यतश्चैव
 फलमुक्तंविचक्षयोः ॥ वामेचष्टहेषुभद्रंफलंचस्यार्द्धेक्षयोऽग्नेफलमत्रचित्यम् ॥
 ३९ ॥ स्थानोपविष्टस्यदृष्टाक्षुरंस्याद्धरात्कृतंप्रलेप्यभवच्चदृष्टात् ॥ स्याद्भोजने-
 वाशयनेतथादोस्थानंलेहोभनमंत्रनान्यत् ॥ ३९ ॥ अत्यर्थनिघ्नंक्षुलमत्रवाच्यं-
 तद्गर्भवत्याश्वकुमारिकोयाः ॥ मधस्यकर्तुःप्रमदाजनानांस्याच्चर्मिकायाश्चयं-
 शकन्याः ॥ ३९ ॥ मयोजनेयत्रक्षतेऽपिजातंक्षुलंक्षणाच्चद्विनिहन्त्यवाप्रपद्य ॥

३३
३३६
कार्योत्सुकेनापि मननापीत्यंतस्मादुपेक्ष्यंनविचक्षणेन ॥ ३५ ॥ होमर्षजाग्रत-
होमधर्मान्तेचभवेद्युतम् ॥ सविशेषंतदाकार्यंपुनर्याचृत्यजायते ॥ ३६ ॥ अथ

स्वानकलम् ॥ वामान्दिशं दक्षिणभूमिभागाहच्छत्रयाणे शुनकः प्रशस्तः ॥ वाम-
प्रदेशात्सपुनः प्रवेशे प्रशस्यते दक्षिणभागामी ॥ ३७ ॥ मूर्त्तंचकृत्वाभिमुखं प्र-
यति योजगरुक्कः शुभदस्स पुंसाम् ॥ कार्यंयुसर्वेद्वपि सर्वकालं नमूजयन्ती शु-
नकी प्रशस्ता ॥ ३८ ॥ वजे त्मुस्ताद्यदि नृत्रयित्वा सर्वैव तस्मिन्प्रयति कार्यं निष्ठम् ॥
मिथान्नभोज्यं यदि गो मयेतु शुक्लेन शस्तं सज्जले प्रशस्तम् ॥ ३९ ॥ अयातिरुष्टो
ऽभिमुरवो यदि प्रवात्री ह्यभ्यकुर्वन्चि लुहभृदि ज्याम् ॥ शीघ्रं न दानीं भुवं मध्वगानां-
भुवं नभूतो धनधान्यलाभः ॥ ४० ॥ दृणां प्रयाणे भवनागमं वा प्रयानो रमन्ते यदि स-
प्रमोदाः ॥ तदेष्टकार्यं विभवे त्रमोदः समागमश्च स्वजनैः ससं स्यात् ॥ ४१ ॥
प्रवाधे पुरस्तादवनीं विलिख्य यातुर्मुखं पश्यति चेत्तदानीम् ॥ तत्रैव देशे इ विना ॥

संक्षिप्तं स्वलाभं वृजन्ति कार्ये न हि संशयोऽत्र ॥ ४२ ॥ फलं गृहीत्वा सहसा निवासं-
 ३० प्रवाधे विशेषेज्जल्यति पुनलाभम् ॥ योऽभ्येति दृष्ट्वाभिमुखं प्रयातुः प्रीतिप्रकु-
 र्याद्विना भान्यलाभम् ॥ ४३ ॥ अथ काकप्रकुनानि ॥ वामेन गत्वा विनिवृत्य मार्ग-
 काको यदा दक्षिणा भागं गच्छ्यात् ॥ यातुः प्रकुप्याद्वितकार्यसिद्धिं क्षेमं च सि-
 द्धिं पुनरागमं च ॥ ४४ ॥ कृत्वा रवं यः पुरतः प्रयाति पुरुस्थितोऽधो गृहमादधाति
 ॥ कण्डूयते यश्च क्षिप्तोऽङ्घ्रिना प्रणःपुंसां तदा भीष्टफलान् ददाति ॥ ४५ ॥ केके क्षि-
 ह र्गो धाति यो धिदास्ये धो नायं कोको भिति प्राप्तिस्तं स्यात् ॥ अपत्यलाभः कुकु-
 हे न्यनेन गन्तं फलं केके कदल्यनेन ॥ ४६ ॥ कोको भित्तीदं सुखलाभमाप्ते कुं कुं
 निनादः श्रियसंगमाय ॥ मैत्र्या जये स्यात्कदलीव प्रब्धं कश्चेव वारणी धनहा नि-
 कर्त्री ॥ ४७ ॥ अथ काकसर्पफलम् ॥ मस्तके वायुसस्य धेदिदं भ्रष्टं कालीः ॥ क-
 स्यात्कान्धे महाभीतिरिष्टप्रोधांगकेष्वपि ॥ ४८ ॥ यो धितं मस्तके भर्त्सि ॥ १ ॥

सुतस्य च ॥ तथकाकस्य र्हे होषा भवतः ॥ लुह्वा धो वाप्यसिद्धान्त्वभस्य दध्या दिद्यो गतः
 ॥ ४८८ ॥ काकस्य र्हे नदीषा यत्न कस्माद्दृष्यन्तदा ॥ वरमासाभ्यन्तरे मृत्युः काक
 मैथुन दर्शने ॥ ४९० ॥ दिवा वाप्यदिवा रात्रौ यः पश्येत्काकं मैथुनम् ॥ संनरो मृत्यु
 प्राप्नोति ह्यथवा स्थान नाशनम् ॥ ४९२ ॥ काकं घातयन्तं यद्वा विदधीता यवत्स
 रम् ॥ पितृ न्देवा न्द्विजान्मत्स्या गत्व हं वा मिवा दयेत् ॥ ४९३ ॥ जिनेन्द्रियो जितक्रो
 धस्तत्त्व धर्म परा दयाः ॥ तद्दोष प्राप्त ना र्था यश्चानि कर्म सत्ता रयेत् ॥ ४९४ ॥
 क्रपो लो वायसः पत्नी प्रारदो मूर्खि चेत्येतत् ॥ वयमासाभ्यन्तरे तस्य स्वाभिने वा
 मृतिस्तदा ॥ ४९५ ॥ अयकिंगला ॥ एहो परिग्रहहारि पिंगला यस्य रोदिति ॥ हानि
 स्तस्य गृहस्यैव न शुभा तस्य सा स्मृता ॥ ४९६ ॥ प्रान्नायां दिशि वृक्षे यं शुभे
 दु यदि पिंगला ॥ रौते भव्यं तु तत्रेति नाशुभं तत्र भाषितम् ॥ ४९७ ॥ एधिष्यां
 कीचि कीचां तिचि लिचीति जलोद्भवम् ॥ पण्डितं शुभकहेयं पिंगलाया वृथा

संक्षि विदुः ॥ ५७ ॥ अथोक्तकः ॥

महस्यो परिभाष माणोऽनुः रवाय स स्स्या त्वत्तु

३३

महस्यवेच ॥ महस्य नाप्राप्य च सवराणां त्सायं च राज्ञो हि गुणानुबंधी ॥ ५८ ॥ अ-
हं मह हारि चरत्युत्तु को ह्यनित्योऽयं इति रां प्रसह ॥ तस्मिन्मदे प्रो निशि मां-
सयुक्त स्तदोष नाप्राप्य वलिः मदेयः ॥ ५९ ॥ धूष प्राक् स्स्यात्सदा प्राप्ता रूषः
महत्तु प्राक् स्तादप्रा प्रवेदवेद्यः ॥ अन्ये प्राक् निर्दिता एव वेद्याः पूर्वार्थाः सु-
यर्थे भित्तस्य चोक्ताः ॥ ६० ॥ प्राप्ता यान्दिशि वृक्षेषु ग्रामादुरे च प्रादितः ॥ धूका-
स्या तत्तर्व लोका ना मृद्धि दृद्धि सुरा र्थकत् ॥ ६१ ॥ अथ सत्या रिह ज्ञानम् ॥ यस्य सु-
यर्थ स्वरोऽज खंधोऽप्रा हं व हे तदा ॥ सद्यो मृत्यु त्ततो न्युने न्युना ह मिति मासकं ॥
६२ ॥ एवं वाम स्वरे सौख्यं तथो न्नो भे मृतिः क्षणात् ॥ यस्य चन्द्रायते सूर्य्य अथ-
नृ स्सूर्या यते तदा ॥ ६३ ॥ अहे ह्यं त्रयं तस्य षण्मा साभ्यं तरे मृतिः ॥ निष्प्रभं
आ स्करं पश्ये न्मृयते दप्रा भिर्दिनैः ॥ ६४ ॥ जा गत्य प्रयति यः स्वप्नं सोऽपि वर्धन

जीवति ॥ न हि ते न कर्णं धीयं वा नाश्रयं रसो भुवम् ॥ ६३ ॥ मेदो वा मनस्येव
 रमा सा तस्य जीवति ॥ मणिर्ध्वं ललाटस्थं यदि हृत्स्थं न पश्यति ॥ ६६ ॥ यो हं गीधिं वि-
 ना हेतुः श्रौको वा हतिर्दीप्तिमान् ॥ कृशं गस्मूलं देहः स्यात्सरत्नस्य रवोऽपि वा-
 ६७ ॥ ततश्चासौ क्षणो वापि मासपटुं न जीवति ॥ भुवं विक्षोः पदं चैवास्त्यती मातृ सं-
 हलम् ॥ ६८ ॥ भस्मा लां चंद्रगंचिन्हमपश्यन्नैव जीवति ॥ कफो मज्जनि यस्या शु-
 पं कार्शो रं डिं पदं ॥ ६९ ॥ स्नातस्य प्रागुरु शुष्यं चूनं लिप्स्याच्च हृदि ॥ नो सुभुक्ता
 ध्वनिं धत्ते स्थूलदेहकशस्या ॥ ७० ॥ अथ संशयमुभयचिन्हं ॥ त्रिकृशोक्तः प्रकंप्यमानं
 दूले रागहीनता ॥ वाणी मग्नहास्यस्य तस्य मृत्यु रणो भवेत् ॥ ७१ ॥ अथ शुद्धज्वल-
 षणम् ॥ प्रफुल्लितवपुः कायो रोमांश्चीस्थिरदृग्गतः ॥ धैर्यो येन स्वमुत्साही विजयो
 सरणो भवेत् ॥ ७२ ॥ अथ क्षयापुरुषदर्शनं अकारं ललकलं च ॥ प्रातः पृथगतौ सूर्यौ रना-
 त्वा मृत्युश्चुरो नरः ॥ तिष्ठन्माना विधेर्दशे पश्येच्छायां निजां ततः ॥ ७३ ॥ इत्थं

विदुः ॥ ५७ ॥

अथ तथान्वितम् ॥ ततो द्वागत्वे परस्मै च्छाया पुरुष आत्मनः ॥ ५८ ॥

सत्यवेत्तव्यं वतं चेतसं मुखे प्रवेत मीक्षते ॥ यावदहं सुखं क्षेमं विजाय प्राप्नुया तदा ॥

॥ दृष्टे तस्मिन्मिहोर्हीने मास धद्वं न जीवति ॥ विकर्णे ह्यायनं चैकं व्यसे वै तत्र ना-

सद्वत् ॥ ५९ ॥ सरं भद्रदर्थं सप्त दशं मासान्वि हलके ॥ विपार्थे श्रीभूयुरस्के द्वौ व्यास-

आसं हि जीवति ॥ ६० ॥ द्विद्वेह दर्शने मृत्युः सद्य एव न संशयः ॥ मित्रनाशो विपार्थे च

बंधुनाशो विहलके ॥ ६१ ॥ आत्मनाशो विपार्थे स्यात्सर्वोभावे कुलं क्षयः ॥ दुर्मि-

हं क्षरणं देशे कर्तुरेव पण्डितुर्वे ॥ ६२ ॥ विद्वेर्भूषके रुद्धे मित्रे छिन्ने विघात नम् ॥

पीते रज्जोऽरुणे हानिः कृत्से मृत्युः प्रजायते ॥ ६३ ॥ अथ सप्त दर्शने कलम् ॥ आद्ये यास्ये नि-

श्वि स्वर्गो वर्धेण फल द्यो भवेत् ॥ द्वितीये मास पट्केन त्रिभिर्मर्मासैः सप्ततीयके ॥ ६४ ॥ आ-

तस्सद्य फलः स्वन्नः क्षात्वा सुप्या न्न वेन्नरः ॥ शेष चिंतोद्भवा व्यर्थानि वा चैव दिव्ये सि-

ता ॥ ६५ ॥ अथ शुभ फलदा स्वभाः ॥ सद्गजा चाक्षणा देवाः सिद्धि रं भवार्थं किं नरः ॥ गुरुः प्रवेत्ता

॥ ६६ ॥

॥ ६७ ॥

॥ ६८ ॥

संक्षिप्तस्वरनामी तेषां चैव धर्मान् शुभम् ॥ ८३ ॥ प्रासादगुरुधौलानां भवेतोस्तु भजवाञ्जिनाम् ॥ दर्शनं रोह-
 ३३३
 णं लाभः सिंहस्याणो हरणं तथा ॥ ८४ ॥ ध्वजं स्तनं सुवर्णं क्षिरालं रोष्यदधी निच ॥ यवगोधू-
 मसिद्धार्थाफलं दीपश्च कन्यका ॥ ८५ ॥ श्रीयंडाक्षतद्वीपस्वदर्पणः पुष्पितोद्गुमः ॥ ला-
 भेवादर्शने चैषां लाभस्तोत्थं भवेद्यथाः ॥ ८६ ॥ भोजनं रोदनं वीणावादनं नौ भरो हरणम्
 ॥ अगम्यागमनं विद्यालेपनं प्रालम्बीरितम् ॥ ८७ ॥ आरुढो यो हि जागर्तिसपुष्पं फलितं
 द्रुमम् ॥ दंष्ट्रः श्वेताहिनादंशे करे स्यात्स महाधनः ॥ ८८ ॥ रुधिरस्तानपाने च सप्यं दंष्ट्रोऽप्यु-
 तिर्निजः ॥ शय्याहर्म्यं प्रानं गानं ज्वलनं स्वप्निरपि कदा ॥ ८९ ॥ रक्तं भ्रातृजलैः स्नानं मरणं
 मांसमक्षणम् ॥ सुरायाः पयसः पानं प्रशस्तं पायसाशनम् ॥ ९० ॥ कदलीकल्पवृक्षाश्वती-
 र्धं गंगादिकं सरित् ॥ तोरणं भूषणं राज्यं स्वोन्नैस्त्वग्रामवेद्यनम् ॥ ९१ ॥ वैदवाद्यादिनिर्योगा-
 न्नोन्निस्तरणं तथा ॥ दंष्ट्रे वृश्चिक कीटानां तडागोद्यानदर्शनम् ॥ ९२ ॥ पीतं रक्तं फलं पुष्पं स्वप्ने प्राप्नोति यो
 नरः ॥ लभते सोऽपि स्वर्गं पदरागमणिं तथा ॥ ९३ ॥ जयो द्युते रणो वादे पुरुहूतध्वजे स एष ॥ आत्मनो वं ॥ ३३

नं श्रीर्विवहं रावमनुजमम् ॥ ९४ ॥ अभिविचकारो विप्रो वासुनधारणम् ॥ कुरुते म-
 हिषी व्याधी गोसिंही स्तन्यपानकम् ॥ ९५ ॥ स्वनाभौ तृणा वृक्षांश्च पुण्याणां मुह्यवसा-
 या ॥ भुवो भूमि धरस्यापि क्रमेणोक्षेपणोऽप्युभः ॥ ९६ ॥ मरिणसो वसरीषोऽप्याणां पाने वा-
 भोजिनीदले ॥ योऽश्नाति पाय संस्वने स राज्य मधि गच्छति ॥ ९७ ॥ गैर्लिङ्गीनां स्त-
 णो राजा पिता मित्रं च देवता ॥ यद्भूते सदसत्स्वने ततश्चेव प्रजायते ॥ ९८ ॥ त्व-
 लिंगं च देवता वा तद्या विधा ॥ खल्वेह ह्यप्रयच्छंति नराणां त्रिपुल्लं धनम् ॥ ९९ ॥ त्व-
 क्ता तत्रास्थि कर्पा संश्वेत सर्वं पुनर्ममम् ॥ सर्वं कृत्स्नमस हित्वा गोदेवा प्रव गज हित्वा नृ-
 ॥ १०० ॥ अथास्तु न स्वप्नाः ॥ तैलाभ्यक्तोऽद्यदि यवासा आरुढं महिषं रवम् ॥ उद्दं द्रुसं द-
 धं चास्याभ्यां गच्छन् जीवति ॥ १०१ ॥ पाकस्थाने वने उक्तं पुण्यां वै सति का मुहे ॥
 विकलां गोविशे त्वन्ने सोऽप्युभिविप्रयुज्यते ॥ १०२ ॥ उपद्रवं तियं स्वने प्रदं गिनो द्रं प्रि-
 णोऽपि वा ॥ वानरो वा वराहो वा भवेद्राज्य कुलांतकः ॥ १०३ ॥ जतुकोऽकुमसिं दूर-

स हि त वीयस्य मन्दिरम् ॥ पतान्तरं तत्त्वस्य गतिः ॥
 गान्धर्व्युत्तरा पुण्या हुमोद्गमः ॥ इव रोद्ध कपि सूर्याद्यै र्द्यनिं स्नेहस्य भक्षणम् ॥ १०५ ॥
 कलुषेणास्तुता मय्या कर्ह भै र्गो भये न च ॥ स्नेहेन वपुषो लेपः कर्ह भै वि नि मज्जन
 म् ॥ १०६ ॥ प्रातो दुरदं तहस्ता नो जिह्वा याभ्यां त्रयो स्तथा ॥ एते प्रो क तदाश्वना
 दृष्टा ह्यनि कर्ण भ्रमपि ॥ १०७ ॥ स्वप्ने सान्देश लनं गीतं क्रीडितं स्कोटितं तथा ॥ हृदि तं
 भूषितं स्तोतो वहन् नो रै रथो गुतम् ॥ १०८ ॥ सूर्येन्दुभ्यश्च ताराणां प्रातः स्वस्य चित्ता-
 पिवा ॥ रज्ज्वा खेदः शिरोभागे कां स्य चूर्णस्य धारणं ॥ १०९ ॥ प्रवेष्टो जननी गर्भं हु-
 दमेतद्विद्वद्गम् ॥ कारवीर मय्यो कंच लता पाशेन वंधनम् ॥ ११० ॥ कृत्वां वरधरा-
 योषा लिंगानं मृत्यु कारणम् ॥ भारुहा शुष्यता न्दृष्टान्यो विचिंत्य निजं वधुः ॥ १११ ॥
 भूषयत्यरुणैः पुष्पै रस्मोऽपि प्राणै र्विपुष्यते ॥ धृतराजं वराश्लक्ष्यं हृत्प्राप्तोति मान-
 वः ॥ ११२ ॥ द्रुस्तु भूमि त मात्मानं व्याप्तं धूमेन वेक्षते ॥ भस्माज्ज्य लोहं लाभं च सच ल-

हस्याविद्युज्यते ॥ ११३ ॥ क्लोह कुक्कुट माज्जगि गोधावभुभुजंगमाः ॥ जम्बुका वहिष्य-
 दंशाभ्य हयास्त्वन्नेन शोभनाः ॥ ११४ ॥ रत्न इत्याधुधोपानत शय्या भूषाभ्य द्योधि-
 ताम् ॥ सवस्त्रादिप्रिय वस्त्रना महाशोऽर्घनाशकः ॥ ११५ ॥ विवाहोत्सवयो यशो-
 कै भ्रंशेवान् रवके शयोः ॥ कशपावयवानां तुक्षेदने स्वन्ननाशकः ॥ ११६ ॥ वृषजं-
 प्रम ध्रुके शानां नैवं रुक् रवज्जनं तथा ॥ कृप गार्तदरिभ्यां तविवरेद्यु न शोभनम् ॥
 ११७ ॥ कपोतयेन गृध्राद्या ऋक्ष कौशिक वायशाः ॥ प्रदगाल प्राशक स्वानो हृष्टाः
 स्वन्नेन शोभनाः ॥ ११८ ॥ प्राक्कुली कशरान्नानां गुड दूयादि भक्षणात् ॥ गोमूत्रं
 चोस्यानीयं स्वन्ने पीतं न शोभनम् ॥ ११९ ॥ रत्ने पुरुष मूर्त्ते वा श्रवन्सुदुः सन्नामुयात्
 रत्न हृष्टानि वासांसि पुण्याणि च विभर्तियः ॥ १२० ॥ पितृकार्यं प्रकुर्वीणो मृचते स
 न संशयः ॥ भूतभेतपि श्लाघाद्यैः प्रवपचैस्सह संगतः ॥ १२१ ॥ आहूतो वा धर्तै-
 र्योभ्यां स्वल्पाहै विप्रते नुसः ॥ असूर्य्यं हिवसें रात्रिं विचं जंगत तारकाम् ॥ १२२ ॥ व्युप-

संस्थितो को लज्जां पश्येत्स्वप्ने सोऽपि विनश्यति ॥ सीसपि न लकस्तीरं कांसताम्राय संवपुः ॥

३२३

१२३ ॥ प्रुक् दक्षीणधर्मं शिलपी दृष्टा स्वेतेन शोभनाः ॥ प्रासा दस्तनभूर्मीद्रधिरव
रणं ध्वजस्य च ॥ १२४ ॥ पतनं प्राक् चापस्य नरादृस्य विनाश कृत ॥ तारको ला
हलाक्षी न निंदा क्षोणादि संभवः ॥ १२५ ॥ विद्या राज्ञ्यभयं दृष्टि प्रदं गी के प्रादि वि
द्वान् ॥ अथ तन्न फलद्वयवत्या ॥ ये दृष्टा स्वप्नति स्वप्नाः स्वस्यैव फलदाभ्यते ॥ १२६ ॥
परं प्रति च ते तस्य फलदा किंचिदात्मनि ॥ अथ दृष्ट स्वप्नदर्शनदीप प्रान्तिः ॥ दृष्टे त्वा लोक
ते स्वप्ने निवेद्यो ब्राह्मणाय तत् ॥ आप्राणिभिस्तोयितो विभैः पुनः सुय्यान्नेरे प्रवरः ॥ १२८ ॥
न द्रव्यं पुन स्वप्नं संस्तु या त्पुण्य वारिभिः ॥ मृत्युञ्जय जपे होमः प्रांतिस्त्व सत्यय ना
दिकम् ॥ १२९ ॥ सेवास्वत्य भवां प्रातर्दानं स्वर्गादि प्रकृति च ॥ अवरणम्भारतादीनां स्व
प्नदीपप्रशान्तये ॥ १३० ॥ अथोत्पानाः ॥ उत्पानास्त्रिविधा द्वेयादि विभो मां तरिक्ष ज्ञाः ॥ भेषु
दिव्या स्तथा दक्षध्वजा दावन्तरिक्ष ज्ञाः ॥ १३१ ॥ भूर्भो भौमाः क्रमादुग्रमय्य मात्व फ-

संस्थितप्रदाः ॥ अथोत्पत्तानां वंशः ॥ भूमिकंठो दिष्टा दाहो निघातो धूलि वयर्णि ॥ उत्क्रापा-

३५

तस्तरुच्छेदो न भसो दृष्टि रस्य नाम ॥ १३२ ॥ अंधकारो दिवा विद्युत्प्रातो ऽथर्तु विपर्य-

यः ॥ प्रकृति प्रसवो जन्तो रक्षीत्येव विपर्ययः ॥ १३३ ॥ ग्रहाणां वायु तिष्ठुर्दृष्टव्यका-

लेयत्रे जायते ॥ वर्षा कालं दिवा विवोरक्षीत्योऽपरि मंडलम् ॥ १३४ ॥ आकाशमसुस्य

लाईत्वं ह्यग्रसं ग्रहाणां दृश्यम् ॥ बालस्थी हि जवय्यर्णि वधः पीडा जनस्य च ॥ १३५ ॥ मा-

दादस्य च देवस्य ध्वंसः पातो ध्वजस्य च ॥ ग्रहाः वक्राति चारस्थाः सर्वे वास्वर्षिणा खगाः

१३६ ॥ सर्वे ऽप्येव कर्षागाः खेटाः एकर्षे ऽर्कि वहस्यती ॥ शुक्ल पक्षे भूगो रक्तो द्योवा-

के तु दर्शने ॥ १३७ ॥ सुप्रालं रवग र्षिस्त्वं द्यादि चर्द्धि दर्शनम् ॥ चंद्राभ्यामन्यु-

द्भवो ऽकस्मात् जले धूमादिकं भवेत् ॥ १३८ ॥ उच्छ्रव र्णाघ रद्यादि चलनं स्फोटनं तथा

॥ अतिमायाः प्रकंपा वा हसनं रोदनं तथा ॥ १३९ ॥ भुवो विवर द्रव्या द्या उत्पत्ता ता स्त्वप-

रे ऽपि च ॥ ग्रंथां नरा च्छते ज्ञेयाः फलमेवोद्भवी म्यथ ॥ १४० ॥ अथोत्पत्तज्ज्ञानाय चतुर्विध-

३५

नण्डलानि ॥ कृत्तिकाभरणीपुष्यमघाश्रमाविश्रावित्रका ॥ पूर्वाफाल्गुणिकेतानिभानि
 सप्ताग्निमंडलम् ॥ मूलाश्र्लेषाश्रतामोत्योतराभाद्रपदस्ताथा ॥ पूर्वाषाढाशिक्षितानि
 सप्तवारुणमंडलम् ॥ १४१ ॥ शुक्रमौफाथिनीहस्तंजितयंमृगश्रीर्षिकं ॥ वायुमंडल
 सञ्ज्ञानिभानि सप्तस्वराग्नित्व ॥ १४२ ॥ अभिजिच्चोतरास्वाढानुराधाश्रवणाह-
 यम् ॥ ज्येष्ठाचरोहिणीभानि सप्तचैन्द्रस्यमंडलम् ॥ १४३ ॥ भूकपादिमहास्यांतज्या-
 मतेयमंडले ॥ ततस्त्वभाक्जम्बूजंतुदेशचपीडयेत् ॥ १४४ ॥ द्विजिभण्डलकेतव-
 ततस्स्थाननिवासिनाम् ॥ छिन्नेखंडफलंज्ञातिदुरेनासिफलंस्विरम् ॥ १४५ ॥ द्वे-
 तेभव्यचपीतेतुदृष्टिनीलशरीरजः ॥ कसेभूपक्षयोधुमेनीहारपरिवभवेत् ॥ १४६
 प्राविदकालविनाय्यत्रपरिधिष्येत्तदास्विरम् ॥ तस्मिन्कालंतुदृष्टिःस्यात्परिधौ-
 रुस्तताडिते ॥ १४७ ॥ अकालेफलपुष्याणामुदयेधान्यनाशानम् ॥ जलाईत्वेस्थलेक-
 र्द्विर्भवेदतीपरिकीर्तिता ॥ १४८ ॥ स्त्रीवयेचातिदुर्भिक्षविप्रकालवधेऽपितत् ॥ देवध्वं-

संक्षिप्तं च देशस्य राजध्वंसः प्रजायते ॥ १४३ ॥ सर्वग्रासे ग्रहे सर्ववस्तूनां च महर्घता ॥ १४४ ॥
 ३४३ भिक्षं कुर्वते खेताभ्यो माघादङ्गाभिः नः ॥ १४५ ॥ अतीचारगताः सर्वे खर्हा खोच्चगा-
 ता भवति ॥ ज्ञेया भव्य फलाग्नेयक एषि स्या देशनाशकाः ॥ १४६ ॥ स्यातामस्तोदयो
 शुक्ले पक्षे वैशाखे वस्य च ॥ राजयुद्धं तथा घोरं दृष्टिः स्यात् नृ निरंतरं ॥ १४७ ॥ जीवा क-
 पुंजयो यो गेहभिर्क्षिं विग्रहस्तथा ॥ संग्रामश्चातिहुर्भिक्षं जायते मुशालोदये ॥ १४८ ॥
 ॥ अथ केतवः ॥ मुशाला कृति धूमाभा दीर्घ पुच्छनिभा श्वये ॥ तथा श्वेतशिरवा कारा-
 विग्रहो तो निभा श्वये ॥ १४९ ॥ द्रव्याघाः केतवः सर्वे राष्ट्रभंग कारमाः ॥ धू-
 म केतुदये मृत्युर्जायते दृष्टिर्वापते ॥ १५० ॥ शिरवाः श्रोतो निभाः केचिच्छेभ-
 नाः परिकीर्तिताः ॥ शितः खिन्नाः इत्यर्को दीर्घः शीघ्रोऽतीव शुभप्रदः ॥ १५१ ॥
 ॥ वह्निर्भीमश्चिरक्ताभो हस्तवर्णो मृतिप्रदः ॥ शक्रध्वजसमो नेष्टः धूम्रवर्णोऽपि-
 तद्विधः ॥ १५२ ॥ नेष्टो द्वित्रिचतुःशृङ्गा दुर्यन्तिः कथिता बुधैः ॥ रक्तपंक्तिनिभे स्व-

तं वर्णे प्रागपरोदये ॥ १५८ ॥ नृपनाशस्तथैव शान्त्या नैला लभो महर्षिता ॥ नाशो ह्यल्पवि-
 तस्य प्रञ्चत्योऽद्यो तारका प्रभः ॥ १५९ ॥ वाक्पथसदृशो धाम्ना दुःखदे भूमिचारिणाम् ॥
 यावद्विवसमुत्पलः समुदेति न भस्वले ॥ १६० ॥ तावन्मासं फलन्यति मासैर्वर्षाणि संव-
 दित ॥ अयान्योत्पल फलानि ॥ आरण्यपशवो ग्रामे चेद्विश्रान्ते निजच्छ्रया ॥ कुर्वन्ति च मृ-
 दं मृत्पशुसृक्की च मृहं विश्रान् ॥ १६१ ॥ चल्मीकं क्षौद्रजालं वायस्य सख निजायते
 ॥ तदा गोहपतेर्नृशः कपोते वायुहं गते ॥ १६२ ॥ ह्यादिचंद्रार्कविवे स्याद्भोगभी-
 तीरणो मृतिः ॥ गृहाभावे फलं नेष्टं ह्यादिजीवे तु शोभनम् ॥ १६३ ॥ पराणी विवरोद-
 शे नृपनाशो रियो र्भयम् ॥ त्रयोदश दिनः पक्षो यास्मिन्नव्दे मर्वतदा ॥ १६४ ॥ प्रजाना-
 म्प्रोऽप्यदुर्भिक्षं तथा भूमिभुजां क्षयः ॥ अय निर्वाणस्तपस्तपस्तपस्तपस्तपस्तपस्तपस्तपस्तपस्तप-
 तपस्तनं भुवि ॥ पक्षिदीप्तेऽरण्ये नेष्टं नृपहाभारकोरोदये ॥ १६५ ॥ निर्धाति प्रचंडशब्दोऽ-
 धाच्छन्तो नाशयेद्दिशम् ॥ घोरचौरद्विजान्यै प्रयान्न्याघातैः क्रमाद्विदा ॥ १६६ ॥

वा न्य ज्ञानार्थो हरे प्रथया क्रमात् ॥ यातिन्या धान्य पेया च स्तवै रमतु
 रंग भान् ॥ १६८ ॥ अथो ज्ञानार्थो हरे प्रथया क्रमात् ॥ पराणी प्राण संवाह धोर रात्रा स निर्वर्तना ॥
 ततस्तद्वा विबुज्ज्वलती दीर्घवक्षसा ॥ १७० ॥ अत्युच्चमिमांसा तद्विहस्ता च
 सपत्रगा ॥ तिर्यग्गर्ह्यगता प्रवेता रक्त लम्बी तु तारका ॥ १७१ ॥ ऊका त्रुवि विधाका
 रा क्लृप्तमुच्छति सावगा ॥ अथ दिक्क फलम् ॥ दिग्दाहः पीत चर्षा अद्भुमि पालं निहं-
 तितः ॥ अथि वणो निजं देवं चरणि नृतरतः क्रमात् ॥ १७२ ॥ भूयो इत्य प्राम तां क्यार्थ
 द हस्तो देशां तु निर्द्विजम् ॥ माच्या भूमि भुजा न्हन्या देशान्यां विदिषाः क्रमात् ॥
 १७३ ॥ वैश्वान् शिल्प विद्वो रान् तुरगान् क्रमवत्त्वय ॥ निशि स्वर्षा निभः सव्य-
 वायो रवे विभस्ते शुभः ॥ १७४ ॥ अथ भूकं प फलम् ॥ भूकं पोषा यतो वणान् क्रमाद्वन्या दि-
 वा निशि ॥ बाधु मंडल जो भूष प्रस्थां तु भयधं तथा ॥ १७५ ॥ एषा न्न भुदकं वह्नि मंडल
 स्थो निहंति य ॥ चन्द्र भराडल यो र्भूयो स्वधा गुर्जर देश कान् ॥ १७६ ॥ भूपालो अवीन-

॥ १७७ ॥ अथ रत्नावायः ॥ १७७ ॥ अथ रत्नावायः ॥ १७७ ॥ अथ रत्नावायः ॥ १७७ ॥

३४५

न्युपभीस्तथा ॥ भयंतदिशिभूभाभेतस्मिन्कुक्षेरुजांभयम् ॥ १७८ ॥ रजंस्मृर्योद-
ये व्योमच्छादयेद्विज्यहंयदा ॥ तदा रोगाः प्रभूतास्थुर्निर्गमयानितुभूषहन् ॥ १७९ ॥
॥ नित्यं रात्रिद्वयं नेत्रं क्षुब्धं त्रिचतुर्धनम् ॥ पञ्चाहं चेद्भयं घोरं मृते कालं च शेषिण-
म् ॥ १८० ॥ अथ गंधर्वनगरं तत्फलं च ॥ गंधर्वनगरं हंति वरुणश्चेतादिवरुकिम् ॥ क-
मात्तुर्विद्वोभूपा मातृ सैन्यपुरोहिताम् ॥ १८१ ॥ सध्वजं निर्द्वनं कुर्व्यादायुधानि-
निभं भयम् ॥ अथैवाभूतानां फलपाकसमयः ॥ षड्विम्बसिर्भुवः कंठो जायते फ-
लमुकवत् ॥ १८२ ॥ दिग्दाहे विकृतौ सूर्यौ केतु निघाति यो रश्मिभिः ॥ रजोऽभिवर्षे
सद्यः उत्पत्तिः न्यूनहायनात् ॥ १८३ ॥ अथ दृष्टिविकृतिस्तत्फलम् ॥ अकाले रुक्मपा-
तिंश्च सप्ताहं व्यभक्तेऽपि च ॥ वर्षेणो वारजो वृष्टौ नैत्रवं मासादिभिर्मृतिः ॥ १८४ ॥
भयमंगारकैर्हान्यैः फलाद्यैस्स्यान्नसंशयः ॥ देशनाशः सुकोक्षां वृत्तवृष्टौ-

प्रजायते ॥ १८५ ॥ दीने सूर्यो प्रतीपं स्यात् तच्छादिने भीतिर्हातः ॥ दंडं चोपेति वृष्टिः स्यात् ॥
 ह्यो भिन्नचराणां शुदीयते ॥ १८६ ॥ अथ पश्चिमगार्हपत्ये कति सप्तफलमपि ॥ ग्रामाराया रत्नशाली-
 रस्थलजायु निष्पाचः ॥ प्राणिनो व्यत्ययं जानांस्त्वचक्रं पीडयं त्यमी ॥ १८७ ॥ लेभ्या
 कालेऽथ दीप्तायादिशो मार्गे पतत्रिणाः ॥ क्रोशंति जंबुकादीनां संघाद्वारं च तदिष्टि-
 ॥ १८८ ॥ विहंगा विधति व्यस्तचक्रायां तद्वत्सतः ॥ कुङ्कुटोऽस्ते च गोर्नुक्तं हेमन्ते
 रौति कोकिलः ॥ १८९ ॥ रत्नानोऽथवा स्वैरं प्रकीर्तितपरस्परम् ॥ द्रव्यादि विवृत्तौ
 भवे पीडा भवति भूयसी ॥ १९० ॥ मार्गे वृधंतु महिषी भ्रातरे वडवादिवा ॥ सिंहगात्रः
 प्रसूयते स्वाभिनी मृत्युदायिकाः ॥ १९१ ॥ अथान्येऽप्यशुभोत्पत्ताः ॥ अस्थि क्षिपति गेहे भ्या
 सन्मृत्वीऽस्ते चोदति ॥ यस्य तद्देहनाशः स्यात् परमासाभ्यन्तरे तदा ॥ १९२ ॥ ऐति-
 मूर्यो द्ये श्वाचे द्वाभांते सूर्यदिङ्मुखः ॥ भूपनाशस्तदा चास्ते कपीशानां शमाञ्जयः
 ॥ १९३ ॥ संभट्टारनिपातश्चेद्भूतोत्पतिर्विनाशिनः ॥ युद्धानेवातकास्त्वेरं कायलो-

वः परस्परम् ॥ १८६ ॥ तदाभूय भयङ्गोरं विज्ञेयं दीर्घदक्षिणिः ॥ अंगना वालका मन्ना-
 द्युते यन्त्वभावतः ॥ १८७ ॥ सत्वं तज्जायते तस्माद्गूढा चैयं सरस्वती ॥ अथोत्पन्नदोषाधवा-
 दः ॥ स्वस्व श्रान्त्या महोत्पाता विनश्यति च सर्वश्रः ॥ सहाहाभ्यन्तरे वृक्ष्यां धुभादै-
 वनहुः २ व दः ॥ १८८ ॥ अथोत्पन्नानामुपहारः शान्तिश्च ॥ धूमकेतुर्मही कंयोदिगदाहो धूलि-
 वयणम् ॥ भुवो गार्वाश्च निघोत्पन्नानामुपहारः ॥ १८९ ॥ यस्मिन्नेषो प्रजायन्ते म-
 होत्पाता महाभयाः ॥ प्रजापीडाभवेत्तत्र विनाशः पृथिवी पते ॥ १९० ॥ तदा श्रान्ति-
 विधातव्या देशे ग्रामे पुरेऽतिवर्तते ॥ श्रान्त्या दोषा विनश्यति त्वन्यथा दोषमहुतम् ॥
 इत्युत्पाताः ॥ अथ महर्षिर्काण्डम् ॥ अर्वादेशे वर्णराजादिविचारः ॥ चैत्रमासि श्रिते पक्षेऽर्कदिश्ये प्र-
 तिपत्तिद्यौ ॥ यो वासरस्स राजा स्यात् तस्मिन् चैव ततः फलम् ॥ १९१ ॥ मेवेऽर्के स्वप्न-
 वे श्लेषो चारो मंत्री सकथ्यते ॥ चापे धान्यपतिर्द्वेयः ॥ १९२ ॥ जलदाधिपः ॥ १९३ ॥
 रसाधिपस्तुलायां स्यात्कर्केण स्य पतिस्तथा ॥ मकरे स्वर्गराजादिनी रसे श्लेषो वर्धतेऽस्तुतः

नि ॥ २०१ ॥ अथ विशेषकायनयनम् ॥ प्रागेति मे हते श्रोत्रे लब्धं स्थाप्यं पृथक् कृत्वा दत्तम् ॥ श्रो-
 त्रं हि द्विजं श्रोत्रैर्युक्तं चर्यास्याच्च ततः पुनः ॥ २०२ ॥ लब्धं ॥ प्राकं प्रकल्प्यैव कर्तव्या प्रोक्तं वदितं
 वा ॥ तस्मान्निद्रा तथा लस्य सुषुप्तः प्रातिरेव च ॥ २०३ ॥ क्रोधो दंभोऽद्यभिन्नत्वमुत्सवः
 पापप्रणयकैः ॥ अथ प्रकाशान्तरेण धुधाद्यानयनम् ॥ प्रागेवेदं हते श्रोत्रे भर्तुं लब्धं च पूर्वव-
 त् ॥ श्रोत्रे च द्विगुणे सैकं क्षुधा तस्या सुषुप्ति का ॥ २०४ ॥ आलस्यमुद्यमः प्रातिः क्रोधो
 लोभोऽप्यवेदकः ॥ दंभोऽद्यमैद्युनं चोर्व्यं रसनिःपतिरेव च ॥ २०५ ॥ फलनिःपतिरुत्सा-
 हः पुण्यं पापं तथैव च ॥ सर्वनिःपतिरित्येवं संपत्तिश्च यथा क्रमात् ॥ २०६ ॥ अथोपलानय-
 नम् ॥ प्राकं श्वाष्टगुणः रवैर्दंभको लब्धं च पूर्ववत् ॥ द्विजं श्रोत्रं त्रिभिर्व्युक्तं भुजत्वं च र-
 सोद्भवः ॥ २०७ ॥ कलोत्पत्तिस्तथा लब्धाधिरोगनाशस्तथैव च ॥ आचारश्चाप्यनाचारोऽप्य-
 तिर्जन्म ततः परम् ॥ २०८ ॥ चोरो पशुमनं वन्दे भीतिरग्निः शम्भुः क्रमात् ॥ अथ प्रालम्भाद्यानय-
 नम् ॥ प्रागेति मे हते नंदे हर्षं लब्धं स्थाप्यं तदुक्तवत् ॥ द्विजं श्रोत्रं त्रिभिर्व्युक्तं प्रालम्भो मूलवत्

३ भि स्तथा ॥ देविकं पीतं ताम्रं च स्वचक्रं परचक्रकम् ॥ २०६ ॥ अथ प्रकारांतराण्यलंभार्थनयनम् ॥

३४६ शैलघ्नो नवहृच्छाकः श्रेष्ठद्विभं युतं त्रिभिः ॥ शालभो मूषको दैवं पीतं ताम्रं स्वचक्रकं

म् ॥ २०७ ॥ परचक्रागमश्चैव क्रमादिवं च पूर्ववत् ॥ अथोद्दिष्टादिप्राप्त्या नयनम् ॥ प्राक्केवारी

नगैरंध्रेरीशैर्निम्ने पृथक् पृथक् ॥ सप्तभक्ता च श्रेष्ठयत् द्विभं पंचयुतं क्रमात् ॥ उद्भि-

जः ष्वेदजश्चैव जरायुप्रभवो हुजः ॥ २१० ॥ अथ युगानां प्रमाणात् ॥ द्वात्रिंशति सहस्रेभ्यश्च

युतं लक्षचतुष्टयं ॥ प्रमाणां कलिचर्माणां प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः ॥ २११ ॥ युगानां कृत

मुख्यानां क्रमान्मानं प्रजायते ॥ कलिर्मनं क्रमान्निभं चतुस्त्रिंशतिभिस्तथा ॥ २१२

कृतमानं ११२८००० त्रेतायाः १२८६००० द्वापरमानं ८६४००० कलिमानं ६३२००० ॥

अथ गतकलिभान्तरम् ॥ स्वगा शैलेन्दुरा मादौ प्राक् केऽव्हास्ते कलेर्गताः ॥ ते विर्हीनो क-

लेर्मनं श्रेष्ठे श्रेष्ठ कलेर्मिति ॥ २१३ ॥ अथ भर्मानयनम् ॥ स्वाभ्याभ्यां केभ्यश्च वेदेभ्य-

कलि श्रेष्ठस्समायुतः ६ कलिमानेन संभक्ताद्यस्त्रिभ्यश्चर्मायवसः ॥ २१४ ॥ प्राक्कोर्दे च

लि युतं जीव राग्निभिस्तद्दुर्गेऽष्टके ॥ लब्धं पुरातन न्यूना विप्रतिः पाप भुच्यते ॥ २१५ ॥
 १० जाय व्यपान्नपार्थ भुवाकाः ॥ रस ईस्तिथ्यो १५ गजा ट प्रश्ने ल चंद्रा १७ नंदे रव १८ स्तथा ॥
 स्व गा २१ दिशः १० क्रमात् द्वेयार व्यादीनां भुवाद्भे ॥ २१६ ॥ निज राग्नि युगे वर्ष स्वाभिनी-
 भवयोग के ॥ निमि वाण युते भक्ते तिथि भि प्रेष्य संमि ते ॥ २१७ ॥ आया स्सुखि गुणे लब्ध-
 प्र एते तिथि मि हेते ॥ श्रेये व्ययोः क्रमात्स्व स्य राग्निनां कथिता वृथैः ॥ २१८ ॥ अथ प्रकास्-
 भिस्तज्ञानम् ॥ एके नि मेहेते वारोः शैले भक्तेऽथ श्रेय के ॥ क्रमान्मध्यं सुभिस्तं च दुर्भि-
 स्तं च सुभिस्तकम् ॥ २१९ ॥ महर्धं समता द्वेयार्थैक तो रैर वं नु रवे ॥ अथ मं वत्सरात्सु भिस्तदि-
 ज्ञानम् ॥ निमि संवत्सरे वृत्ते शरैर्भक्तेऽथ सज्ञाभिः ॥ चतुर्द्वि नि मि ते श्रेये सुभिस्तं विपुलं
 भवेत् ॥ २२० ॥ निमि व के च दुर्भिस्तं वट् भू संख्ये च मध्यमम् ॥ धूम्ये तु रैर वं द्वेयं फलं
 वर्षे वृथैः सदा ॥ २२१ ॥ अथा पः प्रकारः ॥ द्विप्र स्तं वत्सरो राभे हेतो भक्तो न गौ स्तथा ॥ श्रेये-
 वाणा भिने युगे सुभिस्तं हायनं भवेत् ॥ २२२ ॥ वेद चंद्र भिने द्वेयं दुर्भिस्तं रवे तु रैर वम् ॥ २२३ ॥

सकि सा नलमिने मध्यमै तदर्थ फलं बुधैः ॥ २२४ ॥ अथ राजा दीनां वर्धे संक्षेपाफलम् ॥ राजा मात्य-

३५५ नृपसीनां वच्मि संक्षेपतः फलम् ॥ गुरुशुक्रादयोऽभीष्टाः संति चेज्जनसौख्यदाः ॥ २२५ ॥

मृधिसं प्रोभना दृष्टिर्देष्टास्वास्थ्यं प्रकुर्वते ॥ यानि शैभौ प्रकुर्वते दुर्भिक्षं विग्रहं भयम् ॥

२२६ ॥ अल्पसौरव्यप्रदः सौम्यस्त्वल्पदुःखप्रदोऽरविः ॥ फलं सविस्तरं चैवां विज्ञेयं संहि-

नादियु ॥ २२७ ॥ अथ दीपमालायां नद्योगाफलम् ॥ यदि भवति नद्या चित्कार्त्तिके नष्टचंद्रे यानि-

रविपूजां वारं स्वाति चायुष्मयोगे ॥ गगनचरपशूनां जंगमस्या वराणां नृपतिजनवि-

नाशो राज्यभंगस्तु चोक्तः ॥ २२८ ॥ अथापरेणपि ॥ दर्शे चायुष्मतो स्वातौ पापाहेमासिका-

क्षिके ॥ प्रदेशे चैतज्जनापीडा राजबुद्धाद्युपद्रवाः ॥ २२९ ॥ अथ ज्येष्ठश्रुतिपदादियोगः ॥ ज्ये-

ष्ठे शुक्लतिथावाद्ये चन्द्रे ज्येष्ठगुवासरे ॥ सुमिक्षं प्रोभना दृष्टिर्दुर्भिक्षं पापवासरे ॥

२३० ॥ अथाषाढद्वितीयानवमीयोगः ॥ आषाढे शुक्लपक्षे च द्वितीया नवमी दिने ॥ चन्द्रे

ज्येष्ठगुवारे स्थात्सु दृष्टिश्च समर्चना ॥ २३१ ॥ बुधे साम्यं रवौ तापः कुजे दृष्टिर्न जायते ॥

प्राणिवारे प्रजा पीडा दुर्भिक्षं रोषं तदा ॥ २३२ ॥ अथ प्राणिचारफलम् ॥ गुरुर्जरेऽपि प्राणी-
 पीडा प्रभा सा दुदयो दृष्टे ॥ मरुस्थले च युगमेक्षं कर्क काशमीरमंडले ॥ २३३ ॥ प्राक्क म-
 स्थे च सिंहर्क्षे कन्यायां मालवे तथा ॥ तुलादित्रिषु धिर्व्यां च दुर्भिक्षं जनपीडनम् ॥
 ॥ २३४ ॥ सुभिक्षं च मृगे कुंभे मीने सर्वं प्रजा क्षयः ॥ अथ कूर्मचक्रम् ॥ कूर्मचक्रे प्राणिर्म-
 ध्ये ततः प्राच्यादिषु क्रमान् ॥ २३५ ॥ नाशयेद्भक्ततोद्रेषान् कृत्तिकाद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥
 निजाधिष्ठितसैर्हृषानं तर्वेदिमुखाः स्तनः ॥ २३६ ॥ मागधाद्यान् कलिं गादीनां धंति कमु-
 खां स्तथा ॥ ततो कोकन पीडा दीन् सिंहुसौराष्ट्रकादिकान् ॥ २३७ ॥ पौलिनंदचीनका-
 द्यांश्च कुरुकाशमीरमत्स्यकान् ॥ खलवाल्हीकपातांश्च नवखंडानि भौस्तथा ॥ २३८ ॥
 दृष्ट्या न्याधिष्ठिता देषा दीष्टान्यां यमदिगा तान् ॥ अथ ग्रहचारवर्णान्महर्षादिः ॥ मेवे गुरो-
 सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च सुखी नरः ॥ दृष्टे गुरोखल्यदृष्टिः प्रजा पीडा च विग्रहः ॥ २३९ ॥ अना-
 दृष्टिः प्रजानाशो रौरवं मिथुने गुरो ॥ कर्के गुरो महादृष्टिः प्लूत्रभंगो महर्षिता ॥ २४० ॥

कसि सिंहे गुरौ सुभिषं च सुहृदिश्च प्रजासुखं ॥ कन्या गुरौ रोगपीडा दुर्भिषं स्वल्पजन्म च ॥

२४२ ॥ तुले गुरौ स्वल्प प्राख्यं बहु क्षीं प्रजायते - अलो जीवि च दुर्भिषं राजं दीरराणा

इयम् ॥ २४३ ॥ चापे गुरौ सुभा वृष्टिः शुभं प्राख्यं सुखी जनः ॥ दुर्भिषं भर्करं जीवि राजा दु-

हं पशु शयम् ॥ २४४ ॥ कुंभे गुरौ सुभिषं च धातु मूलं महर्षता ॥ दुर्भिषं दक्षिणे दे-

शे नान्य देशे भवे गुरौ ॥ २४५ ॥ अथाषाढी पूर्णिमा विचारः ॥ अथाषाढी पूर्णिमायां च वाय-

व्ये यदि मारुतः ॥ मशका मूषका कीटा जायन्ते शूलभा स्तथा ॥ २४६ ॥ अथाषाढी पूर्णि-

मायां चेद निलो वाति नेत्रयते ॥ अना वृष्टि र्धान्य नाशो जलं कूपेन हृष्यते ॥ २४७ ॥ अ-

षाढी पूर्णिमायां स्याद्भूतैर यदि मारुतः ॥ धर्मं प्रीला स्तथा लोका धनं धान्यं ग्रहे ग्रहे ॥

२४८ ॥ अथाषाढी पूर्णिमायां चेदशाने यदि मारुतः ॥ सुखिनो हि नदा लोका गीतं वाद्यम-

होत्सवैः ॥ २४९ ॥ अथाषाढी पूर्णिमायां चेदशाने यदि मारुतः ॥ सुखिनो हि नदा लोका गीतं वाद्यम-

सुभिषं जायते सदा ॥ २५० ॥ अथाषाढी पूर्णिमायां चेदशाने यदि मारुतः ॥ सुखिनो हि नदा लोका गीतं वाद्यम-

प्रस्य ध्वंसं प्रकृत्या दृदिदह नदिप्रो मन्ददृष्टिर्भवेत् ॥ नैऋत्या मन्त्रनाशो वरुणा व-
 ३५६ द्रुजलं वायुना वायुकोपः को वेर्यो च भवति वसुमती तद्दृष्टिप्रणन कोरो ॥ २५० ॥ सर्वमा-
 सेष्टिर्मिमाया भूमि कंपो यदा भवेत् ॥ उक्ता तारा वज्रपातः परिधिः शशि सूर्ययोः ॥
 २५१ ॥ भूख केतुः शक्र चापं ग्रहाणं बहुधा तथा ॥ तदा सकल वस्तुना ज्ञायते च महर्षि-
 ता ॥ २५२ ॥ अथ प्रतिमासे दर्पकलम् ॥ शुभ वारान्विते दर्शे सुभिस्त्रिं च प्रजा सुखम् ॥ पापवा-
 रान्विते दुःखं तदा भान्य महर्षिता ॥ २५३ ॥ रावि वारेण संयुक्ता यदा स्या तस्यैष ज्येष्ठयोः ॥
 अमा वा स्या तदा षड्यो रं ह मुं हा च जायते ॥ २५४ ॥ चैत्रस्य शुक्ल पंचम्यां पूर्वै वा युद्धना गमः ॥
 भाद्रि गुणत्रयं मोल्यं प्रस्या ना ज्ञायते तदा ॥ २५५ ॥ ज्येष्ठस्य शुक्ल पंचम्यां दृष्टिः पश्चिम सा-
 तः ॥ तदा चतुर्गुणं मोल्यं भान्यानां कार्त्तिके भवेत् ॥ २५६ ॥ आवणे शुक्ल पंचम्यां दृष्टिर्वि-
 तो दिनद्वयम् ॥ दक्षिणो पश्चिमे ज्येष्ठं दुर्भिस्त्रिं भान्यसंस्थः २५७ ॥ अथ ग्रह चारवसा त्सर्व वस्तुनां म-
 हर्षता ज्ञानम् ॥ यदि तिष्ठति भौमस्य क्षेत्रे कोऽपि ग्रहस्तदा ॥ २५८ ॥ घणमासं तु य भान्यानां

जायते च महर्घता ॥ २४९ ॥ शुक्रक्षेत्रे कुजे मासं द्वयं सर्वमहर्घता ॥ चंद्रे नदिन नाथे च स-

र्वरे गोऽशुभं तदा ॥ २५० ॥ ग्रहो राहो सर्वधान्यमहर्घराजविग्रहः ॥ शुक्रक्षेत्रे च चंद्रे च-

चंद्रे क्षेत्रे भूगोऽस्तुते ॥ २५१ ॥ पायंडानां भवेद्द्विर्धान्यानां च महर्घता ॥ सविक्षेत्रे भूगोऽशुत्रे प-

श्वनां च महर्घता ॥ २५२ ॥ बुधक्षेत्रे ग्रहो चन्द्रे सर्वधान्यमहर्घता ॥ शुक्रक्षेत्रे गुरोर्भौमे कर्प-

सादि महर्घता ॥ २५३ ॥ भौमक्षेत्रे ग्रहो राहो नाभादीनां महर्घता ॥ शनिक्षेत्रे ग्रहो रा-

हो सुभिक्षं चंद्रे भास्को ॥ २५४ ॥ पशुनाशे धान्यच्छिर्गुडादीनां महर्घता ॥ गुरुक्षेत्रे ग्रहो

राहो पशुनाशस्तथा क्षयात् ॥ २५५ ॥ भौमे राजविरोधश्च बुधे च छिन्नभूयसी ॥ भौमक्षे-

त्रे यदा संति राहु भौमार्कभार्गवाः ॥ २५६ ॥ बरमासे शुक्रकर्पस दत्तक्षिरमहर्घता ॥ मंद-

क्षेत्रे यदा संति मन्दराहु बुधास्तथा ॥ २५७ ॥ चतुःपदानां नाशश्च द्विपदानां च जायते ॥

भौमक्षेत्रे यदा संति शुक्रभौमनिष्ठा कराः ॥ २५८ ॥ गदायुक्ता पशूनां च शंखस्य च महर्घ-

ता ॥ शुक्रभौमो गुरुक्षेत्रे प्रजापीडा च जायते ॥ २५९ ॥ ग्रहाराशि समायोगे फलमेतत्प्र-

कीर्तिर्वत् ॥ अथ राशिं प्रत्येन गृहोदयफलम् ॥ चंद्रोदये कुजक्षेत्रे नृपधान्यस्य चंद्रयः
 चंद्रोदयो भृगुक्षेत्रे स्वल्पं दृष्टिं क्रियादिके ॥ २७१ ॥ मृगाशीर्षाक्षेत्रे सोमशुक्रोदये
 भवेत् ॥ राविक्षेत्रे तुलादृष्टिः शनि सोमभृगुदये ॥ २७२ ॥ चंद्रक्षेत्रे राहुचंद्रबुधा-
 नासुदयो यदि ॥ मृगशिरसस्थोच्च भुवि क्षमाति वृष्टिश्च जायते ॥ २७३ ॥ अदितौ बुधक्षे-
 त्रे च यदि राहुशनिश्चरे ॥ पशुक्षयः प्रजापीडाधान्यानां च महर्षिता ॥ २७४ ॥ षु-
 क्रक्षेत्रे सोमसूर्यसूर्यपुत्रोदयो भवेत् ॥ उदयास्तमनं पीडा जायते च महर्षिता ॥
 यदोदयः शनिक्षेत्रे भौमभास्कारयो भवेत् ॥ दूतानां च तदा दृष्टिर्गुह्यानां रक्तका-
 सताम् ॥ २७५ ॥ मृगशिरसमुदयं याति शनिक्षेत्रे शनौ प्रचर ॥ तदा तृणानां काष्ठानां लो-
 हानां च महर्षिता ॥ २७६ ॥ अथ नक्षत्रस्थित महवसात्महर्षिताक्षानं ॥ मुरुर्गुह्याविश्रां-
 यो तदा धान्यमहर्षिता ॥ मंगलस्य च कालस्य शनौ सर्वत्र मंगलम् ॥ २७७ ॥ अग्नि-
 वशिष्ठो मृगशीर्षा शनि रश्मिस्तदा भयम् ॥ बुधभाद्रे च बुधशिरसि भृगुनंदने ॥

संक्रि ॥ २९७ ॥ सुनिष्ठं चानुराधायां यदि श्रेयग्रहाः स्थिताः ॥ कल्याणं चैव सौभाग्यमस्तु
 ॥ २९८ ॥ कर्पासा वह्नो मंदे भौमे कटकपीडनम् ॥ बुधे तिलाश्वमा
 धाश्व महर्धं वर्षकालतः ॥ २९९ ॥ सूर्ये सर्वाणि धान्यानि महर्धारिण भवंति च ॥ प्रु-
 क्रेच महती वर्षा शस्यानि सकलानि च ॥ ३०० ॥ मूले गुरौ कुलत्थानां मुद्गाणां व-
 हुधा भवेत् ॥ भौमे मूलस्य चापस्य बुधे च सर्व संपदः ॥ ३०१ ॥ पूर्वाषाढा यतिभौ-
 मे पीडा स्यात्पशुपक्षिणाम् ॥ केतो महर्धता धान्ये पूर्वाषाढा तने भवेत् ॥ ३०२ ॥
 ज्ञानाषाढ के जीवे गुहानां च महर्धता ॥ भौमे च पुष्यजातीनां जायते च महर्धता
 ॥ ३०३ ॥ अभिजिन्मासि नक्षत्रे यदा ख्याया सुतो भवेत् ॥ सर्वं प्रस्थानि जायते सुधि-
 र्धं च कुजे तथा ॥ ३०४ ॥ श्रवणे च यदा जीवं स्तदा स्युः सर्व संपदः ॥ बुधे नाशश्च भू-
 पानां प्रानो भूरि उसीरकः ॥ ३०५ ॥ कृत्तिकायां च रोहिण्यां यदा जीवो हि तिष्ठति ॥
 मध्यमा द्वि च शस्त्रानि तदा वृष्टिश्च मध्यमा ॥ ३०६ ॥ आर्द्रायां मृगश्रिर्वै च यदा च च-

संस्थितः स्थितिः ॥ सुभिक्षुं च सुदृष्टिश्च प्रजानां च सदा शिवम् ॥ २८ ॥ पूर्वाण्यु
 ह्वये हस्ते मघायां च यदा गुरुः ॥ सुभिक्षुं च सुदृष्टिश्च प्रजानां सदा दरो जाता ॥ २९ ॥
 चित्रा स्वात्यो र्षदा जीवस्तदा चित्राः पयोधराः ॥ विचित्राणि भवन्त्येव प्रसूयानि च
 क्वचित् क्वचित् ॥ ३० ॥ विष्णोरावा मैत्रयो र्जीवे धान्यं वर्षा च मध्यमं ॥ ज्येष्ठा मूले मास
 युगं विष्टि र्मास ह्वये न च ॥ ३१ ॥ पूर्वा षाढोत्तरा षाढो स्थितो यदि दृष्टस्त्वितिः ॥ तदा रेणुं
 सुभिक्षुं च सुदृष्टिश्च प्रजायते ॥ ३२ ॥ अना दृष्टिश्च दुर्भिक्षं रेवत्यां संस्थिते गुरौ ॥
 धनिष्ठायां च शुक्रे च पीडा भवति हस्तिनाम् ॥ ३३ ॥ कूरा कक्र गताः खेटा र्ससो म्याऽय-
 दानि चारणाः ॥ तदा भूपक्षयो युद्धं जगद्गो भयादिति ॥ ३४ ॥ अथैकमासे पंचवारफल
 म् ॥ शुक्लाद्ये मास के पंच पाप खेटस्य वासराः ॥ प्रजा पीडा भवेत्तत्र धान्यस्यापि म-
 हर्षता ॥ ३५ ॥ मासे पंच शुभा वारा यद्येकस्मिन् प्रजायते ॥ सुभिक्षुं सर्व प्रसूयानो तदा
 च सुखिनो जनाः ॥ ३६ ॥ पौषे पंच प्राणि श्वेव माद्ये पंच रवि स्तथा ॥ फाल्गुने पंच भोम-

अथ महीनाशाय कौवलम् ॥ २८ ॥ अथ चंद्रस्थष्टगोन्तिसाफलम् ॥ चंद्रायामान्वतां भो
 नमेयगोऽभ्युदितो मतः ॥ समष्टुगोवर्षे कुंभे शेषमेष्ट्वरेन्नतः ॥ २८ ॥ याम्योन्नते
 चदुर्भिर्हंसविरुद्धस्यात्समे विधौ ॥ सुभिर्हंससौम्यदिग्भागे चोन्नते मृगालां क्वने ॥ ३०० ॥ पृ-
 लाकारे विधौ भीतिः शोदितो महतां रुजः ॥ जघ्नवति मास संक्रातिवसात्समर्घमहर्घज्ञानम् ॥
 सुभिर्हंसं संक्रमे सौम्ये चारऽधिकमुहूर्त्तके महर्घं पापचारे वामुहूर्त्तं चास्तुर्भूति ॥ ३०१ ॥
 पूर्वसंक्रमभाह्विभूतिमिति च संक्रमे रवेः ॥ सुभिर्हंसस्याच्चतुःपंचमिति भेतु महर्घता ॥ ३०२ ॥
 पक्षे भे संक्रमे चाति दुर्भिर्हंसं तैरवं भवेत् ॥ जघ्नैकमप्राप्तधान्यनिःपतिज्ञानम् ॥ ३०३ ॥ चतुर्षु संक्रम
 एो भानोः केन्द्रत्वात् यतैः षष्ठ्युभैः प्राग्दीधान्यनियतिरुजमाहायने मता ॥ ३०३ ॥ पापै
 रैवं स्थितैः स्वल्यामिभ्यैर्मिभ्यां प्रकीर्तिता ॥ पापाधूनगते न प्रयेद्दुमन्नमपि प्रास्यक्रम ॥
 धूनप्राप्तगते पापे नियतिरस्वल्पिका भवेत् ॥ दूर्यंष्ट्रश्च क संक्रातो विज्ञेयं ग्रीष्म
 धान्यकम् ॥ ३०५ ॥ चापादित्रितये सूर्यो सौम्यैर्युक्ते क्षिते ग्रहेः ॥ सरहान्यं

संक्षिप्तमर्षस्यात् प्रसृतं तद्धान्यजीविभिः ॥ ३०६ ॥ पार्थय्युक्ते क्षिते धान्यं महर्षिः जायते रिव-
 लम् ॥ एवं मेयाद्विगे श्रेयमे धान्यं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ३०७ ॥ अप्यसंक्रातिवप्राद्वर्षयोर्ष-
 मास्योरुत्पातश्चिवसात् धान्यादीनां समर्षमहर्षिज्ञानम् ॥ श्रेयमे प्रसृतं रततो मूलं रस-
 न्यं शृणुनादिकं ४ हेमाद्यं ५ तुरगो दं वस्त्रं ७ मणिः ८ काचो ९ वु १० धान्यं के ११ ॥
 ३०८ ॥ मूलं च १२ क्रमनो ज्ञेयं मेयाद्यर्के याले क्षिते ॥ दर्शे वा योर्षि मायां चेद्दुप-
 गोः ति वर्धनाम् ॥ ३०९ ॥ परिवेषस्तथा दंड उक्ता पाता ह्युदवाः ॥ जायते जतदने-
 या वस्तूनां च महर्षिना ॥ ३१० ॥ रक्षो सोम्ये क्षिते ज्ञेया उत्पत्तिः ५ न महर्षिना ॥ अथ वृक्षादि-
 यत्र पुष्पफलाद्ये भान्यादिनि ध्याति ज्ञानम् ॥ वृक्षादौ वहुभिः पुर्वे स्मृता वृष्टिः प्रजायते ॥ पत्रे-
 रत्नस्य तरा वृष्टिः र्वर्षा भिश्चे त्स्य योः धिकाः ॥ ३११ ॥ मधुके वहु गोधूमा जवाः सुवर्दनी-
 फलैः ॥ सुभिर्हं नागानि वैः स्था च्छालं वृक्षे शालयः ॥ ३१२ ॥ अथ तस्यादधिकं धा-
 न्यमर्चुनादधिकं जलम् ॥ क्षेमसा श्रेष्ठे प्राजाश्रेः बोद्धं वाजं वृतं स्ति लाः ॥ ३१३ ॥ दुर्भि-

सन्निहोऽखदि रै रोगः कुटजैः परिकीर्तितः ॥ दूतिसमर्पकाङ्गसमाप्त ॥ अथ दृष्टि ज्ञानार्थं मेघ गर्भज्ज्ञानम् ॥
 मार्गे शुक्लादितो द्वायो मेघ गर्भसमुद्भवः ॥ फाल्गुणे ताम्रवर्णा किंत्स्नि मथाभ्याच्च ख-
 रानि ज्ञात् ॥ ३१४ ॥ चैत्रे तु परिधे दृष्ट्या वायु नावाभ्यरेखया ॥ अथ केयं चिन्मता रे-
 केचिन्मार्गादि मासेषु द्रोचुर्गर्भस्य लक्षणम् ॥ गर्जनात्यवना नोयवर्षस्मादिष्टु-
 तोऽथवा ॥ ३१५ ॥ अथ शुभगर्भलक्षणानि ॥ श्वेतनीलाङ्गजा आच्च न चानि विगल-
 ज्जलाः ॥ एतन्मार्गश्चिते मेघा उदगीशान पूर्वजाः ॥ ३१६ ॥ दृष्टिं प्रयांति ते ग-
 र्भाः विष्टुद्वाताभिर्वर्जितैः ॥ भाद्रपदे द्वयोस्तन्नाविप्राखोत्थावहृदकाः ॥
 ३१७ ॥ ज्येष्ठा गर्भाणां दिना दृष्टि ज्ञानम् ॥ दृष्टि गर्भाहमास्य पक्षे विष्व १३ मितै-
 र्भवत् ॥ रात्रि गर्भे दिवा दृष्टि दिवा गर्भे निशि स्मृता ॥ ३१८ ॥ अथ प्रकारं तरेण गर्भाह-
 ष्टि ज्ञानम् ॥ आसद्यै कादशैः कृत्वां कृत्वा हो माधमासके ॥ द्वादश स्वपि पक्षेष्टु विष्टुद्वाता
 नो गज्जितैः ॥ ३१९ ॥ रोहिण्यादिषु सूर्यास्य भेषु दृष्टि र्भवेत्कमात् ॥ अथ पुनरन्यत्र-

मस्त्रिकारेण मेघगर्भज्ञानं हृदि ज्ञानं च ॥ मूलक्षेत्रे भास्करे याते तदा रम्यदशा हवस् ॥ ३२० ॥
 ३६ विद्युद्भादिना गर्भे यत्र तत्र दिने भवेत् ॥ क्रमादाद्भादिने क्षत्रे भानो हृदिः प्रजा-
 यते ॥ ३२१ ॥ अथ प्रकारेण ॥ मूलभाङ्ग एषा यावद्देवेषु वैकादश स्वपि । पीष मास-
 दिन क्षेपु गर्भस्त्वभादिना भवेत् ॥ ३२२ ॥ तत आर्द्रादिके सूर्य्ये क्रमाद् हृदिः प्रजायते ॥
 पुनः त्रका एतस्मिन् ॥ अग्निन्यादिद्विष्विहोत्रे दश सुवेद्भवेत् ॥ अभादिके तथा गर्भः
 आर्द्रादौ हृदि दः क्रमात् ॥ ३२३ ॥ मेघाऽर्कदिन नारम्य द्वेयमेव मध्याह्नि वा । अथ ज्ञाना-
 न्यतो हृदि ज्ञानम् ॥ यदि साभ्यं नभो मध्यं सुभिष्वं चापि मेऽवके ॥ यद्यभ्रं दृश्यते व्यो-
 म्नि चैकादशं त्रिका त्रिके ॥ ३२४ ॥ आयादे मासि हृदि दृश्य तदा भवति भूयसी ॥ आ-
 गायस्यां यदा विद्युद्द्वयं प्रावणे तदा ॥ ३२५ ॥ पीये काले दशम्यां चेद्दृष्टिर्भाद्रपदे
 तथा ॥ सप्तम्यां माघ शुक्लस्य भवेद्भादिकं यदा ॥ ३२६ ॥ ज्येष्ठे कृत्तिके चैद्दृष्टिः सुह-
 र्दिर्बहुला मता ॥ अथ ज्येष्ठ शुक्लाष्टम्यादिदिनं चतुष्टये चार्यफलम् ॥ ज्येष्ठेऽष्टम्या तु

३३३ ॥ शुक्लायाश्च त्र्युदिवसेषु च ॥ आवणादीन् क्रमाद्विदिमैर्ग्रेष्वास्तेऽसमीरणेः ॥ ३३३ ॥
 ३३३ ॥ अथ स्वात्यादिषु दृष्टौ आवणादावनायतिः ॥ ज्येष्ठे च त्र्युधिषेऽष्टौ स्वातीमारभ्य वर्षणे ॥ क्रमा-
 च्छ्रावणे केद्विदिर्नभवेत्तत्र तत्र ॥ ३३४ ॥ अथाषाढ शुक्लद्वितीयादिदिन चतुष्टयफलम् ॥
 आषाढे नासि शुक्लायां द्वितीयायां प्रवर्षणम् ॥ तृतीयायां पुनो वायुर्मेघः पूर्णश्च दिशतः
 ॥ ३३५ ॥ चतुर्थ्यां जलदः प्राच्यां दक्षिणे यदि मारुतः ॥ पंचम्यां पूर्वदिग्मेघस्तदा आ-
 वणा मासतः ॥ ३३६ ॥ ध्रुवं दृष्टिः शुभाक्षया क्रमान्मासचतुष्टये ॥ चतुर्थ्ये च दिने द्यौव
 यदि दृष्टिर्निरतरम् ॥ ३३७ ॥ तदा स्यादति दृष्टिश्च धान्यनाशः प्रजायते ॥ धान्य-
 प्रत्यग्भवेद्वायो द्यौर्दुर्भिक्षमीरितम् ॥ ३३८ ॥ तृतीया पंचमी घस्ते यद्युदक् पूर्वजो मरु-
 तः ॥ तदा स्या धान्यनियमनिर्वह्ण दृष्टि रुक्ममा ॥ ३३९ ॥ अथ आवणा शुक्लपंचमी फल-
 म् ॥ पञ्चम्यां आवणे शुक्ले द्यौर्दृष्टिर्भवेद्यदि ॥ धान्यप्रत्यग्भवेद्वायुर्दुर्भिक्षं जायते
 तदा ॥ ३३९ ॥ अथ सूर्यस्मरेवत्यादिभ्यो दृष्टिफलम् ॥ रेवत्यां वर्षणे तोयं न प्रयेद्धान्यम

नाश्रये ॥ अरावां न हयं वृष्टिः कृत्तिकायां न चैव वेत् ॥ ३३५ ॥ रोहितायां गर्जने वृष्टि-
 र्येयमास ह्यो नरम् ॥ मृगशिर्यो यदा न स्याद्वृष्टिर्भूयो वह्नदका ॥ ३३६ ॥ अथ संक्रान्तिदिनं
 वृष्टिफलम् ॥ संक्रान्ति दिक्से वृष्टौ मार्गकार्तिकयोर्द्वे ॥ वर्षान्तमध्यमं क्षेपं पौषे
 मघेऽति चोत्तमम् ॥ ३३७ ॥ शुभिसं च सुभा वृष्टिः फल्गुणादि चतुष्टये ॥ रोगस्त्वया
 दमासं स्याच्छूवणं वृष्टिरुत्तमा ॥ ३३८ ॥ आद्रे रोगस्तदा सौख्यमाश्रिते वर्षणो भवे-
 त् ॥ ३३९ ॥ अथ कार्कांडफलम् ॥ सवृक्षे कार्कानी हे स्यात्तनीच्या वृष्टिरुत्तमा ॥ उद-
 रयास्ये भवेन्मध्यं नैऋता वांति मास्तुता ॥ ३४० ॥ अल्पवृष्टि रथो क्षेपया सदन्व्यस्या-
 च्छिवेऽनिले ॥ मध्ये मध्याऽथ वृक्षा मेव ह्रजा वृष्टि रीरता ॥ ३४१ ॥ इति भीतिर्महा-
 वीरानां हे सर्वदिशां गते ॥ नीहे संकर के भीति रसानां जायते भुवम् ॥ ३४२ ॥ प्रागुद-
 कप्रशिसा ईस्ये सुवृष्टिः कैश्चि रीरता ॥ अथ हि हि मांडफलम् ॥ स्थिते वृक्षे प्रदेष्टो वृष्टि-
 दिभां हे पृचोत्तमा ॥ वृष्टिः संजायते मासै रथो वक्रां ह संख्य कैः ॥ ३४३ ॥ निम्नप्रदेशा संख्ये

॥ अथ युस्वल्पा वृष्टिः प्रजायते ॥ वृष्टिर्नैव भवेन्मासैश्चोर्ध्वक्रांढ संख्यकैः ॥ ३४४ ॥

अथ रोहिणी चक्रम् ॥ द्वावृष्टारं लिखेच्चक्रं मेघ संक्रान्ति भादिनः ॥ चतुर्द्विस्तु समुद्राश्च-

| पर्वत | तट | संधि | मध्याह्न | संधि | तट | तट | पर्वत | प |
|-------|----|------|----------|------|----|----|-------|----|
| प | ५ | ४ | ३ | २१९ | २८ | २७ | २६ | प |
| त | ६ | | | | | | २५ | त |
| स | ७ | | | | | | २४ | सं |
| सं | ८ | | | | | | २३ | सं |
| सं | ९० | | | | | | २२ | सं |
| त | २१ | | | | | | २० | त |
| प | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | प |

चतुःकोणेषु पर्वताः ॥ ३४५ ॥ समुद्रपाथ्वयो रथौ तटस्तच्चै लयास्तथा ॥ मध्ये रथौ संध्ययोः स्तत्र साभिजिह्वा गणान्यसेत् ॥ ३४६ ॥ द्वायं समुद्रेषु तथैकैकं तटाद्विषु ॥ रोहिणी संस्थिता यत्र द्वेयं वृष्टिफलं तथा ॥ ३४७ ॥ तदेतु प्रोभना वृष्टिर्महावृष्टिस्तु सागरे ॥ अना वृष्टिर्गिरी देशे खंडे वृष्टिस्तु संधिषु ॥ ३४८ ॥ अथ सप्तनाडी चक्रम्

एतिकादि लिखेच्चक्रं साभित्सप्तनाडिकम् ॥ चंडावायुस्तथा चान्तिः सौम्यानी राज-

॥ अथ

मं. लासुता ॥ ३४८ ॥ नाडीनां सप्त नामानि ज्ञेयान्येतानि पंडितैः ॥ क्रमानुसार्क्य भोमे
 ३४९ ज्यमुक्तज्ञाज्ञास्तदीयराः ॥ ३५० ॥ अथैतेवस्यधृति ॥ चंडारव्याभरणीद्वे

| | | | | | | |
|------------------|------|-------|----|------|-----|------|
| अथसप्तनाडीचक्रम् | | | | | | |
| नडा | याता | वर्ति | सो | नीरा | अलं | रखला |
| क | ऐ | य | गा | गु | गु | पने |
| वि | खा | चि | रु | ख | ह | भ |
| भा | ज्ये | मू | व | उ | भि | ज |
| म | ज | इ | उ | ह | प्र | ध |
| रा | ख | म | र | ख | वु | चं |

नाडीरूवेःस्तता ॥ ३५१ ॥ चिन्नामूलं मृगात्यचदहना
 रव्याकुजस्यच ॥ धर्वायादाकरोभर्मासौभ्यानाडीद्वे
 स्यतेः ॥ ३५२ ॥ पूभोपाचपुनधिसिंखफानीरभुगोःस्त
 ता ॥ पूफायाताभिजितुब्बजलानाडीबुधस्यसा ॥
 ॥ ३५३ ॥ प्रवहयंमयापनेयाद्वेदोमृतनाडिका ॥ अ
 वेतासुग्रहसंस्थितेफलम् ॥ अहोदयैकनाडीस्थाःसौभ्याः
 चानान्चातनाड्यातेषानिलख ॥ चान्हेनाड्यास्थितादाहंसौभ्यनाड्यामहाभुक् ॥

॥ ३५५ ॥ नीरजाङ्घ्रा पया दृष्टिं जलनाङ्घ्रं च वर्णम ॥ कुर्वन्नाहतनाङ्घ्र्या च महो-
 दृष्टिं न भयम् ॥ ३५६ ॥ एकोयं निजनाङ्घ्रिस्थो हस्ते ततस्त्रलं गहः ॥ कुजस्तु सर्वना-
 ङ्घ्रिस्थो नाङ्घ्रिस्थस्तु ह्रस्वम् ॥ ३५७ ॥ आर्द्रावर्द्धगते सूर्ये नाङ्घ्रिके फलमुच्यते ॥ च-
 दनं केच नाङ्घ्रिस्थाः प्राप्यसौम्याश्च खेचराः ॥ ३५८ ॥ मिश्राश्चन्द्रसमा युक्तास्तद्दिने
 दृष्टिरुत्तमा ॥ तोयराशिगता मिश्रास्तावदृष्टिं प्रकुर्वते ॥ ३५९ ॥ पावनीयो प्रागध्वं-
 केवलः स्वल्पदृष्टिदः ॥ अग्निश्रेष्ठः खेचरैः सौम्यपापैर्विद्धो यदा प्राप्ती ॥ ३६० ॥ पानी-
 यं च तदा तुच्छं भान्यादीनां च नाशनाम् ॥ यस्य खेचस्य नाङ्घ्रिस्थो विद्युस्तेन ग्रहेण च
 ॥ ३६१ ॥ युक्तश्रेष्ठदृष्टिदो ज्योतिषादिर्दीप्ता गणे न हि ॥ चन्द्रः पीयूषनाङ्घ्रिस्थः मिश्रे-
 खेचश्च संयुतः ॥ ३६२ ॥ त्रिचतुःपंचसङ्गाहं शुभदृष्टिप्रदो मतः ॥ जलनाङ्घ्रिस्थते
 चन्द्रे मिश्रखेचरसंयुते ॥ दिग्गार्हपत्यस्य सूर्यः पूज्याहं ज्ञायते शुभा ॥ नीरजा-
 ङ्घ्र्या गते चन्द्रे मिश्रेः खेचश्च संयुते ॥ ३६३ ॥ पावनेन तद्दिनं दृष्टिं कुर्वन्तो या अभवेद्दृष्टिः ॥ ३६४ ॥

॥ तिर्ना एव जलार्थं प्रयेनाडी स्याः खंचराः क्रमात् ॥ ३६४ ॥ भुल्य १८ के १२२ स ६ सखा
३६८ कान्वा स ए न्वहु दृष्टिदाः ॥ सौम्या नाडी स्थिताः सर्वे अहं दृष्टि प्रदाः खगाः ॥

॥ ३६५ ॥ चंद्रवादाग्रि नाडी स्याः महावाता तप प्रदाः ॥ योगे शुभाधिके नाडी नि
ज्जला सजल प्रदाः ॥ ३६६ ॥ योगे कुराधिके ज्ञेया सजलानि ज्जला बुधैः ॥ सौम्य नाड्यो
स्थिता पापा भ्राना दृष्टि कार मताः ॥ ३६७ ॥ शुभां स्तोयां प्राकाशे स्युः स्वल्प दृष्टि प्रः
दास्तदा ॥ एक नाडी स्थिता भौमजीव चंद्र मसौ यदा ॥ ३६८ ॥ वारिष्णां भवे लघ्वी व
हु दृष्ट्या तदा खिला ॥ भुगु सौम्यौ परे कत्र स्यातां जीवां चिंतो तदा ॥ ३६९ ॥ दृष्टि -
स्याद्दहुला कस्मा चंद्र योगे विप्रोषतः ॥ भुगु चंद्र मसौ पापेः खंचरे र्यादि संयुतो ॥
॥ ३७० ॥ तदा खल्योद का दृष्टिः जलयोगे मह त्यपि ॥ इति सप्त नाडी फलम् ॥ अथ
शुक्र स्थिति वषा इह धेना वना च दृष्टि ज्ञानम् ॥ मघादि पंच चिह्न स्थः शुक्रः प्रागुदितोऽनि-
ष्टम् ॥ दृष्टि कृत्य श्रिमा प्रास्थः स्वत्यादि त्रितये स्थितः ॥ ३७१ ॥ वैपरीत्य भितो -

संधिं जातो भृगुः कुर्यादवर्षणम् ॥ कुर्यातां बहुलं वहिः वुध शुक्रौ च संयुतो ॥ ३७२ ॥
 १६६ समुद्रं प्रोपितुं प्रकृतस्योरंगो तोरविः ॥ शुक्रात्सप्तममाश्रं द्रो वहिः दसस्याच्छुभोक्षितः
 ॥ ३७३ ॥ मंदादिद्वन्द्वनकोणस्य श्रद्धमा वहिः कनदा ॥ ग्रहाणां मुदये चास्ते राश्य-
 न्तर्गतेऽयने ॥ ३७४ ॥ संयोगे वापि पक्षांते प्रायो वहिः प्रजायते ॥ उदयास्तमनं शु-
 क्रौ वृधश्च वहिः कारकः ॥ ३७५ ॥ चलत्यंगारके वहिः शिखा वहिः प्रशानैश्चरे ॥ वारि-
 ष्ठाणां नक्ष्त्रैः कृत्वा पञ्चात्संचलते गुरुः ॥ ३७६ ॥ शुक्रे चालसमिति मंदे त्रिविधः पिप्रजा-
 यते ॥ भीमाक्षी एक राशौ चेदन्योन्यं समसप्तयो ॥ ३७७ ॥ अथाक्षी दिरवि नक्षत्रप्रवेशे-
 रत्नी पुंयोगो द्योतिहानम् ॥ रत्नी संज्ञानि दृष्टा र्द्रो तो भानि प्रोक्तानि कोविदैः ॥ विषया-
 र्वादित्रयं रत्नी वं पुंसं भ्रूनी नीतरणिच ॥ ३७८ ॥ रवे र्द्विस्त्रिप्रवेशस्य काले चंद्रार्कयोरे-
 मे ॥ चिह्ने च यादृशे स्यातां विज्ञेयं तदृशं कालम् ॥ ३७९ ॥ रत्नी पुंसोस्तु महावह्नि-
 रल्यारत्नी ह्नी वयोः क्वचित् ॥ अभ्रच्छाया स्त्रियोः पुंसोः रत्नी वयोर्वान किंचन ॥

३८० ॥ तीयवारविलम्बेच वृत्ति योगेयदाखेः ॥ नक्षत्रं च प्रवेष्टा स्स्यात्तदा वृ-
 ३८० दित्सुप्रोभना ॥ ३८१ ॥ निशायामर्द्धरात्रे चारवेऽप्यस्य प्रवेष्टाने ॥ बहुतोयासु वृ-
 दितस्स्यादन्यथा नैव जायते ॥ ३८२ ॥ अथ सूर्यर्क्षे चंद्रक्षितौ वृत्तिज्ञानम् ॥ आर्द्धदिपंचम-
 प्रभारं चत्यादिचतुष्टयम् ॥ पूर्वाषाढा चतुःकंच चंद्रक्षीणि चतुर्दश ॥ ३८३ ॥ प्रोक्ता-
 णि रविधिष्ठानि विज्ञेया निमनीषिभिः ॥ सूर्ये चंद्रक्षौ गोवृत्तिश्चंद्रे सूर्यर्क्षौ गो-
 ति ॥ ३८४ ॥ पूर्वादिपंचके सूर्ये चंद्रे चंद्रक्षौ गोऽपि च ॥ उभौ चंद्रक्षौ गोऽस्या तां स्वत्या-
 वृत्तिस्तदा भवेत् ॥ ३८५ ॥ तावेव यदि सूर्यर्क्षौ तदा वृत्तिर्न जायते ॥ अथादकप्रमाणम्
 युग्मा ३ जं १ गो २ मत्स्य १२ गते प्राप्तां के भानु र्यदा कर्कटके प्रयाति तदा प्रातादु-
 १०० हरि ५ का मूर्तिके २ ३ ५० तुले १०० यः कन्यादिभुग १० यो रश्मि तिः ८० ॥ ॥
 कुलीर ४ कुंभालि ११ ८ गते यदा स्यात्पक्षि प्राकाटं ३६ भुवि वारि प्रातः ॥ ३८६ ॥ अर्द्ध-
 पर्वत भागेषु तद्वर्द्धं मास्ते जातम् ॥ तद्वर्द्धं याति मेदिन्यां चारो हे ए च भाषितम् ॥

प्रात योजनमुत्तुंगं सहस्रं विस्तृतं ततः ॥ आढकस्य प्रमाणेऽयं वाराहेण च आधितम् ॥ ३८८ ॥
 अथ रविनक्षत्र वाहनम् ॥ दिनेषु भातसूर्य भवं हि घस्रं विगणय सप्तोदुतमर्कं
 वाहनम् ॥ श्वेतुरंगः शूरा कश्च शूक रः शूचान को गो मीहि यश्च ददुरः ॥ ३८९ ॥
 अथ वर्धा काले सद्यो वृद्धि लक्षणानि ॥ नभः काकोड भंगो हक्क निभंति रसं निभम् ॥ प्रां-
 त्यो जला वामे घास्यु गिरि कज्जल सन्निभाः ॥ ३९० ॥ जल जंतु समा कार मूलाभा-
 सव्य गाभ्यपि ॥ गिरयोऽजन संकाशा सवाय्या शिरिव नर्तनम् ॥ ३९१ ॥ शुभ्र नेत्रे
 निभः क्षौद्र सन्निभः स लिल ह्लुतः ॥ सन्निधौ परि वेया क्य श्चंद्र माशो प्रवृद्धि कृत ॥
 ॥ ३९२ ॥ विक्रतिर्ष्व वणो वाला स्तेतु बंधो द्यभाऽप्यपि ॥ जले मीनो रक्तवो रावो भेकानो
 नीरसं जलम् ॥ ३९३ ॥ व्यालानां मेधुनं वृक्षा दारो हः पशवस्तथा ॥ महि कान लम्पतां
 याति सांडा स्या सत्पि पीलिकाः ॥ ३९४ ॥ उत्सृष्टाश्च गृह्णाद्रावोने क्खंति गन्नं वहिः ॥
 खनंति भूतलं पचानो भाज्जराः प्रावः खुरैः ॥ ३९५ ॥ स्त्रिया न्यं कुरा श्योर्द्वि प्रार दारो

५ ह्य । तरो ॥ तृणाद्ये वृश्चिका रोहो गवा मूर्द्धनि रीक्षणम् ॥ ३२६ ॥ पक्षिणां धूलिभिः
 २ रत्नान्नप्रदोषे मेघ राज्ञानम ॥ अग्नि दण्डा वृत्तिर्मघः रतिः प्राची भवो मरुत ॥ ३२७ ॥
 ३ नृत्यमिदं धनुः संख्या रागो ऽधो मेघ राज्ञानम ॥ आशुदक् सैव दिक् कृपा तारका सौ
 दामिनी तथा ॥ ३२८ ॥ मध्ये तीव्रत पश्चाद्दिनरा निद्रालवो भृशम् ॥ विक्षेपा ल
 क्षणे रभे स्सद्यो वृत्ति र्वना गमे ॥ ३२९ ॥ नो माघे हिमवर्षा न मरुत श्रद्धा स्तथा प्रा
 लुने चैत्रे वृत्ति विवर्जितं नु गगनं मेघेन दूणे रविः ॥ वैष्णवे नवर्गो पलस्य पत
 नं ज्येष्ठे न च रात्रौ रवि वृत्ति स्त्वल्पतरा सदैव कथिना वर्या सुनित्यं बुधैः ॥ ३३० ॥
 श्रुति र्वृत्ति काण्डाः ॥ अथोपश्रुति प्रकृताः ॥ गणाधीशं प्रपूज्या दोकार्यं तस्मै निवेद्य च ॥
 साक्षतं सफलं तोयं पात्रमादाय संव्रजेत् ॥ ४०१ ॥ उपश्रुते श्रुत्वा याय चण्डाला हि
 मदे वहिः ॥ निग्रासुहजने तत्र स्थित्वा सुत्वा क्षतान् क्षिपेत् ॥ ४०२ ॥ अथोपश्रुति
 मन्त्राः ॥ उँ उपश्रुति र्महा लक्ष्मी ध्या एडाल म्दह चाग्निनी ॥ यक्षया चिंति तं कार्यं सत्यं ॥ ३०२

वदसुरेष्वरि ॥ ४०३ ॥ ब्राह्मणानां प्रातं दत्त्वा कर्षितानां प्रातत्रयम् ॥ तेन धर्मेन लिङ्गा-
 भिसि यदि सत्यं न भावसे ॥ ४०४ ॥ पंचानां पांडुपुत्राणां ज्येष्ठो भ्राता युधिष्ठिरः ॥ ते-
 न सत्येन धर्मेन सत्यं दूहि न मोऽस्तुते ॥ ४०५ ॥ भवत्या विदितं सर्वं सर्वं कार्यं वि-
 शेषतः ॥ द्रुपुकाश्च गुणद्वाराणि प्रह्लावाकात्रया न्विताम् ॥ ४०६ ॥ प्राक्षिप्य च ज-
 ले तत्र समागच्छेत्स्वमालयम् ॥ तद्वाकस्यानुसारेण फलं क्षेत्रं द्रव्यार्थतः ॥ ४०७
 ॥ वारविशेषे नोपश्रुतिनिवासः ॥ चांडाली भवने सूर्यं चन्द्रे नाश्रित मन्दिरे ॥ रजक-
 मन्दिरे भौमे वोधने वैश्य मन्दिरे ॥ ४०८ ॥ ब्राह्मणी मन्दिरे जीवे भार्गवे पण्ययो-
 धितः ॥ द्वाप्या द्वारि शनोपायाच्छेते चोपश्रुतिं शुभाम् ॥ ४०९ ॥ अथ खुवंश-
 दिप्रकुणाः ॥ खुवंशस्य दुर्गायाः पाठस्य निवासस्तत्र ॥ पूजितं पुस्तके पुष्पे राक्षि-
 तैश्च फलादिभिः ॥ ४१० ॥ शनो संस्थाप्य संपूज्य प्रातरेव तिलो कयेत् ॥ कुमा-
 र्युक्तं प्रमाणेन निःकास्य श्लोकं मुत्तमम् ॥ ४११ ॥ विज्ञेया प्रप्रकुनां तस्माद्यथा र्थ-

३५ वचनाहिते ॥ अविस्मर्त्तान् पूर्वार्द्धं सवर्गेतरपंचमः ॥ स्तुति लिङ्गज्जितश्रुत्वा
 ३५ प्रफुल्ले च शुभावहः ॥ ४१२ ॥ अथागविद्याप्रज्ञः ॥ शिरोमुखं कर्णो नेत्रं स्पृष्टा पृच्छ
 तिवे ज्ञानः ॥ सुवर्णधनधान्यान्नालाभस्तस्य न संशयः ॥ ४१३ ॥ स्कंधग्रीवाकण्ठ
 दस्तस्य शोलाभो हिङ्गः खतः ॥ कुक्षिनाभिसमालंभे भक्षयानादि सिध्यति ॥
 ॥ ४१४ ॥ जंघा लिंगा कटिस्थ शो कन्यालाभस्तुतोद्भवः ॥ जानुशुल्कपदस्थ शो महान्
 जैशः प्रजायते ॥ ४१५ ॥ केशस्थ शो भवेन्मृत्युः फलादिस्थ शो ने शुभम् ॥ तृणागार
 कसंस्थ शो काव्यं सिद्धिर्नै जायते ॥ ४१६ ॥ काष्ठपंकपदस्थ शो ग्रहपीडामनोभयम्
 ॥ भृगाशमानभङ्गादिस्थ शो सिद्धिः प्रजायते ॥ ४१७ ॥ शून्या लये स्मरणे वा शु
 र्ककाये क्षते तरो ॥ गुल्मवन्नाथमस्थाने ज्ञेयः प्रजायते ॥ ४१८ ॥ देवगेहे
 नदी तीरे दिव्यस्थानेषु भवेत् ॥ शुभदिक्षु स्थिते सिद्धिर्विदिक्षु न प्रजायते ॥ ४१९ ॥
 दत्तगविद्या ॥ अथ सर्वप्रज्ञनिर्णयः ॥ प्रज्ञाह काले फलनामवर्णनक्षत्रनिष्पन्ननिधिचार

ऽश्विः ॥ योगेश्वरपुक्ता नवनीश्वरर्हभक्तान्शेषफलं प्राप्नुयात्तन्जः ॥ ४२६ ॥ एकावशेषे
 ३०५ ये इविणस्य धान्यश्रेस्ताथा स्यात्सदनस्य लाभः ॥ नेत्रावशेषे सुजनस्य संगो भ्रातृ-
 स्सुतस्यैव विनाशानं च ॥ ४२७ ॥ त्रिशेषकेनेत्रशिरःदरेदुःखेणोद्भवो वस्त्रविनाशानं च
 ॥ वेदावशेषे नृपदर्शनं स्यादश्वस्य लाभो नृपतेः सकाशात् ॥ ४२८ ॥ प्राशवशेषे
 निजवस्तुहानिः त्रियावियोगस्सुतबंधुनाशः ॥ रसावशेषे रथवाजिलाभोरिषो भयं
 चौरभयं तथा स्यात् ॥ ४२९ ॥ स्वरावशेषे रिपुभिश्च युद्धे जयो भवेद्दासजनस्य ला-
 भः ॥ वस्त्रस्य लाभः क्रयतश्च लाभो मार्तण्डशेषे च कलत्रलाभः ॥ ४३० ॥ नवावशेषे
 मयस्य लाभः स्वस्य हानिः पुराजगजा ॥ दशावशेषे नृपतेः सकाशाद्दण्डश्च वा-
 च्यः स्वसुतस्या नाशः ॥ ४३१ ॥ भवावशेषे कृषितीक्ष्णलाभो लाभश्च त्रियायः पृथिवीशलाभः
 ॥ सूर्यावशेषे राजश्रेष्ठस्य द्रुत्यस्य लाभस्तु विदेशगस्य ॥ ४३२ ॥ विष्णावशेषे बह-
 द्रदेशे यानं तथा क्षेत्रपुतं च प्राप्तम् ॥ दंडावशेषे बहुराज्यं राज्यस्तथा धनं हिंस्रजनेन

मन्त्रिः ॥ ४३३ ॥ पंचेन्द्रश्रेष्ठे त्वं प्रानस्य लाभो भयनस्य लाभो अहं स्वलाभः ॥ भूपा-
 १०६ चश्रेष्ठे वपुनेन मेनेन लाभस्तु तस्मात्स्वजने प्रतिष्ठा ॥ ४३४ ॥ यथा तद्वजस्य मतं विशेषा
 त्वं पथकैस्सम्यग्गदः प्रतिष्ठस्य ॥ विचार्यवाच्यं गणकेन साधुना साधुन सुतरा च प्र-
 सत् ॥ ४३५ ॥ अथ नक्षत्रप्रश्नः ॥ मघादि अय्यमांतं च समीपे वस्तु हश्यते ॥ हस्तादि-
 वस्तु पर्यन्ते मन्त्रहस्ते च हश्यते ॥ ४३६ ॥ श्रुतताण्ड्यमांतं तु स्वगृहे वस्तु हश्यते ॥ अग्रा-
 दिशार्ध पर्यन्तं महदृष्टं दृष्टं तथा ॥ ४३७ ॥ तिथिचारं च नक्षत्रं ग्रहेणा समन्वितम् ॥ दिक्
 संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजे त्वनः ॥ ४३८ ॥ एकेन शतले द्वयं द्वयं चैकादशं संस्थितम् ॥
 तृतीये जलं मध्यस्थं मन्तरि द्वौ चतुर्थके ॥ ४३९ ॥ तृयस्थं पंचमेतत्स्यात्तत्पदे गोमय-
 मथ्यगम् ॥ सप्तमे भस्म मध्यस्थं मिलितं संप्रज्ञात्तत्तत् ॥ ४४० ॥ अथ गणप्रश्नः ॥ म ति-
 थिप्रहरं सपुंजं तास्काचारं मिश्रितम् ॥ अग्निभिस्तु हो ज्ञायं श्रेष्ठं सत्त्वं राजस्तमः ॥ ४४१ ॥
 फलं ॥ सिद्धिस्तार्कालिकी सत्त्वे राजसानुं विजं वतः ॥ तमसा निःफलं कार्यं क्वातव्यं प्रश्न-

किं कोविदैः ॥ ४४२ ॥ अथापतु कप्रजः । तिथि प्रहर संयुक्ता तारका चार मिथ्रिता ॥ सप्तभि-
 स्तुहरे ज्ञायं प्रोयंतु कलमादिशेत् ॥ ४४३ ॥ फलं ॥ एक प्रोयंतथा स्थाने द्वितीयेप-
 थिवर्तते ॥ तृतीये ऽर्थाईमागेतु चतुर्थे ग्राम नादिशेत् ॥ ४४४ ॥ पंचमे पुनरावृत्तिः
 यथे व्याधि युतं चेदेत् ॥ अयं क्षेत्रं सप्तमे वै चैतत्प्रश्नस्य लक्षणात् ॥ ४४५ ॥ अथ
 गर्भ्या प्रश्नम् ॥ तिथिनयानवधू शुभ साक्षरं मृनिद्युतं त्रिगुणं मुनि भाजितम् ॥ स-
 कल प्रास्त्र विचार विचक्षणे विषम युज सये खलु कन्यका ॥ ४४६ ॥ अथ नष्ट प्रसूता-
 भ्रमप्रलः ॥ शुभरिण भान्नवभेयु बने स्थितं तदनु यद् सुचकर्षयेथे स्थितम् ॥ अचल-
 ७ भेयुगतं गृहजागतं ह्य गतं गतमेव मृतं त्रिषु ॥ ४४७ ॥ अथ सामुद्रिक मीमांसा ॥ वि-
 शाल भालवक्त्रा शिवशो बह्व कसं द्विषम् ॥ तुष्टव मस्तके नाभि र्भरिण नाद्रि को-
 न्ता ॥ ४४८ ॥ शिवध दंतत्व च्चः केशाः रत्नाभाः स्निग्धाश्च कुंचिताः ॥ नेत्रांते रुणो-
 स्तिभवं निखालं रुक्ष तारकम् ॥ ४४९ ॥ दक्षा वतीधि पुरोवासी गध गभीर निःश्वनः ॥

संकेतमूत्रको धन्यो नरो नोत्पलपार्श्विकः ॥ ४४७ ॥ नरो मालमुखो धन्यो नारी पितृमुखी त
 या ॥ रक्तमोटमुखं पाणी पादयुग्मं तलं तथा ॥ ४४८ ॥ श्रोत्रार्थधैर्यं गांभीर्यं महारंभ
 यशः प्रियः ॥ असन्नचंदनो वंशविमानो प्रियस्तत्पवाक् ॥ ४४९ ॥ नीतिमान् गुरुवाक्
 स्यः शुचिर्दक्षोऽप्यपापभी ॥ इत्यादिगुणस्त्वन्मनो मज्जति भाग्यवान् ॥ ४५० ॥ रक्षा
 दातर्जनी दातातिर्यक्सा पुष्पसंज्ञका ॥ तर्जन्यं गुरुयो र्मध्वेतिर्यक्से भवत्यसंज्ञका
 ॥ ४५१ ॥ मणिवं धतरे भवत्यरेवा मूलं हि याति या ॥ सारेखा पितृवंशं रक्षा व्युत्तिना गेह
 से रक्षादा ॥ ४५२ ॥ समाधोगवती चैवाथिल्यं रावि वर्दिनी ॥ अशुः कनिष्ठयो र्मध्वे रेखा
 कांत कला क्रिया ॥ ४५३ ॥ कलांति गतरेखा सा तु मातुलवर्तिका ॥ सुश्रमां वा व्यक्तुः सु
 ला मातुलस्यैव मन्यतः ॥ अंशुखमूलरेखा चि विज्ञेया सन्नतिर्वृद्धे ॥ दक्षिणाभिः कल्पका पु
 त्रस्थूलाभिश्च तथा विधा ॥ ४५४ ॥ अश्विनाभिर्नरेखा भिस्तन्नतिर्हिंजीविनी ॥ रेखाया
 नाभिका मूलयशः पुण्यातिधातुसा ॥ ४५५ ॥ धनरेखानुसायाता अष्टौ वं धानु संध्य -

शेषे ना ॥ स्याच्चैद्वर्त्तितं पूर्णं सोद्वरेत्वा तुराज्यं द्यौः ॥ ४५२ ॥ गंभीरास्तुं द्यौः रक्षिन्ध्याः प्रु
 ३०४ भद्रा मनु पिंगलाः ॥ दक्षिणे तु कोरुंसां वामा द्वाणिं तु वामके ॥ ४५३ ॥ अग्रमुष्टस्तज्ज
 वी यस्य स भवेद्भज्य भाग्यः ॥ श्रीवत्सा चरथा दर्शध्वजस्तंभगिरिस्त्रजः ॥ ४५४ ॥
 हस्तिच्छत्रो वुजः कुंभः श्रीवृक्षः कुलिशं कुप्रभम् ॥ अंगारो व्यजनं वीणा जवो नलस्थ
 दिकं तथा ॥ ४५५ ॥ कारपादतले यस्य स भवेद्भरणी पतिः ॥ खल्वा दस्तु धनी विद्वान् दं
 तुरस्तं दत्तां गुलिः ॥ ४५६ ॥ धनाढ्यो ल्यवयः प्रोक्त उद्गारे विरत्नां गुलिः ॥ तिलः पाद
 तले हस्ते नाश्यायां दृष्टि गोचरः ॥ ४५७ ॥ हृदि प्रजनने भाले धनभाग्यं प्रदो दृष्टा ॥
 रेखाः कारतले चेत्यु रक्ताभ्यस्त्यधिकालया ॥ ४५८ ॥ रक्तस्मरुद्ध्याः सितः क्षिप्त्वा द्वा रक्त
 च्च द्रिष्टा ॥ स्थूलं प्रजननं दीर्घं के प्रो वाने कथा कम् ॥ ४५९ ॥ यस्य चैतस्तद्विद्वः ॥ ४६० ॥
 तं शुभं लक्षणं वानपि ॥ दृष्टिः कारयुग्मेन कंडूयति शिरस्तुयः ॥ ४६१ ॥ अथ लीलां
 विशेषः ॥ शुभानि यानि चिह्नानि पुंसां प्रोक्तानि स्त्रिभिः ॥ तान्येव यो धितो योत्र विशेषः प्रो

चतुर्गुहः ॥ ४६८ ॥ ननु द्विकृतं भालं विप्रालं श्रीनृतं तथा ॥ यादं गुलि ह्यं चं लं ग-
 नने न सप्रो ह्यवध ॥ ४६९ ॥ अस्यास्माविभवा नारी धत्वा हा म दितदिषा ॥ दीर्घलिङ्ग
 हंति शशिर्दीर्घभाला नृदेवरम् ॥ ४७० ॥ तुष्टा दीर्घादरी नारी धत्वा हंति निश्चितम्
 लस्य गुह्यतया मृत्क निरं वापति याति नी ॥ ४७१ ॥ कुलं दीर्घ मला हंति निःस्वानिद्र-
 स नाशिका ॥ दृष्टु नाशानवे चंडी नृवितता कमठीदरी ॥ ४७२ ॥ हसिने गर्तं गंडाया-
 नुः श्रीलासा प्रकीर्तिता ॥ मिलद्भूयुगला वर्तके श्रमा भाला ल्य नाशिका ॥ ४७३ ॥ दीर्घ
 शिमान्वितां गा बालं बोधी विकलिका ॥ दृष्टा वैरश्च भेद्यिने द्युक्तां नारी परिस्थजेत् ॥
 ॥ ४७४ ॥ अथ र्थाणं गृभचिह्नानि ॥ विशाल लोचना तन्वी प्रया मा मधुर आदिणी ॥ कृष्ण
 लं व क चा गौरी प्रलक्षणान्ना मनो हरा ॥ ४७५ ॥ हंसे भग मना मृही चंद्र वक्रा नितं विर्वा ॥
 सुचित्राल्प हरा च मूढ गुल्फा कशरीदरी ॥ ४७६ ॥ जघुहस्तां प्रिका कं वृषी वा वृत्तो न्यत
 स्तनी ॥ दृष्ट्यादि लक्षणो पिता सुभगा सुत्रिणी तुला ॥ ४७७ ॥ अथ सामान्यत प्रभु भलक्षणानि

अथर्वित वचनं चेत श्यो न्तं शुभमं वपुः ॥ पापभीरुमति श्वेत्सिं चिन्है रन्यैश्च यो विताम
 ॥ ४७८ ॥ अथापरचिन्हानि र्वा प्रंक्षेत् शुभानि ॥ हस्तच्छेदी शिरानां शुविन खलिरवनं पादयो
 रल्पपुञ्जा ॥ दंता नाम सत्यशैथ्यं व सन्न मलिनता रुक्षता मूर्ध्नि जाना श्मूहे सम्यगे चापि नि
 श्ना वि वसन पादनं ग्रा सहस्रावलीकं स्वांगे पीठे च वा द्वां विन रति हरे ते के श्च व स्यापि
 लक्ष्मीम् ॥ ४७९ ॥ द्विवेदि कुल संभूत सख्य कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाक्षेपं त्रयो विं
 प्राति का प्रभा ॥ ४८० ॥ इति श्री संग्रह शिरो मणौ मिश्र कायनं नाम त्रयो विं
 प्रातिः प्रभा २३ अथ लिप्यो विभुक्त कर्मा नुष्ठान फल सिद्ध्यर्थं तदंगत या नि र्णीयते ॥ अत्यंता
 माह्न प्राप्यं विधिः ॥ नहुतं ममांसायां ॥ विधिरत्यं तम ब्राह्मो नियमं पाक्षि के सति ॥ तत्र
 चान्यत्र च ब्राह्मो परिसंख्येति गीयते ॥ १ ॥ सच विधिर्वेद वाक्यं स्मृति पुराणादि वाक्यं
 च ॥ वेद वाक्य प्रामाण्यं सिद्धमेव ॥ तन्मूलत्वात् स्मृति पुराणा दीना मपि प्रामाण्यम् ॥
 २ ॥ तत्रार्गः ॥ सविधि र्विधिः प्रवर्तको निवर्तकश्च ॥ प्रवर्तकस्तु ॥ दर्शेनात्वा पितृ

संश्रित्यो दद्यात्कस्तिलोदकं ॥ अर्ज्यं च विधिवद् दद्यात्संतति स्तेनवर्द्धने ॥ ३ ॥ निवर्त-

३८३

कस्तु ॥ अमायां च नगच्छेत् प्राप्ता कालमपि स्थियम् ॥ अमां वा स्यादां नाधीक्षीतना ॥
पयेदिति ॥ ४ ॥ तिष्ठि नक्षत्रवासादि साधनं पुण्य पापयोः ॥ प्रधान गुराभाद्विज्ज-
त्वा तंत्रेण तेक्ष्माः ॥ ५ ॥ अतश्च तिथयो विध्यं गत्वेन निश्चितव्याः ॥ तत्र कातिथ-
यः ॥ अति पदाद्याः षोडशा एव तत्रा होरात्रेण सूर्य मंडला चंद्रस्य प्रथम कला नि-
र्गमे षुक्ल प्रति पद्मवति ॥ एवं द्वितीया होरात्रेण द्वितीया कला निर्गमे द्वितीया भव-
ति ॥ एवं तृतीया दयो द्वादश्याः ॥ एवं पंचदशे ना होरात्रेण पंचदश्याः कलायाः
निर्गमे सूर्या च च्छमसो रत्यंत इरा सूर्यिना ॥ एवं अस्मिं पूर्णिमायां संपूर्ण मंडलस्य
नक्षोः षोडशे ना होरात्रेण एक कलाया रवि मंडल प्रवेशे कस्त प्रति पत् भवति ॥
एवं क्रमेण द्वितीयाद्याः ॥ एवं त्रिंशत्तमे ना होरात्रेण पंचदश्याः कलायाः प्रवेशा
लक्ष्या चंद्रमसो रत्यंत सन्धि कर्षादिमावा स्या भवति ॥ नन्वेवंति धीनां विध्यं गत्वे-

३३ नविधि नैवस्मिद्धत्वात् तन्मिर्त्यया प्रयोजनम् ॥ सत्यं ॥ षष्टिर्घातकालमकं कालावधि-
 ३३ नानां सित्थानां संपूर्णत्वेनानिर्णयत्येऽपि यत्र तिसृषु द्विद्विद्वांसो भवन्तस्तत्रैकस्यास्तिथि-
 र्द्विनहय व्यापित्वेन तसिथो विहितं कर्म कुरु कर्तव्यमिति तेषामे ॥ अवश्यं निर्णय-
 कर्तव्यः ॥ सतिथिजिभा ॥ पूर्वो ह्यर्थः हिंसा चेति पूर्वः समातिथिः ह्यर्थः तद्विद्विः हिंसा-
 हयः ॥ यदाहौधयः ॥ पूर्वो ह्यर्थस्तथा हिंसा त्रिविधिं तिथि लक्षणं ॥ पूर्वो ह्यर्थो पौ-
 ष्ण्यो हिंसा स्यात्पूर्वकालिकी ॥ तत्र तिथीनां वेधनिर्णयमाह ॥ सर्वोस्तिथयः पक्षद्वयेः
 पिसामान्येन पूर्वया परया च तिथ्या त्रिभिर्महर्जैर्विद्वांस्युः ॥ यदाहौधे नसि ॥ पक्ष-
 द्वयेऽपि तिथयः स्तिथिं पूर्वास्योत्तरम् ॥ त्रिभिर्महर्जैर्विद्वांसि ति सामान्योऽयं वि-
 धिः स्मृतः ॥ नत्वेयं वेधतिथिस्सामान्यविधये न भवति ॥ तथा च कुंहे ॥ नागो ह्यद-
 शनाडीभिर्द्विप्रेतं दशभिस्तथा ॥ भूतोऽष्टादशनाडीभिर्द्विप्रेतं तिथिम् ॥
 सत्यम् ॥ अयं विप्रोऽयं वेधजतरतिथिविधयः ॥ सामान्यवेधस्तु त्रिपुहर्जै एव पूर्वति-

कथं विधिविषयः ॥ तद्वक्तृकोर्मो ॥ चतुर्दशोपचमीच तथा च दशमी तिथिः पूर्वोत्तिथिं द्
 २५ जयंति विभिरेव सुहृर्न वैः ॥ अयंच त्रिसुहृर्नादिवेधः उदयादूर्ध्वं पूर्वतिथ्या अस्त
 मस्यात्पादपरतिथ्या चेत्यवगम्यते ॥ कुतः वचनबलादेव ॥ देवलः ॥ उदयन्नेव सु-
 वितायां तिथिं प्रातिपद्यते ॥ मातिथिस्तकला द्येया दानाध्ययनकर्मसु ॥ साति
 थिस्तद्द्वेरात्रं यत्रास्तं याति आस्करः ॥ उदिते दैवतं भर्तौ पैत्र्यं चास्तं गतिरवौ ॥
 त्रिसुहृर्न महोपासातिथिर्वेदव्यकव्ययोः ॥ अतः उदयात्त्रिसुहृर्न व्यापिन्यां दैवतं
 कर्म ॥ अस्तमया त्रिसुहृर्न व्यापिन्यां पितृकर्मका धर्मस्य एकभक्तजनादिषु भिनोपेध
 स्य विचारः ॥ सकादशो जनादिषु च तिथयोऽवश्यं हास्य वक्ष्यापि निर्णयोः ॥ अथ तिथी
 नां पटिकात्मकत्वात् पटी निर्णयिते ॥ सख्यसिद्धन्ते ॥ दाद्विः प्राणोर्विनाडी स्यात् तत्पद्यमा भाना
 उच्यते ॥ आस्यार्थः ॥ दशगुर्वक्षरोच्चारणा कालः प्राणाः ॥ कंकंकंकंकंकंकंकंकंकंक
 इति ॥ विनाडी कला तस्याः साधकः ॥ स्तोको यथा ॥ लोकोक्षेमायासीन्मत्स्यः कु-

स्मः कालः पुंसि हो इत्याकारे एमो एमः छलो वौडः कल्कीवेत् ॥ सर्वानां क्लारं
 जाना रूपं नाना नामानं योगिभ्यो देवानां देवं वंदे तं गोविंदम् ॥ दृष्टि कल्पाभि
 र्भागो घटी अन्योऽपि प्रकारः ग्रंथान्त्रे ॥ ताम्रस्य षड्विः परैर्भोजनम् ॥ त्रिंशद्गुल
 वित्तार मुच्छ्रुतं चतुरंगुलम् ॥ स्वर्णमायेन हस्ता च चतुरंगुल केटिकां ॥ मध्यभागे
 तथा विहं घटिका तु प्रजापते ॥ तद्वंशेणं मसा प्राञ्चं यावत्कालेन पूर्यते ॥ सकललोष
 टिकायास्तु पूर्वाचार्यै रदाहृतः ॥ एकभक्तादि ज्ञातां गत्वा दैकभक्तादि ज्ञातानां स्व
 रूपं कालश्च निरूप्यते ॥ तत्र तानि ॥ ज्ञातान्येकभक्तनक्ता याचितो पवास भेदेन चतु
 र्धर्भवन्ति ॥ तत्रैकभक्तं नाम हि नार्द्ध रूपं मध्यान्तादुपरि नियमेन भोजनम् ॥ दि
 नार्द्धसमयेऽतीते भुज्यते नियमेन यत् ॥ एकभक्तमिति त्र्योक्तं यत्तस्मादिदं व
 हि ॥ तत्रैकभक्तस्तु मध्याह्नव्यापि न्यासेव ॥ तदाहौधायनः ॥ उदये तु यदा सख्य
 इ नक्तस्यास्तमये ति धिः ॥ मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या एकभक्तं ज्ञतेति धि रिति ॥

कालोऽत्रपंचविधः ॥ प्रातः संगवमभ्यान्हा परान्ह सायान्ह भेदान् ॥ पुराह व्यासः ॥ सुहृ-

र्षे त्रैत्रितयं प्रातस्तावानेवतु संगवः ॥ मध्यान्ह रित्र मुहूर्तस्याह परान्ह श्रुता ह्यष्टाः ॥

सायान्ह रित्र मुहूर्तश्च सर्वकर्म्मसु गार्हितः ॥ एवं त्रयोदशं घटिका भारभ्यासाद्याह-
शी घटिका यावत्सु षट्षटिका धिकी मभ्यान्हः ॥ तत्राष्ट्युत्तरस्त्रिंशद्वटिका त्रये-

एकभक्तं कर्त्तव्यं ततः सूर्यास्तपर्यन्तं गौणः ॥ तत्र पूर्वैर्द्व्यध्याहारपरिद्व्यर्थांश्चिस्तत्र विंशोप्यध्या-

हिस्तत्रापि सान्ध्यं वैषम्यमिति षट्षटिकाः ॥ तत्राद्यधोरसं देहस्य ॥ तृतीयेतु पूर्वैर्नृ-

गौणमूल्यव्याप्तिः सत्त्वात्पूर्वैर्नि ॥ माधवः ॥ युग्मवाक्यान्त्रिंशद्यः ॥ इति हेमादिः ॥ च-

तुर्थपक्षे परैर्वसंकल्प काले सत्त्वादिति चोचितं ॥ गौण कालव्याप्तिश्च तुर्थपक्षे स-

त्वात् ॥ वैषम्येणं प्राच्याहो याधिका साग्रह्यास्तान्ध्यापूर्वा ॥ अयंच सत्तत्रैकभक्तनिर्णयः

॥ अत्र गौणोऽयं वास प्रतिनिधी तदनुषारेण निर्णयः ॥ तथा चोक्तं ॥ कर्म्मणोऽयस्य यः

कालः तत्कालव्यापिनीति धिः ॥ तदा कर्म्मणि कृत्वा तदा स हृद्दीन कारणम् ॥ अथ-

संवि
त्वं ॥ यो यस्य विहितः कालः कर्मणः स्तदुपक्रमे ॥ विद्यमानो भवेदंगो नो ज्जितः

३२७

प्रक्रमणोतु दूत्येकभक्तनिर्णयः ॥ अथ नक्तं विधिनिर्णयः ॥ नक्तं नाम दिवा शानवर्ज्यपि
त्वारं शोभोक्तव्यमिति ॥ दिवा एव विन्यामेव तिथौ कार्यार्थः प्रदोषव्या-
पिन्यामेव ॥ तथा च स्कंदे ॥ दिवा एव च तं यच्च एकमेव तिथौ स्मृतम् ॥ ताभ्यामुभय-
व्यापिन्यां चार्थादेवं व्रतं व्रती ॥ अत्रोभयव्यापिन्यामेव ॥ तथा च कैर्मै ॥ प्रदोषव्या-
पिनी यत्र त्रिमुहूर्ता यदा भवेत् ॥ तदा नक्तं व्रतं कुर्यात्स्याध्यायस्य निषेधव्रतम् ॥ वस्तु-
क्लिष्टम् ॥ प्रदोषव्यापिनी गृह्यातिथिर्नक्तं व्रते सदा ॥ प्रदोषस्तु ॥ उदयात्माकृतनी-
संध्या षटिका त्रयमिष्यते ॥ सायं संध्या षटिका अस्तादुपरि भास्वतः ॥ त्रिमुह-
ूर्तं प्रदोषस्याज्ञाना वस्तं गते सति ॥ नक्तं तत्र तु कर्तव्यमिति शास्त्रस्य निश्चयः ॥
इति महर्षेण व्यासोक्तिः ॥ ननु षड्षटिकात्मके प्रदोषे आद्यं घटी त्रयं संध्या कालः ॥ स-
दति अथ च तस्मिन् षटिका त्रये नक्तं व्रतं निमित्तं भोजनं प्राप्तमिति ॥ तस्मिन्का-

स्वे भोजनाभावादिति निविद्धम् ॥ तथा च स्वभावपि ॥ चत्वारो मासि कस्मैलि। संख्यायां
 परि वर्जयेत् ॥ आहारं भेषुन निद्रां स्वाध्यायं च चतुर्थकम् ॥ संख्या काले भोजन
 नियमे नैव विघटिकात्मक संख्या अथ एते संख्या नाम दिन एभ्योः संधी चया प्रनादि
 क्रियैव श्रेया ॥ संधिश्च खंडमार्त एडो पलादितः कालस्तस्यात्य त्वा लिङ्गया या-
 श्ववितत्वेन स्वल्प काले कर्तुं मशक्यत्वात् ॥ श्रुत्यार्थवाधे सति संख्या शब्देन सं-
 धि शब्दः ॥ पूर्वपरौ वा क्रिया पर्याप्तः कालो लक्ष्यते ॥ यतः लक्ष्यते ॥ प्रातः संख्या स-
 नस्तत्रा मध्याह्ने मध्यभाक्करा ॥ ससूर्या पश्चिमा संख्या संख्या त्रय मिति रीतिता ॥ अ-
 तो मुराव्य काले संख्या वंदनं देवान् कृतं तत्र गौण काले घटी त्रयात्मके कर्तव्यता-
 मभ्यनुज्ञापनार्थं संख्या गार्जितादिना विहिता नध्यय नादि परश्च नक्तं ज्ञात विहि-
 त भोजनं न क्षत्र दर्शने एव कर्तव्यम् ॥ तथा च भविष्ये ॥ शुद्धर्त्तानं दिनं नक्तं प्रवदन्ति
 मनीषिणः ॥ नक्षत्र दर्शना नक्तं महं मन्ये गणाधिप ॥ नक्षत्र दर्शनादिति त्यप-

संसिन्तोपे पंचमी ॥ अतश्च नक्षत्र दर्शनं प्राप्य नक्तं विहितभोजनं विधेयमित्यर्थः ॥ सुहृ-
 ३२४ तीर्नदिनंतुयति परम् ॥ यदाह देवलः ॥ नक्षत्र दर्शनात् नक्तं गृहस्थानां स्मृतं बुधैः ॥
 यत्तर्हि नाद्यमेभागो तस्य राज्ञो निश्चिद्यते ॥ सौरजक्तं विषयेषु ॥ आत्मनो हि गुणा द्वा-
 यो यदा संति यते रविः ॥ सौरनक्तं विजानीयात् नक्तं निशि भोजनम् ॥ इति द्वा-
 दशरणे क्षतस्सुमं वृत्तिरपि ॥ त्रिमुहूर्तस्थगे चान्हि निशि चैतावतीति धिः ॥ तस्यां सौ-
 रं भवेन्नक्तमहं न्ये वतु भोजनम् ॥ तथा च स्कंदे ॥ नक्तं निशायां कुर्वीत गृहस्थो वि-
 धि संयुतः ॥ यतिश्च विधवा चैव कुप्यात् तत्स दिवा कश्चिति ॥ शुभर्वास्तु राजा वे-
 व ॥ हरि नक्तं विप्रैः ॥ कालादर्शे स्कंदे ॥ उदयस्था सदा पूज्या हरि नक्तं ज्ञतेति धिः ॥ अ-
 न्यनक्तं तु संक्रांत्या दौ राजा देव ॥ निधेयस्य रात्रां भोजनं गोचरत्वेन वाप कल्पा-
 त् ॥ दिनद्वय व्याहो परा ॥ उभयोर्ध्यात् दिवा तिथ्योः प्रदोष व्यापिनी ति धिः ॥ तत्रोत्तरं तु
 नक्तं स्याद्भूमयं चापि सायतः ॥ इति कालादर्शे जाचालि वाक्यम् ॥ अन्यपक्षे तु एकभक्तवर्तिनो

सिद्धि ॥ चोयं नाम इव्यां तर्गतं सां ॥ इति न मुख व्यापारेण वा गृहीत्वा या इत्यतः असा-
 रसन्वत्यज्यते ॥ यथा अफले क्षुरं डादिः ॥ अस्य च सामान्यत एक भक्ष्य रूपत्वात् ॥
 एक भक्त वर्देव मथ्यान् व्यापिन्या मेव तिथौ सति संभवे विधेयं ॥ परं प्रार्थनया दिने-
 भोजना संभवे सति ॥ एतौ चाप्र प्रार्थनया भोक्ता ज्ञान ॥ अन्यथा ॥ भोक्षे ह मेवेति सं-
 कल्प भंगः स्यात् ॥ एतेषां मेक भक्तादि व्रतानां खंड तिथिं विहाया खंड तिथावेवोप-
 क्रम सप्तो सीकुर्यति ॥ या तिथी रुदयारभ्य दिनाद् व्यापिनी भवेत् ॥ सारं खंड तिथिः ॥
 तस्यां व्रतानां प्रारंभ समाप्तिं च न लुप्यति ॥ पक्षह सत्यज्ञातः ॥ उदय स्थार विध्या-
 दिन भवेदि न प्रथगा ॥ ता खंडान व्रतानां सा तत्प्रारंभं समाप न भिर्ति ॥ अथ व्रत परिभा-
 वा व्रताधिकारिणो मदन खे भविष्ये ॥ अनप्रय स्तुये विप्रास्ते प्रां प्रेयो विधीयते ॥ व्रतोप-
 वास निवर्धये न्मां नादानै स्तथा नृप ॥ उपवासं तु अनमिन्ना स्त्राण परम् ॥ अत एव देवलः ॥
 आहि ताग्नि रनञ्जो प्र व्रत्सा चारी नु ते त्रयः ॥ अक्षंत एव सिन्धु न्निनेषां सिद्धि रन प्र-

तम् ॥ एका रूपा एव भित्तु प्राक् च्छूद्र स्यादप्यधिकारः ॥ यथा ॥ भूद्रीवर्णभ्रनूर्ध्वदि-

वर्णत्वाद्भ्रममर्हति ॥ वेदमंत्रस्वभावासाहावधद्वारादिभिर्विनिनेति ॥ व्यासः ॥ आद्यास्तु ॥

वैश्यभूद्रयोर्द्वैराज्यधिकोपवासनिषेधः ॥ यत् ॥ वैश्याः भूद्राभ्रयैमोहाहुपावासं
प्रकुर्वते ॥ निरात्रं पंचरात्रं चातेषां सुद्धिर्न विद्यते ॥ दहीहेमादिः एवं स्त्रीणामपि तु स्कंदे
नास्ति स्त्रीणां पृथक् यज्ञो न व्रतं नाप्युपकरणम् ॥ भर्तुभ्युभूषयैवेता लोका निष्ठान्
व्रजंति हि ॥ अन्यथापि ॥ यदेवैभ्यो यच्च पित्रादिकैभ्यः कुर्याद्भर्ता भ्यर्चनं सत्क्रियां
च ॥ तस्य सार्द्धं साफलं नान्यचित्ता नारी भुंक्ते भर्तुभ्युभूषयैव ॥ आदित्यपुराणे ॥ नारी
खल्वननुज्ञाता भर्त्ता वापि सुतेन वा ॥ विकलं तद्वेत्तस्यायत्करोत्योर्द्ध्वैहिकम् ॥
सोर्द्ध्वैहिकं पारलौकिकं तद्वर्तुस्तुज्ञा विषयं ॥ अत्र विशेषो हरिवंशे ॥ ज्ञानं च कायं प्रि-
रसस्ततः फलमवाप्नुयात् ॥ ज्ञाता स्त्री प्रात रृत्याय पतिं निज्ञापयेत्सती ॥ तथा च ॥
यस्मिं त्वैहिवंशं पात्रं सकुशं साधतं तथा ॥ गोभृगं दक्षिणं सिन्धुं प्रगृहीयाच्च तज्जलम् ॥

श्रौतद्वर्ताप्रभय ॥ ततोभर्तुस्सती दद्यात्तना तस्य प्रयतस्य च ॥ आत्मनंश्चाभिधेत्कु-
 र्याच्च तव शिष्यरसित ज्ञातम् ॥ उपवासेषु कर्तव्यमेतद्वि व्रतकेषु च ॥ सर्वव्रतेषु संकल्प-
 विधिष्व ॥ भारते ॥ गृह्यसौद्वर्तप्रात्रंवारिष्वर्णमुदङ्मुखः ॥ उपवासं तु गृह्णीयाद्यज्ञा सं-
 त्ययेद्बुधः ॥ हस्तेनैवेत्यर्थः एवं यथाविहित काले व्रतारंभः ॥ व्रतारंभे च विप्रोद्यो नृणा-
 रणे ॥ सत्यव्रतदेव लौ ॥ अभुक्त्वा नातराहारं स्नात्वा च म्यसमाहितः ॥ सूर्याय देवताभ्यश्च
 निवेद्य व्रतमाचरेत् ॥ अभिषेकं कर्तुं निषमाः ॥ ह्यमा सत्यं दद्यादानं श्रोच भिंदि च निग्रहः ॥
 देव प्रजापि हवनं संतोष स्तेय वर्ज्यं नम् ॥ सर्वव्रते व्ययं धर्म्यं स्नामान्यो दशाधा स्मृतः ॥
 ॥ अग्नि होमस्त देव त्यो व्या हति स्त्रियो वा ॥ विबुधैर्मन्त्रिभिः ॥ तज्जप्य जपन ध्यानं तत्क-
 या प्रवणादिकम् ॥ तदर्पणं च तन्नाम कीर्तनं प्रवणादयः ॥ उपवासं कृत्वा भेते
 गुणाः प्रोक्त्वा मनोयिभिः ॥ कौर्म ॥ वहिर्गोमांस्त्यजावृष्टिं पतितं च रजस्वलाय ॥
 न स्पृशे न्याभिभाषे तने क्षेत व्रत वासरे ॥ पृथ्वी चंद्रे ह्ये मिषुराणे ॥ स्नात्वा व्रत वता-

सर्वं सर्वं यत्तु ब्रतमूर्तयः ॥ पूज्याः सुवर्षा मय्याद्या प्रश्रुत्या वैभूमि प्रापिना ॥ उपो होत
 रं यच्च सामान्यं ब्रतानां दानमैव च ॥ चतुर्विंशद्वाह्वराणामप्येव वा एक एव वा ॥ विप्राश्च
 ज्या यथा प्रगत्या तेभ्यो ह्येव च सहस्रिणाम् ॥ अत्र विप्रा इति शुक्लिंगनिर्देशात्पुनरास
 दभोज्या न तु विप्रयः ॥ ब्रतमूर्तयो ब्रतदेवता प्रतिमाः ॥ प्रतिमा स्वरूपं मदनखे ॥ अनुक्तं
 इव्यतत्संख्या देवता प्रतिमा नृप ॥ सौवर्णी राजनी तात्री हस्त्रजा मतिर्की तथा ॥ चि-
 त्तजा पिटलेखो त्या निज किं तानुरूपतः ॥ आमाया स्थल पर्यंतं कर्तव्या शाल्यवर्जि-
 तैः ॥ तत्रैव ब्राह्मे ॥ आज्यं इव्यमना देशे जुहोतिषु विधीयते ॥ मंत्रस्य देवता या अथ प्रजा-
 पति रिति स्थितिः ॥ मंत्रानुक्तौ समस्त व्याहृति रूपो मंत्रः ॥ प्रजापतिश्च देवतेति ॥ कल्प
 तरुः ॥ अनुक्तं संख्याय तस्याच्छेदयद्येतां भवेत् ॥ उपवासं द्विजः कृत्वा ब्राह्मणा नो
 च भोजनम् ॥ ह्युपार्हेनास्य सगुण उपवासो विधीयते ॥ ब्रतोद्यापना नुक्तौ प्रथमी चंशे द्येनादि
 पुण्ये ॥ कुर्यात्तुद्यापनं तस्य समानो यद्दुदितिर्य ॥ उद्यापनं विना यत्तु तद्भूतं निःफलं-

संक्षि भवेत् ॥ यदि चोर्धा पनं नोक्ते व्रतानुगुणतश्चरेत् ॥ किंता सुसारतो हृद्या दनुकोद्या-

३६५ पनेव्रते ॥ गार्ध्वैवकाचनं दद्याद्व्रतस्य परिपूर्तये ॥ अग्रकोनारदीये ॥ सर्वेद्यामप्यस्या-

मेतु यथोक्तं कर्णे विना ॥ विप्रवाकां स्मृतं शुद्धं व्रतस्य परिपूर्तये ॥ दृष्ट्या विप्रवचो

यस्तु गृह्णाति मनुजः शुभम् ॥ अदत्ता दक्षिणां पापः स याति नरकं भुवम् ॥ भारते वोदर

नंदे देवीपुण्ये ॥ व्रते च तीर्थेऽप्यपने आर्द्धेऽपि च विप्रो व्रतः ॥ परान्नभोजनाद्देवि यस्या

नंतस्य तत्फलम् ॥ ज्ञान्ये ॥ नित्यस्यायोमिता हारे गुरुदेव द्विजा च्चैकः ॥ क्षारं-

क्षौद्रं च लवणं मधुमांसानि वज्जयेत् ॥ क्षारस्तु तत्रैवोक्ताः ॥ तिलमुद्गाहते शिष्यं प्रा-

स्य गोधूमकोद्रौ ॥ धान्यं कदेव धान्यं च शमी धान्यं तथैव च ॥ स्विन्न धान्यं तथा

पण्यं मूलं क्षारं गणाः स्मृताः ॥ गोधूमा न्ननु तत्रैव प्रशस्तम् ॥ इीदृषद्विषद्विक-

मुद्गाश्च कपालाः सतिलं पयः ॥ ग्रामाकाः शालिनी चारः गोधूमाद्या व्रते हिताः ॥

कृष्मां हालावहंता कपालं कीज्यो त्स्विताः त्यजेत् ॥ चरुसैध्वं प्रोक्तं कणाः प्राक्ते दक्षि-

निष्ठतं मधु ॥ प्रथमा माकाः शालिनी चारः प्रावकं मूलं तदुल्लभम् ॥ हविष्यं व्रतं नक्ता द्वाविंश-
 १६६ कार्यादि के हितम् ॥ मधुभासं विहायान्यद्वते च हितमीरितम् ॥ प्रामी धान्यं आधादिः
 पालं की मध्यक्षे पोद् इति प्रसिद्धा ॥ ज्योतिषका को प्रातकी ॥ निताक्षरायां गो तमः
 चरभै र्द्वयप्रकृ कणाधावक शक पयोदधि ॥ धृतमूल फलोद कानि हवीं व्युत्तरै र्गन्ध-
 प्रस्तानि ॥ पयोदधि घृतं च गव्य मिमि ॥ गृहीत व्रतस्य गोतु मदन रत्ने तु व्रत लेपः ॥ पूर्वव्रतं
 गृहीत्वा योना चरे त्कामसो हितः ॥ जीवन् भवति चां डा लो मृतः न्या चाभि जायते
 ॥ प्रायश्चित्तं तु गव्यी चंद्रे रद्वे आग्नेये गारुहे ऽपि ॥ ओ धात्प्रमादा स्त्रोमा द्वा व्रत भंगो भवे
 द्वादि ॥ दिनत्रयं नक्षुं जीत मुंडनं शिरसो ऽथवा ॥ यच्च ॥ प्रायश्चित्तं ततः कृत्वा पुनरे
 व व्रती भवेदिति वचनं ॥ श्रुति क्रान्तमपि व्रतकार्यं भवेति ॥ शूल पाणिः ॥ तन्मभ्येतु
 व्रत श्रेय सत्त्वे क्रोयम् ॥ एतच्च शक्तं विषयं ॥ अष्टौ तु कालहेमाक्षे पुराणां तरे ॥ उ-
 पवासा समर्थाश्चेदे कं विप्रं तु भीजयेत् ॥ तावद्नादि वा दद्याद्भूक्तश्चेद्विग्रहं तया ॥

भुक्तः कृत भोजनः ब्राह्मण भोजनं विनोति श्रेयः ॥ सहस्र समितां देवीं ज्येष्ठा आरा-
 संयमान् ॥ कुर्याद्वा दशसंख्या कान् यथा शक्तवानु यो नरः ॥ इति शुद्धित्वे मात्से ॥ उप-
 वासे च शक्तानां नक्त भोजन मित्यते ॥ मदन त्वेवाय वीथि ॥ इत्यादातो पवास स्थ फलं-
 प्राप्नोत्य संशयम् ॥ अणुर्कैवलः ॥ ब्रह्म चर्यं तथा श्रेष्ठं सत्यमभिषवर्जनं ॥ व्रते-
 ध्वेतानि चत्वारि द्यानीति विनिश्चयः ॥ मात्से ॥ तस्मात्कृतो पवासेन स्नानमभ्यंगा-
 र्चकम् ॥ वर्जनीयं प्रयत्नेन व्रतं तत्परं नृप ॥ नियमस्तु तत्र स्यान्दिवाणीयाः ॥ अथ
 स्त्रीव्रतेषु विशेषा उच्यन्ते ॥ तत्र हेमाद्रौ व्रतकांडे गारुडे ॥ गोपालं कार तां वृत्तिं शुभ्य मात्मानु
 सिपनम् ॥ उपवासेन दुष्ट्यातिहतं भावनमजनमिति ॥ इदं च सभर्तृ को पवास विवयम् ॥
 अंजनं च सतां वृत्तं कुंकुमं रक्तं वा ससी ॥ भार्ये त्सापवासायि भवे धव्य कारं यतः ॥ वि-
 धवायति भार्येण कुमारी वाय दक्षयति ॥ विबुधैः सि ॥ सर्वेषूपवासे शुभ मात्वा छ-
 सुवासिनी ॥ भार्ये इत्तं वस्त्राणि कुर्यान्मानि सिता निच ॥ विधवा शुक्ल वसन मेकं मे-

१ वरिधारेत् ॥ मनुष्य ॥ पुष्पा लंकारवर्णाणि गंधधूपान्नुलेपनम् ॥ उपवासेन हृष्यती-
 ३५६ त्यादि ॥ गदनस्तेज्मासोऽपि ॥ दंतधावनपुष्पादि व्रतेषु स्थाननुव्याप्ति ॥ यद्यपीदं सर्वोप-
 वास विषयं प्रतीयते ॥ तथापि शिष्टाचारानुभूतात् ॥ सौभारया ह्यर्थं क्रियमाणा नवरात्र-
 त्रिरात्राद्युपवासविषयमेव ॥ नत्वेकादश्यादिविषयम् ॥ असकृज्जलपानाच्च सक्ततां
 वृत्तभक्षणात् ॥ उपवासः प्राणश्रेतदिवास्वापाच्च भेषुनात् ॥ इत्यपरेर्हेदेवलेन ॥ तन्ननि-
 वेधात् ॥ नचास्य पुंविषये सावकाशत्वात् ॥ स्त्रीणां तां दूलादिशमं प्राप्नोत्वात् ॥ तां दूला-
 दिनाप कास्यैवैकादशी तरविषयत्वेनैव परीत्य स्यापि सुवचत्वात् ॥ हरिवंशे ॥ अंजनं-
 रोचनां चैव गंधाः सुमनसस्तथा ॥ व्रते चैवोपवासे च नित्यमेव विस्मर्जयेत् ॥ शिरसोऽ-
 भ्यंजनं सौम्यं नैव भेतत्प्राप्तये ॥ नपादयोर्नो ग्रात्रस्य स्नेहेनेति स्थिति स्मृता ॥ तत्रैव ॥
 अशुभप्राप्तौ रोषश्च कलहस्य कृतिस्तथा ॥ उपवासाद्भूताद्वापि सद्यो भ्रंशयति स्त्रिययम् ॥
 रत्नियमित्युपलक्षणम् ॥ शिवधर्म ॥ दानं व्रतानि नियमं ज्ञानं ध्यानं हुतं जपः ॥ यत्ने-

नापि कृतं सर्वं क्रोधे तस्य दृष्टा भवेत् ॥ अथ सत्काशे निर्णयः ॥ तत्र शा वस्त्या प्रोच-
 योः सर्वस्मार्तकर्म निवृत्ति निबंधेषु स्य द्येव ॥ गोडास्तु सताशोचाद पिता मातुः ॥
 जानुह्वंक्षतजे जाते नित्य कर्मज चाचरेत् ॥ नेमिति कंच तद धश्च वद्रक्षो न चाच-
 रेत् ॥ लूत केच स मुत्पन्ने ज्वर कर्मणि मेधुने ॥ धूमो हरे तथा वातो नित्य कर्मणि सं-
 त्यजेत् ॥ द्रव्ये मुक्ते ल्व जीरे च नेव भुक्तापि किंचन ॥ कर्म कुर्यान्नरो नित्यं सूत के वृत्त
 के तथेति ॥ कालिका पुराणात् वस्तुतः ॥ पूर्व देवी पूज्योप क्रमात् नाना विषय त्व मस्येति
 युक्तं व्रतमिः ॥ तथा हेमाद्रौ पाद्ये ॥ गमिणेति स्तुति कादिश्च कुमारी वाय रे गिणी ॥ ददा भ्यु-
 ह्ना तदा न्येन कार्द्वेत्नयता स्वयमिति ॥ तेन यस्मिन्नते यत्पूजायुक्तं तद न्येन कारये-
 त् ॥ प्राण नियमान्स्वयं कुर्यात् ॥ अद्वित्वे विष्णुः ॥ बहु कालिक संकल्पो गृहीत अचुत्वाय
 दि ॥ सूत के वृत्त के चैव व्रतं तेनैव दुष्यति ॥ एतत्काभ्य परम् ॥ नित्यं त्वना र्द्वमिति
 कार्यमिति ॥ गोडाः ॥ मंदनले ॥ पूर्व संकल्पितं यच्च व्रतं सु नि यत द्यौः ॥ त ल्कर्तव्यं नरेः

सर्वधारायत् ॥ मनुर्मप ॥ पुण्या लंकारवर्ज्याणि गंधधूपा नुलेपनम् ॥ उपवासेन दुष्यती-
 त्यादि ॥ गदनस्ते व्यासोऽपि ॥ दंतधावनपुण्यादि व्रतेषु स्थानदुष्यति ॥ यद्यपीदं सर्वविष-
 वास विषयं प्रतीयते ॥ तथापि प्रियं चारा नुभतात् ॥ सौभाग्याद्यर्थं क्रियमाणा नवरात्र-
 तिरात्राद्युपवासविषयमेव ॥ नत्वेकादश्यादिविषयम् ॥ असहजलपानाच्च सहजतो-
 वृत्तभक्षणत् ॥ उपवासः प्रणश्येत दिवा स्वायाच्च भैषुनात् ॥ इत्यपार्ह्वेक्षलेन ॥ तन्ननि-
 धेयात् ॥ न चास्य पुंविषये सावकाशत्वात् ॥ स्त्रीणां तां वृत्तादिशगमात् ॥ तां वृत्ता-
 दिनापकस्यैवैकादशी तर् विषयत्वेनैव परीत्यस्यापि सुवचत्वात् ॥ हरिवंशे ॥ अंजनं-
 रोचनां चैव गंधाः सुमनसस्तथा ॥ व्रते चैवोपवासे च नित्यमेव विस्मर्जयेत् ॥ शिरसोऽ-
 भ्यंजनं सौम्यं नैव भेत तत्प्रस्यते ॥ नपादयोर्न आश्रयस्ते हेनोति स्थिति स्मृता ॥ तत्रैव ॥
 अशुभप्राप्तौ रोषश्च कलहस्य कृतिस्तथा ॥ उपवासाद्गता ह्यपि सद्यो भ्रंशयति शिष्यम् ॥
 तत्रियमित्युपलक्षणात् ॥ शिवधर्मे ॥ दानं व्रतानि नियमं ज्ञानं ध्यानं हुतं जपः ॥ यत्ने-

वेत् ॥ तत्रैव ॥ स्वयं कर्तुं मया कृतं कारयेत्तु भूषसा ॥ इदं च सर्वं वर्णं साधारणं भावं प्रेषा

६०१

त ॥ अथ स्वपत्नीर्यं सेवाप्रदञ्जयप्रसाधनम् ॥ विप्रैस्संयादितं यस्य सपन्नं तस्य तत्फ
लम् ॥ अत्र विप्रेयमाह त्रिकांडभट्टिनः ॥ काम्ये प्रतिनिधिर्नास्ति नित्ये नैमिति के चसः ॥ का
म्येऽप्युपक्रमे इदं केचित्प्रतिनिधिर्विदुः ॥ न स्यात्प्रतिनिधिर्नैव स्वाभिदैवाभि
कर्मसु ॥ सदैव कालयो न्यस्ति नारणे रग्निरेव सा ॥ नापि प्रतिनिधानं व्यतिथिद्वं
स्तु कुत्रचित् ॥ हिरण्यकेशिस्तर्जोऽपि ॥ न स्वाभि त्वस्य भार्यायाः देशस्य कालस्याग्नेर्दे
वतायाः कर्मणः शब्दस्य च प्रतिनिधिर्विद्यत इति ॥ अथ ब्रह्मदि सन्निप्रतिनिधिर्यः ॥ तत्र
लिखिद्वयसन्निपति ॥ तत्रोक्तं दानहोमादि क्रमेणानुष्ठेयमविरोधात् ॥ इदं पूर्वोक्तं
वैव ॥ एकमध्येऽन्यकामः कर्मैरिभस्तु न भवत्येव गुणफलादने ॥ यद्ब्रूवतामि क-
र्ममात्रमनं येन व्यदधान दोषस्सर्वत्र साम्यतः ॥ शिष्टास्तु ॥ कार्तिक रत्नानादिभ
षोडशहोमबुलाभारत अचरादिशास्त्रेति तजित्यमध्ये काम्यमध्ये तु त्रित्यमप्यन्येके

१०
 धुइं सानाच्चन विवर्जितम् ॥ माधवीये कोर्मोऽपि ॥ काम्योपवासे प्रभाते स्वतः स्नानं कृतं
 के ॥ तत्र काम्यं व्रतं कुर्याद्दिनाच्चन विवर्जितमिति ॥ एतेन सांगेऽधिकं प्राप्तं इति गार्हपत्यं
 पूजादि कार्यमिति वर्द्धमानोक्तिः परास्ता ॥ प्रारब्ध पूजादि कार्यं भवेत्तत्रैव वि श्रेयं वक्ष्या
 मः ॥ एवं जस्त्रलापि ॥ यत्तु सत्यं जलः ॥ प्रारब्ध दर्शितः पुंसां नारीणां यद्भजौ भवेत् ॥ न तत्रापि
 व्रतस्य स्यादुपरोधः कदाचन ॥ तत्त्वति निधिना कारयेत् ॥ तदुक्तं नरनरत्ने मास्त्रं ॥ अंरा
 एतुरजोयोगो पूजामन्येन कारयेत् ॥ अतिनिवयश्च निर्णयमृते ॥ पेशी नक्षिः ॥ आर्य्यपल्लु
 र्न्नतं कुप्यति भाव्यायाश्च पतिर्ज्ञतम् ॥ अस्माभ्योऽपरस्त्राभ्यो ज्ञतं भगो न ज्ञायते ॥
 स्त्रादेऽपि ॥ पुत्रं वा विनयोपेयं भगिनी भ्रातरं तथा ॥ स्वामभवाद एवाभ्यं चाह एवानियो
 जयेत् ॥ काल्यायनः ॥ पितृभ्रातृभ्रातृपतिगुर्वर्ध्वविशेषतः ॥ उपवासं प्रकुर्यात् ॥ पु
 र्यं प्राप्तं गुणम्भवेत् ॥ मदनरत्ने प्रभासखंडे ॥ भर्ता पुत्रपुरोधाश्च आता प्रत्नी सखापि च
 ॥ यात्रायां धर्मकार्येषु जायते अतिहस्तकाः ॥ एभिः कृतं महदेव स्वयं भवेत् कृतं भ-

सन्नि
एवं द्वादश्यां मासो पवास आद्ध प्रदोषादिषु ज्ञेयम् ॥ एवं काम्यनेमिनि काभृत्य त्वम् ॥ ६ ॥ ८ ॥

४०३

वलावलं स्वयम्बूह्य मिति दिक् ॥ इति व्रत परिभाषा ॥ अथ व्रतोपवासादिषु तिथीनां साधारण नि-

र्णयः ॥ अथ शुक्ल पक्षे द्वितीया तृतीया युक्ता तृतीया द्वितीया युक्ता ॥ चतुर्थी पंचम्या पंचमी च

तृथ्या षष्ठ्या सप्तमी सप्तम्या षष्ठी ॥ अष्टमी नवम्या नवम्यष्टम्या ॥ एकादशी द्वादश्या द्वा-

दश्या कादश्या ॥ चतुर्दश्या दोर्णमासी दोर्णमास्या चतुर्दशी ॥ अमावास्या अति पदा अति प-

दमावास्यायेति ॥ तद्वक्तृनिर्गमे ॥ युगमासि युगभूतानि षण्मुन्यो र्वसु रंधयोः ॥ रुद्रेण द्वादशी

युक्ता चतुर्दश्या तु पूर्णिमा ॥ अति पदाप्यमावास्यातिथ्योऽर्धुर्गमं महाफलम् ॥ व्यस्तमेतन्

महादोषं प्रवदंति मनीषिणः ॥ इति ॥ युगमं द्वितीया अग्निहृतीया युगं चतुर्थी भूतं पंचमी

षट्षष्ठी मुनिः सप्तमी वसुष्टमी रंधं नवमी रुद्रेकादशी नन्वत्र वाक्येषु शुक्ल पक्ष एव कथं

यदस्य ते तदुच्यते ॥ चतुर्दश्या च पूर्णिमिति प्रतिपदमावास्यायेति ॥ उभयोः साहचर्या च

एतयोर्ब्रह्म पक्षे असंभवात् ॥ देशस्येकादशी युता नवमी युता वा कार्या ॥ संपूर्णदश

भक्तादौ विराधस्तत्र ग्राथम्यादेक भक्तकार्यम् ॥ नर्तकं तु परेषु स्ततिथी गणकार्त्तकार्यम् ॥
 समकाली न विरुद्धज्ञतादौ त्वेकम् स्वयं कृत्वा न्यङ्गार्थादिना कारयेदिति माधवः ॥ यत्र तु
 शिवरात्र्यादौ त्रिधिमध्ये पाण्णया हि भोजनं प्राप्तं ॥ भूताष्टम्योर्द्दिवा भुक्ता रात्रौ भुक्ता च
 पूर्वाणि ॥ एकादश्यां दिवा रात्रौ भुक्ता चांदायणं चरेत् ॥ इति तन्निषेधश्च तत्र परया वेध-
 त्वा हि वैव भोजनम् ॥ निषेधस्तु रागप्राप्तं भोजनं विषयः ॥ एवमष्टम्यादिनर्तकवर्तिसंज्ञा-
 त्यादौ रवौ संकष्टचतुर्थ्यां च रात्रौ भोजनम् ॥ यत्र त्वष्टम्यादौ तु दिवा भुज्जि निषेधः ॥ सं-
 क्रमे च रात्र्या निति निषेधद्वयम् ॥ तत्रोपवासस्वकार्यः ॥ यद्यपि पुत्रिणां उपवासोऽ-
 पि निन्दः ॥ तथाप्युपवासनिषेधेऽपि किंचिद्ब्रह्मं प्रकल्पयेत् ॥ इति वचनात् ॥ किंचि-
 द्ब्रह्मयित्वोपवासः कार्यः ॥ चांदायणमध्ये एकादश्यादौ तु भोजनमेव कार्यम् ॥ चां-
 दायणस्य कान्ध्वत्वेन नित्यवाधकत्वात् ॥ अत्राधेन गत्यं तस्य संभवाच्च एकादश्यामेका-
 न्तरेपवासादिपाण्णयां जलपाणं कृत्वोपवसेत् ॥ अपोवाऽप्रसितमनसितं चेति श्रुतेः ॥

विधि व्यवस्था माह ॥ गर्गः ॥ विधिः पूज्यतिथौ तत्र निषेधः कालो दहति ॥ पूज्यत्वं च क-
 स्मिन्नुद्यानयोग्यत्वम् ॥ एवं च खंडतिथौ पूज्यत्वं निर्णयं यदा तु भगवास्याद्वितीय-
 या च प्रतिप्रदोर्द्योगस्तदा मासु तैव ग्राह्या ॥ बहुकृत्निगमे ॥ युग्माग्निपुगाभूतानां परा-
 न्योर्वसुर्धयोः ॥ रुद्रेण द्वादशी युक्ता चतुर्दश्या तु पूर्णिमा ॥ प्रतिपद्यप्यमावास्या
 तिथ्योऽयुग्मं न ह्यफलम् ॥ अत्र पूर्वतिथिस्तु उत्तरविद्धेव च नरा तु पूर्वविद्धेव ॥ चैत्र-
 कृष्णानि परि वसंतरंभः ॥ तत्र चैत्र कृष्ण प्रतिपदि पूर्वविद्धायां विभूति वंदनादि कर्त्तव्यं
 ॥ होलिकानंतरत्वेनैव ॥ होलिका समीपं गत्वा तद्भस्म गृहीत्वा ॥ षडनीयोगं सं-
 न ॥ ॐ वंदितासि सुरेंद्रेण ब्रह्मणेण प्रकरेण च ॥ अतस्त्वन्धारयिष्यामि ॥ सविभूते कृतिदा-
 भव ॥ सर्वदनमात्रमुकुलं च प्राप्नीयात् ॥ गोमयोपलिप्ते श्रुचौ देशे कृतस्तत्पु-
 द्नः ॥ आश्विनमंत्रः ॥ आश्वमन्त्रं वसतस्तथा कंदकुसुमं तव ॥ सर्वदनं पिचाभ्यद्य सर्व-
 कामार्थसिद्धये ॥ चैत्रशुक्ल प्रतिपदि वत्सरंभः ॥ सा चौरदय व्यापिनी ॥ यथा चैत्रमासि जग-

सर्वे नी काय्या पूर्व्या परथा यवा ॥ युक्ता नृद्धिता यस्माद्यत स्मा सर्वतो भुरवीति ॥ पुराण स-

४७ सुत्रये ॥ संपूर्णा दृष्टानी काय्या भिलिता पूर्व्या यवेति ॥ तिथेः क्षयवृद्धिभ्यां पूज्यतामाह ॥ त्रिमु-

हूर्त्वाधिकर्तव्या याति थि च वृद्धिगामिनी ॥ परमुहूर्त्वाधिकर्तव्या याति थिः क्षयगामिनी

॥ वृद्धिगामिनी स्त्रत्या क्षयगामिनी महती पूज्यतेति ॥ ब्रह्मवैवर्तेऽपि ॥ तिथिद्वासादिभ्यो

रमानां वृद्धिद्वास विधी तया ॥ ज्ञत प्राज्ञ विभागो न विज्ञा तव्यो व्यवस्थिगो अपि ॥ अत-

श्च तिथि क्षय वृद्धिभ्यां पूज्य तथा ज्ञतादि कं कर्तव्यमिति दिक् ॥ अथ प्रतिपत्तादि विशेष

तिथि निर्णयः ॥ विप्रतिपन्नानां वाक्यानां परस्परविरोधपरिहारे निरूप्यः ॥ यदुक्तं ॥ तत्वे-

विप्रतिपन्नानां वाक्यानामि तरे तस्म ॥ विरोधपरिहारेऽतल्य निरूप्यदर्शनम् ॥ अथा

है प्रतिपत्तिर्लभ्यते ॥ सा च यदि सूर्योदयं मारभ्य पुनरुदयं प्रथमं भवति तदा सा संपूर्-

ण्यया च संदेहं काय्या ह ॥ नृदुक्तं ज्ञाने ॥ प्रतिपत्त्य भूतयः सर्वा दुदया सोदया इवेः ॥

संपूर्णा इति विख्याता हरिवासरवर्जिताः ॥ हरिवासरः सप्तादपि त्वं ज्ञातिषो नृविधिनि-

४७

४७

शिर्षे च पूर्वयुतैव कार्या ॥ तत्र देवलः ॥ पूर्वविद्देवकतंव्या शिवरात्रे वलद्विजम् ॥ अथ देव
 कैः ॥ देवलैःपि ॥ प्रातिपद्वर्षा संयोगे श्रीजनतु गवां मतम् ॥ परविद्देवयुः कुर्यात्पुनरा
 धनदायमिति ॥ पुराणसम्बन्धेऽपि ॥ गवां श्रीवादिने यत्र रात्रौ दृश्यंत चंद्रभाः ॥ सोमो रा
 त्रा पशून्हन्ति सुरभी पूजकोस्तथा ॥ तत्रैव वार्षिकजयपराजयहेतुत्वेन द्यूतं कार्यम्
 ॥ स्कादेयथा ॥ प्रातर्गोवर्द्धनः पूज्यो द्यूतं चापि संमाचरेत् ॥ ज्ञात्वा ॥ प्रातिपदि जयो यस्य
 तस्य संवत्सरे जयः ॥ अतो वर्षपरौ स्कार्यो द्यूतं चैव सम्माचरेत् ॥ गोपूजा मंत्रास्तु ॥ श्रीगो व
 र्द्धन धराधार गोकुल त्राणा कारक ॥ बहुबाहुकृतच्छाय गवां कोटि प्रदो भव ॥ लक्ष्मी
 द्यां लोकपालानां धेनु रूपेण संस्थिता ॥ द्यूतं बहुति यज्ञार्थे मम पापं व्यपो हतु ॥
 अग्रतस्सन्तु भेगा गो गवो मे सन्तु पूरुतः ॥ गवो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसा अग्रहम्
 ॥ अत्रैवा पराहे ॥ कुशकाश निर्मित मार्गपाली पूर्वस्यां ग्रामतस्तत इहसादिषु निव
 द्य सर्वे वार्तास्तस्यास्तले स्थेयुः ॥ तदुक्तं स्कादे ॥ ततोऽपराह्ण समये पूर्वस्यादि

द्वह्नाससर्ज्जं प्रथमे हनि ॥ शुक्लपक्षे समं तु तदा सूर्यो द्ये सति ॥ दिनद्वये व्याप्ता व्या-
 ३६ हो पूर्वैव ॥ चण्डिकासर्जने तु अमा शुक्लैव ॥ तदुक्ते कालिकाप्रणणे ॥ अमा शुक्लैव सं प्राप्ता ॥
 तिपञ्चदिकामर्चने ॥ ज्येष्ठशुक्लश्रुतिपदिष्टप्रहरणं ॥ आद्रशुक्लश्रुतिपदिष्टिष्वन्नतं तदेव भोजनं व्रत-
 म् ॥ यदुक्तं ब्रह्मवैवर्ते ॥ रुद्रव्रतेषु सर्वेषु कर्तव्या समसुखी तिथिः ॥ अग्निं न शुक्लश्रुतिपदिष्टं न व-
 एना रंभः ॥ सा च पूर्वार्धे पूजयेच्छिवाम् ॥ अन्नकर्म कालव्यापिन्येव तिथिर्गृह्यते ॥ क-
 र्मणो यस्य यः कालस्तत्कालव्यापिनी तिथिरित्युक्तेः ॥ अन्नशुक्लश्रुतिपत्पूर्वैवोपो-
 व्या ॥ त्रिसुहृती न्यूनत्वेऽपि पूर्वैश्चैव युगमवाक्यात् ॥ प्रातरावाहये देवी प्रातरेव विस-
 र्जयेत् ॥ अन्नसति संभवे श्रुतिपत् आदिनाडी षोडशकं त्यक्त्वा कलशः स्थाप्यः ॥
 आद्याः षोडश नाड्यस्तु लब्ध्वा यः पूजयेच्छिवाम् ॥ कलशं स्थापनं तत्र हारिष्टं जायते क्षु-
 वम् ॥ देवीप्राणोक्तेः ॥ एतौ तु तान्त्रिके यो ॥ मात्स्ये ॥ न एतौ स्थापनं कार्थ्यं न च हुंभाभि-
 र्वेचनमिति ॥ अथ कार्तिकशुक्लश्रुतिपत् ॥ सा च तिथिर्दृष्ट्वैतद्व्यपिनी गोत्रीडा हो ह-

अथैव पूर्वयुतैव कार्या ॥ तत्र देवलः ॥ पूर्वविदेव कन्या प्रावरा अवलङ्गना ॥ अथैव
क्षेत्रः ॥ देवलः पि ॥ प्रातिपद्वर्षा संयोगे श्रीजनतु गवां मतम् ॥ परविदेव यः कुर्यात्पुनरा
धनदाय मिति ॥ पुराण समुच्चयेऽपि ॥ गवां श्रीवादिने यत्र रात्रौ हस्त्यंत चंद्रभाः ॥ सोमोरा

जा पशून्हति सुभी पूजकोस्तथा ॥ तत्रैव चार्थिकजय पराजय हेतुत्वेन दूतं कार्यम्
॥ स्कांदेयथा ॥ प्रातर्गोवर्द्धनः पूज्यो दूतं चापि समाचरेत् ॥ ब्राह्मे ॥ प्रातिपदि जयो यस्य
तस्य संवत्सरं जयः ॥ अतो वर्धपरीक्षार्थं दूतं चैव समाचरेत् ॥ गोपूजां मंत्रास्तु ॥ श्रीगोव
र्द्धनधराधार गोकुलत्राण कारक ॥ बहुबाहु कवच्छाय गवां कोटि भद्रोभव ॥ लक्ष्मी
ध्यां लोकपालानां धेनुस्थेण संस्थिता ॥ दूतं वहति यद्गार्ध मम पापं व्यपोहतु ॥
अग्रतस्सन्तु भेगा वो गावो मे सन्तु पूरुतः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाभ्यहस्र
॥ अत्रेवा पराक्षे ॥ कुशकाश निर्मितं मार्गपाली पूर्वस्थां ग्रामतस्तत हृत्सादिषु निव
ध्य सर्ववर्णास्तस्यास्तले स्थेयुः ॥ तदुक्तं स्कांदे ॥ ततोऽपराह्ण समये पूर्वस्थां दि

सदि भात ॥ मार्गपालीनि वद्भी पाततुं ये स्तंभे ऽथ पादये ॥ कृष्णकाश मयी दिव्या लव-
 के वट्टु भिर्मुने ॥ कृते हो मे द्विजेन्द्र सुवशीया न्मार्गपालिकाम् ॥ नमस्कारे ततः कु-
 र्यान्मंत्रेणा नेन सुव्रतः ॥ ॐ मार्ग पालिनमस्ते स्तु सर्वलोक सुवचरे ॥ विधेयैः पु-
 नरायणैः पुनरेहि व्रतस्य मे ॥ इति पूज्यनी राजनमपि कृत्वा ॥ चतुर्वर्णा स्तां समुत्सं-
 द्वेयुः ॥ स्कंदे ॥ मार्गपाली समुत्संध्यनी रुजःस्युः सुत्वा न्विताः ॥ अथ तत्रैव दृष्टि का कर्ष-
 णमपि काव्यं मे ॥ तदुक्तमादित्य श्रुणु ॥ कृष्णकाश मयी कुर्व्यान्कृष्णकाश मयी दृढाम् ॥
 नवांगारेक नो राजा ही न वर्णा स्तथा न्यतः ॥ गृहीत्वा कर्षयेद्युत्ता यथा सारं मुहुर्मु-
 हुः ॥ जयो ऽत्र ही न जानीनां द्वेयो राज्ञस्तु वत्स एत ॥ जय चिन्ह सि दं राजा वि-
 दधीत प्रयत्नतः ॥ अत्रैव राजा स्वयह स्यातः ॥ वक्ष्यमाणा लक्षणां वलि पंच रंग के-
 रालिरव्य स परिवारः ॥ योऽप्योपचारै र्वलिं पूजयित्वा न स्वीत्यर्थ यथा प्राप्तिर-
 नं वाट्ये ॥ तद्दानमक्षय फलं भवति ॥ अन्येऽपि स्वस्तु गृहे तं हुतैः प्रायश्चाया-

वल्लिमातिरव्य पूजयेद्भुः ॥ तथा च स्नादे ॥ यद्दस्यां दीयते दानं स्व रूपं वा यो दि वा बद्धुः
 ४३३ ॥ तद्दस्यं भवेत्सर्वविस्त्रोः प्रीतिः कं परम् ॥ अन्यमासि प्रति पत्सु जनादि विभ्रे-
 द्यो न प्रसिद्धः ॥ यदि कश्चित्स्यात् तदा पूर्वं विज्ञाया मेव कार्यं मे वेति सिद्धान्तः
 इति ज्ञाति पत्ति सविः ॥ अथ द्वितीया निर्णीयते ॥ द्वितीयाति विरुप वा सा दिद्वु ततीया यु-
 नैव संग्रहा ॥ युनस वाव्यात् ॥ तत्र चैव शुक्ल द्वितीयायां ॥ यमा पूजा शिव पूजा बहिर्द-
 जा च कार्य्या ॥ तदुक्तं भावि व्योहरे ॥ चैत्रं शुक्लं द्वितीयाया सुभा पूज्या फलार्थिभिः ॥ शिव
 पूजाभि पूजा च कर्तव्या मुनि सत्तम ॥ इति चैत्र द्वितीया ॥ अथ आ वणादि कल द्वितीया सु च
 तुर्व ॥ अथ पूज्य ज्ञतमसा पूर्वं कल्ला कृष्णी दह तल्ला सावित्री वद धेत की ॥ कामात्रयो द-
 शी रंशा रपो व्या पर्व संयुता ॥ दह तल्ला अथ पूज्य प्रायश्चा द्वितीया ॥ इति संवर्गोक्तिः का-
 तिकं शुक्ल द्वितीया दम द्वितीया ॥ साऽपरा न्द व्या पिनी ॥ अस्यां य शुभा रंजानं कल्ला य
 मं पूजयेत्तर्था ये च ॥ अग्निनी मिर्था तरे भोजनीयाः ॥ अग्नि न्यश्च दल्ला लंकारादिभिः

सत्कार्याः ॥ तथा च खांदे ॥ ऊर्जं शुक्ल द्वितीयाद्या म परान्हे ऽर्चयेद्यमसु ॥ स्नानं कृ-
 त्वा भानुजायो यम लोकं न पश्यति ॥ तर्पणं च ॥ यज्ञोपवीति नाकार्यं प्राचीना वीति
 नाथवा ॥ देवत्वं च पितृत्वं च यमस्यैव द्विरूपता ॥ कान्तिके शुक्ल पक्षस्य द्वितीयाद्यां
 तु नाराद ॥ यमो यस्मिन् यापूर्वं पूजित स्वगृहे ऽर्चितः ॥ अस्यां निज गृहे विप्रनभोक्तव्यं
 ततो वृधैः ॥ स्नेहेन भगिनी हस्ताब्जोक्तव्यं पुष्टि वर्द्धनम् ॥ दानानि च भद्रयानि भगिनी
 भ्यां विधानं विद् ॥ सर्वा भगिन्य स्सं पूज्याः अभविमतिपन्नकाः प्रति पन्नकाः कृत्रिमाः
 ॥ अस्यां च भगिनी भिभ्यति रंयुर्द्वये चिरजीविनः पूजाकार्याः ॥ ते च ॥ अथ चत्था
 मावलिर्व्यसो हनूमाश्च विभीषणाः ॥ कथं परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥ इमा
 न्पूज्यन्नातु राशिं वं प्रार्थयेत् ॥ इति यम द्वितीयाः ॥ पक्षद्वय गता सुचतुर्विंशति संख्या-
 ख पिहितप्राप्तु सर्वोपचारैर्व्रक्षा पूज्यः ॥ इति द्वितीया निर्यायः ॥ अथ तृतीयां निर्यायते
 सर्वास्तृतीया रंभा व्यतिरिक्ता चतुर्थी युते व ग्राह्याः ॥ खांदे ॥ द्वितीयया न संयुक्तानव-

तीयाकदाचन ॥ कर्तव्याव्रतिभिस्तानधर्मकामार्थतत्परैः ॥ अस्ववैवर्ते ॥ रंभा-
 धिक्त्वाच्च तृतीयांशुनिसन्नम ॥ अन्येषु सर्वकार्येषु गणयुक्ता प्रशस्यते ॥ अथ चैव शुक्ल-
 तृतीया ॥ आंदोलनाख्या ॥ तत्र प्रंकोरेमांसं पूज्यरात्रौ जागरणं दक्षिणा दानमपि का-
 र्यं ॥ नहुं देवीपुण्ये ॥ तृतीयायां यजेद्देवीं प्रंकोरेण समन्विताम् ॥ सौवर्णी च तथा गो-
 रीराजतप्रंकोरस्तथा ॥ चतुर्भुजश्च देवोऽसौ हिमंजापार्वती भवेत् ॥ कुंकुमागार-
 कर्पूरस्नानांधूपदीपकैः ॥ संपूज्यांदोलयेत्तत्संशिवो मानुष्ये सदा ॥ रात्रौ जागरणं
 कार्यं प्रातर्देवाच्च दक्षिणा ॥ दयं नन्वादिरुधि ॥ इति चैव शुक्लतृतीया अथ वैष्णवशुक्ल-
 तीयाक्षयतृतीया ॥ सापूर्वाह्णव्यापिनी ॥ नारादीये ॥ हे शुक्ले ह्येनया कर्त्तव्यं युगादीकृ-
 योविदुः ॥ शुक्ले पूर्वाह्णे कीर्त्या कर्त्तव्यं चैवापरान्हकी ॥ देवीपुण्ये ॥ तृतीयायां तु
 वैष्णवे रोहिएष्टे प्रपूज्य च जलकुंभप्रदानेन शिवलोके महीयते ॥ मंत्रस्तु ॥ एषध-
 र्मवदोदज्ञो ब्रह्मविष्णुशिवोत्तमः ॥ अस्य प्रदानाच्छयं तु पितरोऽपि पिता महाः ॥ गं

ॐ धोदक तिलैभिर्भ्रं सान्त्रं कुंभं सदसि एणम् ॥ पितृभ्यस्त्वं प्रहृत्या तिलपितृभ्यामुपनि
४४ द्यतु ॥ साचेयं पूर्वान् हव्यपिनी ॥ विष्णुपुराणेऽपि ॥ पानीयमव्यञ्जतिलैर्विभिन्नं दद्यात्

तिलभ्यः प्रयत्नो मनुष्यः ॥ श्राद्धं कृतं तेन समाः सहस्रं रहस्यमेतन्मुनयो वदन्ति
भास्वे ॥ कृतं श्राद्धं विधानेन मन्वादिषु युगादिषु ॥ ह्यायनानि हि सहस्रं पितृणा
न्यसिदं भवेत् ॥ गोभिलः ॥ वैष्णवस्य तृतीयांशः पूर्वविद्धं करोति वै ॥ हव्यं देवान
पृच्छति कव्यं च पितरस्तथा ॥ पूर्वान्हेतुं सदा कार्या शुक्ला मनुयुगादयः ॥ परेतु
अपरान्हः पितृणा भित्त्यादि वचना क्प्राद्धविधाय परान्हव्यापिन्येव ग्राह्या ॥ हे
शुक्ले दत्त्यादि वाक्यतः ॥ परान्हं प्राक्स्तु कुतः पूर्वार्द्धं परः ॥ गोभिल वचनं तु हि
श्रुद्देशेन क्रियमायानव्यापिणादि परतया व्याख्येयमित्याहुः ॥ साचेयं कल्पनान्न
सतीव भाति ॥ अपरान्हः पितृणा भित्त्यादि वचनस्याक्षयतृतीयातिरिक्त विषय-
त्वेनापि व्याख्यानसंभवात् ॥ मलमासयति तु भयत्र श्राद्धं श्राद्धचंद्रिकायाम् ॥ यो

गार्दिकं मासिकं च श्राद्धं चा पराधाक्षिकं ॥ मन्वादिकं तैर्धिकं च कुर्यान्मास द्वेयेऽपि
 च ॥ अथ पराधोऽत्र कस्य पक्षो गृह्यते ॥ महालयस्य मले निषेधात् ॥ नारदीये विप्रे यो-
 नि ॥ वैष्णवे शुक्लपक्षे तु तृतीया रोहिणीयुता ॥ दुर्हर्षभा वृषवारोणसो मेने वयुता-
 यवा ॥ रोहिणी बुधयुक्तापि पूर्वविद्धा विवर्जिता ॥ मङ्ग्या कृतापि सां धातः हन्ति पु-
 रयं पुरा कृतम् ॥ इत्युक्त्यतः तीया ॥ ज्येष्ठशुक्लतृतीया रंभासा ॥ पूर्वाभां गुरुदाहं तत्कंद-
 वाक्यात् ॥ तथा च भाविनो ॥ ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां पतिपुत्रफलाधिनी ॥ नारि सूर्यो
 द्वये स्नात्वा सती व्रत परायाणां ॥ तत्र व्रतनियमं गृहीत्वा ॥ चतस्रः कुंडेषु स्थंडिले-
 बुत्तुभीन्संस्थाप्य च भोभास्करद्वानि पंचाग्निमध्ये वेदिकायां रंभास्तंभी पश्योन्मि-
 तां पुष्पमंडपिकां कृत्वा तत्र सर्वशक्तिमयी देवी आवासा सर्वोपचारोर्नमोऽन्ते न्मोऽन्ते न्मोऽन्ते
 नैर्दीक्षो संपूज्य सूर्यास्तमय पर्यन्तं चित्सेत् ॥ ब्राह्मणाश्च प्रणवादि नमोऽन्ते न्मोऽन्ते न्मोऽन्ते
 स्तोभाय इत्यादि जुहुयात् ॥ ततो द्विजं संपत्यं च नुष्यां भोजयित्वा यथा ग्राह्या ग्राह्या

कर्तव्यार्थदक्षिणां दत्त्वा गृहमाव्रजेत् ॥ इति भाद्रशुक्ल तृतीया हरितालिका ॥ सा मुहूर्तमा-
 ष्चिपरेव ॥ मुहूर्तमात्रसत्वेऽपि दिने गोरे व्रतं परेति ॥ माधवः ॥ द्वितीयां शेष संयु-
 क्तां या करोति विमोहिता ॥ सा वैषम्य मवाप्नोति प्रवहंति मनीषिणाः ॥ इत्यापस्तवः ॥
 आद्या मधुश्रावणिका कज्जली हरितालिका ॥ चतुर्थी मिश्रिता स्त्रीभिर्द्विवा नक्तं वि-
 धीयते ॥ तृतीया नभसः शुक्लामधुश्रावणिका स्मृता ॥ भाद्रस्य कज्जली कस्मा शु-
 क्लानुहरितालिका ॥ इति चोदासीये ॥ तस्यां गोरे शर्हि विधाय संपूज्य गुडापूपनैवेद्यं
 दद्यात् ॥ भविष्येऽपि ॥ गुडापूपास्तु ता तव्या मासि भाद्रपदे तथा ॥ तृतीया शुक्लपक्षस्य
 सर्वपापहरा स्मृता ॥ माघ शुक्ल तृतीयायां गुडस्य लवणस्य च ॥ दानं श्रेयस्कारं राजन-
 स्त्रीणां च पुरुषस्य च ॥ गुडेन नुय्यते देवी लवणेन स्वयं शिवः ॥ इतस्तृतीया चतुर्थी
 युतौ वेतिसिद्धांतः ॥ इति तृतीया निर्णयः ॥ अथ चतुर्थी निर्णयते ॥ सा चोपवासादिषु गणेशे
 चतुर्थी कुंड चतुर्थी बहुला चतुर्थी वनव्यतिरिक्तेषु पंचमी युतौ वयस्य चाक्यान ॥ अथ

कैश्चि जैन शुल्ल चतुर्थ्यां ॥ गणेशं लङ्घकादिभिरभ्यर्च्य सर्वाङ्कामानवाप्नोति ॥ देवीपुण्ये ॥ ग-

णेशोकारयेत्पूजो लङ्घकादिभिरादरात् ॥ चतुर्थ्यां विघ्नाप्राप्य सर्वकामसमृद्धये ॥

स्त्रीभिर्ज्यैष्ठ्यं शुल्ल चतुर्थ्यां मुमा पूज्या ॥ ब्रह्मपुण्ये ॥ ज्यैष्ठ्यं शुल्ल चतुर्थ्यां नृजातापूर्व मु-
मासती ॥ तस्मात्सातनसंपूज्यास्त्रीभिस्सोभाप्य दहद्वये ॥ उपहरैश्च विविधैर्भर्ति नृ-
त्योत्सवादिभिः ॥ होमैः पर्यामिर्वस्त्रैश्च पत्रपुष्पैस्सुगंधिभिरिति ॥ आवाण कृत्वा चतुर्थी
संकष्टचतुर्थी साचंद्रोदयव्यापिनी ॥ स्कंदे ॥ आवाणे बहुले पक्षे चतुर्थ्यां च विभूदये-
॥ तस्मिन्दिने व्रतं कार्त्तिकसंकष्टारव्यं सुरेश्वरि ॥ इति दिनद्वयेतद्याज्ञावध्यासो पूर्वव-
न्मातृविघ्ने गणेश्वर इति वाक्यात् ॥ अथ भाद्र शुक्ल पक्षे चतुर्थीभिराख्या ॥ तत्र स्नानदाना-
दिकं गणेशं पूजनं च ॥ अनंतगुणपदं सान्निध्यमविव्ये ॥ शिवाशं तासुरा राजान् चतु-
र्थीत्रिविधां ह्यहोति ॥ भाद्र शुक्ले शिवाभावे शंता शुल्ल चतुर्थिका ॥ भौमवारदु-
ता साचैत्सुखानामप्रकीर्तिता ॥ रवि वारदुता सादि प्रोक्ता महाचतुर्थिका ॥ गणेश-

प्राप्नोतु ॥ पूर्वव चतुर्थी तु लग्नीयार्थं महाप्राप्य फलप्रदा ॥ कर्तव्याप्रतिभिर्यद्वत्प्रदा-
 नाथ सुतोषिणीति ॥ गोविंदणीति ॥ नागज्ञतेतु मध्याह्नव्यापिन्त्येव ॥ शुभं मध्याह्नेत्येव
 तत्रोपोष्य फली भूतान् ॥ क्षीरेण स्वाप्य पञ्चव्यां पूजयेत्प्रयतो नरहति ॥ देवलोकेऽभद्र
 कृत्वा चतुर्थी वहुला सा पूर्वव ॥ भाद्र शुक्ल चतुर्थी मध्याह्न व्यापिनी ॥ पूर्वोत्तर मर्दिने मध्या-
 ह्न व्याप्ये परैव ॥ मध्याह्ने दहस्त्याति ॥ चतुर्थी रात्रौ नाथ स्वभालविज्ञाप्रदा स्थिते ॥
 मध्याह्न व्यापिनी चेत्स्वात् परा चेच्च परैरहनि ॥ भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्र मर्दिने नि-
 विध्यते ॥ तदाह नाकर्कशेयः ॥ भाद्रमासि धिते पक्षे चतुर्थी स्वाति यो गिनी ॥ भिष्यमि-
 ष्यापं कुरुते तस्मात्सह्ये नतं तदा ॥ प्रभादा दहस्त्या होय प्रांतये विष्णुप्राणो ज्ञेयं नं-
 जयेत् ॥ सिंहः प्रसेन भवधी त्रिंही व्याप्य वता हतः ॥ सुकुमारि किमारेदी स्तवहोष-
 स्स्य भनक्तः ॥ माघ शुक्ल चतुर्थी तिल चतुर्थी ॥ सामदेव व्यापिनी ॥ काशी खंडे ॥ माघ शुक्ल
 चतुर्थी तु नक्त ज्ञात परादयः ॥ देवता दुंदेऽर्चयेत्तु ॥ स्तुतुः सुरमुद्रहाम् ॥

विधाववादिः कीं याञ्चो चतुर्थी प्राप्यतापसी ॥ शुक्लान्नतिलान्गुडैर्वर्ध्यां प्राप्नीयास्त
 दुक्कान्चती ॥ तापसी साधीमः ॥ अत्रैव सदा शिवं कुंदं पुष्पैरभ्यर्च्य लक्ष्मीप्राप्नोति ॥
 क्षीर्मेयम् ॥ कुंभे शुक्लचतुर्थ्यां तु कुंदपुष्पैः सदा शिवम् ॥ संपूज्य यो हि न तापशी संप्रा-
 षोति श्रियं नरः ॥ इत्यनेव कुंडचतुर्थी ॥ माघ मासे तु संक्रान्ते चतुर्थी कुंड संक्राका ॥ सातु पं-
 चम्या सुरभ्येष्ट ततो राज्यं भविष्यति ॥ इति चतुर्थीनिर्ययः ॥ अथ पंचमी निर्णयः ॥ सातु पं-
 चमी चतुर्थी युतेव ग्राह्यो पवासदिद्युः ॥ महाह जावालिः ॥ प्रतिपत्यं चमी चैव उपोष्या
 ध्वसेयुता ॥ चैत्र शुक्ल पंचम्यां नागान् पूज्य स्त्रीणादि नैवेद्यं दैवम् ॥ देवीपुण्ये भयि ॥ पं-
 चम्या पूजयेन्नागान न ताद्या नमो रगन् ॥ क्षीरं सर्पिणं स्तुनैवेद्यं दैव्यं सर्वं सुरवा वह-
 म् ॥ नागस्वस्वमास्त्ये ॥ नागा भ्यैव तु कर्तव्यास्तद्वस्वदेव क धारिणाः ॥ अथ स्वस्वप्योक्तं ति-
 स्तेषां नाभेरुद्धं तुषोरुषी ॥ फणाश्च मूर्द्धि कर्तव्या हि जिव्हा वह्नवोऽसमाः ॥ विषमे नि-
 ना वत् ॥ ध्रावणं शुक्ल पंचमी नाग पंचमी ॥ नाग पंचमी सा पर विद्मः ॥ चमत्कारं विता मरणे ॥

पंचमी नाग पूजायां कार्या यथी समन्विता ॥ इति ॥ तस्या मधि नाग पूजा आदराद्भु-
क्त पंचम्या गोमयेन दारस्यो अथोः पार्थिवोः ॥ नानान्विलिख्य ॥ इधि दूर्वा कुण्ड-
द्यैः संपूज्य नाग प्रीतये ब्राह्मणाभ्योजयेत् ॥ तस्य सार्धं भयं न भवति ॥ भवित्ये ॥ इ-
थेष फल मन्त्रे धर्मायम् ॥ आदृष्टुक्त पंचमी ऋषि पंचमी ॥ सा च मध्याह्न व्यापिनी ॥ हा-
रीतः ॥ पूजा व्रते शु सर्वेषु मध्याह्न व्यापिनी सिधिः ॥ वैही सभ्य कर्तुं वीत गोमये चो-
पलेषिताम् ॥ रंगा बलि समा युक्तां नाना पुष्प समन्विताम् ॥ तत्र मत्त नदधीन् दिव्य-
भक्तैः युक्तः प्रपूजयेत् ॥ अर्घ्यं च दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः कार्योऽन्निर्भरं दानं सिद्धा नि-
त्रोऽथ गोतमः ॥ द्रम दनिन र्वशिष्ट द्यसहे ते ऋधयः स्मृताः ॥ मत्त ऋषी न्युज्याद्गृह-
भस्सुत्पन्न प्राक्वा हरेणो पोष्य मत्त वर्धणि व्रत माचरेत् ॥ सर्वपाप विनिर्मुक्तः ॥
तादिभिः स्नापयित्वा संपूज्य नैवेद्यं दद्यात् ॥ पथान् भवित्ये ॥ तथा चाप्युपजे मार्गि-
स-

१ वि पंचम्यां कुरु नंदनं कृत्वा कुशमयं नागाभिर्महायासह पूजयेत् ॥ घर्तोरुकेन प्रयसात् ॥
 ४२६ पयित्वा विष्णोपते ॥ गोधूमैः पयसा भिक्षैः भक्षैश्च विविधैस्तथा ॥ पूजयेत्कुरुर्गृहलन

स्यां प्रोषादयो नृप ॥ नागाः श्रीना भवंतीह प्रणति माप्नोति वै प्रभो ॥ इति एमाय शुक्ल पंचमी
 श्री पंचमी स्तुच्यते ॥ तत्र चमदन पूजा ॥ वसंतोत्सवश्च ॥ तदेव ब्रह्मण समुच्चये ॥ मायमसिन्य
 श्रेष्ठ शुक्लायां पंचमी तिथौ ॥ एति कौमोतु संपूज्य कर्तव्य स्सु महोत्सवः ॥ दानानि च भ्र-
 देयानि तेन तु ध्यानि काथवः ॥ इति वसंत पंचमी ॥ पक्ष इत्य गता सु सर्वासु पंचमी द्यु ति-
 थि पति त्वेन नागा एव पूज्याः ॥ इति पंचमी निरुपयः ॥ अथ यक्षी निर्मीयते ॥ सा तु स्कंद त्र-
 ता दन्यत्र प्रैव युग्म वाक्यात् ॥ अतः सप्तमी विद्मैव ॥ तथा च ब्रह्मरतिः ॥ नागा विद्वां
 तयां यक्षी मुपेय्यंती हमानवाः ॥ इति श्रेष्ठ सप्तमं तानं तेषां नश्यति पूर्वजैः ॥ अतः
 नागा विद्वान कर्तव्या यक्षी चैव कदा चन ॥ अत्र षण्मुहूर्तात्सको वेधः ॥ नागो द्वादश
 नाही भिर्द्वेष्य च्युत्तान्ति धिम् ॥ तेन षण्मुहूर्तं न्यून पंचमी योरो दूर्ध्वैव ॥ आधाद शुक्ल-

सर्ग

४२०

पयसीमापूर्वा ॥ लक्ष्मि ॥ कृष्णाषष्ठीस्कन्दपयसीप्रिवणानिश्चतुर्दशी ॥ एताःपूर्वद्यु-

ताःकाय्यासिध्यन्तेपारणंभवेदिति ॥ अत्रपंचम्याम्भुषोव्यकुमारःपूज्यः ॥ तथावारहे-

॥ अथादेष्टुक्तपयसीतुतिधिःकोमारिलास्मृता ॥ कुमारमूर्चयेत्तत्रोषोव्यपूर्वतुपं-

चमीम् ॥ इत्येवसूर्यपयसी ॥ अत्रलंतात्वाभास्करपूज्यमयंप्राप्यमहाफलंभाष्यते ॥

शुक्लेभारपदेवद्योत्पानंभास्करपूजनम् ॥ प्राशनं पंचगव्यस्यअभ्यभिषेकफलप्रदमिति

॥ आदप्रदपयसीकृष्णाकपिला ॥ भोमेरोहिणीव्यतीपातयोगानुक्ता ॥ तत्रभास्करपूजयि-

त्वाविप्रायकपिलांरक्षान् ॥ अणममृचये ॥ आदमासिसितेपक्षेभान्जोचैवकरेस्थिते

॥ पातद्युचैवरोहिण्यांसाषष्ठीकपिलाभवेदिति ॥ आदकृष्णपयसीचंद्रमासेनेत्यर्थः

॥ भारकृष्णपयसीचंद्रपयसी ॥ साचंद्रोदयव्यापिनीगार्वा ॥ उभयत्रचंद्रोदयव्यापि-

न्यापूर्वविदेव ॥ यदुक्तं ॥ तद्वद्भाद्रपदेमासिषष्ठ्यांपक्षेस्थितेनरे ॥ चंद्रपयसीव्रतंकुम्भ-

वपूर्वविधःप्रशस्यते ॥ चंद्रोदयेयदाषष्ठीपूर्वाहेचापरेरहति ॥ चंद्रपयसीप्रितेपक्षे

४२०

संधिः सेवो पोष्या प्रयत्नत इति ॥ सैव ह्यपथी ॥ सा सप्तमी युतेति दिवो दासः ॥ न्यायां भवनं शु-
 ३२ लं पंचम्यां देव्याः स्नापि तयाः ॥ सप्तम्यां पूजार्थं षष्ठ्यां । अथेष्टा नक्षत्रयुक्ताया वस-
 भदे के वलाद्यां दृष्टानि मंत्राणं कार्यं यद् ॥ तत्रापं मंत्रः ॥ ॐ एवणास्य वधा र्थाय एवस्या
 नुग्रहभ्यन्व ॥ अकाले ब्रह्मणा वेधो देव्या स्वयि ततः पुरा ॥ श्रीशैल शिरःखरे जातः
 श्रीफल प्रीतिके तन ॥ तेन व्योम सुभा गच्छ पूज्यो दुर्गा स्वरूपतः ॥ इति ॥ अथ कार्ति-
 कं ब्रह्म पथी ॥ तत्र भौम युतायां वन्हिं संपूज्य वन्हि महो त्सवं कार्यं म् ॥ तदेव मात्स्ये
 दृष्टि कार्के शुक्ल पथी भौम वारेणा संयुक्ता ॥ महा पथी तु सात्रीका सर्व प्राय हरति धिः
 तस्यां स्वपिति वै वन्हिः पूर्वतो पोष्य वै दिने ॥ पथ्यां वन्हिं सम अभ्यर्च्य कुर्याद् दानि
 महोत्सवम् ॥ इति । दृष्टि कार्के कार्तिके मासीति कालादर्शः ॥ अथ मार्गशिरः शुक्ल प-
 थी ॥ तस्यां तारकं स्कंदो हतवान् ॥ अतः स्कंदं संपूज्य दानादि कृत भक्षयं भवति ॥
 भविष्ये ऽपि ॥ येयं मार्ग शिरे जासि पथी भग्नत सप्तम ॥ पुण्ये पापहर एव न्या शिवा-

प्रांता गुरु विद्या ॥ खान दानादि कं कर्म तस्या भक्ष्य भक्षुने ॥ द्वाविषयी निर्णयः ॥ अथ
 सप्तमी निर्णयते ॥ सप्तमी पक्षी युते चोपवासदिषु ग्रह्या ॥ युग्म चाक्यात् ॥ भविष्ये ॥ पक्षी
 समेता कर्तव्या सप्तमी नाटमी युता ॥ पतंगो पासनायेह पक्ष्या मादुरूपोषणम् ॥ पतं
 गः सूर्यः ॥ पुराणोत्तरं हि ॥ पक्ष्याश्चैक कलायन्नतन्न संनिहि तोरविः ॥ तन्न क्रतु प्रातं पु
 रय मष्टभ्यां पाशो न च ॥ पक्षी च सप्तमी चैव एतन्नि शेषे पदाष्टमी ॥ त्रिष्टया नाम
 सा द्वेष्टा त्रिष्ट प्रैका दशी यथा ॥ पूर्व विद्वैव कर्तव्या सप्तमी त्रिष्टिभिर्नरे रि
 ति ॥ अतः सप्तमी पक्षी युते चेति सिद्धांतः ॥ अथ चैत्र शुक्ल सप्तमी सूर्य पूजा ॥ दंसन कारि
 षिः काट्या ॥ देवी पुराणे ॥ भास्करस्य तु सप्तम्यां पूजां दंसन कारिषिः ॥ कत्वा प्राप्नो
 ति भोगा दीप्तिगता रिर्म्महा तयाः ॥ वैष्णव शुक्ल सप्तम्यां ॥ गंगा पूजां क्ता ॥ तथा च अहो वैष्ण
 रवे शुक्ल सप्तम्यां जङ्गना जाल्दी स्वयम् ॥ क्रोधात्पीता पुन स्वयं कर्त्तारं द्वा चतुर्दश्यात्
 ॥ तालन पूजे ये देवी गंगा गगन केवल्ला भिति ॥ इयं पूर्वोक्त व्यापिनी ॥ अत्रैव निवससुमी

सिद्धं कुर्यात् ॥ भवित्येऽपि ॥ तृतीयां सप्तमीं वीरं तच्छृणुष्व प्रतोमम ॥ निंव पत्रैः स्तुता-
 यानु पापघ्नी शोक नाशिनी ॥ अथाष्टमं शुक्ल सप्तमी ॥ तत्र सूर्यं वर्तुलं मङ्गलैरुक्तं गंध धु-
 व्यादिभिः पूज्य नैवेद्या दीनार्थयेत् ॥ वरुणं वक्राहं प्रणो ॥ अथाष्टमं शुक्ल सप्तम्यां विवस्वा नमो
 म आस्कारः ॥ जातः पूर्वा सुतस्मान्नो तन्नो पोष्य यजे तमदा ॥ रथ चक्रा कर्तौ रस्ये मङ्गलैस्तनूना-
 मदम् ॥ मरुदे र्भोज्येस्तथा रथैः पुथ्यैर्हूय विलिपेनेरिति ॥ अथाश्विन शुक्ल सप्तमी ॥ देवी पूजा-
 यां परशुता गाहा ॥ तथाच भवित्ये ॥ युगाद्या चर्यच्छिश्न सप्तमी पार्वती प्रिया ॥ रवेरुत्पत्ती
 क्षन्ते न तासु तिथि शुभशना ॥ चर्यच्छिश्न मतिथिः ॥ अत्रैव मूल युक्तायां केवलतायां चापं
 चर्यां स्नाथिनां देवीं वित्वादितिभिः पूजयेत् ॥ अत्रैव पुस्तकं स्थापनं मुक्तम् ॥ मूलं तद्वह्नि
 सुराधीश पूजनीया सरस्वती ॥ पूजयेत्सत्यहं देवया वह्निस्तव मस्तकम् ॥ नाध्यापयेन्न्यच
 लिखेन्नाधीयात कदाचन ॥ पुस्तके स्थापिते देवि विद्या कामो द्विजोत्तम ॥ दत्ति ॥ मार्गशु-
 क्ल सप्तमी मित्र सप्तमी ॥ तत्र पूर्व दिने उग्रो व्याकृत वपनः स्नात्वा ॥ रविं सं पूज्य ॥ पश्चाद्वाह्नि-

४६। एतन्मो जयेत् ॥ स्वयं सप्तम्यामष्टम्यां च मधुस्तु तमिष्टान् भुञ्जीत ॥ अथ नाथ शुक्लं सप्तम्यर्चनम् ॥
 ४७ ॥ अस्यां रत्नान् प्रलभे महदिति विस्तृक्तेः । सैवा चला सप्तमी ॥ जयेती च ॥ तद्वहं भविष्ये ॥ माध-
 र्ग्यं शुक्लं पश्येत् सप्तमी यात्रिलोचन ॥ जयंती नाम सा श्री कौ सवर्षं प्राप ह्यतिथि रिति ॥
 रश्मिर्चांद्रिकायामपि ॥ सूर्यग्रहाणां तुल्या च शुक्लं माघस्य सप्तमी ॥ अरुणोदय वेलायां
 न रत्नानं महं फलम् ॥ अस्यामेव सूर्य्य पूजा ॥ माघे मासि खिते पक्षे सप्तमी कोटि भास्करा
 हुर्ध्या तस्मान्ना धे दानाभ्यामाधुना संपदः ॥ इति अर्घहस्तमन्त्रश्च ॥ यद्यज्जन्म कृतं
 प्रापं मया जन्म सुसप्तम् ॥ तन्मे रोगं च श्लोकं च भास्करं हेतुं सप्तमी ॥ इत्यमेव पुन्यमभूत्
 क्षत्रेण यदि वारेण च युक्ता महती ॥ तत्र सूर्य्य मर्चयेत् ॥ तस्य हं गर्भः ॥ एविवारेण युक्तायां
 सप्तम्या मुत्तम्यते ॥ पुनश्च मध्ये य न क्षत्रे पूजयेच्च दिवा कारम् ॥ पुनश्च नक्षत्राणि गोपेणोक्तानि
 ॥ पुनश्च मन्त्रवाराणां दौ तिव्यो हस्त पुनर्वसु ॥ भूलं श्रीष्ट पदं चानुराधा मृग शिराश्चिनी ॥
 अत्र गंगा रत्नानि फलाधि कथम् ॥ तथा च मात्से ॥ अरुणोदय वेलायां शुक्लं माघस्य सप्तमीम् ॥ ४८४

च सप्तमी शृंगारद्वारे प्रासा चतुर्दशी वा चतुर्दशी ॥ षष्ठिवर्षसहस्राणि तत्कक्षी लभ-
ते फलम् ॥ षष्ठी च सप्तमी योगे चार्य्ये शुभालिनः ॥ योगोऽयं प्रयुक्तो नाम सहस्रा-
र्कभूते स्तम ॥ इति ॥ इति सप्तमी निर्णयः ॥ अष्टमी निर्णयते ॥ साहस्रा पूर्वा शुक्लपरा-
शुक्लपक्षे अष्टमी चैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वादिहानकने व्याकर्तव्या परसंयुतेति नै-
मन् ॥ कृष्णपक्षे इष्टमी चैव कृष्णपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वादिहैव कर्तव्या परविज्ञानकुत्रचि-
त् ॥ इति भविष्ये ॥ उक्तं वनादन्येषु सप्तमी युते वेत्यविशेषः ॥ ब्रह्मपुराणे ॥ अष्टम्यां नव-
मी युक्ता नवम्या चाष्टमी युता ॥ अर्द्धनारीश्वरशायाममामाहिषस्येति तिथिः ॥ अष्टम्यां
प्राप्यते रुद्रानवम्यां प्राप्तिरुच्यते ॥ द्वयोर्योगे तु संज्ञाते द्वजायां तु महामलम् ॥
अथ चैत्रशुक्लाष्टमी क्षणोकाष्टमी ॥ तस्यां पुनर्वसुयुतायामप्रोकाशे कलिकाः प्राप्स्य-
न्ति ॥ तद्वह्निं गपुराणे ॥ क्षणोक्तकलिकाप्राशे ये पिबन्ति पुनर्वसो ॥ चैत्रे मासि सिताष्ट-

स्यान्नेत श्लोक मवाह्यदुरिति ॥ माधनञ्च ॥ त्वामश्लोकनराभीष्टमभुभाससमुद्भव ॥
 अर्थ पिबामि श्लोकं संतप्तो मामश्लोकं सहाकुरु ॥ सन्नदेव्या महापूजापि कार्या ॥ तद्वक्तव्यं
 एव ॥ शरत्काले महापूजा क्रियते सा च वार्धिका ॥ वार्धिका त्यनेन संवत्सर स्यादोर्ध्वेन
 शुक्लमिति पत्रक्रमादष्टमी पर्यन्तं त्रीयमासा पूजा विधीयते ॥ अतश्च शरद्वसंतयोस्तु
 त्वयवदुर्गोत्सवः कार्यः ॥ अथैषात्तु शुक्लदमी ॥ तस्याष्टमिदिनेऽष्टमफलरसेन स्ना-
 त्वा शय्याख्यां देवीं मांसी चालक चारिणि स्नापयेत् ॥ पुनः शर्कराक्षीर नैवेद्यं दत्त्वा द्वा-
 सणाञ्जुमांशौ भोजयित्वा पारणाञ्जुव्यात् ॥ देवीपुण्ये ॥ सहकारफलेः स्नाने वै शरदे
 सद्यमीहिने ॥ आत्मनो देवतां स्नाप्य मांसी चालक चारिभिः ॥ तेषां फलकार्यैश्च
 चैव प्रदापयेत् ॥ शर्कराक्षीर नैवेद्यं कन्याविप्रसुभोजनम् ॥ आत्मनः पारणां तद्वद-
 क्षिणां प्राकृतो ददेत् ॥ सर्वतीर्थाभिदेकं सन्ननेनाहोतिभार्गव ॥ इति अथ ज्येष्ठ
 शुक्लदमी ॥ तत्र शुक्लां देवीं पूजयेत् ॥ तद्वक्तव्यं ॥ शुक्लदस्यां पुनजाता शुक्लादे-

क्षी दी महा प्राणा ॥ तथाप्य दान वेदाणां शुक्ल पक्षे ततो यजेदिति ॥ अथा पाद शुक्लायमी ॥ त-
 ओषोषि यन्म ॥ हरिद्रा तोयेन रक्तात्वा महिषमी नाक्षी देवी ते नैव स्वापयित्वा ॥ पूजा का-
 र्या ॥ यदुक्तं देवीपुण्ये ॥ अष्टभ्यां च यदा पादे निष्ठा तोयेन मानवाः ॥ स्वयं स्वात्वा च-
 कथ्युरै प्रचंदने स्तां विलेपयेत् ॥ धूपचंदन कथ्युरैर्वालकैः श्रित सिल्ह कैं ॥ भक्ष्यां
 श्व प्रार्कश पूर्णान् प्राण कानि शुभा निच ॥ सापयेत्कन्यका विभ्र भोजनं चात्मन-
 स्तथा ॥ शक्तितो दक्षिणां दद्यात् महिषमीं च कीर्तयेत् ॥ दीप भाला कृते नैव सर्वा-
 न्कामा अभ्यच्छति ॥ अथ भाद्र कृत्तायमी ॥ साहिधा अष्टमी जयंती च ॥ सा चार्द्र रात्र-
 व्यापिनी ॥ विबुधर्म्मांजे ॥ रोहिणी सहिता हस्ता मासि भाद्र परे ऽष्टमी ॥ सप्तम्या भर्द्र-
 रात्रा धः कलया पियदा भवेत् ॥ अत्र जातो जगन्नाथः कोत्तु भी हरि शी प्रवृत् ॥ तमेवो-
 पवसेत्कालं सत्र कुर्याच्च पारणाम् ॥ अर्द्ध रात्रे त्रयो गोऽयं तत्र पत्युदये सति ॥ वशिष्ठोऽ-
 पि ॥ अष्टमी रोहिणी शुक्ला निष्यद्धे ह प्रयते हरि ॥ मुख्य कालं स्वविद्यैष स्तत्र जातो हरि-

स्वयमिति ॥ एवं च भूयो भूयो धुरेव वा निशीथ व्याहो कर्म काल व्याहा व्याहो सैव ॥ द्विन ह्ये व्या-
हा व्याहो तु परेव ॥ संकल्प काले सत्त्वाधिव्याह ॥ ब्रह्मवेवर्हः ॥ वर्जनीया प्रयत्नेन सप्त-
मी सहिताष्टमीति ॥ एवं रोहिण्यापि ॥ यदि पूर्वधुरेव निशीथ योगस्तदा सैवोद्यो व्या ॥ का-
र्यो विद्यापि सप्तम्या रोहिण्या सहिताष्टमीति पाच्यात् ॥ इति मयूखादिभ्यः ॥ वयं त्वालो-
चयामः ॥ सप्तमी चिह्ना सर्वथैव वर्जनी प्रयोजिका ॥ वर्जनीया प्रयत्नेनेत्युक्तं वाक्य-
व काव्या विद्यापि सप्तम्येति ॥ पाच्यं ॥ यत्र सप्तम्या मेव संपूर्ण रोहिणी योगस्तद्वि-
षयं यत्र तु अष्टम्या मुहूर्तं मपि रोहिणी तदा सैव प्राज्ञा ॥ तद्वर्तव्यं वैवर्हः ॥ वर्जनीया
प्रयत्नेन सप्तमी सहिताष्टमी ॥ सप्तम्यापि न कर्तव्या सप्तमी सहिताष्टमीति ॥
॥ त्वादि ॥ सप्तमी सहिताष्टम्या भूत्वा ऋक्षं द्विजो नमः ॥ प्राज्ञा पत्यं द्वितीये ऋक्षे शु-
हर्ता हि भवेद्यदि ॥ तदाष्टम्या भिर्का द्वेयं प्रोक्तं व्यासादिभिः पुनः ॥ पाच्यं ॥ मुहूर्तं व्यापि
संयुक्ता संपूर्णा साष्टमी भवेत् ॥ किं पुनर्नवमी युक्ता कुल कोटि विमुक्तिद ॥ न नृक-

मर्मकालस्य प्राक्कालात्पूर्वेद्युरेव ॥ निशीथव्याहो मैव ग्राह्यामैवम् ॥ तस्य प्रातिप्रदि-
 कप्रारणेणावाधात् ॥ तथाहि ॥ विष्णुहस्ये प्राज्ञा पत्यर्क्षसंयुक्ता कलेन भसिषाद्यमी ॥ शु-
 द्धतमपिलभ्येतसैवोपोय्या मह्यफलम् ॥ बन्दिप्रणणे ॥ क्लृप्ताष्टस्यां भवेद्युन्नकले कोशे
 हिरणीं स्मृतां ॥ जयंती नाम सा मोक्षाज्जपोय्या सां प्रयत्नतः ॥ क्लृप्ते ॥ उदये चाष्टमी किंचि-
 न्नवमी सकला यदि ॥ भवेद्युधुधसंयुक्ता प्राज्ञा पत्यर्क्षसंयुता ॥ अपि वर्ष प्रार्तेनापि
 जभ्यते यदि वा न वेति ॥ ननु उदये चाष्टमी किंचिदिति त्कंदवाक्याद्दुदय प्राक्चेन्न चं-
 न्द्रो दयो ग्राह्यः ॥ ता ए पत्युदये सतीति मूल काल्पनात्तावदादिति चेन्न ॥ उदय प्रा-
 क्तेन सूर्यातिरिक्तो दय परतायाः क्षाप्य इष्टत्वात् ॥ किंचैव निप्रीये चाष्टमी किंचिदिति
 वाक्यात् ॥ अथ च ॥ उदय प्राक्कस्य चंद्रो दय परत्वे ज्ञानी मष्टम्याः ॥ कर्म काल व्यास
 त्वेन निसंदिग्धतया तस्मिन्नेव वाक्येन वमी सकला यदीत्युक्ते र्वैयर्थ्यापत्तेः ॥ न च शे-
 हिणी योगस्य बुधयोगावत्प्राप्त्यभावात् ॥ अन्यथा समानवाक्योपासत्त्वात् ॥

किं कदाचिद्गोहिणीयोगाभावेन ॥ वधयोगोर्नेवोत्तरादेर्गोहिणीपक्षे रिति वाच्यम् ॥ ग्राजापत्यं
 द्वितीयं हि सुहृत्तीर्क्षं भवेद्यत्सीति ॥ स्कंदे ॥ चाक्येन ग्रहणप्रयोजकत्वात्तदभावात् ॥ सप्त-
 क्षाधिपनकर्तव्या गोहिणी संहितायमीति ब्रह्मवैवर्तचाक्येन सप्तक्षायीत्युक्ता ॥ अ-
 क्षयोगस्य निर्णयकत्वात्तदभावाच्च ॥ भवेत्तुबुधसंयुक्तेति स्कंदचाक्येन संभावार्थोक्ति-
 त्वाकारेण तु श्रव्णेन च ग्राहास्यपक्षया स्फुटं प्राप्तीति रिति हिक् ॥ बृहच्चतुर्नित्यम् ॥ जन्मा-
 यमीदिने प्राप्ते येन भुक्तं द्विजोत्तम ॥ त्रैलोक्यसंभवपापं तेन भुक्तं न श्रेयसय इति स्कंदे
 तदकारणे प्रत्यवायप्रवणत् ॥ भविष्ये ॥ प्रावणे बहुले पक्षे कृत्स्नजन्मायमीवतम्
 न करोति महाप्राज्ञव्यालो भवति कानने ॥ वत श्रव्णेनापि पूजा गृह्यते ॥ तत्रैव ॥ अह-
 रात्रे तु गोहिण्यां यदा कृत्स्नायमी भवेत् ॥ तस्याभयपक्षे न श्रेयसं हन्ति पापं त्रिजन्मजन्म ॥
 ब्रह्मवैवर्ते ॥ अहस्यामय गोहिण्यां न कुर्यात्प्राणं कश्चिद् ॥ हन्यात्पुनः कृतं कर्म
 उपवासात्तिर्जितफलम् ॥ तस्मात्प्रयत्नतः कुर्यात्तिथिभांते च प्राणम् ॥ उभयान्तोऽ-

भविष्यः कल्पः ॥ एकतरलु गोलाः ॥ वल्वैर्वर्हि ॥ सर्वेष्वेवापचासमुद्भवा पारंगामयन्तः
 ४३ इति अथ भाद्र शुक्लाष्टमी ॥ दूर्वाष्टमी सा शुक्लापि पूर्वविधैव ॥ अविद्येऽपि ॥ शुक्लाष्टमी-
 ति धिर्यालु मासि भाद्रपदे भवेत् ॥ दूर्वाष्टमी तु साक्षेयानोत्तरासा विधीयते ॥ इदं च त्र-
 तं भाद्र शुक्ले श्रगस्त्योदय संभावनायां भाद्र कृत्ति एष कार्याम् ॥ नयास्त्रिंशे ॥ शुक्ले भाद्र-
 पदे मासि दूर्वासञ्ज्ञा तथाष्टमी ॥ सिंहार्के सा च कर्तव्या न कन्यार्के कदाचन ॥ सिंहस्थे-
 सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनि सप्तमे ॥ श्रगस्त्याभ्युदिते पूजायां दोषश्च तत्रैवाक्तः ॥ श्रग-
 स्त्यजदिते तान पूजयेद् मुनोद्भवाम् ॥ वैधव्यं पुत्रप्रीकं च दश जन्मनि पंच च ॥ दूर्वाष्टमी
 सदा त्याज्या ज्येष्ठा मूलार्क्षे संयुता ॥ परविश्वयथा कृत्वा मुनिप्रशाला वयीऽत्रदीत् ॥
 सेदृक्षे पूजिता दूर्वा हंत्य पत्या निनान्यथा ॥ भर्तुराशुर्हरा मूले तस्मात्तां परि वर्जयेत् ॥
 अत्र प्रातिवर्षं मपूजने दूर्वाया वैधव्यादिदोषा विहिताः ॥ यदा पुनर्ज्येष्ठादि विरहिणेन
 संभवति ॥ तदा दूर्वासंभ्यर्च्यैकमक्तं कार्याम् ॥ बहुकम् ॥ मुहूर्ते ऐहिरीऽष्टम्या पूर्वोवा-

४३५

५।

53

परिचा परा ॥ इत्थं दृष्ट्वा तु सा कार्या ज्येष्ठा मूलं तु वर्जयेत् ॥ ऐहिको नवमो मुहूर्तः ॥ पर
विज्ञानियेधे ॥ यि यदि वा परेति पर विज्ञा विधानं पूर्वस्यां ज्येष्ठा मूल युक्तायां परस्यां कर्म
काले व्यापित्यापि कार्या निज्ञापना र्थम् ॥ अतश्च स्यात्पूर्वं विज्ञायां ज्येष्ठा मूल रहि
ता या भग्न स्या नूदये सिंह स्थे सावितरि इत्वा मभ्यर्च्य अग्नि पक्वमन्नं भोक्तव्यमेवं कृतं
॥ नारी सह जन्मनि पति पुत्र विरहं नाप्नोतीति दिक् ॥ अथाध्वना कला दमी ॥ तत्र दोष
इदमेव पूजा चोदि विधानात् ॥ सप्तमी पुण्य संयुक्ता कर्तव्या चाध्वना दमी ॥ इति
सर्वेऽस्ति पक्षे बहुले धीमते शुभा ॥ तत्र सप्तमी संयुक्तेति विशेषणं बहुला दृष्ट्या
वपुष्य संभवात् ॥ तथा ॥ अर्द्धरात्रौ भक्ति कृत्य चर्तयेयं इति तिथिः ॥ तदा तस्यां तिथौ
कार्यं महा लक्ष्मी व्रतं शुभम् ॥ उरण समुच्चयेऽपि ॥ पूजनीया प्रयत्नेन अष्टमी प्राहति तिथि
यः ॥ दोषे अत्र तु भिन्नस्य तत्कार्यं संप्रत्यक्षे तिथिः ॥ हेमाध्वतत्रैवोक्ताः ॥ पुनश्च सोमाया यो

यंश्चिन्त्यायुर्न्यायिनी सा प्रकीर्तिता ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन त्याज्या कन्या गतिरदो ॥ कन्या
 ४३ स्थरविनिधेयः ॥ आरंभ समये एव बोधव्यः ॥ तथात्र दिने चावममे चैव अष्टमिंशोप-
 वासयेत् ॥ पुत्रद्वीनवमीविद्वास्वग्नी हस्तार्द्धगेरदो ॥ धर्मग्नी त्रिदिने प्रोक्ता त्याज्या चै-
 नावमे सति ॥ स्वग्नी धनहेति यावत् ॥ त्रिस्तगवमौ पूर्वोक्तावेव ॥ एतद्वैष्वर्ज्यं न मु-
 पक्रमेद्यापनयोरेव प्रायेण ज्ञातव्यं ॥ अन्यथा षोडशवार्यं साध्यं तस्य भोगदो-
 ष संभवेऽकारणं असज्जेत ॥ अन्यदपि सति संभवे दोष वर्जनम् ॥ नतु नियमो न तथा
 चोक्तं शिवाऽर्चनं भाद्रपदे सितायमी प्रारब्धकन्यामगते च सूर्य्ये ॥ समापयेत्तन्निति-
 क्षौ च यावत् सूर्य्यं अथ पूर्वार्द्धगतो युवत्याः ॥ नवमी वेधनिषेधोऽपि परदिने चंद्रीहया
 दर्विक्रद्वेया ॥ चंद्रीहया हर्द्दगाभिनी त्रिमुहूर्तायमी चेत ॥ त्रिमुहूर्तं व्यापित्वे तद्वै-
 व नवमीविद्वपि कार्या ॥ तदुक्तम् ॥ पूर्वार्द्धापरार्द्धा वाग्राह्या चंद्रीहये सति ॥ त्रिमुह-
 र्तापि सा पूज्या परतश्चोर्द्धगाभिनीति ॥ चंद्रीहया हर्द्दगाभिनी त्रिमुहूर्तायमी चेत ॥

पात्रार्थान् चेत्युच्येति ॥ इति महालक्ष्मीनिर्यायः ॥ अथाधिवनश्रुत्वाष्टमीनिर्यायः ॥ सा च नव-
 मीधुतेवदुर्गोपवासादिद्विग्राहा ॥ सहस्री विद्वानुनकार्यादीष्वश्रवणात् ॥ तदुक्तं ॥ पुत्रा-
 न्नेति धसुहंति हंति राद्रुसराजकम् ॥ हंति जातान जातौ भ्रसन्तमीसहिताष्टमी
 ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सहस्रीसंख्य संयुता ॥ वर्जनीयाष्टमी चैव ध्रुवोराज्यमभीप्सुभिः
 अन्यथापि ॥ नूत्नेनापि हि संयुक्ता सदा त्याज्याष्टमी बुधैः ॥ इत्यादि वाक्यैर्नवमी विद्वान-
 यमी कार्याति सिद्धम् ॥ यतुग्रहं भद्रा च भद्राहं नावयोरं तरेष्वाचिनः ॥ सर्वसिद्धिं गदा-
 स्थाभि भद्राद्यामर्चिता यद्गम् ॥ भद्राद्या भद्र काल्या प्रथम्येस्या दर्शनं क्रिया ॥ तस्माद्दे-
 सतमी विद्वान् कार्या दुर्गाष्टमी बुधैः ॥ इति ॥ विहित्यत्वा महाष्टम्यां भस्मपूजां करोति यः
 तस्यापूजा फलं न स्या तेनाहमवमानिता ॥ इत्यादि सप्तमी वेधविधा यिक वाक्यं ॥ तदु-
 यत्नतिष्ठि ग्रासात् इति ॥ यद्दिने अष्टमी विरहस्तत्र सावकाशं ॥ तदुक्तं ल्यति संग्रहे ॥ यदासू-
 यो ह्येन स्यान्नवमी चापरे हनि ॥ तदाष्टमीं प्रकुर्वीत सहस्र्यां सहितां चयेति ॥ दुर्गोत्सवप्रकरणे ४३६

या कार्या कथं बुधैः ॥ अर्तिप्रश्ने ॥ अस्योत्तरं ॥ विष्णुसन्निधे ॥ प्रावसूते समुत्पत्तेन त्रोत्पत्त्यं
 दाभवेत् ॥ देवी पूजा प्रकर्तव्या पशुपत्तविधानतः ॥ देवी पूजा रंभे अंतर्गसूत केयानेऽपि
 पुनादिनव एनं यावद्विधेयं अगारं नु परहरेव ॥ अग्नि होत्रादिवत्कारयितव्यं ॥ इति अ
 धर्कार्ति कृत्वा यमी सा गोदायमी ॥ तत्र गो पूजा कार्या ॥ कूर्मपुराणे ॥ शुक्लायमी कार्तिके तु
 स्मृता गोदायमी बुधैः ॥ तत्र कुर्यात्तवां पूजां गोपायं गोमदक्षिरां ॥ गवानु गमनं काव्यं
 सर्वात्कामानभीप्सतः ॥ इति अथ यौष शुक्लायमी बुधपुक्ता महाभद्र ॥ तत्र महेश्वर पूजादिकं का
 र्यं शूलकं भविष्ये ॥ यौषे मासि वदं देवि शुक्लायस्यां बुधो भवेत् ॥ तदा तु सामहा पुराया महाभद्रे
 ति कीर्तिता ॥ तस्यां स्नानं जपो होम स्तव्येणं विप्र भोजनम् ॥ मन्थीतये महा देवि पूज्यो
 ऽयं विधिवद्बुधै रिति ॥ भाष शुक्लायमी व्यायमी ॥ तत्र भीष्म तर्पणं ब्राह्मं च कार्याम् ॥ श्री
 धर्मपुराणे तु भीष्मस्य देवा वतारत्वाद्वास्याख्यायधिकारः ॥ तथा च पाद्ये ॥ नाद्ये मासि
 सिताष्टम्यां सति तं भीष्म तर्पणम् ॥ ब्राह्मं च देनराक

५१

विद्याश्रये वर्णद्वयभीष्माय नोजलम् ॥ संवत्सरं कृतं तेषां पुराये नश्यति सत्तम ॥ तर्पणं
३३ वसु ॥ ॐ भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जि तेंद्रियः ॥ आभि रद्भिर वा द्रोतु पुत्रये नो-

चित्तां क्रियाम् ॥ वैद्या ध्य पद गोत्राय सां कृत्य प्रवराय च ॥ अपुत्राय प्रदानं व्यंजलं भी-
ष्माय वर्मणे ॥ वस्त्रास वता राय संतनो रात्म जाय च ॥ अर्घं दद्यानि भीष्माय आवाह
वस्त्र चारिणे ॥ ददं च जीवति ल को ऽपि कुर्यात् ॥ अने नैव तर्पणा मर्घदानं च ॥ इति ॥
अथ फाल्गुन शुक्ल षष्ठ्यां ॥ लाक्ष्मी सीता च पूज्या ॥ यदेवान्मं ज्ञास्यो न्यो दत्तं तद वशि-
ष्ट मेव भोज्यं नान्यत् ॥ ब्राह्मे ॥ प्रास्त्रमुभे रक्ष्म्यां सुता तैश्चै र्त्वलं कृतैः लक्ष्मी सी-
ता संश्लज्या शंभु माख्यादिभि रसदा ॥ प्रदोष समये दीपाः देया यथा तसह तशः ॥ दत्त
शिष्टं तदा भोज्यं भस्मि त्वं च वंधुभिः ॥ तस्यां संपूर्णायां यदा वुधवा रे भवति तदैक भक्तं
कार्यम् ॥ तथा च भविष्ये ॥ यदा यदा सिता रक्ष्यां वुधवा रे भवेद्यदि ॥ तदा तदा हि संग्राह्य
एक भक्ता स नै र्नुपः ॥ वुधारक्ष्मी तु संपूर्णा यथा क्त फल दायिनी ॥ अथ निबिहानाह ॥ द्वादश च

काले तथा चैत्रे प्रसुप्ते च जनार्दने ॥ बुधायमी न कर्तव्या हंति पुरा यथा कृतम् ॥ इति ॥ इ-
 त्यमीनिर्णयः ॥ अथ नवमी निर्णीयते ॥ उपवासो दियु नवमी पूर्वयुतैव ग्राह्या शुभमवाक्या-
 त् ॥ ब्रह्मवेर्वै ॥ अथ स्यां नवमी विद्वा कर्तव्या फलकांक्षिभिः ॥ न कुर्व्यान्नवमी तात-
 दशम्यां तु कदाचन ॥ तथा ॥ नवमीं दशमीं विद्वां ये कुर्वन्ति विमोहिताः ॥ दृष्ट्वा सर्वभ-
 वे तेषां वलिभूजा विधानं क मिति ॥ अतो नवमी पूर्व विद्धे वेति सिद्धांतः ॥ अथ चैत्रशुक्लान-
 वमी एव नवमी ॥ सा च मध्याह्नव्यापिनी ॥ दिनद्वये च व्याप्ता व्याप्तौ च पुनर्वसुयुगात्तादृ-
 श्यपि च दिनद्वये परा ॥ चैत्रे मासि नवम्यां तु शुक्लपक्षे रघूत्तमः ॥ पुनर्वसावा विराज्यो-
 रब्रह्मैव कैवल्यम् ॥ उपोषणं जागरणं पितृनुद्दिश्य तर्पणम् ॥ तस्मिन्दिने तु कर्तव्यं-
 ब्रह्म आर्क्षि मभीष्टुभिः ॥ एतद्व्रता करणो प्रत्यवायप्रवणः ॥ तत्करणो फलप्रवणः ॥ च निर्युक्तो-
 स्यंच ॥ पर्व द्वये कुरुक्षेत्रे महाहानीकते मुहुः ॥ यत्फलं तदवाप्नोति श्रीराम नवमी व्रते ॥
 कुर्याद्भूम नवम्यां तु उपोषणं भतं दितः ॥ मातुर्गर्भे च चाप्नोति सुखं रामो भवेद्भुवम् ॥ इत्या-

दीनि वह्नि वाक्यानि अगास्य संहिताया मुक्तानि ॥ निश्च ॥ यो वै राम नवम्यां तु भुक्ते मा-
 हं हादि मूढधीः ॥ कुंभी पाके शुचौ रेयु पच्यते नात्र संशयः ॥ इदं च शुद्धादिभेदात् हादराधा-
 तथा च ॥ शुद्धादिहादिभेदेन नवमी सादिधा स्मृता ॥ समान्यनाधिका चेति शुद्धापिनव-
 मी त्रिधा ॥ पुनर्नक्षत्र संयोगवियोगाभ्यां च षड्विधा ॥ समादि ऋक्षयोगादिभेदे विद्वापि ष-
 ड्विधा ॥ एवं हादराधाभिन्ना नवमी तत्र निर्णयः ॥ महाफलप्रदा शुद्धा पुनर्वस्वक्षयो गतः ॥
 चैत्रे शुद्धा तु नवमी पुनर्वसु श्रुता यदि ॥ सैव मय्यान्हयोगेन महापुण्यतमा भवेत् ॥ केवल-
 पिसदोषो व्यानवमी सा च संग्रहात् ॥ अस्मिन् चोत्ते सर्वेषां भिकारः ॥ विद्वैव चेदहं युता ज्ञानं त-
 न्न कथं भवेत् ॥ उत्तरं तत्रैव ॥ नवमी चाद्यमी विज्ञात्याज्या विस्रु परा यतौः ॥ उपोषणं नवम्यां चै-
 दराभ्यामेव पराणाम् ॥ दराभ्यां तिथि वृद्धिश्चेत्यरित्याज्ये च वै स्तवैः ॥ तदन्येषां तु सर्वेषां ज्ञ-
 तं तत्रैव निश्चितम् ॥ दक्षम्यामेव प्राप्ते न दराभी नैवलं घयेत् ॥ निश्चित्यैवं विचार्येण नव-
 मी ज्ञातमा चरेत् ॥ इति ॥ अथ वैष्णवमासे ॥ उभय नवम्यो रूपवास पराश्राद्धिकां पूजयेत् ॥

पुङ्क्तं भविष्ये ॥ वैष्णवे प्राप्तिराजेंद्रनवम्यां पक्षयोर्द्वयोः ॥ उपवास परोभक्त्या पूजया नस्तु दृष्टि-
 काम् ॥ हंसकुंदं स का प्राप्ते जसा भुव सन्निभः ॥ विमान वरमा रुढो देव लोके महीयते ॥ इ-
 ति ॥ अथ ज्येष्ठ शुक्लानवमी ॥ तस्या मुभां वास्याणी नाक्षी पूजयित्वा वास्याणां कुमारीं श्रद्धाभीज-
 येत् ॥ भविष्येऽपि उपवास परोभूत्वा नवम्यां पूजयेद्दुर्गाम् ॥ वास्याणित्वितिवैना नाश्वेत रूपे
 राक्षसिणी ॥ ज्येष्ठ मासि चतुर्थे शुक्लानक्तस्यैव विधिम् ॥ प्रात्पन्नं पयसां पेलं स्वयं भुं-
 जीतवा म्यतः ॥ कुमारी भोजयेच्चापि स्व शक्त्या वास्यां स्तथेति ॥ अथापादस्य हेतव्यो अथ-
 म्यां पंच गव्यस्नात उपो विर्तः ॥ हंसी देवी पूजयित्वा नक्तं कुर्यात् ॥ तदुक्तं भविष्ये ॥ उपवास परो-
 भूत्वा नवम्यां पक्षयोर्द्वयोः ॥ आपादे माप्तिराजेंद्र पः कुर्यान्नक्तभोजनम् ॥ पूजयेच्छुद्ध-
 यादुर्गा मैत्री नञीं तु नामतः ॥ हेरावतगतां शुभां श्वेत रूपेणा रूपिणीम् ॥ सरोरावतमा-
 नक्तं भुञ्जीत ॥ तदुक्तं भविष्ये ॥ प्रावरो माप्तिराजेंद्र पः कुर्यान्नक्तभोजनं ॥ स्त्रीं यच्छि कुर्यात्

न सर्वभूतहिते रतः ॥ उपवास परो वीरनवम्यां पक्षयोर्द्वयोः ॥ कोमलशिल्पितवनाभ्या
 ४४५ शिल्पां पूजयेत्सदा ॥ कृत्वा शेषपथं भक्त्या योगं वै पापनाशिनीं ॥ कारस्य पुष्पे कु
 म्भे भ्यां गरुडचंदनैः ॥ भूपेन च दर्शनेन बोद्धव्यं भ्यां पि पूजयेत् ॥ कुमारैर्भोजयेच्छक्त्या
 स्त्रियो विप्रैश्च शक्तिरतः ॥ भुंजीत चाप्यतः पश्चादित्थं पत्रलताश्रितः ॥ एवं यः पूजयेत्
 यथा श्रद्धया पर्याच्यतः ॥ स याति परमं स्थानमिति ॥ अथ भाद्रपुक्लनवमी ॥ नंदानां भू
 तसंस्तुत्य विष्णुलोकं गच्छति ॥ तदेव भविष्यतीति ॥ मासि भाद्रपदे यस्या नवमी बहुलतेरा
 सा तु नंदानां पुराणा कीर्तिता पापनाशिनी ॥ तस्यां यः पूजयेद्भुंजीत विधिवत्कुरुनंदन ॥
 सोऽथ गोपकलं विद्याद्विष्णुलोकं समाच्छति ॥ अत्रैव कलनवम्यां देवी मुत्थापयेत् ॥ तदे
 व देवीपुराणे ॥ कन्यायां कलपक्षे तु पूजयित्वा देभ्योऽपि वा ॥ नवम्यां वोधयेद्देवीं गीतवा
 दित्रिभिः प्रवने रिति ॥ आश्विन शुक्लनवमी मन्वादिः ॥ कार्तिक शुक्लनवमी युगादिः ॥ अ
 थ मार्गशिर शुक्लनवमी नंदिनी ॥ तस्यां त्रिरात्रो यो धितः पूजयित्वा देवीं त्राजिमेधफलं प्राप्नो

वि॥ तदेव भवत्ये ॥ आसि मार्ग शिरे दीर शुक्ल पक्षे तु या भवेत् ॥ सानंदिनी महापुण्या नव
 मी परी कीर्तिता ॥ यस्तस्यां पूजयेद्देवी त्रिश्रोषोक्तिं नरः ॥ सोऽप्यमेधमन्त्राये ह विबु
 लोके महीयते ॥ अथ साध शुक्ल नवम्यं महानद्यां स्नान दानादि कृत मक्षयम् ॥ यदुक्तं ॥ मा-
 धमारं तु या शुक्ल नवमी लोका पूजिता ॥ महानंदेति सा शोका सदानंद कारी नृणां ॥ तस्यां
 स्नानं तपोदानं जपौ होम उषणम् ॥ सर्वं तदक्षयं श्री कंथ दस्यां क्रियते नरे रिति ॥ स-
 र्व नवमी शु ति धि प्रति त्वे न सर स्व गी हृज्येति दिक् ॥ इति नवमी निरुचिः ॥ अथ दशमी नि र्सीयते
 दशमी ति धि र्नवमी युते वोष वासादि द्यू विधेया ॥ शुक्ल पक्षे ति धि र्ग्रीष्मा यस्या मभ्युदितो
 रयिः ॥ इक्ष पक्षे ति धि र्ग्रीष्मा यस्या मस्त भितो रयिः ॥ इति कचनात् ॥ उषवा सेतु सर्वा पि पूर्व-
 व ॥ दशम्ये वा दशमी विद्वानो पो य्या सा कथं च नेति ॥ शिव रहये ॥ आप सं वरु ॥ श्रावृ मी नव-
 मी विद्वान्कर्तव्या फल कांक्षिभिः ॥ दशमी तु भ कर्तव्या सहृ यो दिज सहैर ॥ वैदी न सिधि ॥
 पंचमी सप्तमी चैव दशमी च त्रयो दशी ॥ शति पन्नवमी चैव कर्तव्या समुत्थी ति धि रिति ॥

यत्तु वचन ॥ सप्रणा दशमी कार्यापराया पूर्वया द्वावा ॥ युक्तान्नुक्तिना धरणागतः सा सर्वतोभु-
 र्वा ॥ तत्र पूर्व विद्वद्वाग्दाने उदय काल व्यापिनी चास्तेत्येव धरम् ॥ यदास्कादशी जगतो ग-
 लेना दियमाणा दशम्यां एकमक्ता दिक्परा विद्वद्वाग्कार्य्यमिति सिद्धं तः एव वै न शुद्धं दश-
 मी ॥ अस्यां य स पूजनं विधीयम् ॥ यद्वहं देवीपुण्ये ॥ चैत्र मासीय तिथिप्रभाते ॥ धर्म एजं दश-
 म्यां वृत्तं यत्ता सुभां धर्कैः ॥ विघातादि निर्गतं क ह्म चांते परं पदमिति ॥ मां युयादिति शेषः
 अथ ज्येष्ठ शुक्ल दशमी दश होत्सुच्यते ॥ यत्तु चास्ते ॥ ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्त संयुता ॥ ह-
 रते दश पापानि तस्माद्दश हरणं कुरुतेति ॥ अविष्यो वरेच ॥ ज्येष्ठे शुक्ल दशम्यां च भवेद्भोगे यदि
 नं यदि ॥ ज्येष्ठ्या हस्तार्क्ष संयुक्ता सर्वे पाप हरतिथिः ॥ दश पापानि च भवन्तीति ज्ञानि ॥ परं ज्ये-
 ष्ठ भिधानं मनसा निदृष्टं तत्तन्म ॥ दिनयात्रि निवेष्टाश्च मानसं त्रिविधं स्रुतम् ॥ परं ज्ये-
 ष्ठमन्तं वैवैष्णवं चापि सर्वं प्राः ॥ असं वद प्रलापश्च वाङ्मयं स्थानं तु द्विधं ॥ यद्वचनानां सु-
 धादन्तं हिंसा चैवा विधानतः ॥ परं दशो परं चाच काश्चिकं त्रिविधं स्रुतमिति ॥ स्तोत्रे ॥ यम-

काञ्चित्त्वारितं प्राप्य दद्याद्देवति स्तोदकम् ॥ मुच्यते दशभिः पापैस्तु महापातकोद्देशैः ॥
 मंगायाम् त्वति प्रशस्तम् ॥ पचतत्रैव ॥ स्नान काले न्यतीर्थं तु जायते जगन्महीजनेः ॥ वि-
 ना विसुपदी नान्यतीर्थं यच्च विशेषतम् ॥ द्द्वयं च दशहारा यत्रैव योगवाङ्मन्यं तत्रैव-
 कार्थ्यम् ॥ तत्र दशयोगाः स्तोत्रैः ॥ ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशभ्यां बुधहस्तयोः ॥ व्यतीपाते
 शरानन्दकन्या चन्द्रे दृषेत्वा विनि ॥ कारहस्ये ॥ कुम्भवाद्योगः ॥ स्तोत्रे ॥ बुधः कल्पयेद्देन
 यद्विहार्यः ॥ द्द्वयं च योगविशेषात्पूर्वपराया ॥ मलभासयति तु तत्रैव ॥ अथ ग्रहोऽपि ॥ द-
 शहरा सुतोत्कर्षय्य तुर्व्यपि युगादिषु ॥ उपाकर्ष्य महाधरणी होतुं हुक्मं दद्यादिति ॥ आस-
 द्देऽपि भवतीत्यपरः ॥ इति दशहरा अथाऽपि न शृङ्गदशमी विजयदशमी ॥ तस्यां नवमी प्रव-
 णा र्क्षिणतायामपराजितां पूज्य प्रस्थानं कुर्यात् ॥ स्मृतिचिन्तामणौ ॥ श्याधिवनस्याशिते पक्षे
 दशम्यां तारकोदये ॥ सवालौ विजयो ज्ञेयः सर्वकार्यार्थे सिद्ध्ये ॥ स्नानेऽपि ॥ यावत्पुष्पि-
 नवमी युक्ता तस्यां पूजा पराजिता ॥ दद्याति विजयं देवी पूजिता जयवर्द्धिनी ॥ दशमीयस्त-

सुखं प्रस्थानं कुरुते नरः ॥ तस्य संवत्सरं राज्येन क्वापि विजयो भवेदिति ॥ दिनद्वये तार
 वोदय काला भावे परदिने एकादश मुहूर्ते यात्रा विधेया ॥ तत्र भृगुः ॥ अथाभिन स्य धिर्ते पक्षे
 दशस्यो सर्व राशिषु ॥ सायं काले शुभायात्रा दिवा वा विजय क्षणे ॥ विजय क्षण एव एकादश
 मुहूर्तः परदिने एकादश मुहूर्तो भावे त्रिपुङ्गवा भिव दशस्य प्रस्थान भयपराजिता ॥ पूजा च भि
 ज्ये ॥ अथ राक्षसि पूर्यायां काकुत्स्थः अस्थितो यतः ॥ तदिनं ईर्तुषी मान मुहूर्ते दुस्सुतो नरः ॥ अथ रा
 भावे तु केवल दशस्य भावे वेति दिक् ॥ राजचिह्नानां पूजा अथ राजीता पूजा अत्र ग्रंथ गौरव भ
 यान्जो स्त्रिद्विता ॥ इति विजय दशमी ॥ सर्वासु दशमी सुयमः इत्यास्ति थि पति त्वात् इति दश
 मी निरुत्यः अथाशेष दिविषदीन्यस्य भगवतः श्रीगुरुभ्यो नमः स्मरणं मात्रेण सकलाय निवर्तकस्य वैकुं
 ठ गगन निष्प्रेणी प्रिया च मुनि कंदव कै रूपो यिते कादशी निर्णीयते ॥ तत्रैकादश्य पचासो द्वेधा नि
 षेध प्रतिपालनात्मको द्वादश रूपश्च ॥ तत्राद्यः ॥ न प्रारंभेन पिबेत्तोयं न खादेन्मांसस्य धूकोरो एका
 दश्यां न भुंजति पक्षयो र्भयो रपीति ॥ कोर्मर्देवलापाः अयये ऽपि ॥ यद्दृश्यो द्दक्ष चादिवाशा

धर्मि हिनाग्रि स्वदीवच ॥ एकादश्यां न भुंजीत पक्षयो र्गमयो रपि ॥ न चान्न पच्युदासीनं भक्षयिष्ये ॥
 तदेतं वनादिप्रव्याभावात् ॥ नतस्य तु नक्षत्रैर्वर्जं ॥ ग्राह्ये हि हिने सम्यग्निषाण्यनिषयं-
 निषि ॥ इष्टाया शुप वा शब्द बहुव्याहै सवैवतम् ॥ इदं शिव भक्त्यादि दि र्गमि कार्थम् ॥ शेर-
 राणे ॥ वेस्त्रिवा वा षष्ठे वो वासो रोः पौनस्यमाचरेत् ॥ इति सोमप्रदिधानित्यः कात्यायनव्रतनारदः ॥ ए-
 वीपदे च कर्तव्य मेकादश्या सुपोप्राप्तिनि ॥ अतो वित्यत्वमेव ॥ यदीहिसि हिष्णु ला सुज्यं धियं सं-
 नतिवा ल्मनः ॥ एकादश्यां न भुंजीतीत्यादि दो र्गमि हिदु फल शुनिभ्र काभ्यता ॥ उभये व्रतद्वयी-
 नतश्च गृहस्थातिरिक्ताणा मेव ॥ गृहस्थाः सुक्ताया भेदन कृत्वा धाम् ॥ यद्येव लः ॥ एकादश्यां
 न भुंजीत पक्षयो र्गमयो रपि ॥ वनस्य प्रतिधनो र्गि ध भुक्ता मेव सदा गृही ॥ तदेव नारदो अपि ॥ सं-
 ग्रात्या शुप वा सं च कृत्वा कादश्या वा खरे ॥ चंद्रसूर्य ग्रहे चैव न कुट्यां नुजं वा च्छही ॥ तथा च विद्रे-
 योऽपि ॥ एकादश्या ॥ पात्रे ॥ प्रायनी वो धिनी मध्ये पाकसैका दश्या भवेत् ॥ शैवो पो व्या गृहस्थे
 न वान्या कृत्वा कोदा चन ॥ यनुमदन खेनोर्वेव्ये ॥ यथा शुक्ता सथा कृत्वा ह्यद्वयी मे सदा प्रिया ॥

॥ ३८ ॥ शुक्ला गृहस्थैः कर्तव्याभोगसंतानवर्दिनी ॥ नृमुक्षुशिस्रया कृष्टानतेतेनोपश्रिता ॥ यत्
 सर्वकृष्णायामसर्वगृहिणां संभवत्येव तद्गृहस्य वैलव्यं परं ॥ तथा च नाहः ॥ पुत्रावांश्च स भार्याश्च
 वंय दुरुक्तस्तथैव च ॥ उभयोः पक्षयोः कास्यं व्रतं दुरुप्याच्च वैलव्यम् ॥ अनेन कास्यं परं पुत्रिवावदा-
 स्यते ॥ पुनरपि ॥ विभवाया वनस्य स्ययते श्रेका दृशी हृदये ॥ उपवासी दहस्य स्यात्पुत्रमया भिषु-
 क्षिणाः ॥ प्राच्यादिभते वैलव्यं हस्मानाभेदे ॥ भर्तृका दृशी व्रतं नित्यम् ॥ उपवासं निवेदिषी-
 वी चायवोये ॥ उपवासा निवेदिषी किंचिद्गृहस्थं प्रकल्पयेत् ॥ ननु व्यत्युपवासेन उपवासं फलं सि-
 यते ॥ भद्रस्य मयितत्रैव ॥ नल्लं हविष्यान्मम यो दनं च फलं तिलाः क्षीरसायां दुग्धं च ॥ दानं
 दद्यात्पुत्रिवापि चाद्युः प्रशस्तमत्रोत्तरं मुत्तरं च ॥ अगस्त्यैका दृशी व्रतं नित्यम् ॥ तथा च सप्त-
 माहः ॥ वाक्येति यदा गृहस्थका दृष्ट्या सुपोषणम् ॥ सप्तमे नरकं याति रौद्रं तथ सा दत्तवत् ॥
 नारदोऽपि ॥ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्याशानि च ॥ अन्यथा भिरप्यतिर्द्धति संपत्तिरु-
 त्तिवासे ॥ एतरे ॥ मातृहा विलह्या वापि आयुर्दो गृहहा तथा ॥ एका दृष्ट्यां तु दोषं द्वे पक्षयोरे-

भयोऽपि ॥ वरं स्वमातृगमनं वरं गोसां समक्षणम् ॥ वरं हस्त्यासुरपानं नैकादृश्यां च भोज-
 नम् ॥ वशिष्ठः सकादृशीसमुत्थेन वहिना पातकैर्धनम् ॥ भस्मतां याति शर्जं द्रव्यं पि जन्म
 प्रतो ज्ञवम् ॥ अथ दृश्यमीवेधो हि ॥ अरुणो दयवेधः सूर्यो दयवेधश्च ॥ पूर्वः वै हवप्रः अप-
 रस्मात्तपरः ॥ अथः गारुडः ॥ दृशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणो दयः ॥ नैवो वो व्यं वै क्ष-
 वे न तद्विनेकादृशी ज्ञतम् ॥ अरुणो दयस्वल्पमाधवीयस्कां दे ॥ उदयात्मा कृत्तस्नस्तुषटिका
 अरुणो दयः ॥ इति अंत्यस्वदयवेधः ॥ हेमाद्रौ माधवीये गारुडे ॥ उदयात्मा कृत्तस्नस्तुषटिका व्या-
 पित्येकादृशी यदा ॥ संहिग्वैकादृशी नाम वज्जेर्धं धर्मकां सिभिः ॥ उदयात्मा इजुर्हर्ते न
 व्यापित्येकादृशी यदा ॥ संयुक्तौ कादृशी नाम वज्जेर्धं धर्महृदये ॥ नारदीयेऽपि ॥ त्वर्वे-
 धेऽपि विवेन्द्रशाल्ये कादृशी त्यजेत् ॥ सुश्या विदुना स्पृष्टं गंगां भद्रवनिर्मलम् ॥ साध-
 दोऽपि ॥ सेवं कलादिबोधेऽरुणो दयवेधे सूर्यो दयवेधे समानत्वम् ॥ निगमेऽपि ॥ सर्वप्रका-
 रवेधो यशुप्रवासस्य दूषकः ॥ हेमाद्रौ स्वत्यंतरे ॥ अक्षानाद्यादिवां मोहात्कुर्वन्नेकादृशी नर-

संलि ॥ दशमी शेषसंयुक्तो प्रायश्चित्तमिदं चरेत् ॥ कृच्छ्रपादं नश्यत्वा नाच दद्यात्सवात्सकाभ
 २५३ ॥ सुवर्णं स्याद्द्विकंदेयं तिलं दोरणं समन्वितम् ॥ अथ च ॥ ब्राह्मणभोजये त्विं प्रति त्रिं दोरा
 मथापि वा ॥ स्वल्पं तेऽपि ॥ दशम्याः प्रांतमाद्यायुधदोदति दिवाकरः ॥ तेन स्पष्टं हरिदिनं द-
 नं जंभासुराय यत् ॥ अत्रारुणोदय वेधो वै स्वविषयः ॥ वैलवस्वरूपं माधवीयेत्कोदे ॥ परमाप-
 दसाप्रप्ते हर्षे वा समुपस्थिते ॥ नेकादशीत्यजेद्यस्तु यस्यादीक्षा स्तिवैलवी ॥ विस्वर्षि-
 तादिवलाचारः सहि वैलव उच्यते ॥ माधवः ॥ अरुणोदय वेधोऽत्र वेधस्सूर्योदये तथा ॥
 उक्तो ह्येदशमी वेधो वैलवस्मार्तयोः क्रमात् ॥ माधवमते ॥ वैलवे ररुणोदय विहृत्याज्या
 एकादशी द्वादशी वाधिका चेत्यज्यतां दिनं ॥ पूर्वं ग्राहं दूतं रस्यादिति वैलवनिर्णयः ॥
 स्मार्तैस्तु सूर्योदय विहृत्याज्या ॥ यदा त्वेकदा शुद्धासती ॥ चर्हते द्वादशी च ॥ सम-
 न्युक्ता वा ॥ तदा गृहस्थैः पूर्वापतिभिरुत्तराकार्या ॥ प्रथमे हनि संहरा व्याप्या होरा
 त्रसंयुता ॥ द्वादशी च तथा तात दश्यते पुनरेव च ॥ पूर्वाकार्या गृहस्थेऽथ यतिभिश्चो

कंलि ज्ञा तया वति शकंते ॥ चर्द्धमानेऽभ्येवम् ॥ अथ चर्द्धेयुः शब्दालिङ्गसर्वेयो परैः ॥ चक्षुः
 नारः ॥ संपूर्णैकादशी सप्तप्रभाते पुनरेव सा ॥ सर्वैरेवोत्तरा काल्या प्रभाते द्वादशी मृदि
 द्वादशी मानद्वहो शुद्धया पूर्वम् ॥ नरेव नारः ॥ नचैरेकादशी विहो द्वादशी मरुस्थि-
 ता ॥ उपोष्येकादशी ननयदी च्छे मरुमृष्टमिति ॥ मभलोऽपि ॥ द्वादशी मानद्वहो तुषु-
 च्छविह्वेव स्थिते ॥ शुद्ध पूर्वोत्तरा विह्वस्तु नितिसमिह्वराः ॥ मरुतये ॥ विह्वराद्वि-
 द्वा विह्वेया परतो द्वादशी न चेतं ॥ इति विह्वपि च विह्वस्तु मरुतो द्वादशी यदि ॥ माधवः
 सकादशी द्वादशी चोत्सृभयं नर्द्धेयम् ॥ ननु पूर्वदिन त्याज्यस्मान्न ग्राह्य परदिन स-
 ॥ प्रचेत सोक्षिपि ॥ यद्वा द्वादशी विह्वरा चोत्सृभे कसे विरोधतः ॥ उत्तरावयति चोत्सृभे
 पूर्वा सुपवशे मृही ॥ नयो दश्यां नलयेत द्वादशी यदि किंचन ॥ उपोष्येकादश्या ननु
 दशमी मिश्रितापि चेति ॥ क्वांते के ॥ हेमाद्रिसंतेव ॥ अह्न समाप्तं न्यूना बाधिका द्वाद-
 शिका चेत्सर्वेषां पूर्वैरेव न्युक्तं देक्षत परम् ॥ समावर्ताना न पूर्वैरेव स्थविरोधः ॥ हेमाद्रिणा च्छ-

यादृशवैकादश्युच्यते ॥ तथा च ॥ शुद्धा विद्वाननन्दो ज्ञेयान्धनसमाधिकैः ॥ षट्प्रकारा
 न्नस्तेषां द्वादश्यनसमाधिकैरित्यद्यादृशीकादृशीभेदाः ॥ तत्र शुद्धाधिकान्धनद्वादशि
 का शुद्धाधिकसमद्वादशिका च ॥ सकामेः पूर्वाभिः कारुण्येन कादृशी यत्र प्रभर्तते पुनरेव सा
 कायां नुविस्तृतीति को मरुपवास इत्युक्तार्थम् ॥ सपूर्णाकादृशी यत्र प्रभर्तते पुनरेव सा
 ॥ लुप्यते द्वादशी नास्ति न्युपवासः कथं भवेत् ॥ उपयुज्यते त्रिंशो तत्र विस्मृतिरिति तत्पर
 रिति ॥ ब्रह्मवर्षिणः ॥ नाहो भवि ॥ सपूर्णाकादृशी यत्र द्वादश्या दृष्टिमाभिनी ॥ द्वादश्या
 लेषनं कार्यं त्रयोदश्यातु पराणम् ॥ शुद्धान्धना शुद्धाधिका शुद्धसमा ॥ विद्वान्धना
 विद्वदाधिका विद्वत्समा द्वादशिका चेत् ॥ सर्वेषां परे वेति हे मादिः ॥ मदनं लोभ ॥ शुद्ध
 धिका परा ॥ अन्यपूर्वा ॥ शुद्धा यदा समाहीना समाहीनाधिको ज्ञरा ॥ स्वकादृशी सुपु
 वसे न्नशुद्धो वैलवी मयीति ॥ स्कंदे ॥ शुद्धा स्वकादृशी ज्ञरा यत्र संपूर्णैर्कादृशी यत्र
 परतो द्वादशी यदि ॥ उपोष्या द्वादशी शुद्धा द्वादश्या भेद पराणम् ॥ इति वैश्वपत्नम् ॥ स्मा

संज्ञां तु पूर्वैवेति सिद्धान्तः ॥ महानलेव ॥ विद्वन्मना समहादशिकावु ॥ सुमुख्येण पुनव-
 तां च परा ॥ अन्त्येयां पूर्व ॥ पुनवतोऽपि पूर्वा ॥ विद्वत्समा समहादशिको नहादशिका-
 च सुमुख्यभिः ॥ परान्त्यैः पूर्वाकार्या ॥ दशमी मिश्रिता पूर्वाहादशी यदि लुब्धते ॥ शु-
 द्धैव हादशी राजन्तु यो य्या मोक्ष कांक्षिभिरिति व्यासः ॥ मोक्षकांक्षि ग्रहाणां दन्त्येयां प्र-
 वैव ॥ सर्वत्रेकादशी कार्या हादशी मिश्रितान्नैः ॥ भानर्भवतु वामा वायवो नित्यमु-
 पो पणमिति ॥ पाचोक्तैः विद्वाधिक समहादशिका च पूर्वैव ॥ पाणाहे नलभ्ये तद्वा-
 दशी कलुषादि चेत ॥ तदानीं दशमी विद्वायु मोक्षेकादशीतिथिरिति ऋष्य प्रहो-
 क्तैः ॥ भाष्यमतेह ॥ ग्रहिणां पूर्वयितेरुत्तरा ॥ विद्वाधिक न्यून हादशिका च मोक्षपाप-
 क्षय विष्णु प्रीति कार्मेः परा कार्या ॥ गृहस्थेन तु नक्तं विधेयम् ॥ तथा च कौर्म्ये ॥ एकाद-
 शी हादशी च रात्रि प्रोक्षेत्रयो दशी ॥ उपवासं न कुर्वीत पुन यौत्र समन्वित ॥ इति ॥ दिन-
 क्षये उपवास निवेधात् ॥ दशम्येकादशी विद्वा हादशी च क्षयं गता ॥ स्त्रीणां सा हाद-

श्रीज्ञेयानर्कतुग्निहाराः स्मृतमिति ॥ बृहस्पतातपः ॥ एकादश्यां शुद्धन्यूनत्वे शुद्धसमत्वे

४५३

द्वादश्यां न्यूनसमत्वयोः एकादश्यामुपवासः ॥ संहियेयुववाक्येयुद्वादशीं समुपोषये-

त् ॥ विवादेषु च सर्वेषु द्वादश्यां समुपोषणम् ॥ पारणं च त्रयोदश्या माज्ञेयं माभकीमु-
नेरिति ॥ पाथे ॥ वेधसंदेहेज्योतिर्विदां विप्रतिपत्तौ वा ॥ वैश्वेदेः पण्यार्थे अित्यल्लम् ॥

अत्रोपयुक्तं किंचिदपि ॥ तत्र दशस्यामेकादशीयोगो ॥ दशमीमध्ये एव भोजनं कार्यम्
एकादश्या भोजने निषेधः ॥ अत्राधिकारिणे माधवीये कात्यायनः ॥ अष्टवर्षाधिको मर्त्यो द्वादशी

तिन्यूनवत्सरः ॥ एकादश्यामुपवसे तपस्यो रुभयो रपि ॥ ब्रह्मवेर्वर्ते ॥ ब्रह्मचारी च नारी च
श्रुक्तामेव सदा दृष्टी ॥ सुभगाया भर्तुरनुज्ञा परमन्यया व्रतेऽनधिकारः ॥ यत्तु विलुः ॥ पत्न्यो

जीवति यानारीस्तु पोष्यव्रतमाचरेत् ॥ आधुष्यं हस्ते भर्तुर्नरकञ्चैव गच्छति ॥ उपवासा-
सामर्थ्यं मार्कण्डेयः ॥ एकभक्तेन नक्तेन तथैवायाचितेन च ॥ उपवासेन दानेन नित्यं द-

दश्रिक्तो भवेत् ॥ अस्मार्थे प्रतिनिधिना कारयेत् व्रताकर्णेनापश्चितमाह कात्यायनः ॥ अर्के प्रर्के

द्वये एनो चतुर्दश्ययमीदिका ॥ एकादश्या गहोरात्रभुक्ता चांदायणे चरेत् ॥ अथ कास्य जत-
विधिं क्षिपु नादीये ॥ दशम्या हि मही पात्र निदिन परिक्लृप्तायत ॥ अभिनावलमुध्यादि स्त्री स-
योगा महा यशः ॥ दशम्या विधिः कोसि ॥ काश्य म्मास मसूराश्च चणका न्कोरद्वय फान् ॥
प्राक मधु परान्न च त्यजेत्तुप वसन स्थियम् ॥ अन्यदपि ॥ अण्का भास मसूराश्च पुन भोजन-
मेधुने ॥ दूत मस्य वृपान च दशम्या वैधवत्य जेत ॥ विधिये महम रणे ॥ अक्षर लवणा-
स्वर्वद्वियान्न निवेदिताः ॥ अत्रनी मरुत श्रवणाः श्रिया समक्ष वज्रिताः ॥ जतमान्य हि देव-
तः ॥ श्रुत कज्जल पात्रा मसूरा वल भक्षणात् ॥ उपवासः प्रणश्यत दिवा स्वापाच्च भ-
षुनात् ॥ अशक्तो देवलः ॥ अत्यय चास्वपाने च नोपवासः प्रणश्यति ॥ अत्यये कटे ॥ विसृ-
ह्ये ॥ गात्राभ्याग शिरोऽभ्याग तावूल चानुलेपनम् ॥ जत स्थो वज्रये त्सर्व यज्वाभ्यत्र निरा-
हतम् ॥ स्यु प्रायश्चित्त निर्णयते ॥ तेन हि सकयो स्मरव्य कृत्वा चे स्थे न्य हि सने ॥ प्रायश्चि-
तं त्रती कथ्य जन्म न्ना भयान त्रयम् ॥ पुनः ॥ मिथ्या दादे दिवा स्वापे बहु शोष्म नि ये वणा ॥

संवि
अथा त्वं वती जज्ञाशतमद्यो त्वं श्रुचिः ॥ अथाक्षः ॥ उन्मनी नारायणायेति ॥ येशीनधिरपि ॥

४४

तां वल चर्वणे स्त्री संभोगे मांस निषेवणे ॥ व्रत लोपो न चेत्कुर्यात् त्वं सा वहु जि व र्ज न म् ॥
संभोगो ऋतु कालादित्यत्र ॥ व्यासः पारणे ॥ वर्जयेत्पारणे मांसं व्रता हे प्यो प्रथमदा ॥ एकाद-
श्यां प्राद्विहो ॥ मातापितोः क्षये प्राप्ते भवेत्स्कादपि यदि ॥ अभ्यर्च्य पितृ देवा इत्यादिभिः त्रि-
हस्ते वितर्जिते ॥ अन्यदपि ॥ अलावपः ॥ सक्तादपि व्रतं प्राप्य पितुः संवत्सरं भवेत् ॥ आर्या नृप-
तनी चैव कथं कर्म्म प्रवर्तते ॥ तत्रैवः ॥ आहं कृत्वा व्रतं कुर्यात् प्राप्तां पितृपितृद्वयोः ॥ सन्ने श्व-
हं भारीतु ऋतुदानं प्रवर्तते ॥ एते नैकादश निमित्तं प्राद्विहादस्यां वदतः परस्ताः ॥ निर्मूलत्वात्
प्रावत प्रात्याहमदन एते देवतः ॥ सर्वं भूतं भयं व्यापिः प्रसादो गुरुप्राप्तनवः ॥ अन्नं प्राणि प्रकृत्यो-
सकृदेतानि प्राशयतः ॥ स्नानेऽपि ॥ पृथुष्टे तान्यन्नं प्राणि प्राणे भूते फलं प्रयः ॥ हविर्वाहा एका-
स्यां च गुरोर्वचनं मोषधमः ॥ गारुडि ॥ प्रातु कृत्यो नृणां शोकाः क्षीणानां चरदरिणि ॥ मूलं फलं
प्रयस्ते म सुप्रभो नयं भवेच्छुभे ॥ अस्यां प्राद्विहो ॥ प्रयत्ने च महत्प्राप्ते सत्याश्वे परिवर्तने ॥ नरो म-

संस्थितफलं हारीदृष्टिप्रत्ययं मय्ययेत ॥ इदं चाति संकटं विद्यथम् ॥ एते चाविरोधिर्नो निर्याच्यः
 सर्वत्र ते युद्धेयाः ॥ तत्रैकादश्यां संकल्पः ॥ एही लोहं वरं प्रात्रं इत्यादि ॥ मंत्रश्च ॥ एकादश्यां निरा-
 हारः स्थित्वा ह्रमपरे हनि ॥ ओं ह्यामि पुंडरीकाक्षप्रणामि भवाच्युत ॥ श्रेवादीनां तु हेमाक्षे
 कौरप्रणो ॥ सावित्र्या यथा वा नात्मा संकल्पं तु समाचरेत् ॥ श्रेवादिनामप्यो यजुर्वेदप्रसि-
 द्धाः ॥ वागहे ॥ इत्युच्चार्य ततो विहान्मुखांजलिमथार्चयेत् ॥ ततस्तज्जलं पिवेत् ॥ अष्टाक्ष-
 रेण मंत्रेण विज्जिह्वेनाभिर्मंत्रितम् ॥ उपवासफलप्रेसुः पिवेत्यात्रं गतं जलम् ॥ मध्याह्ने च
 दधे वादप्रसी चोधे रात्रौ संकल्पः ॥ इति साधवः ॥ दशम्या रसं गहोषेण अर्द्धे रात्रौ तपो रणतु ॥
 वज्रं नाचतुरो यात्रा संकल्प्या चतयो रसदा ॥ विहो पवासो न शनं खुदि नैर्यज्ञा समो हितः
 रात्रौ संपूजयेद्विष्णुं संकल्पं च तदा चरेत् ॥ इति नारदीये ॥ तत्रैव पूजामभिधाप्य ॥ देवस्य पुरतः
 इत्याज्जागरं नियतो ज्ञानी ॥ ह्यदश्यां निवेदनमंत्र उक्तः कात्यायनेन ॥ अज्ञानतिमिरांधस्य वने-
 नानेन क्रोधाव ॥ प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव ॥ नारदीये ॥ चाक्षुषाणां भोजये-

संक्षिप्तं च तदा दद्यात्तदा तदा ॥ कंठे ॥ कृत्वा चैव प्रवांसं तु योऽप्यति दारुणो दिने ॥ नैवेद्यं तु ल-
 ४३ सीमिधं दद्यात्कोटि विनाशनम् ॥ दारुणं वृज्यन्मिह ॥ दिवा निद्रा परान्नं च पुनर्भोजनं स-
 धुने ॥ चोदं कां प्रसाधितुं तैलं द्वादश्या भष्टवर्जयेत् ॥ विषयर्षे ॥ अंसं भाव्या हि संभा-
 व्या तुल्यस्य तं सिकां दत्तं ॥ श्यामलवर्णां फलं चापि पाशुणं प्राश्य शुद्धाति ॥ पाशुणा पित्र्यै-
 विशेषः ॥ सनत्कुमारीये ॥ नैवाद्यमादेस्वयितीह विष्णुर्वैजयन्तभ्यो परिकर्तयेत् ॥ पोस्तस्य-
 जागर्ति तथा वसनेनोपाशुणं तत्र वृषः प्रकुर्व्यात् ॥ राजसत्तां च चां द्रातं भद्रा पात किनंत-
 वां ॥ सृति कां पतितं चैव वं च्छिदं स्तुकादि कम ॥ जगुदिनाथे प्रदद्यात्पाद द्वे वां ध्वनिं सु-
 तैः ॥ अंशे चैव स तं तु जरे द्वे द्वे दद्यात् ॥ एतद्भूतं सुतकैः प्रियं कर्त्तव्यम् ॥ तथा च विष्णुः
 सूर्येकं सुतकं चैव न त्याज्यं द्वादशीं च तम् ॥ तत्र त्वत्कं दानां हि सुत कुंते कर्त्तव्यम् ॥ मातये
 ॥ सुतकांते नरः स्नात्वा पूजयित्वा जन्मा र्हे नम् ॥ एतेनैव त्वा विधानेन व्रतस्य फलमस्तु ते ॥
 राजोदयेनेऽपि कर्त्तव्यम् ॥ गुलसिः ॥ एकादश्यां न भुञ्जीत हरेः स्नात्वा राजस्यपि ॥ यदा द्वादश्यां-

ॐ नमः शिवाय ॥ प्रवणं चेतनं दाम्भुद्धा मय्येकादश्यां त्वत्प्राप्तये गोपवासः कार्यः ॥ शुक्लावायमदिवा वृत्ता द्वादशी श्रवणा
 ॥ न्विता ॥ तयोरेवोपवासं च त्रयोदश्यां च पाणाम् ॥ इति नारदीये ॥ एते च नियमाः काव्यं
 तेनियताः ॥ नित्यं व्रते सति संभवे कार्याः ॥ तत्र काव्यायनः ॥ शक्तिमोस्तु नतः कुर्व्यान्निय
 मंसविशेष एवम् ॥ अग्रहोदयमाधवीये ॥ इति विज्ञाप्य कुर्वीतावश्यमेकादशी व्रतम् ॥ विशे
 यनियमाश्च कावहे एतन्भुजिवर्जितः ॥ इति साधारणनिर्णयः ॥ अथ विशेषनिरूपणः ॥ अथ चैत्रे
 कादशी तत्र रक्षासि रक्ताक्षणी पूज्या ॥ तद्वर्कं वसुपुराणे ॥ एकादश्यां नतः स्त्रीभिर्देवी पूज्या चरु-
 किमणी ॥ दुष्पालंकारधूपान्नवल्लभास्तृणतर्पणैः ॥ तत्रैव रात्रौ सलक्ष्मीकोवासुदेव
 स्तोत्सवमांदोलनीयः ॥ चैत्रमासस्य शुक्लायामेकादश्यां तु वैश्वदेवः ॥ त्र्यां दोलनीयो-
 देवश्च सलक्ष्मीको महोत्सवे ॥ दम्भनेन सर्वयित्वा च रात्रौ जागरणं चरेदिति ॥ अथ ज्ये-
 ष्ठशुक्लेकादशी निर्जला ॥ तत्र निर्जलं सुप्रवासं कुर्यात् ॥ तदेव खंडपुराणे ॥ ज्येष्ठे मासि नृ-
 पप्रेष्ठया शुक्लेकादशी भवेत् ॥ निर्जलं समुपवीद्या त्रजलकुंभान्सर्करान् ॥ प्रद-

संविद्यविप्रमुख्येभ्यस्तापत्रयविवर्जितः ॥ विसुलोकमवाप्येह मोहनी विसुनासह ॥ इति निर्ज-
 षब्दे लोकादृशी ॥ अथाथादृशुर्लोकदृशी हरिप्रयत्नी ॥ तत्र लक्ष्मीनारयणमूर्तिं सीवार्णोपुज्य रत्नोजा-
 गराद्युत्सवं कुर्यात् ॥ पुण्यममुञ्चये ॥ अथाथादृशस्य श्रिते पक्षे एकादश्यामृषोषितः ॥ स्थाप-
 ये त्र्यतिमां विस्रो प्रशंखचक्रगदाधरम् ॥ पीतांबरधरं सौम्यापय्यं केशास्तुते शुभे ॥ शु-
 क्तवस्त्रसमावृज्जे सोपधाने यथिधिर ॥ रत्नापयित्वा दधिक्षीरघृतक्षौद्रजलैस्तथा ॥ समाल-
 लभ्य धुभैर्गंधैर्दूपैर्वस्त्रैरलं कृतम् ॥ पूजितं कुरुमैश्वर्यलैर्मन्त्रैर्गणनेन पाण्डव ॥ मंत्रश्च सु-
 द्वैत्वयि जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिति ॥ विबुधे त्वयि बुद्धेस्तजगत्सर्वं चराचरमिति ॥ एवं स-
 पूज्य देवस्याग्नेचातुर्भ्यां स्पृजतं कुर्यात् ॥ तदुक्तेभ्यो ॥ एकादश्यां तु गृहीयात्संक्रांतौ क-
 र्कटस्य च ॥ अथाथादृशो वानरो महता चातुर्भ्योऽदितं जतमिति ॥ जलारभे मंत्रस्त्रनक्षत्राणां संहि-
 तायाश्च ॥ दूरं जतं मया देव गृहीतं पुरतस्तव ॥ निर्विघ्नं सिद्धिमाया तृप्तं सन्ने त्वयि केशव ॥ गृ-
 हीतोऽस्मिन् जते देव यद्यद्गोचिष्यो न्यहस्य ॥ तन्मोभवतु संपूर्णं त्वत्प्रसादाज्जनादेन ॥

धर्मः दूतिप्रपन्नी ॥ अथ भाद्रपदे कान्दप्रथा ॥ प्रत्यनेन का दप्रथा भिवपूजो त्सवादि कुर्व्यात् वदेव भविये

धर्मः प्राप्ते भाद्रपदे मासि एका दप्रथा स्थिते हनि ॥ कटु दानं भवे हि ह्यो मर्षिहा पूजां प्रवर्तयेदिति ॥ क

ददानं पापं परि वर्तनम् ॥ अथ कार्तिक शुक्ले कापप्रथा ॥ तत्र देवपूजा जगरो त्सवादिभिर्मन्त्रेण प्र
बोध्य रथयात्रो त्सव कुर्व्यात् ॥ तदेव ब्रह्मपुराणे ॥ एका दप्रथा च शुक्लायां कार्तिके मासि के प्राव
म् ॥ प्रसूतं बोधयेद्वात्रो अद्वा भक्ति समन्वितः ॥ नृत्ये गीते स्तथा वाद्यैर्नर्तकैश्च त्सासंमंगलैः ॥
स्तोत्रैश्च विविधैस्तुत्वा पूजयेद्दर्शयेत्पुष्पैः ॥ होमैर्भक्ष्यैरप्युपलैः प्रसन्नैः पाशसैः ॥
हवाभ्यां श्वेत रत्नाभ्यां चंदनाभ्यां च सर्वदा ॥ कुंकुमालकक्राभ्यां च रक्त खट्वैः समकं करौः ॥ त
स्यां रात्र्यां व्यतीतायां ह्यदप्रथामरुणी दये ॥ आदौ दत्तेनै क्षीवेण मधुना रक्षा पयेत्ततः ॥ द
शा क्षीरेण च ततः पंचगव्येन शारत्त वित् ॥ उद्धर्तनं माष चूर्णं यस्मै मल कानि च ॥ क्षुद्रं प्रा
प्याग्निं यगृत्वा तुलुंगं गारुतथा ॥ सर्वोद्यम्य स्सर्वमंधाः सर्व वीजानि कंचनम् ॥ मंगला
निपया काम रत्नानि च कुशोदकम् ॥ सर्वं संप्रोष्य देवेशं दद्याद्देवो च नो भुभाक् ॥ नमस्तु क

सर्व
४६

लया देवा यथा प्राज्ञा लवलेकता ॥ जाती प्रसूत संयुक्ता स्तफलाश्च सकांचना ॥ पुराणा
ह वेद षट्चेन वीणा वेणु रवेणा च ॥ एवं संस्नाय्य गोविंदं त्वनुत्तिवं सुखं कतम् ॥ सुखास
संप्रजयेच्च सुमतो भिस्सु कुंकुते ॥ धृष्टे हि धेर्मनो ज्ञेय पायसेन च भूरिणा ॥ आसुराः पु
जनी आसु विस्मो रीदध्याश्च मूर्खयः ॥ यत्तु प्रिष्टा नृतं पश्चाद्भीक्ष्णं वा स एषो स्सह ॥ इति
भाव्येऽपि ॥ कान्तिके भुक्त पक्षे तु रक्ताक्ष्यो पृष्ठा मृत ॥ भोजेणानेन राजेन्द्र देवमु न्याये
द्विजः ॥ मनुश्च ॥ इदं विदुर्विचक्रतेति ॥ वैदकाः ॥ यो रणकासु ॥ ब्रह्मेन्द्र रुद्रमि कुबेरसूर्य
सो मादित्युर्वन्दितवन्दनीय ॥ बुध्य स्वदेवे प्रजगन्निवा स नञ्प्रभावेन सुखेन देव ॥ इदं
च हादशी वदेव ॥ अथ पश्चमं नः ॥ अतिथ्योतिष्ठ गोविंदं त्यज निद्रां जगत्पते ॥ त्वयि सुने जग
त्सुप्त मुस्थिते चोत्थितं जगत् ॥ उत्थापनं च दिवेव कार्यम् ॥ तदपि रेव त्वं चरणयो
गे नदभावे केवल तिथौ संध्या काले ॥ तथा च भविष्ये ॥ आशु काशितपक्षे च भवेत्प्रवणैः
वर्तते ॥ आदिमध्याह्नसन्नेषु प्रस्थापावर्तनोत्सवाः ॥ एतच्च संभवाभिप्रयिष्येयम् ॥

४६

तषाच ॥ निशि स्वापो दिवो स्थानं संध्यायां परिवर्त्तनम् ॥ अन्यत्र पादयो गोऽपि द्वादश्या
 मेव कारयेदिति ॥ विलुभर्त्ता ॥ विसोर्दिवानस्त्वपि च न च एतौ प्रवृत्त्यते ॥ द्वादशी च द-
 क्षसंयोग पादयो गोन कारणमिति ॥ एतौ नक्षत्रादियोगलाभेऽपि दिवौ तथाप्यनभि-
 त्यर्थः ॥ पूर्वोक्तमंत्रेण देवसुत्याप्यपुण्यांजलिं दद्यादनेन च ॥ चरणपवित्रमिति चेदिक-
 ॥ गौणी कस्तु ॥ गता मेधा विवस्वैव निर्मलं निर्मलं निश्चिः ॥ प्रारुहानि च पुण्याणि र-
 गृहाणाममकैश्वर्य ॥ महावृत्त्यखेणोत्थिते विक्षोतं स्वर्देन संस्थाप्य एतौ जागृणादि
 विधाय प्रभते चाक्षणा न्मोज्यवाक्षणा भेपूर्वकृतं चातुर्मीस्य व्रतं प्रोच्य विप्रेभ्यो
 दक्षिणां दत्त्वा श्रीनाथं प्रार्थयेदनेन ॥ मन्त्रः ॥ इदं व्रतं मया देवकृतं प्रीत्यै तव प्रभो
 ॥ न्यूनं संपूर्णं तां यातु त्वत्प्रसादाज्जानार्द्धन ॥ इति प्रार्थ्य स्वयमपि भुंजीत ॥ इति वो-
 धिन्यै कादशी ॥ अथ फाल्गुन शुक्लैकादशी अमर्दकी त्वृच्यते ॥ तत्रासर्दकस्थितं विलुं सं-
 पूज्य दक्षिणां दद्यात् ॥ तदेव भविष्ये ॥ फाल्गुने मासि शुक्लायामेकादश्यास्त्रिजानार्द्धनः ॥ ४६

वसत्यामलकी वृक्षे लक्ष्म्या सहवनस्पतिं ॥ ततस्संपूज्य विधिवन्न तथा कुर्यात्प्रदक्षिणा-
म् ॥ उपोष्य विधिवत्कल्पं विष्णु लोके महीयते ॥ इति वृद्धनिर्ययः ॥ अगमलक मूले दि-
प्तुं संस्थाप्य प्रदक्षिणाः कुर्यात्स्थोत्तरप्रातम् ॥ रत्ने सुवर्णे रत्ने र्वाफले रत्ने र्थ्ये वा-
दिभिर्वा ॥ तथा च ॥ यश्चा मलक प्राप्या वां पृथे चैवाधिवास्य च ॥ विष्णोः प्रदक्षि-
णां कुर्यात्तस्य स्यादधिकं फलमिति ॥ इत्यामर्दकी सर्वास्वेकादश्रीभुतिविधय विवि-
नश्चिवः पूज्येति दिक् ॥ इत्येकादशी निर्ययः ॥ अथ द्वादशी निर्ययते ॥ द्वादश्युपवासादि-
शुस्कादश्रीयुतेव ग्राह्यायुगमवाक्यात् ॥ त्रयोदशी चैवस्तु निवेधः कर्मभूषणो ॥ न-
गाविज्ञानुयाययी रुद्रविज्ञो दिवाकरः ॥ कामविज्ञो भवेद्विष्णुर्न ग्राह्यातेनुच्चास-
॥ विष्णुहादश्री ॥ कामत्रयोदशी ॥ यदा भवेदनी वाल्या द्वादशी पाश्यादिने ॥ अ-
थः काले द्वयंकुर्यात्प्रातर्मथ्यान्हिकं तदिदि ॥ स्कंदे ॥ चैत्रशुक्ल द्वादश्यां ह्रमन
कार्यसाम् ॥ अथादशुक्ल द्वादश्यां तप्तमुद्राधारणम् ॥ तदज्ञाहारा विषयमेव

निरपवादः ॥ तथा च पादौ ॥ यथा प्रसन्नानजकांशुगर्हितं सर्वकर्म सुखं च कोक्तिरिति ॥

प्रसर्वकर्मसुगर्हितः ॥ विप्रविवर्धये निद्राप्रकाशनिवहनिवाक्याभ्युपगम्यते विस्तरादि ॥

यानलिखितानि ॥ अत एव प्रज्ञाणां प्राप्तास्त्यधर्ममेवेति हिक् ॥ प्रावणशुलकादयाम् ॥

विचारोपपादयन् ॥ पादौ ॥ ऊर्जितं मधीहीलां प्रावणे तनुप्रजनम् ॥ चैत्रे च दम्भना ॥

एष मङ्गुर्वाणः पतत्यधः ॥ पवित्रारोपणं विद्याच्छावणे न भवेद्यदि ॥ कर्तव्यं यथिष्ट ॥

लाभैर्कर्तव्यमिति ज्ञातः ॥ सुल्लाकेऽहदशी ॥ भाद्रपदकृत्वायाम् ॥ मध्याह्ने दावनावता ॥

रः ॥ तत्र श्रवणे योगे उपवासः इदं व्रतं काम्यम् ॥ विप्रधर्मोत्तरे ॥ अथवा द्वादशी योगे वा ॥

धवारो भवेद्यदि ॥ अत्यन्तमहतीनामद्वादशी सा प्रकीर्तिता ॥ स्नानं च आयुनाथाहा ॥

च होमश्चाहं सुरार्चनम् ॥ सर्वमक्षयमाप्नोति तस्यां भृगुकुलोदहेति ॥ नारदीयेऽपि ॥

द्वादश्यामुपवासोऽत्र त्रयोदश्यामुपाणमः ॥ निषिद्धमपि कर्तव्यमिच्छाद्वापारमे ॥

श्वरी ॥ अथवा द्वादशी व्रतं श्रवणे कोदशी व्रतं कार्यमिति रामकोतुके ॥ भविष्य ॥

॥

॥

॥

संक्षिप्तकादशी मुर्पोष्ट्यैव द्वादशी समुपोषयेत् ॥ नतत्रविधिलोपः स्यादुभयोर्देवं हर्षिः
ॐ ॥ नारदीये ॥ यदानत्राप्यते ऋत्सं द्वादश्यां श्रवणं कश्चित् ॥ एकादशी तदा पोष्या पाप
घ्नो श्रवणं चितेति ॥ यदेकादशी श्रवणं युक्तं चेत्तदा एकादशी ब्रतं श्रवणं द्वादशी ज्ञा-
तं ह्यमेव कृतं भवति ॥ तदेवमात्ये ॥ द्वादश्यां श्रवणं कर्त्तुं चेत्सुश्रेष्ठेकादशी यदि ॥
स एव वैश्वदेवो योगो विश्वसुष्टं रत्नं संज्ञकः ॥ तस्मिन्नुपोष्याविधिवन्तरः प्रक्षीणा
करमयः ॥ प्राज्ञो त्यनुत्तमो सिद्धिं पुनरावृत्तिवर्जितामिति ॥ ब्रतं हया प्रक्षीणा
रुक्ते ॥ प्रथमे हि फलाहारी निराहारी परे हनि ॥ उपोष्येकादशी मोहात्पार-
यां श्रवणो यदि ॥ करोति हंति तत्पुण्यं द्वादश्यां श्रवणं भवति ॥ तदा तु द्विती-
यादिने श्रवणं कर्त्तुं चेत्तदा ऋत्सं तोनापेक्षणीयः ॥ ऋक्षानोपायं कुर्या-
द्विनाश्रवणं रोहिणीमिति वचनात् ॥ अन्ये तु ॥ अमाकाशितपक्षे बुभुक्षेन श्रव-
णं रोहिणी ॥ संगमे नहि नोक्तं द्वादश्यां द्वादशी क्षयादिति ॥ दिनं ह्ये तत्सत्त्वे-

मंक्रि उदये तद्युक्ता ग्राह्या ॥ उदय व्यापिनी ग्राह्या अवरा ह्यदृशी ज्ञेयति दृह न्नादृहीयात् ॥

४६ अत्र एषोमं तु दृष्टमी विद्यपि ग्राह्या भिद्युग्राह्यात् ॥ एतावो रसुविशेषः ॥ अवरा ह्यदृश्या वामनावराः ॥ कृष्णपूजा अवरा ह्यदृश्या जनाई न पूजेयति ॥ अन्न जप होमा-

दिकं कृत्वा सेवणीं हरिप्रतिमां संप्रतिष्ठितां दध्योदनं जलपूणां कुंभं उपानहोक्षत्रं च विप्राय दद्यात् ॥ इति अवरा ह्यदृशी ॥ अस्यामेव दंष्ट्रध्वजो त्याघ्नं कुर्यात् ॥ यहुक्तं गा-

त्स्ये ॥ ह्यदृश्यां च ध्रुवे पक्षे मासि भाद्रपदे तथा ॥ अक्षसुत्या पये द्राजा विष्णु ऋक्षान्न-
ये सतीति ॥ अथ कार्तिक कला ह्यदृश्यां ॥ गोभूति का काल व्यापिन्यां गोवत्स पूजा कार्या

॥ तस्या स्वत्काल एव विधानात् ॥ दिन दृष्टे तत्काल व्यापित्वे पूर्वैव ॥ तदुक्तं ॥ वत्स पू-
जा पदश्चैव कर्तव्या प्रथमे हनि ॥ इति वत्स ह्यदृशी ॥ अथ माघ कला ह्यदृशी ॥ तत्र तिलै-

रजात्वा विष्णु मभ्यर्च्य तिलैर्दीपं दत्वा तिल तैलेन नीवेद्यं होम दानानि तिल तैलेनै-
व कृत्वा तिलाभ्यर्चयेत् ॥ तदेव मात्स्ये ॥ माघे तु कृष्ण ह्यदृश्यां यमो हि भगवान्मृगः ॥

४७

तिलानुत्थादया सा स त प्रः कृत्वा तु दारुणाम् ॥ राजा दृष्ट्वा भूमौ न स्मात्ता न व तारय व
 ॥ तिलानामधिपत्ये तु विस्तृतं वृत्तं स्मरे ॥ तस्या भुयो धितः स्नातस्त्रिलैस्तस्यां पुत्रै
 इरिम् ॥ तिलतैलेन दीपाश्च देया देवगृहे शुच ॥ निवेदयेत्तिलानेव हीन व्याघ्र वथा
 तिलाः ॥ तिलान्दत्त्वा च विभ्रेभ्यो भक्षयित्वा तिलानिति ॥ इति तिल द्वादशी ॥ माघस्यो भ
 य द्वादश्यां तैलाभ्यं गोन कार्थ्यः ॥ यहुक्तं मास्ये ॥ उपार्थ्ये द्वादशीमाघे द्वादश्यां तैलं सेव
 गतं कुरुपं ग्राह्यं चान्देहे पुरासेकः पुरुरवा द्वादति ॥ तर्पी स्वपि द्वादशी शुचि ल्प फलं दंत
 फाळं च वर्जयेदित्यलम् ॥ इति द्वादशी निर्णयः ॥ अथ त्रयोदशी निर्णयः ॥ सातु ॥ शुक्ला त्र
 योदशी पूर्वा परा कृष्णा त्रयोदशी ति माधवीये ॥ एषा तु प्रहोष व्यापिनी दिनद्वये व्याप्ता व
 या हो वा पूर्वा ॥ शुभन्तुः ॥ त्रयोदशी तु कर्तव्या द्वादशी सहिता पुनः ॥ अहोत्तरखहेऽपि ॥
 पक्षद्वये त्रयोदश्यां निराहारे भवेद्दिवा ॥ घटिका त्रिरस्तत्र या त्पूर्वे स्नानं स्वप्नान्वरेत् ॥
 अथ चैत्रशुक्ल त्रयोदशी ॥ अर्चनं त्रयोदशी ॥ ताच्च पूर्वैर्वापो व्या ॥ तथा च संवत्सरे ॥ अविद्येऽपि

॥ अस्यां स्नात्वा त्रयोदश्या मशौ कारव्यं नमो स्तिरवेत् ॥ सिंहारजनीये एति श्रीतिरुम-
 न्चितम् ॥ कामदेवं वसंतं च वाजिचक्रं दृषध्वजम् ॥ मध्याह्ने पूजयेद्भक्त्या भर्तुः
 धैर्यं गौरैः ॥ मन्त्रेणा नैनकोते यनवनाभ्यां समाहितः ॥ मंत्रः ॥ नमो शमाय कामा-
 यदेव देवस्य मूर्तये ॥ ब्रह्म विष्णु शिवेन्द्राणां नमः स्तौत्रं कारय वै ॥ इति ॥ ततस्तस्यां
 तोदया मोदकाद्युतपाचिताः ॥ नाना प्रकाराभ्यां प्रत्नकामो मे प्रीयतामिति ॥ स्वप-
 तिं पूजयेन्मारी वस्त्रमाल्यविभूषणैः ॥ कामो यमिति संचिंत्य गृह्ये नो तरोत्तमना ॥
 शत्रो जागरणं कुर्यात्सुखरात्रि र्यदा भवेत् ॥ पूजयेद्विप्रसंपत्यं वस्त्रालंकारचंदनै-
 ॥ एवं यः कुरुते पार्थ वर्ये वर्धे महोत्सवम् ॥ वसंतसमये प्राप्ते हृष्टः पृष्टस्तदा भवेत् ॥
 कौर्मो विरेयः ॥ मधौ शुक्ला त्रयोदश्यां मदनं चंदनात्मकम् ॥ कृत्वा संपूज्य यत्नेन वी-
 जयेद्वाजनेन च ॥ ततः संधुहितः कामः पुत्रपौत्रसमृद्धिददति ॥ अथमाद्रक्ष्य त्रयोदश-
 शुभादिः ॥ शुक्लचंद्रमासाभिप्रायेण ॥ अत्र मधुद्यतसहितेन पायसेन आर्द्रं कुर्यात् ॥

के तथा च पितृगाथा ॥ अग्निं न स्त कुले जायाद्यो नो दद्यात्त्रयो दृष्टीम् ॥ पायसं मधुसधिर्यथा
 हें वर्धामि च मया सुचेति ॥ अथ कार्तिकशुक्लत्रयोदशी ॥ तत्र यमदीपं शत्रो वहिर्द्दद्यात् ॥ तथा
 च स्कान् ॥ कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निष्ठाशुखे ॥ यमदीपं वहिर्द्दद्यात्पशु-
 र्विनाशयति ॥ दीपदानं मंत्रश्र ॥ मृत्पुना पात्रदद्याद्भ्यां कालस्या मलयासह ॥ त्रयो-
 दश्यां दीपदानात्सूर्य्यः प्रीयतामिति ॥ अत्र वृंता कानि न भक्षयेत् ॥ सर्वासु त्रयोद-
 शीसु अन्नं गः पूज्यः तिथिपतिस्वात् ॥ इति त्रयोदशी निर्ययः ॥ अथ चतुर्दशी निर्ययते ॥ सा
 च कृत्वा पूर्वाशुक्लोत्तराह्णपक्षेऽष्टमी चैव कृत्वा पक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वविद्भैव कर्तव्या प-
 रविज्ञानकुत्रचिदिदस्याप स्तं दीप्तैः ॥ शुक्लपक्षेऽष्टमी चैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्ववि-
 ज्ञान कर्तव्या कर्तव्या परसंयुता ॥ इति ग्रहस्थितिः इति चतुर्दशी सामान्य निर्ययः अथ विशेषे-
 यः ॥ अथ चैत्रशुक्लचतुर्दशी ॥ तस्यां कुंकुमागरकर्पूरदिभिर्द्द्वैतन केन च शिवपूजा ॥
 तदेव देवीपुण्ये ॥ चतुर्दश्यां तु कर्पूरचंदनागरकुंकुमैः ॥ चत्वारिंशदिमणिपूजा च कर्तव्या ॥

३३ महती शिव ॥ वितानध्वजचक्रं च दैवं प्रज्यास्तु मातरः ॥ महत्पुण्यमवाप्नोति कथं प्र-
 ३० यथाधिकमिति ॥ अन्यच्च मधुमासेतुसंघाते शुक्लपक्षे चतुर्दशी ॥ श्रीकादमनपूर्जे-
 तिसिद्धिदातुमहोत्सवेति ॥ लिंगपुराणे विशेषः ॥ दमनस्तुत्रयोदश्यां तालवृंता नलेन तु
 हंसयानसमारुद्धकाममंत्रप्रवर्द्धितः ॥ नाशीधिविजितश्चैव त्रैलोक्यो न्मादमाचर-
 न् ॥ तन्निर्वापयाधार्येन चतुर्दश्यां महासुते ॥ ततोत्सवं भयं श्रीकानार्थं प्रस्थापय-
 त्वया ॥ कुर्वन्ति कर्हमेनेव शाल्मनस्त्वनुलेपनं ॥ निर्वाधितानंगपीडाभवत्येव समादा-
 या ॥ एतदर्थं सदाकार्यं कर्हमेन चक्रोडनमः ॥ प्रातःग्रहस्मार्तं च कर्त्तव्यं श्रीडनं नरैः ॥ प्र-
 स्ताप्यं गतः कृत्वा गंधमाल्यानुलेपनम् ॥ वस्त्रतां वृत्तगीतादि रथ्या हरेषु चारैरत्न-
 चर्चरोद्योयिते प्रस्तेव कृत्वा नृत्यं शिवाग्रतः ॥ सर्वकामसमृद्धस्तु वसेच्छिवपुरे नरः ॥ स्वयं
 तुल्यंगमेकं तु दृष्ट्वा तस्मिन् दिने नरः ॥ ज्ञानं लब्ध्वा नरः सम्यक् शिव एव न संशयः ॥ द-
 तिर्देव चतुर्दशी ॥ अथ वैशाख शुक्लचतुर्दशी ॥ सा च प्रदोषव्याधिनी ॥ तथा चरकान्ते ॥ वैशाख एव

तेषां चतुर्दश्या सोमवारं नेलक्षकं ॥ अथ तारो नृसिंहस्य प्रदीप्यं समये द्विजाद्वति ॥ अग्नि-
 लक्षः स्वाती ॥ स्वाती योगप्राधान्यं वैलवानाम् ॥ अथ ज्येष्ठशुक्लचतुर्दशी ॥ तस्मिन्दिने पं-
 चतपाः सायं श्रितव्यं श्रीतये हिरण्यं धेनुं दद्यात् ॥ तदेव मात्से ॥ ज्येष्ठे पंचतपाः सायं हेम-
 धेनुं प्रदोदिवत् ॥ यात्यष्टमी चतुर्दश्या रुद्रघ्नतमिदं स्मृतमिति ॥ अथ भाद्रपुक्लचतुर्द-
 शी ॥ तस्यामनंतं व्रतं सा चोदय व्यापिनी गार्गा ॥ रक्षते मुहूर्तं मयि चेद्भाद्रपौर्णमास्यां
 चतुर्दशी ॥ तां संपूज्यो भिद्रुस्तस्या पूजयेद्विष्णुमव्ययम् ॥ मुहूर्तं मयि त्रिसुहूर्तं प्रशं-
 सापुम् ॥ तेन त्रिहर्तः सुख्यः कल्पः द्विसुहर्तानु कल्पः चतस्रध्वः ॥ अत्र विधिः ॥ पक्वा प्र-
 ख्यं घृतं नैव गोधूमान्नं प्रयत्नतः ॥ अर्घ्यं विप्राय दातव्यमर्द्धमात्मनि भोजयेदिति ॥ च-
 तुर्दश्यां धियुक्तं स्रजं चाग्रे रत्नां दक्षिणे पुमान् ॥ कोरुधारे दिति ॥ अनंतं प्रतिभां चन्दनादि-
 ना सप्यं मूर्तिं रुशेण पूजयेत् ॥ दूर्ध्वं तं काम्यं भक्त्यश्रवणात् ॥ निर्गुणभारकोऽपि ॥ अनंतं
 रणेण विभर्षि पृथ्वीमनंतं तलस्मी वरुहोऽसि मुष्टः ॥ अनंतं लोकां नृददासि लोको भोऽन्वं

सं ॥ तत्पि न कुरु मे प्रसादम् ॥ इत्यनंतश्चामंत्रः ॥ अन्नंतं संसारमहासमुद्रे मग्ना न्यमि भुङ्क्ते
 ४३ वासुदेव ॥ अन्नंतं स्थे विनिधौ जयस्व अन्नंतं सत्ताय नमो नमस्ते ॥ इति नैवेद्यादिदानमंत्रः
 अन्नंतं कामं देवं सर्वकामफलप्रदम् ॥ अन्नंतं धर्मं सयं डोरं पुत्रपौत्रविवर्द्धनम् ॥ वज्रा-
 नीति श्रेयः ॥ अन्नेन चतुर्दश ग्रन्थिभयं डोरं केवलीयात् ॥ इत्यनंतचतुर्दशी ॥ अथ कार्तिके
 छत्रचतुर्दशी ॥ यमचतुर्दशी सैवै नरकेति ॥ ब्राह्म्यमुहूर्त्तं ज्ञातः कालव्यापिनी ग्राह्या ॥ अ-
 नोपस्यभ्यंगं स्नानं च कृत्वा ॥ धर्मं तज्जगत्प्रांभाषपञ्चाश्रनं सैव प्रतिमा पूजनं दीपद्व-
 नादिकं कुर्यात् ॥ तदेव भविष्ये ॥ कार्तिके छत्रपक्षे चतुर्दश्या मिनो द्ये ॥ अथ प्रथमेव क-
 र्त्तव्यं स्नानं नरकाभीरुमिति ॥ ह्नोऽत्र चंद्रः ॥ यदि पूर्वो न्हि पंच दहिका न्नयो दृश्ये दृश्यः
 पंच पंचाश्रत् ॥ एवं संभवे त्रयो दृश्ये मध्येऽरुणो द्ये स्तोयात् ॥ ततोऽन्यत्र स्नानं निषे-
 धात् ॥ तथा च यमः ॥ अरुणो द्योऽन्यत्र कृत्वा यं क्षाति यो नरः ॥ तस्या विक्कभं चोद्यमो नि-
 श्रुत्येव न संशयः ॥ अन्नं पर्वणि ति लोले स्नानम् ॥ तदेव भविष्ये ॥ आभिवने कृत्वा पक्षे तु च-

[illegible]

ततः श्वेतचतुर्दश्यां भोजयित्वा हिजोतमान् ॥ शेषान् विप्रोत्त्वष्टपरांश्च शिवलोको-
महीयते ॥ द्वावं दत्त्वा तु तेभ्यश्च यमलोकं न गच्छति ॥ मायपन्नस्य प्राकृत्युभुक्ता-
तत्र हिने नरः ॥ श्वेता चतुर्दशी काले सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ नक्तं श्वेतचतुर्दश्यां धः कुम्भार्चि-
वश्रीमये ॥ नतत्कृतुशतेनापि प्राप्यते पुण्यमोदशम ॥ कुमारीर्वदुकां नृज्यं तया शैवी-
स्तपोधनान् ॥ राजसह्यफलतेनैर्ग्राप्यते नान्नसंप्रायः ॥ इति ॥ कार्तिकशुक्लचतुर्दश्यां द्वा-
सुहर्तव्ये श्वेत्प्रयत्ना ॥ सैव पापाण्यचतुर्दशी ॥ देवीपुण्ये ॥ कार्तिके शुक्लपक्षे तु या पापाणां चतु-
र्दशी ॥ तस्या मासधयन् गौरी नक्तं पापाणां भक्षकः ॥ ऐश्वर्यसौख्यसौभाग्यरूपा-
णि प्राप्नुयान्तरः ॥ इति ॥ मार्गशुक्लचतुर्दश्यां पिशाचमोचनयात्रा ॥ अथ माघशुक्लचतुर्दशी-
भारतल्याख्या ॥ तत्रानुहिते स्नात्वा यमं संपूज्य सप्तभिर्न्यामिस्सप्तति लोदकां जालिं-
त्वा तिलहोमं च कृत्वा पितृभ्यः श्राद्धं च कृत्वा ब्राह्मणेभ्यः कृपारभोजनं च दत्त्वा ह-
वसं पिष्ट्वा शरभोजनं कृत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ब्राह्मणे ॥ माघशुक्लचतुर्दश्यां विष्णोर्द-

भस्मि वा नमो चयः ॥ निष्करोस्ति लका कार प्रणत प्रोदय सहस्रः ॥ अन्नकामभुदत कालस-
 त्सुता राधुके व्यपि ॥ राक्षा च तत्र संप्रज्यो यमः प्रलय भास्करः ॥ निमित्तं पंचतारेयं तत्र प्रो-
 क्तं यतो भुवि ॥ तदा सा पि निष्ठा ह्येया तारा ए निस्सुदरणा ॥ तत्रोपो व्यत्रयो दृश्यां स-
 प्राप्ते तु निष्ठा क्षये ॥ स्वात्मा पूज्यो जगद्गति हरिः पूज्या प्रचताकाः ॥ नैवेद्ये विविधा-
 कारैः कृशरेण तु भूरिणा ॥ वह्निः पूज्यश्च भगवान्मृता कैस्ति लव लुहैः ॥ नमः प्रण-
 व संयुक्ता न्स तिलोप्य जलाञ्जलिम् ॥ यमाय धर्म ए जाय मृत्यवे चानेका यच्च
 ॥ देव स्वताय कालाय सर्व प्राण हराय च ॥ सप्त सप्त प्रदेया निधय कृते वा तिलोदकम् ॥
 कृशरं भोजनीयाश्च ब्राह्मणा ॥ सततं तन्म ॥ आहुं दत्वा पितृभ्यश्च मृत्यु कस्त्या त्सर्वपात-
 कैः ॥ ततो विभज्य दंभुभ्यः कृशरं यक्ष्ये त्वयं यमीत्यदंती च तु ह्ये ॥ अथ शिव ए निभि-
 रणीयते ॥ फाल्गुन कृश च तु ह्ये शिव ए निस्सा निष्ठी वक्ष्या पिनी ॥ ईशानं संहितायाम् ॥
 तपस्ये कृश भूता च शिष्य ए निः प्रकीर्तिता ॥ महा निष्ठा च्चिता यां तु तत्र कुर्व्यादिदं ज्ञात ॥

संस्थिति ॥ दिनद्वये निशीथा व्याप्तौ सुपूर्वा ॥ हस्तपक्षेऽथमीर्क्षे वेत्यापस्तं चोक्तेः ॥ अथ पर-
४७ई विधाय कानि वाक्यानि ॥ स्फान्ते ॥ चतुर्दशी च दर्शे प्रचरकी भूय यदा भवेत् ॥ तद्दोषवा-

संकुर्वीत न च काम द्युते हनि ॥ अपस्व ॥ माघासिते भूतदिनं हि राजन् उपेतियोयं यद्विषं
चदश्याः ॥ ज्या प्रयुक्ता न हि जातु कुर्याच्छिवस्य रात्रिं प्रियक्वच्छिवस्य ॥ अत्र पूर्व वि-
द्वा प्रतिपादके वाक्ये ॥ पूर्व विद्वाया मर्दरात्रि युतायां चतुर्दश्या भूय वासः ॥ पर विद्वाया मर्द-
रात्रि व्यापिन्यां चतुर्दश्या उपवासः ॥ अथ त्राहं रात्रि व्यापिन्यां पर विद्वाया मेवोपवास-
द्वतिसिद्धंतः ॥ यत्तु प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रिः शिवप्रिये ॥ रात्रौ जागरणं यस्मान्न-
स्मात्तस्या भुपो बलात् ॥ द्दं वचनं शर्द्दरात्रि चतुर्दश्या भावे वेदितव्यम् ॥ यदुक्तं ॥ यदा न स्या-
च्छिवरात्रि र्द्दरात्र्यां तदा न य ॥ प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या तदा शिवतन्मातिथिः ॥ अन्यानि
प्रदोष व्यापिनी विधायिका नि का कानि ॥ शर्द्दरात्रा भावे वेदितव्यानि ॥ माघ न मृतेऽपि ॥ म-
घेय व्यापित्वे सति शर्द्दरात्र व्यापिनी सेतमा ॥ शर्द्दरात्र व्यापिनी मध्यमा प्रदोष व्यापि-

श्री नीचूनेति सिद्धांतः ॥ प्रात्रपराणविषये ॥ तिथिमध्ये पारणं श्रेष्ठतरम् ॥ तिथ्यंते पारणं कु-
 ४७७ र्यादिनाशिव चतुर्दशी भित्तिस्कान्देकेः ॥ साचशिवोपासकानां नित्या ॥ परात्परत्वं ना-
 स्ति शिवरात्रिः परात्परम् ॥ नष्टजयति भक्तोदरं दं त्रिभुवनेश्वरम् ॥ जन्तुर्जन्मसह वैषु-
 जायते नात्र संप्रपद्यः ॥ शिवभक्तानां नित्यम् काम्यं त्वन्येषां ॥ शिवरात्रिं व्रतं नाम सर्वपाप-
 प्रणाशनम् ॥ आचां डालमनुव्याणं भक्तिशुक्तिप्रदायकम् ॥ भक्तवाक्यानि ग्रंथभूयस्त्वा-
 न्नलिरितानि ॥ दूतचवर्द्धणी निणयः ॥ श्रव्यश्रुतिमानीयते ॥ सावदसावित्री व्यातिरिक्ता व-
 तादिदृशपरान्वितैव कार्या ॥ भूतविद्वानकर्तव्या दर्शः पूर्णकदाचन ॥ वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठ-
 सावित्रीव्रतमुत्तमम् ॥ दूतैव ब्रह्मवैवर्ते सावित्रीव्रतं भाद्रपदपूर्णिमासम् ॥ अथ चैत्रशेषमासी-
 ॥ तत्र चित्रायुक्तायां चित्रवस्त्रं दद्यात् ॥ बहुलं विषुस्यते ॥ चैत्री चित्रायुता वै तस्या न्याहा पुण्य-
 तमा रूढता ॥ चित्रवस्त्रप्रदानेन सोभानय भ्रातृयान्तरः ॥ ब्रह्मपुराणे विशेषः ॥ मंदेवार्केश्वरौ
 चापि वीर्येते शुचैत्रकी ॥ तत्राप्यवमेधिकं पूज्यं स्थानेन लभते नरः ॥ दानमदाय तां व्याति

के भित्तुणां तर्पणं तथा ॥ अन्नदमनकेन सर्वान्देवानर्चयेत् ॥ संवत्सर कृतपूजायाः फलं प्रा-
 ३०प्नोति ॥ तदैव पापप्राण ॥ संवत्सर कृतार्चाः सा फलदाया रिव लान्मुगान् दमनेनार्चयेत् ॥
 त्र्यां विशेषेण सदा शिवमिति ॥ अथैषा एव पूर्णिमा तत्राजिनहनं कुर्यात् ॥ यदाह विष्णुः
 ॥ कृत्वा जिने तिलान् कृत्वा हिरण्यं मधुसार्पिणी ॥ ददाति यस्तु विनाय सर्वान्तरिक्षुः क-
 तम् ॥ वैष्णव्यां योगे मास्यां च विष्णवे प्रदत्तः ॥ ससमुद्रमहादेवस्योत्तम-
 कानना ॥ सहस्रदीपान्विता दत्ताष्टविंशतीनां संप्रदायः ॥ अथ ज्येष्ठपूर्णिमा ॥ तत्र दत्तत्रोपा-
 न्नहानं तिलदानं च ॥ यदाह विष्णुः ॥ ज्येष्ठज्येष्ठया यदा चेत्या तद्वन्नोपान्नहानं न-
 नरो जगदिपत्यभाप्नोति ॥ आदित्यप्राण ॥ ज्येष्ठमासि तिलान् दद्यात्पौर्णमास्यां विशेषे-
 यतः ॥ अथ संधयस्तु यदा तदा प्रीतिनसंप्रदाय इति ॥ अथावा दीपार्णा ॥ तत्र चतुर्द-
 श्यामुपोष्य विष्णुपूजनम् ॥ यदुक्तं ब्राह्मे ॥ चतुर्दश्यामुपोष्याथ योगिमास्यां यजेद्भूमि-
 ति ॥ अस्यामेवापादयुतायां अन्नादिस्नानमस्तयम् ॥ यदाह विष्णुः ॥ अथापाद्या मायाद-

युतायामन्यपानादि दानमक्षयं भवति ॥ यदा चतुर्दश दश नाडकाधका भवता-
 नत्र सावित्री व्रतमपि त्याज्यम् ॥ भूतोऽद्या दश नाडी भिर्द्वययत्युत्तरं तिथिभिति ॥
 स्यते ॥ अन्नप्राह न्नित्यम् ॥ पितामहः ॥ अमावास्या व्यतीपात पौर्णमास्या दृका रतु-
 च ॥ अन्नप्राह मकुवाणो नरकं प्रति पद्यते ॥ आषाढी तु कौकिलान्नतोपक्रमे संख्या-
 कालव्यापिनी ॥ भविष्ये आषाढपौर्णमास्यां तु सायं काले ह्युपस्थिते ॥ संकल्पदो-
 न्मासमेकं आचरणे आत्यहं त्विदं ॥ व्यासपूजायां चोदयि को निसुहृन्ना ॥ विष्णुपू-
 षो ॥ त्रिभुहृत्तीधिकं ग्राह्यं पर्वक्षौरप्राण विनोदिति ॥ अन्ननवराहोदः चोदोदसमदी ॥
 क्षीर्षवंशे ध्वजा वंधनं कृत्वा दृवीदिवाद्यु विचारः कर्तव्यः ॥ अथ आचरणी पौर्णिमा ॥ तत्र
 पौर्णिमास्यां ग्रहणा संक्रांति होष रहितायां च दय काल व्यापिज्यां दोहो व्याधिनाहु-
 भविऽपि यजुः शारदा व्याधिनः ॥ उपा कर्मकुर्व्युः ॥ आचरणे सातस्य ध्व चण नक्षत्रे
 धनिष्ठानक्षत्रे बह्व्याः ॥ साम वेदि नस्तु आचरणे मासस्य पंचम्यं हस्तद्युजो योक्तु-

अथिः ॥ शेषधि प्राहुर्भविग्रहणदिदोषर हितायां च सर्वेषां तुल्यमिति ॥ तदाह यद्वलम्

४८०

॥ अथाद्यानामुपाकर्म आवाद्या अवरो नवा ॥ हस्तेनोक्त्वा च वेवापंचस्थां आवाणा-
स्य तु ॥ उपाकर्मो दोषः ॥ अनाद्याया नामिति श्रुत्वाभिप्रायेण वचनम् ॥ गोभिलः
पर्वण्योदयिर्दुष्टः आवाण्योतैस्तिर्यक्काः ॥ वक्तृत्वाः अवरोर्द्विहस्तर्हि सामवेदि-
नः ॥ निगमेऽपि ॥ आवाण्यो आवाणी कर्म यथाविधिसमाचरेत् ॥ उपाकर्म तु कर्तव्यं क-
र्तव्ये हि वाक्ये ॥ हस्तेन शुक्लपंचम्या अवरो अवरो भवेदिति ॥ चतुर्दश्या युक्तस्य पर्व-
ण्यो निवेधाच्च ॥ चतुर्दश्या समुत्पन्ना वसु रौमधु कैटभौ वेदान्तौ कुर्वतः पच्योने सौ-
जद्रुः श्रुतीः ॥ हत्वा तावदुरो देवः प्रातल नल वासिनो ॥ आह ल्यताः श्रुती स्वस्ते ददौ लो-
कगुरुः खयम् ॥ स आसवान् श्रुतीर्ब्रह्मा पर्वण्यो दयि कैटुनः ॥ अतो भूतयुते तस्मिन्ने-
वाकरणा सिध्यते ॥ आसुरं वज्रं यत्कालं वेदा हरणं प्रकथेति ॥ यत्तु आवाणी दुर्यो नवमी
दुर्वो चैव हुता सनी ॥ दुर्वो विद्या तु कर्तव्या ॥ शिवरात्रिर्वर्त्तते हि निमित्तं ॥ एतस्य आवाणां

४८०

विविधमानं पवित्रं ऐयं विषयम् ॥ उपाकर्मो गभूतमास्तु ह्यप कश्चाद् विषयं
 वा ॥ अत्र तैत्तिरीयकपदमन्येषामपि यजुः शाखिनामुपलक्षकम् ॥ तेषां कालांत
 एवियानात् ॥ व्यासः ॥ आबलेन नृपत्कर्म उन्नराषाढसंयुतम् ॥ संवत्सरकृतोऽध्या
 यस्तत्क्षणा देवनश्रुतिः ॥ धनिष्ठासंयुतं कुर्याच्छ्रावणं कर्मयज्ञवेत् ॥ तत्कर्म
 मफलं विद्याहुपाकराणं संहितमिति ॥ उपाकर्मप्रकुर्वति कर्मात्सामर्थ्यं जुर्विदः
 गृहसक्रांत्यशुक्तेयुहस्तश्रवणं पर्वसु ॥ अथ चेद्देवसंयुक्ते पर्वणि स्यादुपक्रिया ॥ दुः
 खप्रोक्तमयग्रस्ताशये तस्मिन्नुजातयः ॥ अथाचकर्तव्यमुच्यते ॥ यदुक्ते ब्रह्मचेतसा ॥ भवे
 दुपकृतिः यौर्लमास्यां पूर्वाह्ण एव तु ॥ द्वाक्षणाभ्यो जयेत्तत्र पितृनुहिदप्रयदेवताः ॥ वैश्व
 नः ॥ भोतमादि जटथी त्सप्त कृत्वा दर्भमयास्तुतः ॥ पूजयित्वा यथाशक्ति तर्पयेद्ब्रह्मसुखं
 ततो देवान् पितृंश्चैव तर्पयेत्परमांभसा ॥ उपाकर्मणि गृहणावेधदोषाभावः ॥ नित्ये
 नोभितिके जापे यद्ब्रह्मे मंत्रियास्तु ॥ उपाकर्मणि चोत्सर्गं गृह्णेदोषो न विद्यते ॥ स्य

त्वरे ॥ भद्रायां देन कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुणी तस्या ॥ श्रावणी क्षुण्ति हंति श्रावणं दहति फाल्गुणी
 ॥ विप्रयोऽपि भविये ॥ ततोऽपराह सप्तमे रक्षा पोतलिका शुभम् ॥ कारयेत्त्वत्तैः प्ररंजैः सिद्ध
 र्थं हेतु भविते रिति ॥ अथोत्कर्षः ॥ याज्ञक्यः ॥ यौवमासस्य रोहिण्या मष्ट काया मथापि वा ॥ ज्ञ-
 तांते वृहसा कुर्यु र्वत्तर्गो विधिवद्दहति रिति ॥ श्रावाद्या मथवाष्टम्यं च नृदृश्या शुभापतिं ॥ प-
 वित्रै रर्द्धयेद्भक्ष्या श्रावण्यं चेतरा न्मुरा निति ॥ अथ भाक्षी पूर्ण ॥ तत्र सा वित्री जतम् ॥ तदेव भवि-
 ये ॥ अथ तां पांडव श्रेष्ठ सा वित्री जतना द्यात् ॥ तयोदश्या भाद्रपदे दंतधावन या द्यात्
 त्रिस्तोत्रं निधनं कार्यं उपवास स्य भारत ॥ अथ होतु तयोदश्या नक्तं कुर्यात्तर्हिरः ॥ अ-
 द्या चित्तं च वा कुर्यात्पुणवा लेन दर्शयेत् ॥ अथापि न पूर्णिमा ॥ दूय मेव को क्षुदी ॥ न स्याभि-
 रं लक्ष्मी च दृश्येत ॥ तदेव भारते ॥ दृष्टिं न भव्युजं यासि को क्षुदी परिणीता ॥ कुक्षु-
 दृष्टो स्यात्सो निद्र भैरावत रित्यव च् ॥ निश्चिन्ता गरां हत्वा परेऽन्तु सव या चरे रिति
 ॥ अथ एत प्रणे पात्रं सुवर्णा निधनं दत्त्वा दीक्षा निर्वपति ॥ यदुक्तं विद्वता ॥ अथ च शुक्ला त-

ह्येति वनीयते चन्द्रमसा द्यत पूर्णं पान्नं तु वलीं चतुर्विंशति भाव दत्त्वा दीनाभिर्मन्त्रेति ॥ अथ पुनः
 ६८ विंशति विंशति ॥ तत्र काव्य दत्तो रत्नं यो ध्याति ॥ द्वाविंशत्यां तु दत्तो तस्यो विवाहः ॥ पुनः
 तं दत्ताः ॥ काव्यः दुःखदुःखं श्रेष्ठ दत्ते चोत्तमं जनं दत्ता ॥ राजा पुरश्च दत्तं च दत्तं चोत्तमं
 दत्तं दत्ता ॥ अथ काव्यः पुनः च दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं ॥ दत्तं दत्तं दत्तं
 तु दत्तो त्वं यो दत्ता न तं सदा चरेत् ॥ श्रेष्ठं पदं दत्ता न तं यो दत्तं शिवं चतुर्विंशतिं दत्तं दत्तं ॥ अ
 हे ॥ न तं तु दत्तं यं दत्ता दत्तं दत्तं तं दत्तं दत्तं ॥ सुवासं सदा दत्ता विदत्ता को नार
 तारणं ॥ दत्ता वंति तस्य रोगाणि प्राप्ते संति संख्यया ॥ तावद्दुःखं सदा दत्ता विदत्ता रोगो वि
 सति तत्प्रदः ॥ पूजयित्वा न तं विष्णुं रक्तं नाल्यानुलिपनैः ॥ अथोक्तं यो रसं यत्ना
 त्सुप्तं व्यं शं दत्ते स्थितः ॥ अथैवैष रसाग्रहणम् ॥ विष्णो रसा सुयदा भानुः कृति कावु
 च चन्द्रमाः ॥ सयोगः पच्यको नाम पुष्कोरप्यति दुर्लभः ॥ अथैवैषं च यदा दत्तं दत्तं कां वि
 कं यां भवति कचिद् ॥ महती साति धिर्ज्ञेया ज्ञानदानेष्टु चोत्तमा ॥ अथापत्यं न दत्ता

ऋक्षं तिथो तस्यां नराधिप । सामहा कान्तिकी प्रोक्ता देवाना मपि दुर्लभा ॥ आमेयं क-
 तिका याम्यं अरणी ॥ राजापत्यं रोहिणी ॥ यदा नु याम्यं भवति ऋक्षं तस्यां तिथो क-
 तित् ॥ तिथिः साधि बहापुण्या मुनिभिः परिकीर्तिता ॥ क्षीरसागरस्नने विशेषो ब्राह्मि ॥
 पौर्णमास्यां तु संपूज्यो भक्त्या दामोदरः सदा ॥ ततश्चंद्रोदये पूज्यास्तापसाः कृत्ति-
 का सुषट् ॥ कान्तिके यस्त्वद्योस्वङ्गो वरुणश्च हुताग्रजः ॥ धान्यैस्सशुक्रैर्द्वारेक्षी भू-
 धितव्यानि प्रागभी ॥ माल्यैर्द्वये स्नाथा गंधैर्भक्ष्यै रक्ष्या वचै स्तथा ॥ परमानैर्ज्जले प्रण-
 केर्वहु ब्राह्मणा तर्पणीः ॥ एवं द्वांश्च संपूज्य दीपो देयो गृहादह्निः ॥ दीपो पाते तद्याग-
 र्वास्व नुरक्षो मनो हरः ॥ चतुर्विंशं गुलः कार्यः सिते प्रचंदनवाणि ॥ गवां क्षीरेण संदू-
 र्णं स्संमता त्यरि रक्षितः ॥ तत्र हि मय्यो मत्स्यो मुक्ताने त्र्यो मनो हरः ॥ प्रक्षेप्तव्यो-
 विधानेन नमोस्तु हर्यथ धेत् ॥ ब्राह्मणा यथ यो ज्ञया यद्वा तस्तीरसागरम् ॥ कृत्तिकां हि
 की ॥ जप्यमार्गशीर्षी ॥ तत्र चन्द्रार्चो ब्रह्मांडे ॥ चामने त्रैविदिसो स्तदेव भुवनत्रयम् ॥ अन्न-

सदात्मजश्रद्धः स्याद्वर्तनाभ्यविचचयत् ॥ येषामास्यातुयस्मावुतस्मात्तद्व्यग्नः ॥
 यस्मानुलवणंदेवदक्षप्राणादिभिः सहतं ॥ मातास्वमाचदुहितसंपूज्याश्चकुलांगनाः
 ॥ कातिरूपंभवेत्स्त्रीणांपूर्णेन्द्रोः पूजनमिति ॥ अस्यांमृगशिरियुक्तायांप्रस्थपरिभि-
 नंतूणिनंसुवर्णयुक्तं ॥ सवर्णचंद्रोदयेदद्यात् ॥ विष्णुनोक्तत्वात् ॥ अथयोषीपूणा ॥ तत्र
 यौययुक्तायामलदर्मानाश्रनंगंगास्नानादिकंकार्यंयथाशक्तियुनादिकंद्यतव्यंस्व-
 यमपिद्यतपायसंभोक्तव्यमितिदिक् ॥ द्दिवोयी ॥ अथमावापूणा ॥ तत्रमयायुक्तायांति-
 लैश्चादृक्त्वातिलपात्रादिदानम् ॥ यद्वक्तव्यं ॥ माध्यामयासुचतिलैस्संतर्प्यपित्देव-
 ताः ॥ तिलपात्राणिदेयानितिलास्सपल्लोदनम् ॥ केवलाजिनरत्नानिभोचर्कोपापभो-
 चर्को ॥ उपानदानमन्त्रैवलिलदानंचप्रस्यते ॥ यत्रवातत्रवास्नानंदानंदितानुरूपतः ॥
 येषामास्यांतुयोमाघेपूजयेद्विधिवस्थितम् ॥ सोऽश्वमेधमवाप्येहविष्णुलोकेमही-
 यते ॥ अथफाल्गुणीपूणा ॥ सापूर्वविद्वासायाहव्यापिनीग्रहा ॥ यद्वक्तव्यं ॥ सायान्हेहोसि-
 १३

मरि काकुष्यात्सर्वान्ते नोहनं गताम् ॥ स्थितं समाकरोति तु धर्मं सः सनातनः ॥ निष्पद्यते
 ४८६ प्रत्येत होलिका सर्वसावुधैः ॥ नदिकापूज्ये प्रदं मुञ्जिता हृन्लस्य भवेत् ॥ त्वं मदीकं होलिकं
 कानदीपयेत् ॥ ययुक्म ॥ अद्वायां दीपिता होला गच्छ भवं करोति हि ॥ नमस्तु नमो देव्यै
 न्यातां परित्यज्येत् ॥ अद्वायां दीपिता होला गच्छ भवं करोति हि ॥ नमस्तु नमो देव्यै
 कूर्वात पिशाचां मसोत्सवम् ॥ तथा हि नार्हत्परतोऽपि स्यात्काल्यान्यां पूर्णिमा यदि
 ॥ रात्रौ भद्रावसानेन होलिकां न नदीपयेत् ॥ परदिने हि नार्हत्परतोऽपि स्यात्काल्यान्यां
 न्यां पूर्णिमाया विधानायां ॥ पूर्वविज्ञाया भैरवरात्रौ भद्रावसाने होलिकां दीपयेदित्युक्तं
 वसपुनः परदिने पूर्णिमा सार्द्धं यामत्रय व्यापिनी प्रसिपच्च हृदि गामिनी नारायणवेव
 होलिकाकार्या ॥ तथाच भविष्ये ॥ सार्द्धं यामत्रयं वास्या हितोय रिवसेयम् ॥ प्रतिपद
 ह्येवापि नरासा होलिका रहता ॥ यत् ॥ चन्नेवन्ति परित्यजेदिति वन्ने होलिका
 यामन्ति परित्यजेदिति परित्यज्यः ॥ एतन्मुसायं काले भद्रा रहित परित्यज्यः

नाकति नम्य प्रति परि न कने च म ॥ अत्यथा ॥ भविष्यो नरा कायस्य निरर्थकता स्यादि-
 ति ॥ अत्र चेच्चन्द्रो ग्रासस्तदा ग्रहणाद्वर्कः ॥ निश्चिन्निर्विष्टिपूर्णायां होलिपादीपनम-
 ज्यपूर्वदिने अस्तमना वधि चतुर्दशी द्वितीयदिने प्रदोष समये गृहो दितंतदा पूर्वदि-
 ने घट्यावधिरात्रिचतुर्थयामे विष्टिपुच्छे होलिका काय्यो द्वितीयदिने ग्रहणात्तं रा-
 त्रिचतुर्थभवेत् ॥ ग्रहणात्पूर्वच दिवा होला प्रज्ज्वन निषेधा द्विष्टिपुच्छस्य सर्व काम्या-
 र्हेत्यदर्शनाच्च ॥ पञ्चमः ॥ पृथिव्यां यानि कर्माणि शुभान्यप्यशुभानि च ॥ तानि सर्व-
 सिद्धिदाति विष्टिपुच्छे न संशयः ॥ संवत्सरस्य ग्रहोपकामदा होला नरे ॥ द्यौर्विध-
 रणनिषेधे ॥ अत्र कल्प म ॥ रघुपतिनाह वाक्यम ॥ अथ पंचदशे शुक्ला फाल्गुनस्य नराधि-
 प ॥ श्रीतकालो विनिःक्रान्तः प्रातर्गोप्यो भविष्यति ॥ अभीष्टदानलोकायां दीयतां पु-
 रुषे नमः ॥ यथा स्य प्राकितो लोकार्गो निच हसति च ॥ संवत्स्य पुच्छकपाद्यानां शुभलानां
 अकारयत् ॥ नमो नमो विष्टिचंद्रो वा रसो द्वैर्मन्त्रविलेखे ॥ ततः क्लृप्तां प्राद्वेलां प्र-

अहं मर्मनो रमिः ॥ तामभिं निःपरि क्रम्य गायं तु च हं सं तु च ॥ जल्पन्तस्त्वेच्छया लोका-
 नि प्रशकायस्य प्रन्तम् ॥ तेन प्रवृत्तेन सा पाया होमेन च निरुक्ता ॥ सर्वदुष्टा पहे-
 होमस्सर्वयोगोपप्राप्तिदः ॥ अस्यां निशागमे राजन्संरक्ष्या प्रिश्रणवो गृहे ॥ गोमये-
 नोपलिहे च सत्तुल्ये यद्गणेशे ॥ आकारयेच्छिशुप्रायान्वद्गव्यप्रकरान्नरान् ॥
 तेकायवद्गैस्संस्पृश्य प्रवृद्धैर्हस्य करैः प्रिश्रयन् ॥ रक्षन्ति तेषां दातव्यं-
 शुद्धं पक्वान्नमेव च ॥ एवं दुर्द्वेति या तस्याः सदोषः प्रशमं ज्ञेयम् ॥ चालानां रक्षणां का-
 र्यं तस्मात्तस्मिन्निशागमे ॥ इति होलिकानिर्णयः इति पौर्णमासी निर्णयः अथामावा-
 स्या निर्णयते ॥ अमार्चोपवासादिषु प्रतिपद्युर्नैव वदसावित्री व्यतिरिक्ते च तेषु प्र-
 स्ता युगमवाक्यात् ॥ अमार्चवास्या तृतीयेति सा उपोष्या परान्विता ॥ अर्चयेत् ॥ अ-
 तविद्वाप्यमावास्या न ग्राह्या मुनिपुंगवैरिति ॥ अथ ज्येष्ठामायां पूर्वविद्वां वदसावित्रीं च
 तं कुर्यात् ॥ तत्रायं विधिः ॥ ज्येष्ठं वृक्षत्रयोदशी मारस्य निरात्रोपोपणम् ॥ अथा-

तया तु तयो दृश्यां नक्तं चतुर्दृश्या मया चितं ॥ अमाया मुपवासं कृत्वा सुवर्णाभातभाद
 द्यात् ॥ स्कान्दे ॥ अमायां च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती ॥ त्रिरात्रोपोषिता नारी वि
 धिना नैव दृश्यते ॥ अमाया तु तयो दृश्यां नक्तं कुर्याज्जितेन्द्रियः ॥ अयाचितं चतुर्द-
 श्याममायां समुपोषणम् ॥ गृहीत्वा बालुकां पाने प्रस्थमानं युधिष्ठिर ॥ नतो वं प्र
 मये पाने वल्लभु ममेव वेष्टितम् ॥ सावित्री प्रतिमां कृत्वा सर्वावयवशो भिनीम् ॥ सो
 वसां मिदमर्थो वापि स्वस्य शक्त्या विनिर्मिताम् ॥ सार्द्धं सत्यवता सावधीफलनैवेद्यदे-
 पकोः ॥ वटावलं वितं कृत्वा काष्ठभारं युधिष्ठिर ॥ वितादौ स्मन्नधान्यैश्च बहुधा संप्रकल्पि-
 तैः ॥ रजन्याः कंठस्त्र्यैश्च शुभैर्कुंकुमकेशरैः ॥ सावित्र्याख्यानकं वापि वाचयथी तद्विज्ञा-
 तमैः ॥ राज्ञो जागारणं कृत्वा नृत्यगीतपुरस्सरं ॥ ततः प्रभाते विधिना पूर्वोक्तेन नरोत्तम ॥
 तामपि ब्राह्मणो दद्यात्प्रणिपत्य समापयेत् ॥ हनमंत्रश्च ॥ ॐ सावित्रीये मया दत्ता सहिर-
 रया महासती ॥ ब्राह्मणप्रीणनार्थं यि ब्राह्मण प्रतिशुश्रूता चिति ॥ एवं दत्त्वा द्विजेन्द्रा-

१. शि. न रा विनीतां युधिष्ठिर ॥ नैव द्यादि च तत्सर्वं ब्राह्मणस्य गृहं नृपते ॥ स्वयं दशपदं गच्छे-

४३०

त्तत्र वेदप्रभुन एतज्जितम् ॥ तत्र भुक्ता हविष्यान्तं ब्राह्मणो ब्राह्मणे स्सह ॥ विश्वं जितो वि-
प्रान्सा विनीतां युधरासिति ॥ जनेनानेन शजेन्दु वैधव्यं नाशुयत्कचित् ॥ द्रविडसावित्री ॥
शशमाशमायां कुरुग्रहणम् ॥ हेमाद्रौ हारीतः ॥ मासेनमस्यमावास्या तस्यान्दर्भोच्चोयमलः ॥
अथातयाशस्ते दर्भा विनिर्गो ज्ञाः पुनः पुनः ॥ नमस्योभादपदः नत्कमः ॥ शुचो देशे शु-
चिर्द्विष्टा स्थित्वा पूर्वोत्तरा मुरवः ॥ ऊंकारेण तु मंत्रेण सकृदेव कुरांस्यशेत ॥ सकृदेव प्रय-
मत एव ॥ दर्मोऽष्टादशमे मंत्रः ॥ विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिनि सगज ॥ नृदसवारिणीं पापानि-
मयस्वस्ति हरो भव ॥ कुशामूले स्थितो ब्रह्मा कुशमय्येतु के प्रावः ॥ कुशाग्रे तु हरो देव-
श्च यो देवाः कुशोऽस्थिताः तस्य क्षणं च ॥ शुचि च्छायायां तस्य पराग्निसमूला न्नो मृता-
न्युभान् ॥ पितृदेव यजार्थं च सभा दद्यात्कुशान् द्विजः ॥ सर्वपरांश्चिन्मा दध्मोऽसि लो-
त्रसमुद्भवाः ते समस्ता नि योक्तव्या देवे पित्र्ये च कर्म्मणि ॥ जातमात्रो भवेदधर्मः साग्रभृ-

लः कुप्रसस्यतः सप्तपर्णस्तु कुतप विद्वन्नामस्तथा चर्यते ॥ अविद्वन्नामा अशुध्काया-
 इत्याभादेशमात्रकाः कुतपा इति सिद्धेयमस्ति तु भाद्रसमासेत् ॥ अथ कार्तिका माघस्या दी-
 पमाला ॥ सा सुरेशानि रितुच्यते ॥ प्रदोषार्द्रात्रव्याधिन्येव । तेनास्थाः पूर्वीविज्ञात्वं प्र-
 सिद्धम् ॥ उक्तं च ॥ दीपमाला न कर्तव्या प्रतिपन्मि श्रिता कचिद् ॥ त्रीणि तत्र विनश्यन्ति
 प्रजागावो महीपतिरिति ॥ अस्यां न ववक्षादिभार्यां लक्ष्मीपूजां च कुर्यात् ॥ ब्राह्मे ॥
 अमायां च तथा देवाः कार्तिके मासिके प्राचता ॥ अभयं प्राप्य सुप्तास्तु सुरवंक्षीरोदसा
 शुभु ॥ लक्ष्मीर्हैत्यभयान्मुक्तासुरवंसुप्तास्तु जोदरे ॥ अतोऽर्थविधिवत्कार्या मनुष्यै-
 स्सुरसुक्षिका ॥ दीपान्त्वा प्रदोषे तु लक्ष्मीपूज्यप्रयाविधि ॥ स्वलं कर्ते न भोक्तव्यमते-
 चाला तु सन्जयम् ॥ अथ रात्रे प्रकर्तव्यं ब्राह्मणैः पण्यैः ॥ प्रदोषसमये राजन् कर्त-
 व्या दीपमालिका ॥ दीपदक्षालना कार्या प्रहत्या देवगृहेषु च ॥ दीपदानं प्रयागर्हिक-
 विप्रभिन्नशालये । चतुःपथे प्रमथानि तु न दीपवर्तयोगे ॥ दीपमालापरिस्त्रिसे प्रदो-

ये तदन्तरं ॥ आह ॥ आत्मो जयित्वा देवि यमज्य चतुर्भुक्षितान् ॥ अलं हतेन भोक्तव्यं
नववस्त्रोपशोभिना ॥ अत्रैव राजकोमुदीमहोत्सवर्हुः ॥ यद्भक्तं ॥ ततो परान्तरम-
येषोपयेन्मगरेष्टपः ॥ सर्वराज्यं वलं लोकान् यथेष्टं चैव ता मिति ॥ लोकोऽपि पु-
ष्ट्य सुधाश्च वलिता चिते ॥ दक्षचंद्रनमालाढ्ये चर्चिते च ग्रहेष्टहे ॥ दीपया नरतो ह्यु-
क्तं नरनारी मनो हरे ॥ दीपमाला तुल्ये रास्ये विद्यस्तब्धां तसंचये ॥ अदेवि दीपग्रहिने
सस्ते दोषागमे शुभे ॥ वैश्या विलाशिनी सार्धे स्वस्ति मंगल कारिणी ॥ गृहाद्गृहं ज-
ज्जति च पादाम्यायेव वा यिशिः ॥ ततोऽर्द्धरात्रं तत्र ये स्वयं राजा पुरं जेत ॥ अवलोक-
यितुं स्वयं पद्मानमेव शर्त्तनेः ॥ ततः प्रदोष समये नारी भिर्गृहादलक्ष्मीर्निःकाश्य-
ते ॥ तदपि स्कांदे ॥ एवं गते निशीथे नृजने निद्रादौ लोचने ॥ तावत्तमं नारीभिः सूय-
द्विष्टि मवाहनेः ॥ निःकाश्यते ग्रहस्य ॥ भिरलक्ष्मीस्त्वग्रहो गणत् ॥ इति कार्तिकी अमावा-
स्या ॥ अथ भाषी ॥ तस्यां ब्राह्मणं सा विर्वा सहितं संपूज्य नवनीतधेनुं दद्यात् ॥ तदेवम-

संज्ञे विव्ये ॥ अगमायां चैव माघस्य पूजयित्वा पितामहम् ॥ गायत्र्या साहवद्वचद्वदगाभू-
षितम् ॥ नवनीतमयीभ्ये नुं फले नाना विधे र्युताम् ॥ सहिरण्यस वत्सं च ब्राह्मणा-
५४३ यनिर्वदेत् ॥ अन्नमाघे माघयोः सावास्या राविवारश्च वराणी पातयौ गे र्युक्ता

चैदसावर्द्धो दयारव्यः ॥ कोटिग्रहणा सान्निभो द्योगः ॥ तथा च स्कान्दे सेनमाहात्म्ये ॥ अमा-
र्क्षे पातश्च वराण्ये र्युक्ता चैन्माघे पौषयोः ॥ अर्द्धोदयस्स विद्वेयः कोटि सूर्य्यग्रहे स्समः
॥ दिवे वयोगस्स स्तोयं न तु रात्रौ कदा चनेति ॥ अर्द्धोदये तु संप्राप्ते सर्वगं गा जलं समं
शुद्धात्मानो हि जास्सर्वं भवेद्युर्ब्रह्म सन्निभाः ॥ यत्किंचिद्दीयते दानं तद्दानं मे रुसन्नि-
भमिति ॥ अन्नदानाद्यै विश्रेयः ॥ चतुःषष्टिपलं भूख्यममन्त्रे तत्र कारयेत् ॥ चत्वारिंश-
त्यलं चाथ पंच विंशतिमेव च ॥ निषाद्य पाय संतत्र पद्ममष्ट दलं लिखेत् ॥ पद्मस्य
कर्णिकायां तु कर्कमात्रं सुवर्णकम् ॥ तदभावे तदूर्ध्वानर्द्धं वाधिकारयेत् ॥ कृत्वा तु तं धूलि-
पद्मद्वैः पद्ममष्ट दलं शुभम् ॥ अमन्त्रं स्थापयेत्तत्र ब्रह्मविष्णु शिवान्त्र्यं कृमिति ॥ तेषां

श्रीति करादाय प्रवेत मास्ते सुभोभनेः ॥ वस्त्रादिभिरलं कृत्य वा स्त्रियाय निवेदयेत् ।
दानं भोजः ॥ सुवर्णं पायसाभ्रं यस्मादित लयमीभयं ॥ अक्षदीप्तं रक्तं यस्मात्तद्गुहाणा-
द्विजोत्तम ॥ समुद्रमेव लोप्यं दीप्तं समुद्रं तस्य यत्फलम् ॥ तत्फलं लभते मर्त्यो दत्त्वा
दानं समुद्रकम् ॥ इत्यर्द्धं स्वविधिः ॥ अग्नावास्या तु सोमेन सप्तमी भानुना सह ॥ चतुर्थी-
भूमिपुत्रेण बुधवारोऽष्टमी ॥ चतस्रस्तथ यस्त्वेताः सूर्यग्रहाः सन्निभाः ॥ स्नानं द-
नं तथा आहं सर्वं तत्राक्षयं वेदिति ॥ इत्युपवासाद्यमावास्या निर्ययः अथ आहं मावा-
स्यानिर्णीयते ॥ सा अपराह व्यापिन्येव ॥ एको द्विष्ट आहं तु अष्टम नवमं मुहूर्तं व्यापिन्येव
ग्राह्या ॥ मास्ते ॥ अष्टमे नवमे यस्मान्मं दीभवति आस्त्रम् ॥ तस्मादन्नं तत्फलं दत्त्वा तं
भो विशेषत इति ॥ कुतुपे प्रथमे भगो एको द्विष्ट मुपक्रमेदिति व्यासः अष्टमं मुहूर्तं
रव्ये कुतुपे अरंभे दत्तित इत्यर्थः ॥ अत्र पार्वणां त्वेकादश मुहूर्तं ॥ अपराहः पितृणां मित्यु-
क्तेः दिनद्वयेऽपराह व्यासो यत्राचिका नद्यापि नीग्राह्या ॥ अपराह द्वादश व्यापिन्यमावा-

स्थापदाभवेत् ॥ तत्राल्पत्वेन ह त्वारथां निषेधः पितृकर्मणि ॥ श्रयणपवसंवादे ॥ यमसा-
 दस्याहिमानुस्यादपराहृदये समाम् ॥ सत्ये पूर्वापरादहो सास्येऽपि च परास्त्वतेति ॥ हि-
 नहृदयेऽप्यपराहृदयाप्यभवेऽपि परैव ॥ पूर्वधुरेवापराहृदयाहो ॥ वो धायनः ॥ घटिकैश्चा-
 प्यमावास्याप्रातिपत्सु न चैतदा ॥ भूतविहैवसाग्राह्या देवैर्ये च कर्मणि ॥ प्रातिप-
 दि घटिकैकापि कर्म कालेनास्ति चेदित्यर्थः ॥ अथ मलमासे वर्ज्यादि निरर्थकः ॥ तत्र-
 कास्यं निधिभ्यते ॥ जावालिः ॥ नित्यनैमिषिके कुर्याच्चूडं कुर्यान्मालिन्त्युचै ॥ निधि-
 नस्तत्र कारोक्तं कास्यं नैव कदाचनेति ॥ नित्यनैमिषिकयोरेपि यदनन्यगानि कंतदेव
 कुर्यात् ॥ अनन्यगति कुंकुर्यान्नित्यं नैमिषिकं तथेति स्वरणान् ॥ इत्यपरिग्रहे
 श्रवणद्वारहोमाश्रयपर्वचाग्रयणं तथा ॥ मलमासे तु कर्तव्यं काम्यादि विंवि वर्जयेदि-
 ति ॥ श्रवणद्वारहोमाभवे प्रवदेवाग्निहोत्रादयः ॥ सर्वदर्शपौर्णमास्योः ॥ तत्रैव सोम-
 द्यागादि कर्मणि ॥ नित्यान्यपि मलिन्त्युचैः ॥ व्यटी ज्याग्रयणा ध्यानचानुभवादि का-

न्यपि ॥ महालयाष्टकाप्राद्वेषाकर्माद्यापि कर्मभूत ॥ अष्टमासविशेषाख्यविहितं व-
 र्ज्ये न्यलेति यमः ॥ चंद्रसूर्यग्रहेस्नानं प्राद्वं स्नानं जप इति कर्म ॥ कार्याणि मलमासे तु
 नित्यं नैविति कं तथेति यमः ॥ गर्भेष्वप्युचिते मृत्ये प्राद्वकर्मणि मासिके । सपिण्डी
 करणे नित्यं नापि मासं विवर्जयेत् ॥ तीर्थस्नानं जपे होमो जवद्वीहितीत्यादिभिः ॥
 जातकर्म न्यकर्मणि नवप्राद्वं तथैव च ॥ मयात्रयोदशप्राद्वान्यपि च योद-
 श ॥ मासिके प्राद्वे अमायाः नित्यदानं होमो जपोपाशनः ॥ अन्यकर्मणि दाहोद-
 कपिंडदानास्थिसंचयनादीनि ॥ गणविः ॥ मन्वादे च द्युगादौ च मासयो रुमयोर-
 पीति ॥ मास्ये ॥ वर्धे पापहरं प्राद्वं स्नानं च प्रतिवत्सस्य ॥ गोभूतिलहिरण्यानां दानं
 नैमासे मलिम्लुचे ॥ इति श्रुः ॥ वृद्धिप्राद्वं तथा सोममन्वाधानं महालयस्य ॥ रा-
 ज्याभिधेकं काम्यं च नक्षत्रांश्चानुलंघित इति स्मृत्यन्तरे ॥ नभोवाप्यनभस्यो वा-
 मलमासोपदाभवेत् ॥ अमापाद्याः समक्षमः पक्षः पितृपक्षस्तदाभवेत् ॥ हारीतः ॥

भस्म असे क्रोतुं हि कर्तव्यमादिकं प्रथमं द्विजैः ॥ तथैव मादिकं प्राद्व सापडा कर
 ४२६ ति ॥ अगुः ॥ यत् न मासं मृतानां तु पच्छाद्दं प्रति वत्सरम् ॥ मल मासे तु तत्कार्यं
 नान्येषां तु कदाचन ॥ एवं च शुद्ध मास मृतानां तु प्रथमादिकं मलेऽपि कार्यं
 निति ॥ द्वादशे मासि सर्वत्र फलंति प्राद्व कान्तरं तु शुद्धे त्रयोदशे ॥ यदा तु मध्ये म
 ल मासं भ्रातस्तदा पित्रयोदशे मासे ॥ यतः ॥ मल मास मृतानां तु मले स्यादादिकं
 कान्तरम् ॥ वृद्धमनुः ॥ अग्न्याभ्येयं प्रतिष्ठां च यद्दत्तं दानं व्रतानि च ॥ देव व्रतं दृष्यो
 त्सर्गं चूडा करणा मेखलासु ॥ मांगल्य मभिवेकं च मल मासे विवर्जयेत् ॥ तथा
 वापी कुप तडागादि प्रतिष्ठा यद्दत्तं कर्म च ॥ न कुर्व्यां जल मासे तु महा दान
 व्रतानि च ॥ दृष्यो त्सर्गोऽत्र काल्यः ॥ अथ ग्रहण निर्णयः ॥ वृद्धगोतमः ॥ सूर्य ग्र
 हे तु नास्तीया दूर्ध्वं यास चतुष्टयम् ॥ चंद्रं ग्रहे तु या मांस्त्री न्वाले दृष्ट्वा तु
 वै दिविना ॥ वशिष्ठः ॥ ग्रहो दये विधोः पूर्वं नाहर्भोजन माचरेत् ॥ अगुः ॥

प्रला वेवा त्त मानं तु रवीन्द्र प्राप्नु तो यदि ॥ परेष्टु रुदये स्नात्वा शुद्धो अभ्य वह-
 रेन्नरः ॥ अत्र भोजने प्राय श्रित्त मूक्तम् ॥ कात्यायनेन ॥ चन्द्र सूर्य्य ग्रहे
 शुक्ला द्वाजा पत्येन पृथ्वाति ॥ तस्मि न्नेव दिने शुक्ला त्रि रात्रे षोडश पृथ्वाति ॥
 भारते ॥ सर्व से नैव कर्त्तव्यं आहं वै राहु दर्शने ॥ अकु र्वाणस्तु ना त्स्त्वि वया-
 त्पके गोरे वसी दतीति ॥ साता तपः ॥ आपद्यन गौ तीर्थे च ग्रहणे चंद्र सूर्य्य-
 योः ॥ आस आहं हिजः कुर्या च्छूद्रः कुर्या त्महे वहि ॥ वह वशिष्ठः ॥
 सत के सत के चैव न दोषो राहु दर्शने ॥ ताव देव भवे च्छुद्धि र्याव न्मुक्ति
 र्त्त दृश्यते ॥ वृक्षे पट्टिप्रन्मते ॥ सर्वथा भवे चरणानां सत के राहु दर्शने ॥
 रत्नात्वा कर्मणि कुर्वीत सत मन्त्रं विसर्जयेदिति ॥ मेधा तिथिः ॥ आर ना-
 लं पय सत के दधि रौहा ज्य पाचितम् ॥ मणि कस्थो दकं चैव न दुष्ये द्वाहु
 सत के ॥ मन्वर्ष मुक्ता वल्याम् ॥ अन्नं पक्व मिह त्याज्य रत्नानं स वसनं ग्रहे

॥ वारि तक्रार नाजा दितिल दर्भा नहुय्यति ॥ ग्रहो धितं जलं पीत्वा पाद क-
 च्छं समा चरेत् ॥ योग विषेयो ग्रहणो व्यासः ॥ रवि ग्रहः सूर्य्य वारे शोभे सोम-
 ग्रह स्या ॥ चूडा मणि दिति ख्यात तत्र दत्त मनं तकम् ॥ वार्य्य न्येषु यस्तु
 एयं ग्रहणो चन्द्र सूर्य्ययोः ॥ तत्पुण्यं कीदृ गुरितं योगे चूडा मणो स्सुतः
 ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणो समाक्षेया प्रभेयं तत्त्व-
 संज्ञ का ॥ दुर्या नंद पद दन्द ध्याना वस्थित चेतसा ॥ तानि तोयं हि सत्नी-
 त्रै संग्रहाख्य शिरो मणिः ॥ भूरा मादुः शिरो वर्धे वैक्र मीये पृभे पृचौ ॥
 समातोयं सदा भूया द्विद्वयं प्रीति दः प्रुभः ॥ यावद् मण्डले सन्ध्या वेदि-
 कं कर्म सज्जनाः ॥ तावत्स्वस्ति युतो भूया त्संग्रहाख्य शिरो मणिः
 इति श्री महि वेदि कुल संभव सरयू दत्तविर चिते ॥ संग्रह शिरो मणो
 नाभि ग्रंथे तिथि निर्णय कथनं नाम चतु र्विंशति तमा प्रभा समाप्ता समा-

सोऽयं संग्रहः शिरो मणिनाम ग्रंथः ॥ सम्बत् १८३५ माघ मासे कृत्तिका पक्षे
 अष्टम्यां एवि वासरे समाप्तः ॥ शुभ मस्तु ॥ त्रिविव मिदं पुरातनं वैजनाथेन
 द्वि वेदिना ॥

सोऽयं संग्रहः शिरो मणिनाम चंध्यः ॥ सम्बत् १२३५ माघ मासे कृत्ति पक्षे
 दशम्यां शनि चासे समाप्तः ॥ शुभ मस्तु ॥ लिखित मिदं पुस्तकं बीजनाथेन
 द्वि वेदिना ॥